Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाय निबंध जुलाई १९५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077948

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077948

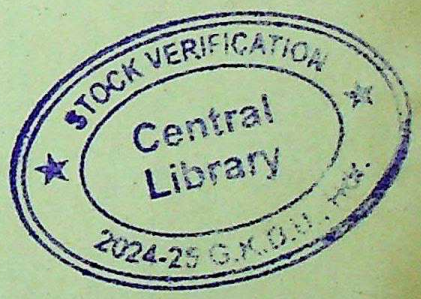


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल कांगड़ी.

077948

# ग्रामनिर्माण

वर्ष १
अंक ७

जुलाई—१९५१

वार्षिक चन्दा ६)
एक प्रति ।।)

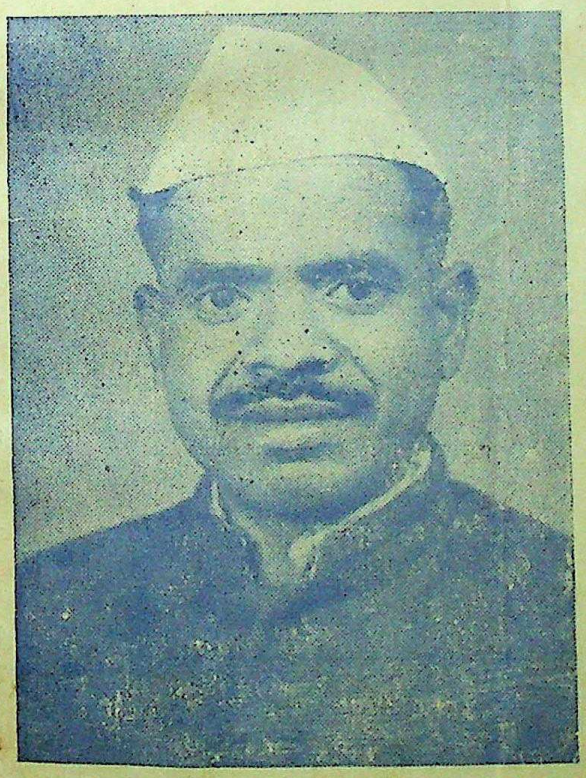

श्री भैया राम मुण्डा सेवाके बलपर गरीब आदिवासियों के प्यारे भैया बन गये हैं। उनकी सब प्रकार से सेवा करना ही आप के जीवन का पवित्र लक्ष्य है। आप के हृदय में देश प्रेम की ऐसी आग जल रही है जो आप को कभी चुपचाप बैठकर विश्राम लेने नहीं देती। बीहड़ जंगलों एवं दुर्गम पहाड़ियों के बीच बसे भोले भाले आदिवासियों की सेवा करते हुए कांटेदार एवं रोड़ों से भरे रास्ते को रौंदते चलने में ही आप को आनन्द आता है।

आदिवासियों के लोकप्रिय नेता
श्री भैयाराम मुण्डा

STOCK VERIFICATION
Central Library

सम्पादक
राम चरित्र सिंह

स० सम्पादक
आदित्य मित्र 'संबाली'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वामी सत्यदेव परिव्राजक राँची में

भारतीय संस्कृति के महान प्रचारक, हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक तथा विख्यात देशभक्त सन्यासी स्वामी सत्यदेव परिव्राजक इन दिनों राँची के निवारण आश्रम में आकर ठहरे हुए हैं। बिहार प्रान्त के छोटे से बड़े लोगों तक सब इन्हें पहले से जानते हैं। अतः लोग यहाँ आकर उनके दर्शन एवं उपदेशों से लाभ उठावें।

'ग्राम-निर्माण' के पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि स्वामी जी ने 'ग्राम-निर्माण' के लिये लेख देते रहने का वचन दिया है।

सम्पादक
ग्राम-निर्माण

## विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | सम्पादकीय | ... ... | १ |
| २ | मूक पशुओं का करुण क्रन्दन—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक | ... | ५ |
| ३ | घास और घी (लघु कथा)—श्री प्रताप साहित्यालंकार | ... ... | ६ |
| ४ | पंच विध कार्यक्रम—आचार्य मशरूवाला | ... ... | ७ |
| ५ | शक्तिमान शब्द—आचार्य विनोबा | ... ... | १० |
| ६ | गाँधीजी ने मंत्रियों को कहा था—श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी | ... | १४ |
| ७ | कौन बीज कितना बोया जाता है ? | ... ... | १५ |
| ८ | हमारा एक गरीब गाँव: मोरागाँ—श्री नारायण जी | ... ... | १६ |
| ९ | हँसिये मत | ... ... | १८ |
| १० | सदाचार से दीर्घायु और सुखी जीवन—पं० देवनारायण मिश्र आयुर्वेदाचार्य | ... | १९ |
| ११ | हे आदिमवासी (कविता)—श्री हरिहर नाथ चौबे | ... ... | २२ |
| १२ | भारत के आधुनिक दधीचि: बापा—श्री राम चरित्र सिंह | ... | २३ |
| १३ | हमारे वन और इनके कानून—श्री सच्चिदानन्द सिंह | ... ... | २५ |
| १४ | ग्रामनिर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव—श्री योगेश्वर प्र० सिंह 'योगी' | ... | २९ |
| १५ | टेलीफोन (लघु कथा) श्री राम कृष्ण प्रसाद 'उन्मन' | ... ... | ३१ |
| १६ | कार्यकर्त्ता गाँवों में चलें—श्री परशुराम झा | ... ... | ३२ |
| १७ | पंचायत राज्य ही क्यों ?—श्री ब्रजनन्दन शर्मा | ... ... | ३३ |
| १८ | बुनकरों की समस्याएँ—श्री रामलगन राम | ... ... | ३५ |
| १९ | राँची से बम्बई—श्री सुरेश सामन्त | ... ... | ३७ |
| २० | मुसहर सेवा मण्डल—श्री वीरभद्र शास्त्री | ... ... | ३९ |
| २१ | हमे आत्म निर्भर होना चाहिये—सुश्री मधुरमाला | ... .... | ४० |
| २२ | यह आप केप्रश्न का उत्तर है | .... ... | ४१ |
| २३ | देश-विदेश | ... ... | ४२ |
| २४ | मण्डल की गतिविधि | ... ... | ४४ |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १ * रांची. जुलाई १९५१ * अंक ७

# स्वावलम्बी शिक्षा

हमारे देश में अभी समस्याओं की कमी नहीं। अन्न की कमी, वस्त्र की कमी जिधर देखिये कमी ही कमी है। जीवन के लिए उपयोगी और आवश्यक सभी चीजों का अभाव ही अभाव है। इस प्रकार की अभाव ग्रस्तता के मूल में है हमारा आलस्य और हम में उत्पादन शक्ति की कमी। उपयोग करने वाले हम अधिक होते जा रहे हैं और उत्पादन नहीं बढ़ाने के कारण उपयोगी चीजों की कमी होती जा रही है। इसलिये हमारी दरिद्रता आज विश्व के सामने एक-समस्या बन कर खड़ी हो गयी है। चीजों की कमी के कारण रहन-सहन का स्तर जितना नीचा हमारे देश में है उतना दुनियाँ के शायद किसी भी देश में नहीं होगा। लोग कहेंगे कि इतनी बड़ी आबादी वाला देश सदैव अभावग्रस्त रहेगा ही किन्तु आबादी अधिक होने से साधनों की कमी दूसरी चीज है और काम न करके भी चीजों का उपयोग करने की अकर्मण्य प्रवृति बिलकुल एक चीज। चीन की आबादी हमारे देश से भी बड़ी है, वहाँ भी गरीबी है लेकिन चीनवासियों को जहाँ कहीं देखिये कुछ न कुछ काम-धन्धे में लगे हैं। अपने देश में भी आप देखिये। शायद ही कोई शहर हो जहाँ पर दो चार चीनवासी न रहते हों और काम न करते हों।

हमारे देश में तो दंत चिकित्सा के लिए चीनी लोग ही प्रसिद्ध हैं। वे इस कार्य में सिद्ध हस्त माने जाते हैं। कलकत्ते में जाकर देखिये, चमड़ा पकाने और जूता बनाने में चीनी लोग ऐसे दक्ष होते हैं कि वाटा वाले भी इनसे मात हो जाते है। यही बात दुनियाँ के अन्य देशों में भी देखने को आती है।

हमारे देश की हालत देखिये। हम लोग ऐसे अनभिज्ञ और आलसी हैं कि सारी दुनियाँ हमको सामान दे देकर धनी बनती जा रही है और अपने काम की चीजों को दूसरों से खरीद-खरीद कर हम गरीब बनते जा रहे हैं। जरा गहराई में उतर कर देखिये तो आप को पता चल जायगा कि लन्दन और न्यूयार्क की ऊँची-ऊँची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अट्टालिकाओं का बोझ हमारे देशवासियों पर भी किस प्रकार पड़ा है। हमारी अनभिज्ञता एवं हमारा आलस्य ही आज हमारी सबसे बड़ी समस्या है। अगर इसे हम दूर कर सकेंगे तो हमारी सारी समस्या इसी में हल हो जायगी। चोर बाजारी चली जायगी और घूस खोरी समाप्त हो जायगी। इसके साथ ही आज देश में निराशा का जो घोर अन्धकार छाया है, कलह का सम्राज्य स्थापित है, सब एकही साथ काफूर हो जायगा। अब प्रश्न यह है कि इस आलस्य और अनभिज्ञता को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए क्या किया जाय? हमारी समझ में इसे सुशिक्षा से ही दूर किया जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे देश की सभी समस्याओं का हल शिक्षा में अच्छी और बुरी होने पर ही निर्भर करती है

आज हमारी शिक्षा का प्रारंभ गाँव की पाठ-शालाओं से होता है और शहर के कालेजों में जाकर उसका अंत हम करते हैं। हमारी शिक्षा की प्राइमरी पाठशालाएं, मिडल स्कूल, हाई स्कूल एवं कालेज ये ही ४ सीढ़ियाँ हैं। इन्हीं चारों सीढ़ियों को पार करके हम सुशिक्षित कहलाते हैं। पर इन संस्थाओं में शिक्षा क्या होगी? हमें शिक्षा तो दी जाती है अक्षर ज्ञान से लेकर दर्शन शास्त्र जैसे कठिन और ऊंचे विषयों तक; लेकिन हमें पढ़ाने वाले कौन होते हैं? वही गरीब और कम वेतन पाने वाले अनभिज्ञ शिक्षक। ऊपर कहा गया है कि हमारी सारी समस्याओं का हल शिक्षा पर ही निर्भर करता है और शिक्षा देने वाले तो शिक्षक ही होंगे। लेकिन आज हमारा दुर्भाग्य है कि ये शिक्षक अत्यधिक अभाव ग्रस्त हैं। ये ऐसे लोग हैं जिनमें कम वेतन के आज घोर अशान्ति फैली हुई है!

क्या ऐसे शिक्षकों को लेकर हम समाज का नव निर्माण कर सकते हैं? हमारे विचार से यह कभी संभव नहीं। हिन्दुस्तान के लिए आजादी प्राप्त करना जितना आवश्यक था, शिक्षकों की समस्या को हल करना उस से जरा भी कम आवश्यक नहीं जान पड़ता। सौभाग्य की बात है, देश के सभी लोग इस पर विचार करते हैं और आज राष्ट्र के कर्णधारों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो चुका है तथा सभी लोग इस समस्या को हल करने में तत्पर प्रतीत हो रहे हैं। लेकिन आगे का रास्ता साफ-साफ दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। शिक्षकों की मांग है कि उनका वेतन बढ़ा दिया जाय तो सारी समस्या आप से आप हल हो जायगी। सरकार की ओर से कहा जाता है कि वेतन बढ़ाना सरकार की आर्थिक स्थिति में ताकत के बाहर की बात है। बिहार सरकार जिसकी आय २४ करोड़ की है, ४ करोड़ से अधिक रुपया शिक्षा पर खर्च नहीं करती है। दुनियाँ में कहीं भी इस कम अनुपात से शिक्षा पर खर्च नहीं होता हो गा और ये रुपये भी कहां से आते हैं? गरीबों को शराब पिला पिलाकर! इतना ही नहीं केवल वेतन बढ़ा देने से मुद्राफीति का भी खतरा है। वस्तुओं का मूल्य बढ़ता चला जायेगा। इस तरह वेतन बढ़ने से भी समस्या हल नहीं हो सकेगी। गत युद्ध के पूर्व ५) रु० मासिक पाने पर शिक्षक उतने असंतुष्ट नहीं थे जितने आज ३०) रु० मासिक पाने पर भी हैं। वेतन तो बढ़ गया। ५) रु० से ३०) रु० हो गये। किन्तु गरीबी और बढ़ी ही। अभी हमारे देश में उत्पादन का जो स्तर है उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ज्यों के त्यों रख कर हम शिक्षकों का अथवा अन्य सभी विभाग के कर्मचारियों का वेतन बढ़ा देंगे तब भी उनकी समस्या ज्यों की त्यों बनी रह जायेगी। इससे उन्हें कोई खास फायदा न हो सकेगा। फ्रांस में साधारण कुलियों तक का वेतन ३ हजार फ्रैंक तक हैं लेकिन वहां केवल सवेरे के नाश्ते में ही २०० फ्रैंक लग जाते हैं। इसलिए यदि हम देश में उत्पादन बढ़ाने की ओर ध्यान न देंगे और केवल वेतन वृद्धि ही करते चले जायेंगे तो हमारे देश में भी ३ हजार रु० पाने वाले शिक्षक २००) रु० में एक प्याली चाय पीकर उतना ही असंतुष्ट रहेंगे जितना आज ३०) रु० प्रतिमाह वेतन पाकर एक आने में एक प्याली चाय पीकर। आज शिक्षकों की समस्या का हल यह नहीं है कि उनके हाथ में अधिक नोट दे दिये जायँ बल्कि समस्या का हल तो इसमें है कि प्रतिमाह उनके घर में आज से अधिक चावल, दूध, दवा और कपड़े मिलें। और ये तभी मिल सकते हैं जब देश का पैदावार बढ़ेगा।

हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने इस समस्या को आज से १६ वर्ष पहले अनुभव किया था। इसी कारण नयी तालीम के जरीये शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने का सुझाव उन्होंने पेश किया था। उनका कहना था कि वर्त्तमान शिक्षा पद्धति शिक्षकों और विद्यार्थियों को परावलंम्बी बनाती है। शिक्षक को जीवन भर अपने वेतन के लिए दूसरों की ओर ताकना पड़ता है। विद्यार्थी ऐसी शिक्षा पाकर निकलते हैं कि वे कभी स्वावलम्बी बन ही नहीं सकते। अपने शिक्षकों की तरह उन्हें भी नौकरी ही खोजनी पड़ती है। चाहे वह स्थान कोई स्कूल हो अथवा कोई सरकारी दफ्तर हो। और, वे अपने गुरुओं की भांति ही जीवन भर परावलम्बी बने रहने को बाध्य होते हैं। इसी परावलम्बन के कारण आज सारा देश परावलम्बी बना हुआ है। इसी परावलम्बन को दूर करने के लिए महात्मा गांधी ने स्वावलम्बी शिक्षा का पाठ हमें दिया था। वे चाहते थे कि शिक्षा का प्रारंभ ही किसी उपयोगी उद्योग से होना चाहिये।

बच्चों में निर्माण शक्ति ईश्वर प्रदत्त है उन्हें कुछ नहीं मिलता है तो वे मिट्टी का घर और पुतले बना कर खेलते हैं। उनकी इसी निर्माण शक्ति का उपयोग स्वावलम्बी शिक्षा में करनी होती है। उनकी शक्ति के अनुसार ही हम उन से हलका काम लें और उसी के द्वारा उन्हें शिक्षा भी देते चलें। उन से सूत कतवाया जा सकता है। बागवानी का काम करवाया जा सकता है। बच्चे ६ घण्टे स्कूल में रहते हैं। वे खुशी खुशी ३ घण्टे तक उद्योग के काम में लग सकते हैं यदि उनमें इसके लिए अभिरुचि पैदा कर दी जाय। आज तो हमलोग ६ घण्टे केवल पढ़ा कर उनके दिमाग पर बोझ डाल देते हैं और उनमें पाठ के प्रति रुचि नहीं बल्कि अरुचि पैदा करते हैं। यही कारण है कि हमारे यहां १४-१५ वर्ष पढ़ने के बाद भी विद्यार्थी किसी काम के नहीं निकलते। उतने ही समय तक पढ़ कर लन्दन और न्यूयार्क का विद्यार्थी समाज का निर्माता बन जाता है, अपने पैरों पर खड़ा होने वाला बन जाता है। हमे अपनी समस्या को देखने के साथ ही अन्य देशों से भी शिक्षा लेनी होगी। शिक्षा में उद्योग को माध्यम बनाना पड़ेगा। इस से विद्यार्थी उद्यमी बनेंगे। शिक्षा समाप्त कर नौकरी खोजने की धुन में न लगकर वे किसी स्वतंत्र काम में लग जायेंगे और स्वयं उत्पादन करेंगे। उनके उत्पादन से देश की रहन सहन का इस्तर ऊँचा होगा। शिक्षा काल में उनके उद्योग से जो प्राप्ति होगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उससे शिक्षा संस्था की स्थिति में सुधार होगा। शिक्षा संस्था की स्थिति अच्छी होगी और संतुष्ट होकर काम करेंगे और काम उनकी रुचि भी रहेगी। आज जो उनके भीतर एक असन्तोष की ज्वाला धधक रही है, वह भी शान्त हो जायेगी। हमारे समस्याओं का हल भी इसी प्रकार हो सकता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं।

## उत्पादन का कार्य अवश्य करें

आदिम जाति सेवा मण्डल गाँधी जी के बताए रचनात्मक कार्यों के द्वारा राष्ट्र निर्माण कार्य करने वाली एक सार्वजनिक संस्था है। अतः मण्डल के कार्यकर्त्ताओं को अपनी सारी शक्ति लगाकर रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाना है। मण्डल के कार्यकर्त्ता पैसे की दृष्टि से गरीब हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षकों का वेतन भी कम ही है; किन्तु उनके मुकाबले हमारे कार्यकर्त्ताओं को मिलने वाली सहायता तो और भी कम है। सरकार के शिक्षक तो सरकार पर निर्भर करते हैं और एक हद तक उन्हें यह शोभा भी देता है क्योंकि वे सरकारी नौकर कहलाते हैं। लेकिन मण्डल के कार्यकर्त्ताओं को तो अपने पैर पर खड़ा होना है। इसी में हमारी शान है और समाज एवं राष्ट्र के लिए हमारी उपयोगिता भी। अतः आदिम जाति सेवा मण्डल के कार्यकर्त्ताओं को अपने अपने स्कूलों में शीघ्र ही उद्योग आरंभ कर देना चाहिये। स्थान और परिस्थिति के अनुसार जहाँ पर जिनको जिस तरह के उद्योग की सुविधा हो के वहाँ पर वैसा ही कार्य करें। अभी कपास लगाने का समय है। प्रत्येक स्कूल के अध्यापक स्कूल की जमीन में घेरा देकर कपास की खेती करें। बरसाती तरकारियाँ भी सुविधा से लगायी जा सकती हैं। इन सब कार्यों से समय बचने पर हमारे शिक्षक अपने छात्रों के साथ स्कूल के आस पास के किसानों की खेती में भी एकाध घण्टे की सहायता कर सकते हैं। यदि एक स्कूल के ३०-४० लड़के पड़ोसियों के खेत में एक घण्टा भी कार्य कर देंगे तो वे किसान हर प्रकार से स्कूल की सहायता कर सकते हैं। इस तरह स्कूल की आर्थिक स्थिति अच्छी होने से शिक्षक की स्थिति अच्छी हो जाती है। इस प्रकार का कार्य आदिम जाति सेवा मण्डल की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला और इसकी जड़ को मजबूत करने वाला होगा। आशा है, मण्डल के प्रत्येक कार्यकर्त्ता और शिक्षक इस पर विचार करेंगे और इस विचार को कार्य रूप में परिणत करने का अपनी शक्ति भर प्रयत्न करेंगे। अपने अपने कार्यों की रिपोर्ट सभी लोग अपने निकटस्थ दफ्तर में भी देते जायँ तो अच्छा हो।

## मुस्तैदी से काम करें

बापा स्मारक निधि के सम्बन्ध में ग्राम-निर्माण के पिछले अंक में प्रकाश डाला जा चुका है। उस निधि का कार्य कितना महत्वपूर्ण है, इसे सभी जानते ही हैं। इस स्मारक निधि की स्थापना तो सेवा व्रतियों को उनके कर्त्तव्य का स्मरण एवं उस ओर उन्हें एक सजीव प्रेरणा देने के लिए ही की गयी है।

स्मारक निधि के लिए धन एकत्र करने का कार्य प्रारंभ हो गया है। मण्डल के कार्यकर्त्ताओं के ऊपर तो इसका बहुत बड़ा उत्तर दायित्व है ही साथ ही अन्य समाज सेवियों का भी पवित्र कर्त्तव्य है कि वे इस कार्य में पूर्ण सहयोग देकर बापा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

स्मारक निधि के लिए रसीद बहियाँ मण्डल के प्रधान कार्यालय में पहुँच गयी हैं तथा सभी शाखाओं में भी दी जा चुकी हैं। फिर भी जहाँ लोगों को रसीद बहियाँ न मिली हों अथवा कमी हो

[ शेष पृष्ठ ६ में ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(ग्राम-निर्माण के लिये विशेष लेख)

# मूक पशुओं का करुण क्रन्दन

ले० स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

कलकत्ते की ओर जाने वाला बम्बई एक्सप्रेस बड़ी तेजी से भागा जा रहा था। जब सवेरे खण्डवा स्टेशन गुजर गया तो गाड़ी अचानक ठहर गयी। सामने कोई स्टेशन नहीं था, इसलिए बिस्तरों पर बैठे हुए मुसाफिर उचक पड़े और पूछने लगे कि गाड़ी क्यों ठहर गयी? कुछ लोग अपने अपने डिब्बों से निकल कर नीचे भूमि पर आ गये और इंजिन की ओर दौड़ने लगे। जिस डिब्बे में मैं बैठा था, उसके दो चार यात्री भी अपनी सीटें छोड़ कर गाड़ी के ठहरने के कारण को जानने के हेतु नीचे उतर गये। बम्बई से राँची जाने के लिए मैं दूसरे दर्जे के डिब्बे में बैठा हुआ था। मेरी सीट रिजर्व थी। आँखों से न देखने के कारण मैं भी विस्मय भरे भाव से अपने बिस्तरे पर बैठ गया। डिब्बे का एक यात्री बोला—"कोई भैंस कट गयी है!" एक दूसरा कह उठा—"हाँ गन्ध तो वैसी ही आती है।"

जब सब छानबीन हो चुकी और इंजिन ने चलने की सूचना दी तो पता लगा कि एक बैल कट गया है। मैं जब सनजान में था तो वहाँ भी ४-५ पशुओं के कटने की खबरें रोज आती रहती थीं, इसलिए मैं विचार सागर में डूब गया। बृटिश शासन के समय में रेल की सड़कों के इर्द गिर्द पशुओं के रक्षार्थ लोहे की तारें लगी रहती थीं, जिनके कारण इर्द गिर्द की गोचर भूमि पर चलने वाले पशु निर्भय होकर भोजन का आनन्द लेते थे। और हरी हरी दूब खाकर प्रसन्न होते थे। योरोप के महासमरों के कारण अंग्रेजो सरकार को उन लौह तारों की आवश्यकता पड़ी और करीब करीब सारे देश से वे तारें गायब हो गयीं और रेलवे लाइनों पर चलने वाले भयंकर इंजिन बुरी तरह पशुओं की हत्या करने लगे। इधर उधर चरने वाला पशु लौह लाइन के निकट कुछ हरी घास को देखकर सिर झुका कर उसे चरने लग जाता है। और दूर से आने वाला इंजिन जब भीषण गर्जना करता हुआ चला आता है तो ये मूक पशु उस की ओर विस्मय जनक नेत्रों से देखने लग जाते हैं। वह शेर की गर्जना को समझता है और हाथी के चिंघाड़ को भी पहचानता है, किन्तु ईसाकी बीसवी शताब्दि का यह नवीन हिंसक दानव उसके पिछले जन्मजन्मान्तरों के संस्कारों में मौजूद न रहने के कारण उसे देख कर वह भागना भी भूल जाता है। और वहीं उसकी हत्या हो जाती है!

है न यह जुर्म की बात! क्या इस सभ्य मनुष्य का यह धर्म्म नहीं कि वह इन मूक पशुओं पर दया करे और उन्हें इस वैज्ञानिक दानव से बचावे? हम सदा अपनी संस्कृति के घमण्ड में मरे जाते हैं, उसके गीत गाते हैं तथा उसकी महिमा बखानते हुए नहीं अघाते। अहिंसा के धर्म्मका पालन करने वाले लाखों जैनी क्या मूक पशुओं पर होते हुए इस अत्याचार को नहीं देखते?

क्या उनकी जैन धर्म्म प्रचारिणी सभाओं का यह धर्म्म नहीं कि इन गूंगे पशुओं पर होते हुए इस हत्याकाण्ड के विरुद्ध अपनी आवाज उठावें? कहाँ गये वे वैष्णव जो अपनी दया धर्म्म की डींगें हाँकते रहते हैं? दुःख तो इस बात का है कि हमारे यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सैक्युलर सरकार है और वह किसी धर्म्म को मानती नहीं, लेकिन वह मानवता को तो मानती है। आज भारतीय मानवता के लिए क्या हमारे यहाँ कोई स्थान नहीं रहा? रेलवे मिनिस्टर मि०के० सन्तानम ने कितना अधिक किराया बढ़ा दिया है। अरे, उस हमारे पैसे में से ही इन मूक पशुओं की रक्षार्थ रेल की सड़कों के इर्द गिर्द तारें लगाकर इस कसाई खाने को तो बन्द किया जाय। आज इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि भारतीय आत्मा जागृत हो और वह आँखें खोलकर अपने इर्द गिर्द होती हुई पशुता का अच्छी तरह निरीक्षण करे। गूंगे पशु तो कोई प्रस्ताव पास नहीं करेंगे और नहीं अपना डेपुटेशन लेकर भारतीय पार्लमेण्ट के सामने प्रदर्शन ही कर सकते हैं। आँखों से आँसू बहाते हुए ये मूक पशु प्रभु की अदालत में ही फरियाद कर सकते हैं और हमारे ऐसे ही पापों का परिणाम यह भूखमरी और महँगी हमें मिल रही है।

भारत स्वाधीन हो गया, किन्तु भारतीय आत्मा सोई हुई जान पड़ती है। चारों ओर पैसा कमाने का पागलपन इस देश के नागरिकों पर सवार हो गया है। सब प्रकार के धर्म्म कर्म को ताक पर रख कर वे पैसा कमाने के अखाड़े में उतर पड़े हैं। उनकी आत्मा को कौन जगावे और कौन उन्हें पापों के गर्त्त में जाने से रोके? महात्मा गांधी जैसे महापुरुष बार बार जन्म नहीं लिया करते। वे तो युग प्रवर्त्तक होते हैं। उनके नवीन युग का प्रचार करनेवाला सर्वोदय समाज इन की फरियाद ले जाय तो शायद रेलवे विभाग के विधाता इस ओर ध्यान दें और इन निरपराध पशुओं पर होने वाला अत्याचार दूर हो सके।

---

एक लघु कथा—

## घास और घी

ले० श्री प्रताप साहित्यालंकार

"बड़ी भूख लगी है भाई जान।"—अहमद बोला।

इंफाल का मोर्चा। नदी के दोनों किनारे जंगलों में फौजों की जमात। एक ओर बम, तोप, गोले, टैंक, राइफलें आदि युद्धोपयोगी अस्त्रशस्त्र की भरमार और दूसरी ओर सामान्य आवश्यक वस्तुओं की भी कमी। कोई फौज पीछे हटना नहीं चाहती थी।

"चिंता क्या! अभी पेड़ों में छाल तो हैं। वह देखो ……।"—दूसरे सैनिक ने कहा। एकबारगी कई राइफलें गरज उठीं। एक ओर अजाद हिंद की फौज थी और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार के टुकड़-खोर हिंदुस्तानी सैनिक। गुलामी को मजबूत बनाने वाले भारतीय सिपाहियों ने एक बोर्ड पर लिख कर ऊँचा उठाया।

"मूर्खो, तुम जापानी फंदे में अन्नदाना बिना मर जाओगे। हमारे दल में मिल जाओ। यहाँ तुम्हें अच्छी रोटी और उमदा घी मिलेगा।"

उसे पढ़ कर अहमद तिलमिला उठा। उसने लिख कर जवाब दिया—'हम अजाद हिंद के अजाद सैनिक हैं। आजादी के लिए हम बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार हैं। गुलामी के घी से आजादी की घास ही हमें अधिक प्यारी है।'

---

[ शेष पृष्ठ ४ का ]

तो पहले तो मण्डल के शाखा दफ्तर से प्राप्त करने प्रयत्न करें। यदि वहाँ भी मिलने में किसी तरह की कठिनाई हो मण्डल के प्रधान कार्यालय निवारण आश्रम, राँची से प्राप्त करें। आशा है, सभी लोग मुस्तैदी से इस कार्य को सम्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पंचविध कार्यक्रम

आचार्य कि० घ० मशरूवाला

सर्वोदय सम्मेलन, शिवरामपल्लीके सम्मेलनमें भाग लेकर आये हुए कुछ भाइयोंने जो सुनाया, उससे ऐसा मालूम होता है कि विनोबा और रचनात्मक कामके दूसरे नेताओंने जनता के सामने कामका एक पंचविध कार्यक्रम पेश किया है। विनोबाने उसे अपनी सूत्रशैलीमें एक श्लोकार्ध में इस तरह संक्षिप्त किया है।

"अन्तःशुद्धिः, बहिःशुद्धिः, श्रमः, शान्तिः, समर्पणम्।"

(भीतरी शुद्धि, बाहरी शुद्धि, श्रम, शान्ति और समर्पण)

१ अन्तःशुद्धिः- वही चीज है जिसे दूसरे शब्दों में हमने शुद्ध व्यवहार आन्दोलन कहा है।

अन्तः शुद्धि उसका अपने अंदर होनेवाला परिणाम है और शुद्ध व्यवहार या प्रामाणिक जीवन बाह्य जगतमें दिखनेवाला परिणाम। उसमें लोगोंको यह आदेश है कि वे धन कमाने या सुख-सुविधाओंकी प्राप्तिके लिए अशुद्ध उपायोंका अवलम्बन न करें, और इस हेतु की सिद्धिके लिए मिलकर सामूहिक ढंगसे काम करें। देशमें आज जीवन की अनेक आवश्यक वस्तुओंकी तंगी है। जिनके पास उनका भंडार है, वे इस तंगीका फायदा उठाकर, इन चीजों की उचितसे अधिक कीमत वसूल करना चाहते हैं। उनका हेतु, दूसरेके कष्टकी परवाह किये बिना, भरसक जल्दी और आसानी से हो सके उतना पैसा कमाना है। यह व्यवहार एकदम समाज-विरोधी और स्वार्थी है। इसके सिवा जिनके पास पैसा है, वे दूसरोंके पहले ही अपने आरामकी व्यवस्था कर लेनेके लिए उचित से ज्यादा दाम देकर चीजें खरीदते हैं; इस तरह वे अपने फाजिल पैसेका लाभ उठाते हैं और गरीबों को उनके इस कामसे जो तकलीफ होती है, उसका बिलकुल विचार नहीं करते। यह भी स्वार्थी और समाज-विरोधी व्यवहार है। ऐसी हालत में किसी भी तरह सर्वोदय नहीं हो सकता। नियंत्रण हो या न हो, इस परिस्थिति के रहते मनकी शांति और सुख सम्भव ही नहीं है। इसमें कोई प्रगति नहीं हो सकती, योजनाएँ बनती रहें, उनका अमल नहीं हो सकता। शांति और व्यवस्था या वैयक्तिक अथवा देश की स्वतंत्रता की रक्षा भी इसमें नहीं हो सकती। विज्ञान कुदरती हृदय और फेफड़ों की जगह कृत्रिम हृदय और फेफड़ोंकी रचना शायद कर दे, पर प्रामाणिक जीवन और समाजधर्मकी भावनाके बिना ही जीवन सुखमय हो जाय, ऐसा कोई उपाय कहीं कोई नहीं कर सकता। इसलिए यह जरूरी और अनिवार्य है कि हम संकल्पपूर्वक शुद्ध व्यवहारके पालनकी पूरी कोशिश करें। यह कोशिश वैयक्तिक और सामूहिक दोनों तरहकी होनी चाहिये। दूसरोंकी आवश्यकताओं और सार्वजनिक हितकी चिंता करना भी हमें सीख लेना चाहिये। साथ ही हमें शुद्ध व्यवहारके पालन और अन्याय तथा असत्का प्रतिकार करनेमें एक दूसरे का सहयोग करना चाहिये और बल पहुंचाना चाहिये।

२ बहिःशुद्धिः-सर्वोदयका स्वच्छता का कार्यक्रम है। हम लोगोंमें वैयक्तिक स्वच्छता का बहुत आग्रह है, ऐसी हमारी कीर्ति है। हमें प्रतिदिन स्नान करने, मुंह-हाथ धोने, साफ धुले हुए कपड़े पहिननेकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आदत है। लेकिन यह भी सब लोगोंमें नहीं पायी जाती, और उसका भी विकास एक सीमा तक ही हुआ है, पूरा-पूरा नहीं। सार्वजनिक सफाई और स्वच्छताका बोध तो वैयक्तिक स्वच्छताकी जिनकी प्रतिष्ठा है, उन लोगोंमें भी अभी अभी अंकुरित होने लगा है। सामान्य जनतामें उसकी दृष्टि बहुत ही कम है और मुख्यतः यही कारण है कि देशमें बार-बार महामारियां सिर उठाती रहती हैं, बहुतसे रोग भी उसीके फल हैं। हमारे समाजमें बालमृत्यु की बड़ी तादाद, शारीरिक निर्बलता, अकाल बुढ़ापा और अल्पायु आदि के लिये भी यही चीज जिम्मेदार है। सर्वोदयके निर्माणमें हमारी दूसरी बड़ी आवश्यकता वैयक्तिक और सामुदायिक जीवनमें बहिःशुद्धिके लिये सतत कार्यक्रम की है।

**३ श्रमः--** सर्वोदयकी तीसरी बड़ी शर्त है। अपनी तथाकथित शिक्षा से हमने जो सभ्यता पायी है उसने हमें इसप की कहानियोंके उस हरिण जैसा बना दिया है जिसे अपनी पतली टांगोंकी शरम लगती थी। अपने प्राण बचानेके लिये यद्यपि ये टांगें ही उसकी सहायक थीं लेकिन उसे लगता था कि वे उसके सुरूप देहका कलंक है। नतीजा यह हुआ कि यद्यपि उसकी विनम्र और स्वामीभक्त टांगोंने उसे बचानेकी बड़ी कोशिश की, तब भी उसके भव्य सींगोंने उसे एक झाड़ीमें उलझा ही दिया और शिकारी कुत्तोंने आकर उसे चीर डाला। हमने भी इस तरह सदियों तक श्रमकी प्रतिष्ठा और उसकी उपयोगिताके नाशकी पूरी कोशिश की है; और जो लोग कड़ी मेहनत करके, हमारे लिये, पीढ़ी दर पीढ़ी, जीवनकी सारी सुविधायें, अन्न, वस्त्र, मकान, और साज-सामानकी वस्तुएँ देते रहे हैं, उनकी हमने न सिर्फ उपेक्षा की है, बल्कि उन्हें दबाया है और अपमानित भी किया है। जो हमारे कपड़े धोते हैं, बरतन मांजते हैं, गोशालाएँ और गलियाँ झाड़ते हैं, टट्टियाँ साफ करते हैं, कपड़े, बरतन और जूते बनाते हैं, वे ही प्रतिष्ठाकी सबसे निचली सीढ़ी पर ढकेले गये हैं। हम उन्हें अनादर की दृष्टिसे देखते हैं, उनके साथ उद्दंडतासे पेश आते हैं, समाजमें उन्हें अपमानित करते हैं। मन्दिरों तकमें, जहाँ कि हम और वे दोनों सिरजनहारकी पूजाके लिये इकट्ठे होते हैं, या तो उन्हें कोई स्थान नहीं दिया जाता, या बड़ी दूरी पर रखा जाता है। धन, सत्ता, और पोथी-पाण्डित्यको ही सारा सम्मान दिया जाता है। **परिणामतः उत्पादन घटा है, वैभव और विलासकी ओछी प्रवृत्ति बढ़ी है, और अगरचे मेहनत कोई नहीं करना चाहता, हरएक आदमी उन सुविधाओं को हासिल करने की इच्छा करता है जो कड़ी मेहनत से पैदा होती है।** यह कैसे सम्भव है? हम चाहे अपने खुले हाथों परिश्रम करें, या यंत्रों और औजारोंकी मदद लें, मेहनत तो हमें करना ही चाहिये। श्रमकी इच्छा और क्षमताको संस्कृत मन और विकसित शरीरका लक्षण मानना चाहिये।

इस कार्यक्रमका असर कई तरहसे हो सकता है। अन्न, फल और भाजियाँ, दूध और घी, गुड़, तेल, कपड़े आदि हम पैदा करना चाहते हैं। घर, स्कूल, नालियाँ, टट्टियाँ, सड़कें और पुल बनाना चाहते हैं। इन कामों के लिये ईंट, गारा, इमारती लकड़ी आदिकी जरूरत महसूस करते हैं। कुवें, नहरें और जलाशय आदिका निर्माण करना चाहते हैं। हम अन्नके लिए अपनी जमीन का मुंह जोहते हैं, और जमीन खादके लिये हमारा मुंह ताकती है। तो हमें जमीनको खाद देना चाहिये। इस तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनेक काम हैं, और इनमें से हरएक काम शरीर-श्रमकी अपेक्षा करता है। यदि श्रमके साथ औजारों की मदद मिलती है, तो वह मदद हम खुशीसे लें, लेकिन औजार न हों तब निरुपाय न हों, हमारे हाथ ही, यदि हमारा संकल्प सच्चा है, तो काफी पैदा कर सकते हैं। औजारों और यांत्रिक साधनोंका तिरस्कार हमें नहीं करना है, पर पहले हाथोंको काममें जुट जाना चाहिये। यह है श्रम-निष्ठा।

४ शांतिः—हमारे कार्यक्रम का चौथा अंग है। यहां शान्ति शब्दका प्रयोग युद्ध-निवारणके संकुचित अर्थमें नहीं है। युद्धका निवारण तो करना ही है, लेकिन आखिर युद्ध, हम छोटे-छोटे दल बनाकर जिन छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते रहते हैं, उनकी ही एक बड़ी आवृत्ति है। यदि ये छोटे-छोटे समुदाय शान्तिपूर्वक रहना, अपने छोटे झगड़े आपसमें निपटाना, और अपनी छोटी दुनियासे भय और द्वेष वर्जन करना सीख लें, तो बड़ी दुनियामें हो रहे बड़े युद्धोंकी जड़ ही कट जाय।

शान्तिका काम ऐसा नहीं जिसे हमें प्रसंगवश उस विशेष अवसर पर ही करना है जिसे 'शान्ति-सेना' कहते हैं। स्थानीय जनताके हर वर्गसे सजीव और गहरा सद्भाव निर्माण करना, और कठिनाई में पड़े हर प्राणीकी सेवा नित्य-प्रति करते रहना ही वह काम है। प्रतिदिन अपने आश्रितोंकी कुशल-खबर लेने जानेवाले डाक्टर, नर्स, सफाई-निरीक्षक, न्यायाधीश और सेठ आदि सभीके काम एकसाथ करनेवाले आदमीसे हम शान्ति-सेवककी तुलना कर सकते हैं। शान्तिका सैनिक हर संकट-ग्रस्त व्यक्तिका स्वाभाविक मित्र है।

५ समर्पणः— इस कार्यक्रम का अन्तिम अंग है। यानी गांधीजीकी वार्षिक तिथि पर अपनी हाथ-कती सूत-मालाकी भेंट। अगर यह सूत-माला किसीने अपने हाथों नहीं काती है, तो समर्पणका उद्देश्य, पूरा नहीं होता। अपने हाथ-कते सूतकी इस छोटी मालाकी महिमा छोटी नहीं है। वह अंजलि देने वालेकी गांधीजीके प्रति भक्ति, सर्वोदय आदर्शमें श्रद्धा, सेवा-भावना, श्रम-निष्ठा अहिंसक और शोषणहीन समाज व्यवस्था तथा अमीर और गरीब की समानतामें विश्वासकी द्योतक है। उससे यह भी प्रगट होगा कि सर्वोदय सेवकने जनतामें कितना काम किया है। आगामी सर्वोदय मेलेमें ज्यादासे ज्यादा आदमी इस आयोजनमें भाग लें और अपने हाथ-कते सूतकी गुंडी भेंट करें, इसकी पूरी कोशिश हमें करना चाहिये।

(हरिजन सेवक)

---

'जो बन्दूक धारण करता है और जो उसकी सहायता करता है, दोनों में अहिंसा की दृष्टि से कोई भेद नहीं दिखाई पड़ता। जो आदमी डाकुओं की टोली में उसकी सेवा करने, उसका भार उठाने, जब वह डाका डालता हो तब उसकी चौकीदारी करने, जब वह घायल हो तो उसकी सेवा करने का काम करता है, वह उस डकैती के लिए उतना ही जिम्मेदार है जितना खुद वह डाकू।'

महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# शक्तिमान शब्द

## आचार्य विनोबा भावे

### स्वराज्य शब्दकी महिमा

हम सर्वोदयके यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी में आ पहुंचे हैं। सर्वोदय अेक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाजके सामने जब कोई महान शब्द होता है, तो उससे समाजको शक्ति मिलती है। शब्दकी महिमा अगाध होती है। जिस समाजके सामने कोई बड़ा शब्द नहीं होता, वह समाज शक्तिहीन और श्रद्धाहीन बनता है। शब्दकी शक्तिका यह अनुभव हर जमातको और हर देशको हुआ है। हमारे देशमें चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सबने देख ली। १९०७ सालमें स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजीने हमें दिया और १९४७में उसका दर्शन हमें मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैदराबाद वालोंने भी देख लिया। हैदराबाद वाले बहुत दिनोंसे सोच रहे थे कि बाकी सारे देशमें स्वराज्यका उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा। उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभरमें पैदा हुई थी, उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

### स्वराज्य बादका शब्द

जिस तरह स्वराज्य शब्दका कार्य हिन्दुस्तानमें हो गया और उसके साथ-साथ महात्मा गांधीजीका अस्त हुआ। उनके जानेके पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तक तो सूझता ही नहीं था कि अिस देशका क्या होने वाला है। लेकिन परमेश्वरकी कृपासे सब लोग स्थिर हो गये और अब जैसा समय आ गया है कि देशकी प्रगतिका अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है, उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजीके जानेके बाद चंद लोग अिकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देशको सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजीका ही रचा हुआ था। और उसकी जड़ हिन्दुस्तानकी संस्कृतिमें प्राचीन कालसे हमारे सामने था और परदेशियोंका यहांका राज्य हटानेमें ही हम सब लगे हुए थे। हमारे खेतमें तरह तरहके निकम्मे झाड़ उगे हुए थे। उनको काटनेका जो काम हुआ उसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्य प्राप्तिके बाद उस खेतमें परिश्रम करना है और बीज बोना है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि लोगोंका यही खयाल है कि अब तो फसल काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेतीमें परिश्रम करके फसल लाना है, उसीका नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न आता, तो हम सारे ध्येयशून्य बन जाते।

### स्वराज्यके बादका नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्दने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। वह उद्देश्य अैसा है जिसमें सब लोगोंका समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्रायमें स्वराज्यप्राप्तिके बाद हिन्दुस्तानमें जो तरह-तरहके राजकीय पक्ष पैदा हुए हैं, उनकी कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्यके बाद हिन्दुस्तानमें जो असंख्य समस्यायें पैदा हुईं, उनमें से अनेक नैतिक थीं। यानी जनताकी नीति गिरी हुई थी, उसका हमें तरह-तरहसे अनुभव आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहां नीतिहीनता और शीलभ्रष्टताका दर्शन होता है। जिसके लिये मैं जनताको दोष नहीं देता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीतिभ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीतिभ्रष्टताका दर्शन अगर सर्वत्र होता है, तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थितिमें मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थितिकी हो चाहे जनताकी हो, लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य-प्राप्तिके बाद सब लोगोंका शील कायम रखना, आपसमें प्रेमभाव कायम रखना आदि बिलकुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्य के लिए मौका ही नहीं रहता है। जब समाजका नैतिक स्तर और आपसका प्रेमभाव बढ़ेगा, तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आयेगा। जिसलिये जिन-जिन लोगोंसे जब बात करनेका मौका मिलता है, तब उन्हें मैं यही कहता हूं कि भाईयो, यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ और केवल अिन्सान बन जाओ

## आजका परदेशावलम्बी स्वराज्य किस काम का ?

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। कभी मुझे छोटे-छोटे गांवोंमें जाना होता है, तो कभी शहर देखनेको मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गांवों की परिस्थिति क्या है। देहातमें एक तरहका दुःख है तो शहरोंमें दूसरी तरहका। देहात में देखता हूं कि लोगोंको कपड़े पहननेके लिये नहीं हैं और शहर में देखता हूं कि लोग शराबी बन रहे हैं। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुःख है, तो शराबी होना कोई सुखकी बात नहीं है। तरह तरहके व्यसन शहरोंमें बढ़ रहे हैं। स्वराज्यके पहले स्वदेशी विदेशी का जो फर्क हम करते थे, वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं, खरीद लेते हैं। स्वराज्यके बाद हमारे शहरोंकी अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओंसे भर जाय, तो यह स्वराज्य किस कामका ? और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये,

अमेरिका स्थित भारतीय राजदूत श्री मती विजय लक्ष्मी पण्डित के हाथों में एक अमेरिकन अधिकारी गेहूँ अर्पित कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आपके स्वराज्य पर कभी अक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा, क्योंकि जब तक उनका माल यहां खपता है तब तक दूसरे देशोंको क्या फिक्र पड़ी है कि आपका देश कब्जेमें रखकर सारा जिम्मा उठायें। और जिन दिनों किसी देशको अपने कब्जेमें रखना कठिन काम हो गया है। इसलिये दुनियाके बड़े-बड़े देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है, तो राजकीय सत्ता हासिल करनेमें कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्यका कोई अर्थ ही नहीं रहेगा, अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओंसे भरे रहें। यह है हमारे शहरोंका हाल।

उधर देहातका हाल यह है कि उन लोगोंके पास कोई धंधे नहीं हैं। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे, वे शहरवालोंने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहां बैठे हैं वह एक धान कूटनेकी मिल है। अगर धान कूटनेका धंधा देहातमें चला, तो लोगोंको काम मिलेगा और वह भी शहरमें गया, तो देहातवाले बेकार हो जायेंगे।

**तो उधर परदेशी वस्तुओंसे शहरके बाजार भर रहे हैं। उनके विरोधमें शहरियोंका पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहातके धंधे डुबानेमें है**

## देहातके धंधे रिजर्व रहें

होना यह चाहिये कि देहातके धंधोंको देहातमें रखना चाहिये और परदेशसे जो माल आ रहा है उसके विरोधमें शहरोंमें धन्धे खड़े होने चाहिये। आजकी हालत यह है कि **परदेशके लोग हमारे शहरोंको लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातको लूटते जा रहे हैं।** अगर इससे उलटा बना यानी परदेशके धंधेके विरोधमें शहरवाले खड़े हो गये और देहातके धंधोंको उन्होंने बचा लिया, तो देहात और शहर दोनोंका सहयोग होगा और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हमारे कुछ जंगलोंको जैसे रिजर्व रखते हैं, वैसे देहातके लिये कुछ धंधे रिजर्व रखने चाहियें। जिस तरह देहातके धंधोंको हमने सुरक्षित नहीं रखा, तो देहात उजड़ जायंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरोंकी क्या हालत होगी यह आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धिसे भी आपको देहातकी रक्षा करनी चाहिये।

## देहात उजड़ जाय तो शहर और देहातकी लड़ाई अटल

तो हम लोगोंकी अक्ल अब इस बातमें लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनोंका सहयोग कैसे हो और दोनों मिलकर परदेशी माल के विरोधमें कैसे शक्ति पैदा करें। यह नहीं हो रहा है। **मुझे देहात वालोंको कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियोंके बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाईको नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियोंका रवैया नहीं बदला, तो यह लड़ाई अटल है,** यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

## सर्वोदयका ध्येय

मैं उस लड़ाईको नहीं चाहता, इसलिये सर्वोदय के प्रचारके लिये आपको समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस वक्त इस शब्दमें जो शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है, उसका आप चिंतन करेंगे तो वह आपको महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देशमें सब जगह शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देशमें एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गोंके झगड़ोंकी बात निकालते हैं या कोई खास लोगोंके हितकी ही बात सोचते हैं तो हिन्दुस्तान सुखमें नहीं रहेगा। सरकारी कानूनोंमें जो भी लूपहोल (छिद्र) मिलते हैं, उनका लाभ उठानेका व्यापारी सोचते हैं। **इस तरह व्यापारी और सरकार दोनोंके बीच अक्लकी लड़ाई चलेगी और इन दोनोंकी लड़ाईके बीच देहातके लोग मारे जायेंगे।** जरूरत इस बातकी है कि व्यापारियोंकी ताकत देहातके हितमें लगे, सरकारकी ताकत देहातके हितमें लगे, और शहरियोंकी भी ताकत देहातके हितमें लगे। और देहाती लोग, शहरके लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओंका और विचारोंका जो आक्रमण हो रहा है, उसके विरोधमें खड़े हो जायं।

तो स्वराज्यके बाद सर्वोदयका क्या काम है, यह मैंने थोड़ेमें आपको समझाया। **हमारे देशमें चार शक्तियां काम कर रही हैं। एक है सरकारकी, दूसरी है व्यापारियोंकी, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियोंकी। इन सब शक्तियों का योग साधना सर्वोदयका काम है।** अब आप ही सोचिये कि जब सर्वोदयमें इतना अर्थ भरा है तो इसको छोड़कर और किस शब्दकी आपको जरूरत है? और किन राजकीय पक्षोंकी आपको आवश्यकता है? सर्वोदय कोई राजकीय पक्ष नहीं है। लेकिन सारे राजकीय पक्षोंको पेटमें निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा में सबका हृदय एक बनाना, और सबकी शक्तियोंका समवाय सिद्ध करना सर्वोदयका लक्ष्य है।

भाईयो, मैं आशा करता हूँ कि यहांका हरेक जवान और प्रौढ़ इस शब्दसे स्फूर्ति पायेगा और इसके लिये जीवनभर कोशिश करेगा। इस शब्दसे जो स्फूर्ति मिलती है, वह रामनाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदयमें रम रहा है।

(हरिजन सेवक)

---

'आहिंसा एक पूर्ण स्थिति है। सारी मनुष्य जाति इसी एक लक्ष्य की ओर, संभवतः, परन्तु अनजान में जा रही है। मनुष्य जब अपने तईं साक्षात निर्दोषिता की मूर्त्ति बन जाता है तब वह दैवी पुरुष नहीं हो जाता। वह तो कुछ अंशों में मनुष्य और कुछ अंशों में पशु है। हम घूँसे के बदले घूँसा जमाते हैं और हमारे क्रोध का पारा भी उतना ही चढ़ जाता है और इसे हम कहते हैं कि हमने मनुष्य जाति के उद्देश्य की हमने पूर्त्ति की है अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। यह तो अज्ञान नहीं; अहंकार है।.....आवश्यक कर्त्तव्य तो संयम है।'

**महात्मा गांधी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गांधी जी ने मंत्रियों को कहा था

ले० श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी

( स्वाध्याय विभाग, अ० भा० चर्खासंघ )

"यह पूछना जायज है कि जो कांगरेसी मंत्री अब ओहदों पर आगये हैं, खद्दर और दूसरे देहाती धंधों के लिये क्या करेंगे ? मैं तो इस सवाल को और भी फैलाना चाहता हूं ताकि यह हिन्दुस्तान की तमाम प्रांतीय सरकारों पर लागू हो। गरीबी तो हिन्दुस्तान के सभी सूबों में आम है। इसी तरह आम जनता के उद्धार के जरिये भी हैं। अ० भा० चर्खा संघ और अ० भा० ग्राम उद्योग संघ का ऐसा ही तजरबा है। एक यह तजबीज भी आयी है कि उस काम के लिये एक अलग मंत्री होना चाहिये। क्योंकि इसके ठीक संगठन में एक वजीर का पूरा समय लग जायगा। मैं तो इस तजबीज से डरता हूँ। क्योंकि अभी तक हम अपने खर्च के अंगरेजी पैमाने को छोड़ नहीं सके हैं। अलग मंत्री रखा जाय चाहे नहीं पर इस काम के लिये अलग महकमा तो बेशक जरूरी है। आज कल खाने और पहनने के संकट के जमाने में यह महकमा बड़ी मदद कर सका है। अ० भा० चर्खा संघ और अ० भा० ग्राम उद्योग संघ के विशेषज्ञ मंत्रियों को मिल सके हैं। आज यह मुमकिन है कि थोड़े समय में थोड़ी से थोड़ी रकम लगाकर तमाम हिन्दुस्तान को खादी पहना दी जाय। हर सूबे की सरकार को गाँव वालों से कहना होगा कि उन्हें अपने काम के लिये अपना खद्दर आप तैय्यार कर लेना चाहिये। इस तरह अपने आप स्थानीय उत्पादन और वितरण हासिल हो जायगा। और शहरों के लिये बेशक कुछ न कुछ बच रहेगा जिससे देशी मिलों का भार कम हो जायगा तब ये मिलें दुनियाँ के दूसरे हिस्सों में कपड़े की जरूरत पूरी करने में हिस्सा लेने के काबिल हो जायंगी।

## यह नतीजा कैसे पैदा किया जा सकता है ?

सरकारों को चाहिये कि गाँव वालों को ऐलान कर दे कि उनसे यह आशा रखी जाती है कि वे अपने गाँव की जरूरत के लिये एक निश्चित तारीख के भीतर खद्दर तैय्यार करें। उसके बाद उनको कोई कपड़ा (मिल का) नहीं दिया जायगा। सरकार अपनी तरफ से गाँव वालों को बिनौले या रूई (जिसकी भी जरूरत हो) देगी और तैय्यारी के औजार भी ऐसे दामों पर देगी जो आसानी से वसूल होने वाले किस्तों में लगभग पाँच साल या इससे ज्यादा में अदा हो सके। सरकारें जहाँ कहीं जरूरत हो सिखाने वाले भी उन्हें दे और यह जिम्मा ले कि गाँव वालों के पास उनकी जरूरत से ज्यादा खादी तैय्यार होगयी है तो अतिरिक्त खादी सरकार खरीदेगी। इस तरह हलचल के बिना और बहुत थोड़े ऊपरी खर्च से कपड़े की कमी पूरी हो जायगी।

गाँवों की जांच पड़ताल कर ऐसी चीजों की फेहरिस्त तैय्यार की जायगी जो किसी मदद के बिना या थोड़ी मदद से स्थानीय बन सकती है जिनकी जरूरत गाँव के लिये या बाहर बेचने के लिये हो। जैसे घानी का तेल और खली, घानी का जलानेवाला तेल, हाथ कुटा चावल, ताड़ीका गुड़, मधु, खिलौने, मिठाइयाँ, चटाइयाँ, हाथ से बना कागज, गाँव का साबुन आदि। अगर इस तरफ काफी ध्यान दिया जाय तो उन गाँवों में जिन में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ज्यादा उजड़ चुके हैं या उजड़ रहे हैं जीवन की चहल पहल पैदा हो जाय और उनमें अपनी और हिन्दुस्तान के शहरों और कस्बों की बहुत ज्यादा जरूरतों को पूरा करने की जो जादा से ज्यादा शक्ति है दिखायी पड़ने लगे।"

यह लेख गांधीजी ने २२—४—४६ को "मंत्रियों का कर्त्तव्य" शीर्षक से लिखा था। दुःख है हमारे मंत्रियों ने आजतक इस पर ध्यान नहीं दिया। अगर हमारी भारत और प्रादेशिक सरकारें गांधीजी की राय के अनुसार काम करतीं और मिलों तथा मिल मालिकों की माया से दूर रहतीं तो आज खाने कपड़े के लिये जैसा हाहाकार है, नहीं होता। कहते हैं सवेरे का भूला यदि शामको घर आजाय तो उसे भूला नहीं कहते। हो चुका सो हो चुका, अब भी हमारी सरकारें स्वावलंबन का गांधी-मार्ग अपनावें तो देश सुखी हो, भरपूर हो।

एक बात यह भी ध्यान में रखने की है कि हम जनस्वावलंबन के द्वारा जनता को सुखी, आत्मनिर्भर और तेजस्वी बनाना चाहते हैं। हम यह भी चाहते हैं कि एक दिन जनता को सरकारों की जरूरत ही नहीं रह जाय। ऐसी हालत में हम सरकारी सहायता और नेतृत्व की चाह भी क्यों रखें? क्यों नहीं हम मिल पड़ें और जनबल को ऐसा संगठित करें जिससे जनता सरकारी या अन्य बाहरी सहायता पर निर्भर न रहे। किसीको लूटे खसोटे बिना अपनी मेहनत से सारी प्रजा सुखी हो, परिपूर्ण हो। ऐसे साधु संकल्प में सरकार मदद दे ठीक, नहीं दे वह भी ठीक। हम सब राजनीतिक उद्देश्य से कमियों के लिये सरकार को गाली न दे अपनी सामर्थ्य की कमी पूरी करें।

---

# कौन बीज कितना बोया जाता है?

१ पाँच पसेरी बिगहा धान,
तीन पसेरी जड़हन मान।

२ सवा सेर बिगहा सावाँ जान,
तिल्ली-सरसों अँजुरी मान।

३ जौ-गेहूँ बोए पाँच पसेर
मटर की बीघा तीसे सेर।

४ दो सेर मोथी, अरहर, मास,
डेढ़ सेर बीघा बीज कपास।

५ वरें को दो सेर बो आव,
डेढ़ सेर बीघा तीसी नाव।

६ बोवै चना पसेरी तीन,
सेर तीन की जुँधरी कीन।

७ डेढ़ सेर बजरा, बजरी सांवा,
कोदो, ककुन सवैया बवा।

८ यहि विधि से जब ववै किसान,
दूना लाभ खेत में जान।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# हमारा एक गरीब गाँव : मोरांगी

## ले० श्री नारायण जी

राँची-हजारीबाग-रोड पर राँची से ५२ मील की तथा हजारीबाग से ८ मील की दूरी पर सड़क के किनारे ही मोरांगी नामक एक छोटा-सा गाँव है। राँची-हजारीबाग जैसे चालू सड़क के होते हुए भी अपनी गरीबी के कारण उस गांव ने आजतक किसी पथिक का ध्यान आकर्षित नहीं किया। यह १०० वर्ष का पुराना गांव है। पर पिछले साल तक इस गाँव में किसी ऐसे आदमी को आने जाने का मौका नहीं मिला जिन्हें आज हम नेता या अफसर के नाम से जानते हैं।

इस बस्ती में ७४ घर हैं जिनमें २४ उरांव, १६ भुइयां, ४ तेली, ३ महतो, ३ नउआ, ३ बढ़ई, ४ कोयरी ३ अगरिया, ४ संताल, ३ कलाल और ३ ब्राह्मण के हैं। इस गांव के जमीन्दार एक भूमिहार ब्राह्मण हैं।

जमीन्दार और रैयतों की लड़ाई पुरानी है। दोनों में कभी पटा नहीं। मुकद्दमे बराबर चलते ही रहते है। साल में कचहरी के पीछे करीब १००० रु० इस गरीब गांव के खर्च हो जाते हैं। गांव के जमीन्दार रहते हैं यहाँ से २०-२५ मील की दूरी पर; किन्तु उनकी कचहरी मोरांगी में ही है। यह मकान जीर्ण शीर्ण है। एक कोना ढहा हुआ भी है। मकान में छेद भरे हुए हैं। पर ये सब छेद रैयतों की आहों से से बने हुए हैं, ऐसा मालूम पड़ता है।

गांव की जमीन उपजाऊ है। करीब ३०० एकड़ जमीन है। धान खेत काफी है। कुछ को तो ४०-५० बीघा भी जमीन है पर भुइयों को छोड़ सभी को कुछ न कुछ खेती जरूर है। फिर खेती में कस कर पैदा किया जाता तो इस गांव को धनी होने में एक साल से २ साल नहीं लगते। पुराने जमाने का एक सुन्दर पोखरा है। आज भी उस पोखरे में कमल के फूल लहलहा रहे हैं। छोटानागपुर में कमल फूल वाला पोखरा दुर्लभ है पर मोरांगी का कमल फूल वाला यह पोखरा भी कमल के पत्ते का ही काम करता है। जिस तरह कमल के पत्ते पर पानी गिरता है पर उसका कहीं पत्ते पर लेश भी नहीं रह जाता है। ऐसा मोरांगी गांव का यह पोखरा है। गांव वाले का उससे कोई भी फायदा नहीं। इसका एक किनारा टूटा हुआ है। इसलिये बरसात में पानी टिकता नहीं है। इसी लिए इससे न तो सींचाई का काम होता है और न नहाने धोने का ही काम हो सकता है। इस पोखरे के जल से जानवरों को पानी पीने की थोड़ी सुविधा हो सकती थी; किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि इससे यह भी काम नहीं लिया जा सकता है। पोखरे में इतना अधिक कीचड़ है कि जानवर या मनुष्य जो भी उसकी शरण में जाते हैं, फँस जाते हैं। शायद इसी प्रकार के दलदल वाले पोखरे में कभी गजराज फंसा था और उससे निकालने के लिए स्वयं भगवान ही को आ ा पड़ा। मोरांगी का पोखरा उसी दृश्य की याद दिलाता है। एक किनारे का बाँध थोड़ा सा टूटा हुआ है। उसको न तो जमीन्दार बना सकता है जिसका यह पोखरा है और न रैयत ही बना सकते हैं जिनका उस पर कोई हक नहीं। फल यह है कि इस गर्मी के जमाने में भी उस गांव के लोग दस-पन्द्रह दिनों के बाद स्नान कर पाते हैं। जानवरों को पीने का भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पानी नहीं मिलता और वे यों ही दिनभर भटकते फिरते हैं। अब वे इतने ठिगने और कमजोर हो गये हैं कि उनसे आवश्यक काम भी नहीं लिया जा सकता। इसी गांव में सिंचाई के लिए एक बड़ा सा आहर भी है किन्तु चूहे ने उसके एक किनारे में छेद कर दिया है। इसी छेद के कारण बरसात में वहां पानी नहीं टिक सकता और गांव जमीन्दार तथा रैयतों के मनो-मालिन्य के कारण किसी ने इस पर १० छौ मिट्टी भी नहीं दी। इस छोटी सी मिहनत के अभाव में आज गांव में अकाल पड़ा हुआ है। लोगों के पास खाने को नहीं है। रुपये में सेर भर भी चावल नहीं मिलता। भुइयां और उरांव तो इस समय अन्न और जल के बिना छटपटाए चलते हैं। २४ घण्टे में उन्हें एक बार भी भोजन मिलना दूभर हो रहा है।

कपड़े की कमी तो और भी भयंकर मालूम पड़ती है। केवल एक परिवार को छोड़ ७३ परिवार के लोगों के शरीर पर ऐसा भी कपड़ा नहीं है जिसे सभ्य लोग जूता साफ करने के काम में ला सकें। चिथा-चिथा चिथड़ा बना हुआ है और गन्दगी के कारण उसने मिट्टी का रंग धारण कर लिया है। उस वस्त्र को पहन कर स्त्रियां जब धरती पर बैठ जाती हैं तो उनके बाल को ही देख कर आप कह सकते हैं शायद दुखी भारत माता ही बिलखने के लिये बैठी है। धरती और उनके रंग में फर्क निकालना मुश्किल मालूम पड़ता है।

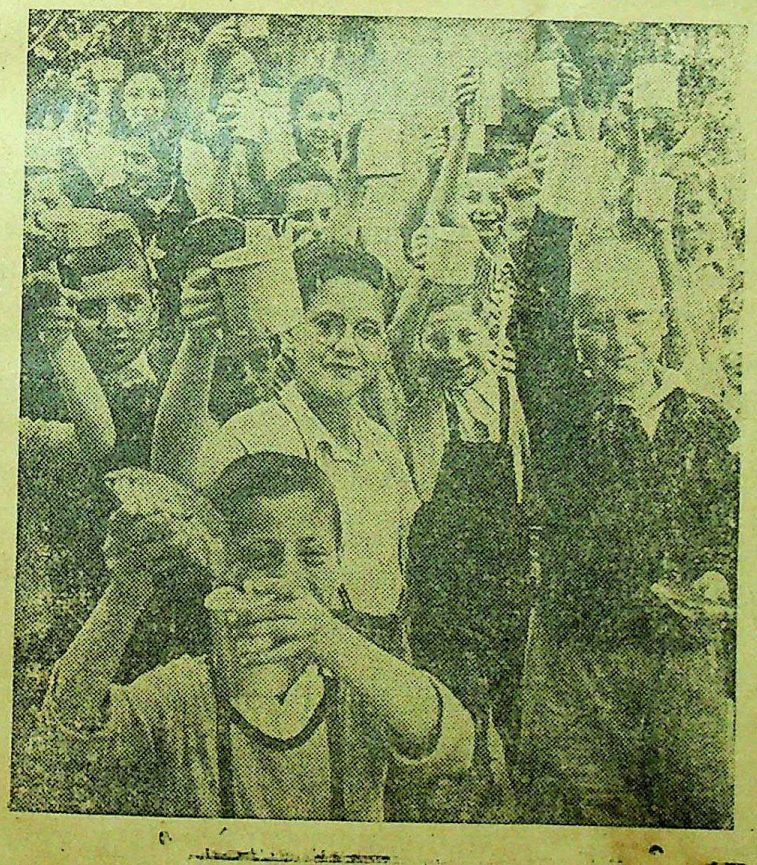

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा भेजे गये दूध को पाकर ये बच्चे कितने खुश हैं? मगडल प्रयत्नशील है कि मोरांगी के बच्चे भी इतने ही स्वस्थ और प्रसन्न हों।

बच्चों की हालत तो और भी दर्दनाक है। मालूम ही नहीं होता कि इनके मां-बाप भी हैं। सभी गन्दे और नंगे रहते हैं। और सड़कों पर जूठन की खोज में लगे रहते हैं। कैसे वे दिन काट लेते हैं यह एक समस्या है। इस तरह यह गांव अत्यन्त कठिनाई में पड़ा हुआ है। और यह गांव वालों की अकर्मण्यता के कारण ही है। मोरांगी का दृश्य तो हमारे सामने आ गया है पर हिन्दुस्तान के लाखों गांव आज इसी मोरांगी की तरह गरीब बन गये हैं। और उनकी अपनी कर्त्तव्य हीनता के कारण अथाह सागर की तरह उनके सामने अकाल, महामारी और नंगापन अपनी ढेव चला चला कर हृदय को दहला रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गांव की इसी समस्या को देखकर आदिम जातिसेवा मण्डल ने अपना रुख बदला है। आजतक मण्डल की ओर से संस्थाएँ कायम की जाती थीं, संस्था का अपना निश्चित स्थान होता था। उसके अपने हाते होते थे। उसी हाते के अन्तर्गत मण्डल के कार्यकर्त्ता काम करते थे। लेकिन मोरांगी में मण्डल ने एक नया कदम उठाया है। वहां भी मण्डल के स्कूल एवं आश्रम हैं। पर इसने अब सारे गांव को ही संस्था मान लिया है। और वहां मण्डल की ओर से यह चेष्टा की जाती है की उस गांव के लोग जागरुक और उद्यमी बन कर अपने गांव को सम्पन्न बनाने की चेष्टा करें। अभी उसी गांव में हजारीबाग जिले के ३० कार्यकर्त्ताओं के लिए एक माह का शिक्षण शिविर खुला था। गांव वाले शिक्षण शिविर के कार्यकर्त्ताओं से घुलमिल गये थे। १५ दिनों में गाँव की सफाई कर दी गयी। खाद के गढ़े बना दिये गये। आहर और पोखरे की मरम्मत का भी काम किया गया। गांव के लोग तथा शिविर के कार्यकर्त्ता इस काम में लग गये थे। अभी ग्राम पंचायत, सहयोग समिति और खादी उत्पति केन्द्र भी यहां खोलने का प्रबन्ध किया जा रहा है। चेष्टा की जा रही है कि गाँव वालों को उत्साहित कर एक गांव को कितना जल्द अकाल तथा नंगेपन की छाया से अलग कर सम्पन्न तथा सुखी बनाया जा सकता है।

---

# हँसिये मत

१ एक सज्जन एक खिलौनेकी दूकानपर गये। कई खिलौने लिये। नौकर सब दिखा रहा था। उसने कपड़ेका एक बन्दर भी दिखाया। खरीदारने दिल्लगीको नीयतसे कहा कि मुझे तो एक सचमुचका बन्दर चाहिये। नौकर मजाक समझ न सका। उसने मालिकको पुकारा—बाबूजी। यहाँ आपकी जरूरत है।

* * *

२ एक हट्टा-कट्टा आदमी भीख मांग रहा था। शामको चित्रा सिनेमाके पास उसने एक युवतीसे एक पैसा माँगा। पढ़ी लिखी युवतीने कहा—'क्या कारण है कि तुम्हारे ऐसा तन्दुरुस्त आदमी भीख माँगता है?' भिखमंगेने कहा—'यही पेशा है जिसमें परिचयके बिना किसी युवतीसे बातचीत की जा सकती है।'

* * *

३ कमल—मैं तो समझता था कि तुम बड़े निशानेबाज हो।

सुरेश—तो क्या नहीं हूँ?

कमल—उस दिन तुमने कहा कि मैं हिरनके दिलमें गोली मार रहा हूँ, मगर लगी उसकी टाँगमें।

सुरेश—तो यह निशानेका दोष नहीं है, मैं समझता था कि उसका हृदय वहीं होता है।

* * *

४ रमेश—कहाँ, कहाँ? इतने गुस्सेमें कहाँ जा रहे हो?

गोकुल—वकीलके यहाँ जा रहा हूँ। उस बदमाश सूरजने मुझको गदहा बनाया है।

रमेश—तब वकीलके यहाँ जाकर क्या करोगे, मवेशीखानेमें जाओ।

* * *

५ जेलर (एक कैदीसे जो चूहेको चना खिला रहा था)—क्या यह चूहा तुमने पाला है?

कैदी—नहीं।

जेलर—तो अपना चना इसे क्यों खिला रहे हो?

कैदी—कल जिस वार्डरने मुझको मारा उसकी उंगली इसने काट खायी। इसीलिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सदाचार से दीर्घायु और सुखी जीवन

ले० पं० देवनारायण मिश्र आयुर्वेदाचार्य

एक सुन्दर भवन में मैला कुचैला आचार विचार शून्य व्यक्ति रहे तो, तब तक उस भवन से लोग प्रभावित हो सकते हैं जब तक उस व्यक्ति पर नजर न गई हो, केवल भवन का ही सौन्दर्य दीख पड़ा हो। उस भवन में उस तरह रहने वाले को देख कर आवास भी घृणा का पात्र हो जाता है। केवल घृणित ही नहीं बल्कि उपेक्षित होकर समय से पहले ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। इसी तरह आचार विचार सम्पन्न साफ सुथरा मनुष्य गन्दा घर में रहे तो कुछ दिन में अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठता है।

ठीक इसी तरह मन और शरीर के विषय में भी कहा जा सकता है। एक के निर्मल होने पर भी दूसरे मैल के साथ रहने से मैला हो जाता है और यह मलिनता आयु का तो नाश करती ही है साथ-साथ सन्तान को भी मलिन बना देती है। अतः दीर्घ आयु और सुखी जीवन के लिये आत्म संयम चाहिये। आज कल रात में बारह बजे तक जागना, दिन में आठ बजे तक सोना, पैखाना जाने के पहले चाय पीना, व्यायाम कतई न करना, भोजन के बाद तुरन्त काम में लग जाना, झूठ बोलना, ठगना आदि अनाचार आत्म संयम के बिना दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इसका प्रभाव न केवल अपनी आयु पर पड़ता है बल्कि भावी सन्तान इतना अधिक प्रभावित होती है कि दुराचार को भी सदाचार ही समझने लग जाती है। फल यह होता है कि ये अनाचार यक्ष्मा (T.B.), सन्निपात ज्वर (Tiphoid), प्लेग और हैजा (Cholera) की तरह जनपद विध्वंस कर रहे हैं। झूठ बोलने और ठगने का कुप्रभाव यहाँ तक हुआ है कि आज बाजार में कोई भी उपयोग की वस्तु विशुद्ध नहीं मिलती। एक तरफ भोजन की वस्तुओं की यह अवस्था है जिस खाद्य पर ही शरीर की स्थिति बनी रह सकती है। दूसरी ओर सिनेमा देखना, रात में जागना, दिन में सोना, आदि अपना कुप्रभाव डाल कर शरीर को तो क्षीण करते ही हैं साथ साथ मन को शरीर के क्षीण करने वाली मशीन बना देते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को "देशी भद्दी और विदेशी अच्छी" कि यह धारणा जो विदेशियों से जकड़ी गई बौद्धिक गुलामी की जञ्जीर है, उसे तोड़ कर श्रद्धा और आग्रह पूर्वक प्राचीन आचार का पालन करना चाहिये। तभी कल्याण हो सकता है, शान्ति मिल सकती है। इन प्राचीन आचारों में आयुर्वेद की दिनचर्या, रात्रिचर्या और सदाचार सबसे अच्छे हैं।

आयुर्वेदाचार्य महर्षिओं की आज्ञा है कि सूर्योदय से एक घण्टा पहले बिछावन छोड़ दें और अपने इष्ट देवता को स्मरण करें। पश्चात् पैखाना से होकर मुंह हाथ साफ करें एवं बारह अङ्गुल के नीम, करञ्ज, बबूल, महुआ, बर, आदि के दतौन से एक-एक दाँत को रगड़-रगड़ कर साफ करें, पर सावधानी से। दाँत के ऊपर वाले माँस में रगड़ न लगे। फिर उसी दतौन के चीरे से या धातुओं के बने जिह्वा निर्लेखन (जिभिया) से जीभ साफ करें और ताजा जल से मुंह भर-भर कर कुल्ला करें तथा इन्द्रियों को साफ करें। तत्पश्चात् व्यायाम करें। जो व्यक्ति नियमित व्यायाम नहीं कर सकते उनके लिये खुली हवा में टहलना आवश्यक है। इतना काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सूर्योदय होते-होते समाप्त कर देना चाहिये।

दाढ़ी बनाना, केश-नख कटाना आदि भी अधिक से अधिक पाँचवें दिन तक हो जाना जरूरी है। इसके बाद अभ्यंग अर्थात् तेल मालीश करने का विधान है। समूचे शरीर की अपेक्षा शिर, कान और पैरों में अधिक अभ्यंग आवश्यक है। उबटन रोम कूप तथा चमड़ी को साफ कर कोमल बनाता है। अतः साबुन की अपेक्षा वह अधिक लाभकारी है। शिर आँवला से धोना ज्यादा लाभदायक है। हेमन्त, शिशिर में गरम पानी से, शेष ऋतुओं में ताजा शीतल जल से स्नान करे पर शिर हर हालतमें शीतल जल से धोना चाहिये। इसके बाद खुरदरे कपड़े से पोंछ कर निर्मल वस्त्र पहन लें। अनन्तर प्राणायाम, सूर्योपस्थान और गायत्री जप करें। यद्यपि इन्हें लोग एक खास जाति का काम समझते हैं पर हैं ये योग क्रिया। इससे शरीर और मन सबल और निर्मल बनते हैं। अतः मानव समाज के लिये ये अत्यधिक उपयोगी हैं।

भोजन नव बजे के बाद और बारह बजे के अन्दर पूर्व भोजन पचने के बाद ही स्निग्ध और गरम अवस्था में करना उचित है। भोजन की मात्रा के विषय में आचार्यों ने इस तरह लिखा है कि पेट के दो हिस्सों को भोज्य वस्तुओं से भरें, एक हिस्सा को जल से और शेष तीसरा हिस्सा वात, पित्त और कफ के सञ्चार के लिये खाली रखना आवश्यक है। क्योंकि वात, पित्त और कफ ही हैं जो भोज्य वस्तुओं को रस, रक्त आदि रूप में परिवर्तित करते हैं। भोजन में बड़ी सावधानी रखने की जरूरत है क्योंकि शरीर की स्थिति ठीक रखने वालों में से ये मुख्य हैं जैसे महर्षि चरक ने लिखा है:—"त्रय उपस्तम्भा (शरीरस्य) आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यम्" अर्थात् भोजन करना, सोना और ब्रह्मचर्य खम्भे की तरह शरीर के धारण करने वाले हैं। भोजन के आदि, मध्य और अन्त में जल पीने के क्रमशः मनुष्य दुबला सम और मोटा होता है। भोजन के पश्चात् दाँत मुंह साफ कर धीरे धीरे सौ डेग टहलें तथा चित्त, दाहिनी और बायीं ओर से क्रमशः आठ, सोलह, बत्तीस सांस लेटें। बाद में अपने इच्छित काम में लग जायँ। इस तरह सूर्यास्त से एक घण्टा पहले तक जीवन निर्वाह के लिये आय सम्बन्धी कार्य कीजिये। इसके बाद मल मूत्रादि त्यागने के बाद जलपान करें और शुद्ध हवा सेवन के लिये खुली जगह में टहले अथवा कोई खेल खेले जिससे मनोविनोद के साथ साधारण व्यायाम हो जाय। इसके पश्चात् आध्यात्मिक, आधिभौतिक और सामाजिक विषयों के अध्ययन, मनन या इन्हीं विषयों पर वाद विवाद तथा धार्मिक और सामाजिक कार्य करे।

रात के प्रथम प्रहर (नवबजे) तक भोजन कर लेना चाहिये। भोजन की और भोजन के बाद की विधि दिन की तरह होगी पर दिन से रात में भोजन की मात्रा कम रहनी चाहिये ताकि प्रातः काल अजीर्ण न हो। भोजन के कम से कम आध घण्टा बाद सोना चाहिये पर दस बजे तक तो अवश्य सो जाना चाहिये। स्त्री सहवास प्राकृतिक है। इसे नियन्त्रित रूप से ही होना चाहिये, और केवल सन्तान कामना से। अधिक मैथुन यक्ष्मा (T.B.) के कारणों में मुख्य है। इस विषय में संयम रखना आयु को दीर्घ बनाना है जैसा कि आचार्यों ने लिखा है:—

वाम शायी द्विभुञ्जानः षण्मूत्री द्विपुरीषकः।
स्वल्प मैथुन कारी च शतं वर्षाणि जीवति॥

अर्थात् वाम पार्श्व से सोने, दिन रात में दो बार खाने, छः बार पेसाब करने, दो बार पैखाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077948



जाने तथा स्वल्प मैथुन करने वालों की आयु लम्बी होती है।

दिनचर्या और रात्रिचर्या के साथ कायिक, वाचिक और मानसिक सदाचार का पालन करना अत्यावश्यक है। अतः वायु, मल मूत्रादि के वेग को कतई नहीं रोकना चाहिये और न तो बलात् प्रेरणा ही देनी चाहिये। ये दोनों ही रोगों के कारण हैं। इसी तरह छींक, भूख, प्यास, नींद, खांसी एवं थकावट से सांस, जम्भाई, आँसू और वमि के उत्पन्न वेग को रोकना भी हानिकारक है। परन्तु ईर्ष्या, मात्सर्य,-राग द्वेष आदि के वेग को रोकना परम श्रेयस्कर है। अपने से बड़ों के सामने विनीत भाव से और संभलकर बैठें, पैर न फैलावें। उचित समय पर हित, परिमित, सत्य, प्रासङ्गिक और मधुर बोलें। अकेला सुखी नहीं रहें, आस पास के लोगों को भी सुखी बनाने की चेष्टा करते रहें। सभा में खाँसी, छींक, डकार, और जम्भाई मुँह ढँक कर करें। अत्यन्त छोटी, चमकीली, अपवित्र और अप्रिय वस्तुओं को देखना नेत्रों के लिये अहितकर है। दुश्चरित्र औरतों का दिया अन्न खाना सर्वथा अनुचित है। झूठी गवाही नहीं देनी चाहिये। हिंसा, चोरी, झूठ और रूखा बोलना, नास्तिकता, दूसरे का अनिष्ट सोचना, क्रमशः कायिक, वाचिक और मानसिक पाप कर्म हैं। इन्हें छोड़ देना ही उचित है। भूख रोग और शोक पीड़ितों तथा समाज या राष्ट्र के उन्नायकों की सहायता करनी चाहिये।

रहने की जगह साफ, सूखा और हवादार होना स्वास्थ्यप्रद है। एक ही कोठरी में बहुत आदमियों के बिछावन का रहना या सटा सटा घर बनाना अत्यन्त अनुचित है इससे आन्त्रिक सन्निपात ( Tiophoid ), हैजा ( Cholera ) आदि बहुमारक रोगों का शीघ्र प्रसार होता है जैसा कि म०म० श्री गणनाथ सेन ने लिखा है कि:—"जनान् दहति रोगोऽसौ संकुलावसथे वपि।

ये अंगरेज बच्चे कितने स्वस्थ और प्रसन्न हैं! इनके साथ भारतीय बच्चों का मिलान कीजिये और देखिये कि दोनों में कितना अन्तर है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घर के सामान हर समय यथास्थान रखे। घर के सामने सुन्दर बनस्पतियाँ तथा फूल के पौधे लगाये जायँ। आँगन में या घर के आस पास तुलसी तो अवश्य ही लगावें। इससे घर के नजदीक दुष्ट कीटाणु नहीं आ पाते। इसी लिये आचार्यों ने तुलसी के नाम अपेतराक्षसी तथा भूतघ्न रखे हैं और गुण के विषय में कहा है कि तुलसी हृदय की दुर्बलता से, रक्त-रोग से तथा महामारी फैलाने वाली दूषित हवा से रक्षा करती है। घर में कम से कम एक गाय पालना आवश्यक है। उसकी सेवा और गोशाला की सफाई स्वयं करना लाभदायक है। गौ के मल मूत्र से या मल मूत्र की गन्ध से कालाज्वर, कामला हलीमक और पाण्डुरोग नहीं होता। दूध से कितना अधिक फायदा है इसे सभी जानते ही हैं।

इन सदाचारों के पालन से न केवल शरीर सबल और आरोग्य होता बल्कि मन और इन्द्रियाँ भी नियन्त्रित रहती हैं। सन्तान भी सबल और सदाचारी होती हैं। अतएव किसीने कहा है कि 'बाढ़े पूत पिता के धर्मा' अर्थात् पिता माता जितना आचार विचार सम्पन्न रहते हैं उनकी सन्तान उतना ही उन्नत होती है। यहाँ धर्म वह है जिससे न केवल मनुष्य में मनुष्यता आवे बल्कि देवत्व भी आजाय। बहुत लोगों को मैंने देखा है कि सन्तान के लिये व्रतों से अपने शरीर को गला दिया है। यदि दैव योग से सन्तान हुई तो वास्तविक व्रत आत्मसंयम भूलकर उसके जीवन से खेलते हैं। फल यह होता है कि उस सन्तान का जीवन आगे चल कर रोते या रुलाते बीतता है। अतः आचार न केवल अपने लिये है बल्कि श्रेष्ठ सन्तान के लिये भी उसका पालन आवश्यक है।

# हे आदिमवासी !

श्री हरिहर नाथ चौबे 'विशारद'

हे आदि जाति तुम हो महान् !

तुम श्रेष्ठ और बलवान महा
जाग्रत भारत के अमर प्राण।
तुमने कितनी बलियाँ दी हैं
इतिहास भुला बैठा अजान॥
हल्दीघाटी के प्रांगण में
रखली प्रताप की उच्च शान।
था वीर शिवा का झण्डा ले
भारत गौरव का किया त्राण॥

भगवान नहीं था 'विरसा' कम
'टेबो घाटी' में की पुकार।
देखो दानवता जिस से डर—
कर स्वयं हो गयी छार-छार॥
भगवान राम शबरी गूहक ने
शुरु किया जो था इतिहास।
उसकी कड़ियाँ जोड़ रहे
'बापू' 'बापा' की साँस-साँस॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ २३ ]

# भारत के आधुनिक दधीचि : बापा

लेo श्री रामचरित्र सिंह

दैत्य वृत्रासुर नहीं; उसकी संतानों के अत्याचार के कारण भारतीय समाज त्राहि त्राहि कर रहा था। दरिद्रता, अशिक्षा, घृणा आदि नाम थे उनके। उन सबको मार भगाने का प्रयत्न कई महापुरुषों ने किया; किन्तु सफलता न मिल सकी। धीरे-धीरे इन दस्यु-संतानों ने भारत माँ के लगभग १० कोटि पुत्र-पुत्रियों को अपना शिकार बना लिया। इसलिये अब और अधिक दिनों तक टालना असह्य हो गया।

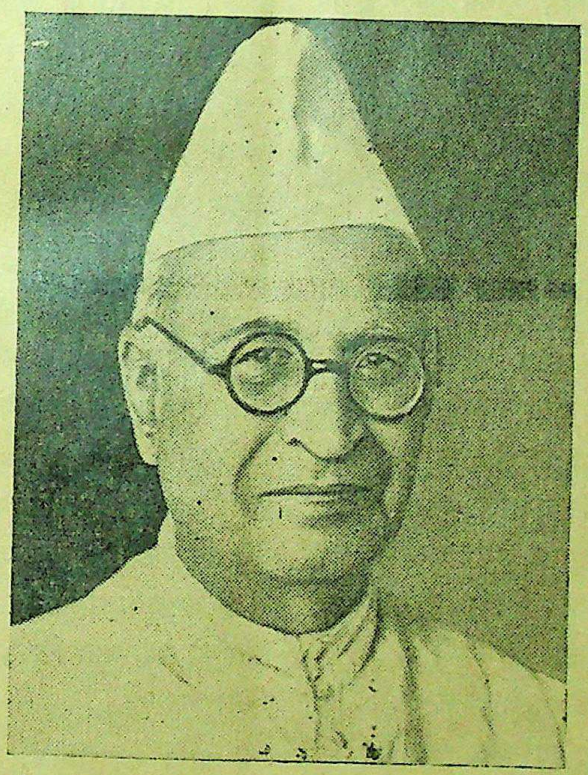

स्वर्गीय ठक्कर बापा

वृत्रा सुर की संतानों को मारने के लिये दधीचि की हड्डी की आवश्यकता पड़ी। लेकिन हड्डी आवे कहाँ से? इस युग में कोई दधीचि हो तब न? भारत माता ने अपनी कोटि-कोटि संतानों की रक्षा के लिये अयोध्या की भूमि से दधीचि की मांग की। अयोध्या की भूमि हक्का बक्का हो उठी। ऐं यह क्या? इक्ष्वाकु वंश के रक्त में अब बल नहीं जो दूसरा दधीचि उत्पन्न कर देश कर रक्षा के हेतु दे सके! भारत माँ को अब निराशा होने लगी लेकिन इक्ष्वाकु वंश के लिये यह एक कठिन चुनौती थी। भावनगर की मूलीबा ने इस चुनौती को स्वीकार कर दधीचि को उत्पन्न करने वाले वंश की मर्यादा रख ली। उसने एक नव जात शिशु भारत माँ की गोद में देकर कहा-'माँ, निराश न हो, लो इस बच्चे को यह दधीचि की संतान है। यही आगे चल कर दूसरा दधीचि बनेगा। यह घटना आज से लगभग साढ़े ८२ वर्ष पहले की है।

आगे चलकर उसी बच्चे को दलितों और पीड़ितों ने जाना अपने उद्धारक बापा के रूप में; ढाई करोड़ आदिम जातियों ने पहचाना अपने मसीहा बापा के रूप में और सम्पूर्ण भारत ने उसे पहचाना अपने बापा के रूप में, नहीं-नहीं, आधुनिक दधीचि के रूप में।

भावनगर गुजरात का प्रसिद्ध स्थान है। वहाँ के निवासियों में लोहना वंश के लोगों की अधिकता है। वे लोग क्षत्रिय हैं। उस वंश के लोगों का कथन है कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के पुत्र लव के वंशज हैं। इसीलिये वे लवहाना कहलाते हैं। संयोग की बात। इस वंश के लोग जन्म से क्षत्रिय हैं और कर्म से व्यवसायी। श्रीविट्ठल दास लाल जी ठक्कर उसी वंश के थे। आप की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। इसलिये नौकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करते थे। लेकिन परिवार के भरण पोषण का कार्य उससे चल नहीं पाता अतः साथ ही कुछ कुछ व्यवसाय भी करने लगे। आप द्रव्य के धनी तो नहीं थे; किन्तु प्रतिष्ठा के धनी थे। एक समाज सेवक रूप में आप की काफी ख्याति थी। लवहाना समाज की उन्नति के लिए लवहाना पंचायत की स्थापना का श्रेय आप ही को है। आप का शिक्षा-प्रेम भी सर्वविदित था। अपने समाज में शिक्षा प्रचार के लिये लवहाना बोर्डिङ्ग हाउस आप ही की कृति है। आप के शिक्षा-प्रेम का ही फल है कि काठियावाड़ में सब से अधिक शिक्षित आप ही का परिवार है। यों तो आप जीवन भर अपने कार्यों को करते हुए समाज की सेवा करते रहे, किन्तु जीवन का अन्तिम समय तो बिल्कुल सेवा में ही व्यतीत हुआ। आप हमारे बापा के पिता थे।

बापा बच्चे थे। उस समय आप को अमृत लाल विट्ठलदास के नाम से लोग जानते थे। पिता जी शिक्षा प्रेमी थे। समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इसलिए आपने भावनगर के स्कूल में बालक अमृत का नाम लिखा दिया। बालक अमृत का मन उस समय पढ़ने में नहीं लगता था। इसलिए वह भागता था पढ़ने से। छोटी आमदनी थी लेकिन फिर भी शिक्षा प्रेमी होने के कारण पिता जी चाहते थे कि उनका बालक अमृत पढ़े और पढ़ लिखकर जीवन में आगे बढ़े। लेकिन अमृत का रंगढ़ंग उनके विपरीत पड़ रहा था उस उस समय।

प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त हुई और अमृत पढ़ने की ओर झुके। अमृत की प्रकृति ऐसी थी, जिधर झुके उस ओर सब से आगे बढ़कर रहे। कहाँ तो पढ़ने से भागना, पिताजी का परेशान होना और जब पढ़ने की रुचि हुई तो अपने समय के छात्र समाज में सब से आगे, सभी छात्रों का सिरमौर। गणित अमृत का सब से प्रिय विषय हो गया। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में इतना अच्छा नम्बर आया कि सर जशवन्त सिंह स्कौलरशिप अमृत को ही मिला।

मैट्रिक समाप्त हुआ। इसके बाद किस विषय को लेकर आगे बढ़ा जाय ? यह प्रश्न उठा। अमृत लाल ने इञ्जीनियरिंग को ही पसन्द किया। पूना पहुंचे। इञ्जीनियरिंग कालेज में नाम लिखा लिया। प्रतिभा के साथ परिश्रम मिलकर चार चाँद लगा देता है। अपने साथियों, छात्रों के बीच अमृत आदरणीय बन गये, और हो गये कालेज के गुरुजनों, प्रोफेसरों के भी प्रियपात्र। अमृत के चरित्र बल की धाक थी कालेज के सम्पूर्ण बातावरण पर।

अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त करते हुए भी अमृत लाल भारतीय रहन सहन के भक्त थे और पक्के भक्त थे। इसलिए छात्र जीवन में जब क्लास जाते तो कठिया बाड़ी पगड़ी और दुपट्टा लगाकर ही जाते थे। और इसीमें अमृत लाल को अपनी शान मालूम पड़ती थी जब कि अन्यों को अँग्रेजी पोशाक में। स्वभाव से ही अमृत गम्भीर और एकान्त प्रिय थे। जिस बात को सही मान लिया, उससे फिर टस से मस होना क्या ?

अमृत सादगी का जीवन व्यतीत करते थे। कालेज जीवन में भी अमृत का काम चल जाता था कम से खर्च में। लेकिन तिस पर भी कभी-कभी पैसे का टोटा हो जाता था। पिता जी की आमदनी छोटी थी न ! इसलिये। आप के पिता जी भले असमर्थ हो जायँ लेकिन आप का पढ़ना जारी रहता था। अमृत की माता मूलीबा ने कभी भी अपने अमृत लाल के पढ़ने को रुकने न दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हाँ, इसके लिये उन्हें अपने आभूषण तक बेचने पड़े थे। और वह बीच बीच में कई बार। इञ्जीनियरिंग की परिक्षा दी। उत्तीर्ण हुए। उत्तीर्ण साथियों में अमृत का स्थान अच्छा रहा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अमृत लाल अपनी जाति में सर्व प्रथम सिविल इञ्जिनियर बने थे। सम्पूर्ण समाज के लिये गौरव की बात थी।

क्रमशः

---

# हमारे वन और इनके कानून

ले० श्री सच्चिदानन्द सिंह
[ फौरेस्ट सेट्लमेन्ट अफसर, राँची ]

भारत की आर्थिक, औद्योगिक और कृषि-सम्बन्धी उन्नति में वन का बहुत बड़ा हाथ है। हमारे देश की प्राचीन सभ्यता जिसके लिये गौरवान्वित है और जिसकी महत्ता के लिये सारे संसार की सभ्यता नतमस्तक है, इन्हीं वनों के शान्त और मनोहर वातावरण में उत्पन्न हुई और इनकी सुकोमल गोद में पल कर सयानी हुई, जिनकी विशेषता से भारत का सर ऊँचा हुआ। ये वन हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों के वास-स्थान थे और इन्हीं के मधुर वायुमण्डल की साधना के बाद का आलोक साधकों को स्वतःज्ञान मिलता था। वेद, उपनिषद् आदि अद्वितीय ग्रन्थों की रचना आधुनिक उच्च शिक्षालय या कालेजों की विशाल अट्टालिकाओं जैसे भवन में नहीं हुई बल्कि वे इन्हीं वनों के उन्मुक्त और प्रेरणाप्रद वातावरण में रचे गये।

वन हमारे लिये सदा से सादगी, सचाई और मनुष्यत्व के उचित पाठ पढ़ाने तथा तज्जनित गुण ग्रहण कराने के केन्द्र रहे हैं। मानव-सभ्यता के क्रमिक विकास के साथ देश की आबादी बढ़ती गई और आबादी की वृद्धि के साथ-साथ मानव की आवश्यकताओं का वृत्त विशाल होता गया, फलस्वरूप जरूरत की पूर्त्ति के बहाने हम वनों को धीरे २ नष्ट करते गये। इतना विनष्ट होने पर भी हमारे देश में स्थल की लगभग एक-चौथाई में अभी भी वन मौजूद हैं, अर्थात् हमारे देश के वनों का सामूहिक क्षेत्रफल करीब एक लाख पचपन हजार (१५५०००) वर्ग मील है, जिसमें पचपन हजार वर्गमील गैर-सरकारी जंगल हैं और शेष प्रादेशिक सरकारों या राज्यों और देशी राज्यों के वन-विभाग की देख-रेख और प्रबन्ध में हैं।

ये वन लकड़ी, जलावन, औषधि, खनिज-पदार्थ तथा नाना प्रकार की अतुल सम्पत्ति के भण्डार तो हैं ही, पर इनका हमारी मौसम और आवहवा पर काफी अधिकार है। इनके कारण हमें प्रचुर वृष्टि प्राप्त होती है जो खेती के लिये अत्यावश्यक है। भारत में सबसे अधिक वन आसाम में हैं, जहां के चेरापूँजी नामक स्थान में वनों के कारण संसार भर में सब से अधिक वृष्टि होती है। हमारे देश में लगभग बाईस करोड़ घनफुट लकड़ी प्रतिवर्ष पैदा होती है और यहाँ के कुसुम वृक्षों पर उपजाये हुए लाह की विश्व में अपनी विशेषता है। जलवायु, मिट्टी, ऊँचाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तथा अन्य स्थानीय स्थितियों के कारण यहां भिन्न-भिन्न प्रकार के वन तथा वन-पदार्थ हैं। हम इन्हें निम्न हिस्सों में बाँट सकते हैं :—

१ सूखे वन जैसे बबूल आदि के वन, ये अधिकतर राजपूताना में पाये जाते हैं।

२ लकड़ी के वन - सखुआ, सागवान आदि वृक्षों के वन, इस तरह के वन ज्यादातर हिमालय के अंचलों में हैं।

३ हरे वन—बांस आदि के वन।

४ देवदार के वन हिमालय के ऊपरी भाग में।

५ समुद्र तट के वन—हमारे देश में समुद्र के किनारे भी वन हैं—जैसे सुन्दर वन।

हम इस प्रकार भी वन का वर्गीकरण कर सकते हैं: -

१ रक्षक वन—ये हमारी मिट्टी और फसल को बाढ़ से बचाते हैं।

२ लकड़ी के वन—इनसे सरकार को माल मिलता है।

३ छोटे वन—इन वनों से स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिये लकड़ी, जलावन, घास तथा अन्य पौधे प्राप्त होते हैं।

४ चारागाह-भूमि—ये वस्तुतः वन नहीं हैं फिर भी इनमें झाड़ियां या छोटे २ पौधे होते हैं, जो चारागाह के लिये अधिक उपयुक्त हैं और वन-प्रबन्ध की सुविधा के लिये वन-विभाग के अन्दर इनका रहना आवश्यक है।

उपरोक्त वनों से हमें करोड़ों रुपये की आर्थिक आमदनी होती है। लकड़ी, जलावन, तेल, रंग, मोम, मधु, चपड़ा, लासा, कथ, लाह, फल, कागज, सलाई, रस्सी, औषधि आदि के व्यापार हमारे वनों पर आश्रित हैं जिनसे देश को बहुत बड़ा आर्थिक लाभ है। इन वनों के जानवर भी हमारे लिये बड़े काम की वस्तु हैं। इनके गर्भ में अतुल खनिज पदार्थ भरे पड़े हैं जिनकी प्राप्ति से हमारे समाज को महान उपकार होना है। हमारे वन के निवासियों की नृत्य-कला भी विश्व-विख्यात है।

बिहार के अधिकतर वन छोटानागपुर के जिलों तथा संथाल परगना में हैं। इनके अतिरिक्त मुंगेर के कुछ हिस्सों में, दक्षिणी भागलपुर में, गया के दक्षिणी पहाड़ी इलाकों में तथा शाहाबाद के रोहतास की पहाड़ियों पर साधारण वन हैं और उत्तरी बिहार में तो सिर्फ चम्पारण जिले के ही थोड़े अंश में वन हैं। इन वनों में सखुआ की प्रधानता है। सखुआ के सबसे उत्तम वन सिंहभूम जिले में हैं जहां के किसी किसी शाल-वृक्ष की लम्बाई १५० फीट तक है।

## वन के लिये कानून की आवश्यकता क्यों ?

प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों का वन की विशेषता पर विशेष ध्यान था पर हम ज्यों ज्यों आधुनिक सभ्यता के रंग में अपने को रंगते गये, हमारा ध्यान त्यों-त्यों वन की ओर से हटता गया। हम वास्तविकता से खिसक कर कृत्रिमता की ओर अधिक अग्रसर होने लगे। फलस्वरूप हम वन रक्षा की बात बहुत कुछ भूल गये। नतीजा यह हुआ कि देश के बहुत से उत्तम वन निष्प्रयोजन नष्ट हो गये। १८५५ ई० तक हमने न तो वन की रक्षा पर ध्यान दिया था और न रक्षा के लिये किसी कानून की ही शरण ली थी। उसी साल लार्ड डलहौसी के शासन काल में यह खबर मिली कि बर्मा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सागवान के वन शीघ्र ही नष्ट और समाप्त हो जायेंगे। इस चिन्ताजनक सम्वाद पर तत्कालीन सरकार ने वन की रक्षा के लिये अपनी नीति निर्धारित की तथा कानून बनाया जिससे यहाँ के वन दुरुपयोगिता और विनष्टता से बचें। इसी नीति के आधार पर १८६५ ई० वन कानून ( Forest Act ) बना जो १८७८ ई० में भारत-वन कानून ( Indian Forest Act ) में परिणत हो गया और जो थोड़े हेर-फेर के साथ अभी भी मौजूद है। इस कानून के मुताबिक यहाँ के वन सुरक्षित वन ( Reserved forests ) तथा रक्षित वन (Protected forests) दो भागों में बाँट दिये गये। रक्षित वन या सुरक्षित वन करार देने से पहले फौरेस्ट सेटलमेन्ट अफसर द्वारा उन वनों में हकदारों के हकों की बन्दोबस्ती होना आवश्यक है। रक्षित वन ( Reserved forests ) में हकों की या तो बन्दोबस्ती होती है या बदली होती है। रक्षित वन ( Protected forests ) में हक दर्ज किये जाते हैं और निश्चित कायदे से व्यवहार में लाये जाते हैं। रक्षित वन ( Protected forest ) में दर्ज करने के बाद भी हक पैदा हो सकते हैं पर सुरक्षित वन ( Reserved forests ) में नहीं। रिजर्वड वन में कोई भी ऐसा काम करना गुनाह तथा कसूर समझा जाता है जिसके करने की इजाजत नहीं है। प्रोटेक्टेड वन में जिस काम के लिये मनाही या रुकावट नहीं है उसे करना किसी प्रकार का कसूर नहीं समझा जाता। बिहार के वन कानून की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किये जा सकते हैं :—( १ ) वन—जलवायु और प्राकृतिक स्थिति की दृष्टि से। ( २ ) वन—जिनसे हमें व्यापारिक महत्ता की दृष्टि से कीमती लकड़ी प्राप्त होती है। छोटे तथा साधारण वन—जिनसे हमें लकड़ी, जलावन, घास आदि दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। भारत सरकार ने पहले और दूसरे को सुरक्षित वन (Reserved forests ) के लिये तथा तीसरे को रक्षित वन ( Protected forests ) के लिये सिफारिश किया। सरकार ने यह तय किया कि पहले और दूसरे प्रकार के वनों में यत्र-तत्र खेती करने की क्रिया बिलकुल बन्द कर दी जाय और थोड़े दिनों के लिये खेत के बहाने वन बरबाद करने के तरीके पर भी प्रतिबन्ध हो। अन्त में यह भी निश्चय किया गया कि जिन जंगलों से लोगों को जलावन और साधारण घरेलू जरूरत की चीजें मिलती हैं और जहाँ चारागाहें हैं उनमें भी खेती पर रुकावट हो, नहीं तो उसके बहाने सारे वन नष्ट हो जायेंगे और किसी प्रकार की लकड़ी प्राप्त करने में लोगों को पीछे काफी कठिनाई होगी।

इतना होने पर भी वन की बरबादी बढ़ती ही गयी। आज से ४५ वर्ष पहले भारत सरकार ने देखा कि छोटानागपुर के गैरसरकारी वन जिस रफ्तार से बरबाद किये जा रहे हैं, अगर स्थिति वैसी ही रही तो निश्चय ही २०-२५ वर्षों के अन्दर यहाँ के सभी वन नष्ट होकर समाप्त हो जायेंगे। रक्षा का एकमात्र तरीका कड़े कानून का आलंबन लेना था। अतः सरकार ने इसी अस्त्र से वन की रक्षा करने का निश्चय किया। बिल बनाये गये पर वे मंजूर न हो सके क्योंकि उससे वर्ग विशेष को नुकशानी नज़र आयी। तत्पश्चात् सरकारने जमीन्दारों से भारत जंगल कानून ( Indian forest Act ) की धारा ३८ के अन्दर दरखास्त देने का अनुरोध किया पर इससे बहुत थोड़ी सफलता मिल सकी। सिर्फ कोर्ट आफ वार्ड्स ( Court of wards ) तथा इनकमबर्ड स्टेट ( Encumbered estats ) के कुछ जंगल सरकार के हाथ हिफाजत के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आ सके। १९१६ में बिहार और उड़िसा के कनजरवेटर आफ फौरेस्ट्स ने यह तरीका रक्खा कि सरकार के निश्चित कायदे से यदि वन के मालिक अपने या अपने योग्य कर्मचारियों द्वारा बन की रक्षा कर सकें तो इसमें उनका और प्रान्त-दोनों की भलाई निहित है; पर यह नीति भी सफल न हो सकी, कारण वन के मालिकों को यह तरीका पसन्द न आया। १९२५ में प्राइवेट फौरेस्ट्स बिल ( Private Forests Bill ) बना, पर मंजूर न हो सका क्योंकि उससे जमीन्दारों को हानि दृष्टिगोचर हुई। १९३१ में वैज्ञानिक ढंग से बनों की रक्षा के लिये सरकारने व्यक्तिगत तरीके से मालिक को राजी करके उनका वन अपनी देख-रेख और प्रबन्ध में लेने का निश्चय किया पर इसमें भी बहुत थोड़ी सफलता मिली। तत्पश्चात् १९३९ में हमारी अपनी सरकार ने वन की रक्षा का निश्चय किया और छोटानागपुर फौरेस्ट बिल तैयार किया पर द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ जाने के कारण परिस्थिति कुछ ऐसी हो गई कि कांग्रेसी सरकार ने इस्तीफा दाखिल कर दिया। इस तरह लगभग २५ वर्षों के परिश्रम के बाद साढ़े सात हजार वर्ग मील बनों में सिर्फ ८३८ वर्गमील बन सरकार की देख रेख में आ सके थे। हमारी कांग्रेसी सरकार ने १९४६ में जब पुन शासन-भार ग्रहण किया तो उनका ध्यान विशेष रूप से वन की रक्षा पर गया। फलस्वरूप और सरकारी बनों की रक्षा और प्रबन्ध के लिये १९४६ में बिहार प्राइवेट फौरेस्ट्स ऐक्ट ( Bihar Private forests Act ) का निर्माण हुआ जिस की चर्चा हम अगले लेख में करेंगे।

---

प्रथम विश्व युद्ध के अज्ञात अमेरिकन सैनिकों की समाधि पर फूल चढ़ा कर फ्रांस के राष्ट्रपति ओरियल उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ २६ ]

# ग्राम-निर्माण से ही राष्ट्र-निर्माण संभव है।

ले०—श्री योगेश्वर प्र० सिंह 'योगी'

यही है गाँव में जाने का रास्ता? इधर तो गंदगी है, बदबू है कि नाक नहीं दी जाती! अच्छा शर्मा जी का घर भी तो इसी गाँव में है न? इतने बड़े नामी, इतने अच्छे नेता के गाँव की यह दशा! इस रास्ते से लोग आते जाते हैं किस प्रकार? शर्माजी प्रधान कार्यालय लेकर शहर में ही गाँवों का उद्धार कर रहे हैं!

हजारों गाँव के सुधार का उत्तरदायित्व उनके सिर पर है। रोज सैकड़ों चिट्ठियों का उत्तर देना, बोझा के बोझा फाइलों की देखरेख, सैकड़ों मिलने वाले कार्यकर्त्ताओं को उचित परामर्श देते देते तो उन्हें मरने की भी फुरसत नहीं मिलती। फिर भी आप कहते हैं, उनके गाँव की यह दशा!

और यह क्या? अच्छा, ग्राम पाठशाला है! लड़के तो हैं और हल्ला भी कम नहीं हो रहा है। अच्छा इसका मकान तो ढहने-ढहने पर है। पाठशाला के आस पास भी वैसी सफाई नहीं, जैसी चाहिये। स्कूल विभाग के अफसर इधर आते नहीं क्या? क्योंकि जिस रोज कोई अफसर आता है, उस रोज तो जरूर आस पास झाड़ू दे दिया जाता है। एक बात और। बारह बज रहे हैं लेकिन अब तक एक ही मास्टर पहुँच सके हैं। अच्छा, क्या कह रहे हैं? किसी रोज एक ही और किसी रोज अधिक से अधिक दो। तीनों शिक्षक तो कभी कभी पर्व-त्योहार के दिन ही आते हैं! लेकिन रजिस्टर में देखिये तो तीनों उपस्थित हैं। सब-इन्सपेक्टर का मुँह भी तो ये लोग मीठा करते रहते हैं। लेकिन भई, यह पाठशाला है या तमाशा!

उस वट वृक्ष के नीचे देखिये। गाँव भर के लोग इसी के नीचे आकर बैठते हैं। लोगों का जमावड़ा तो अच्छा है। उधर देखिये एक आदमी बैठा है। उसका पेट पीठ में सटता जा रहा है। और उस किनारे वाले को भी देखिये तो! बिलकुल कङ्काल! अधिकांश लोग खिन्न उदास! स्वतंत्र भारत के लोग ऐसे क्यों? अच्छा वह आदमी अपनी बोली में बड़ी रोचकता के साथ कांग्रेस वालों की गालियाँ दे रहा है। एक दर्जन से अधिक लोग उसके पास एकत्र हैं। बड़ी दिलचस्पी से सुन भी रहे हैं। एक आदमी तो गांधी जी को बुरा भला कहने लगा। काश! इन्हें कोई समझा पाता!

वह सफेद पोश कौन जा रहा है? मोटा ताजा मालूम पड़ता है। अच्छा, यह उधोगपति भी है और आज कल चीनी और कपड़े का व्यापारी भी। नीचे से ऊपर तक खादी ही है और सिर पर तो खास अहिंसा की टोपी भी। लेकिन यह क्या? उसको देखते ही यहाँ पर बैठे लोग नाक भौं सिकोड़ने लगे। एक आदमी ने तो उसे धोखा का देवता भी कह दिया वह सुनिये, लोग चोर भी कहते हैं। लेकिन वह भी ऐसा पक्का घाघ है कि लोगों की बातों को कभी सुनता ही नहीं। अपनी गोटी लाल किये जा रहा है। वह है स्वराज्य के बाद का खादीधारी अवसरवादी कांग्रेसी।

अच्छा यह सिंहजी का टोला है। इस टोले के सभी लोगों को कुछ न कुछ जमींदारी है। लेकिन यह घर पर घर क्यों? और इस मकान को तो देखिये! दीवारें गिरना ही चाहती हैं। यह लीजिये, इस दरवाजे पर तो महीनों से झाड़ू ही नहीं पड़ा है। बगल वाले मकान पर छप्पर भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खिड़की का तो नाम ही न लीजिये। दरवाजे पर की इस खटिया की यह दशा! रस्सियाँ जमीन सूंघ रही हैं। एक तरफ बकरी की भेंगारी और दूसरी तरफ भरठेहुना कूड़ा कर्कट! हाँ, यह बड़ा दालान गाँव भर में कुछ अच्छा मालूम पड़ता है। दो तीन चौकियाँ तो हैं, किन्तु बिछावन नदारद! खैनी की पिचकारी दीवार की चित्रकारी है। यह हुक्का और चिलम! यही तो इस दालान का गौरव है। इसी से सब लोगों की प्रतिष्ठा की जाती है।

और यह कुआँ है या फचाफच! जिधर लोग चलते हैं उधर ही घुट्ठी भर कीचड़! दुनियाँ भर का सड़ा कादो इसी के आस पास। उधर देखिये ऊपर का सड़ा कीचड़ कुएँ में भी जाता है। अरे इसका जल लोग कैसे पीते हैं?

वहाँ हैट वाले साहब कौन हैं? उनके पास काफी भीड़ मालूम पड़ती है। वे हेल्थ विभाग के डाक्टर हैं। इस गाँव में हैजे की शिकायत हो गयी है। इसीलिए सूई देते हैं। अच्छा सूई देकर डाक्टर साहब बीमारियों को रोक देते हैं? तब तो सूई बड़ी अच्छी चीज है! स्वास्थ्य के नियमों के पालन से तो यही अधिक आसान है!

अच्छा भाई, अब सम्पूर्ण गाँव देख चुके। और यह भी समझ लिया कि भारत के अधिकांश गाँव ऐसे ही हैं। तो क्या ऐसे ही गाँवों के बल पर भारत दुनियाँ के अन्य राष्ट्रों के मुकाबले सिर उठाकर चल सकेगा? क्या इसी स्वास्थ्य को लेकर भारतीय अधिक दिनों तक जीवित रह सकेंगे? क्या इसी प्रकार की शिक्षा और संस्कार को लेकर हम अपने राष्ट्र को मजबूत कर सकेंगे? नहीं कदापि नहीं। हमें तो पहले ग्राम-निर्माण करना है। ग्रामों के निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव हो सकेगा।

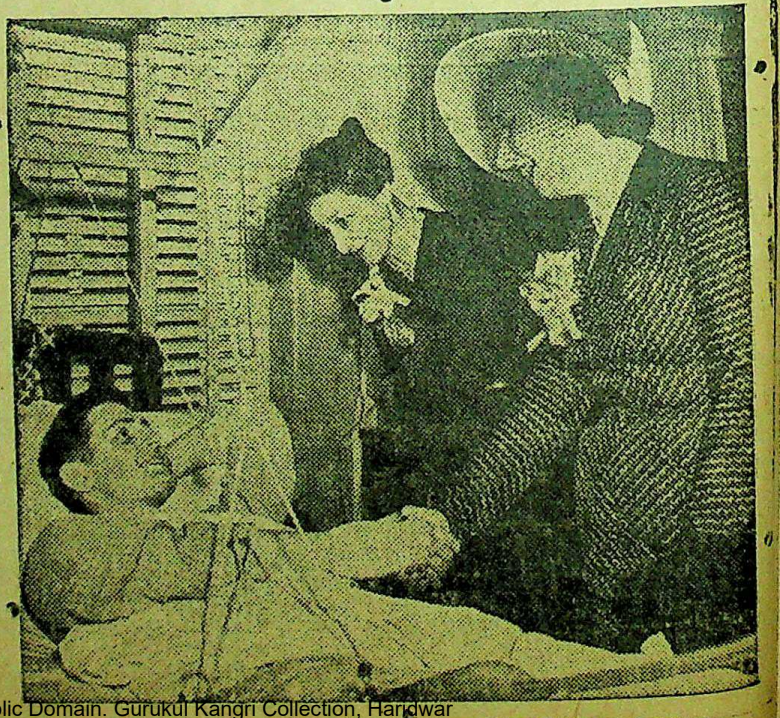

कोरिया के युद्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से लड़ने वाला एक घायल अमेरिकन सैनिक अस्पताल में पड़ा है। श्री मती ओरियल उससे हँस-हँस कर बातें कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक लघु कथा

# टेली फोन

लेo श्री रामकृष्ण प्रसाद 'उन्मन'

दोपहर, दो बजे का समय होगा! सारा दफ्तर काम में व्यस्त था। तभी टेली फोन की घंटी बजी किड़न किड़नन्.....

पास के कमरे वाले क्लर्क ने माउथ पीस उठाकर पूछा—'हल्लोहल्लो!'

'साहब हैं?' आवाज आई।

'ठहरिये बुलाता हूँ।' कहकर वह भीतर चला गया। साहब ने फोन से सुना कि उनकी माँ छत से गिर पड़ी और उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। एक क्षण में यह खबर वहाँ पर बिजल की तरह व्याप गई। दफ्तर बंद होने लगा और शोक सभा की जाने लगी। दफ्तर का हर आदमी साहब की माँ की मृत्यु से दुखी था। कुछ ही देर में वहाँ सन्नाटा छा गया।

ड्राइवर से कार मँगवाई और साहब चल पड़े। रास्ते भर उनका हृदय दुःख से बोझिल रहा। उन्हें बार बार अपनी माँ याद आ रही थी। उनकी माँ जिसने बचपन से अब तक उनकी देख-रेख की और जो उनके हर दुःख-सुख का ख्याल रखती थी। उनके पिता की मृत्यु उनके बाल्य-काल में ही हो चुकी थी। तब से आज तक उनकी माँ ने ही उन्हें पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया। उसे हर समय अपने बेटे का ध्यान रहता था। इसका श्रेय उसी को था कि वे आज साहब कहला रहे हैं। वे अपने माता-पिता के एकलौते बेटे थे और अब तो माँ के मरने के बाद उनका दुनियां में कोई नहीं रहा जिससे अपने हर छोटे बड़े काम के लिये सलाह मसविरा कर सकेंगे। रास्ता यही सब सोचते-सोचते कट गया। हर पल उन्हें माँ की याद आ रही थी। सोचते-सोचते उन्हें ऐसा लगा कि उनका हृदय फट पड़ेगा। आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। बिलकुल सूना-सा लग रहा था जैसे माँ की मृत्यु के बाद उनका भी कोई अस्तित्व नहीं रहा हो। तभी ड्राइवर ने गाड़ी रोकी। उनका बँगला आ गया था।

उन्होंने देखा उनका घर आज कितना सूना-सूना लग रहा है। बिलकुल अंधकार मय। और जिस घर का दीप बुझ चुका हो उसमें उजाला भी कहाँ से आ सकता है? उन्हें भीतर जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। ज्यों ही दरवाजे के निकट आये कि उनके पाँव तले की जमीन खिसक गई। रोमांच हो आया। मुंह से एक चीख निकली 'हा, माँ!' और वे बेहोश होकर गिर पड़े।

जब उन्हें होश आया तो वे अपनी चारपाई पर थे। घर के सभी नौकर-चाकर उनके आस-पास बैठे थे और उनकी माँ उनके सिर पर पंखा दे रहीं थी। माँ को देखते ही आश्चर्य चकित हो गये। तो क्या उनकी माँ जिन्दा है? उन्हों ने जब घर को सारा किस्सा सुनाया तो सभी बहुत दुखित हुए। वे सोचने लगे कि उन्होंने फोन से क्या सुना था? कुछ गलत तो नहीं सुन लिया। उस दिन वे बहुत अशक्त रहे। शाम हो गई थी। कुछ ही देर बाद नींद आगई और सो रहे।

दूसरे दिन एक्सचेंज से पता लगाया कि बात क्या थी? बहुत छान-बीन के बाद मालूम हुआ कि कल दोपहर को एक फोन आया था जिसका नम्बर १२ की जगह भूल से २१ पर लग गया।

शहर भर में जिसने भी इस घटना के बारे में सुना, बहुत दुखित और अचम्भित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कार्यकर्त्ता गाँवों में चलें

ले० श्री परशुराम झा

मानव जीवन का विकास गाँव से ही हुआ है, भले ही उस गाँव का रूप आज के जैसा नहीं रहा हो। परन्तु उसे गाँव कहना अनुचित न होगा। जंगलों को काटकर जहाँ हमने केवल फूस आदि के झोपड़े अपने रहने के लिये बनाये थे, वहाँ आज आलीशान भवन खड़े हैं। इस प्रकार हमने गाँव के बाद शहर बसाये तथा आज तक वह सिल-सिला जारी ही है। लेकिन आज हमारे दृष्टि कोण में बहुत बड़ा परिवर्त्तन हो गया है। हमारा उद्देश्य ही बदल गया है। और यही कारण है कि हमारा विकास रुकता जा रहा है। हम कहीं भी प्रसन्न नहीं हैं चाहे वह गाँव हो अथवा शहर। गाँव के दुखी लोग शहर भागते हैं परन्तु दुख से उनका पिण्ड नहीं छूट पाता और उन्हें लौटना पड़ता है, खाली नहीं, किसी न किसी बीमारी का पुरस्कार लेकर।

आज हम परेशान हैं, तबाह हैं। हमने इस विषम परिस्थिति की कभी कल्पना भी न की थी। आजादी के लिए जब संघर्ष चल रहा था तो हमारे सामने अपने भविष्य का एक सुनहला चित्र था। एक रंगीन नकशा था। हम उसी की प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देने को तैयार थे। इसके लिए हमने कुछ उठा न रखा था। प्रयास सफल हुआ। हमें आजादी मिली जिसके सहारे हम अपना स्वप्न पूरा करना चाहते थे। आजादी के बाद ५ वर्ष गुजरते चले गये और अभी गुजरते ही जा रहे हैं। इस अरसे में हम तरक्की क्या करते, उलटे अपनी वह पूंजी भी जिसे हमने वर्षों के निरन्तर संघर्ष और कष्ट सहन के बाद जमा किया था, नष्ट करते जा रहे हैं। उसे बचाने का उपाय भी क्या किया जाय ? आज हम किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रहे हैं। हमें किधर जाना है इसका अन्दाज तक नहीं मिल रहा है।

हमें उजड़े भारत को बसाना है। यही हमारा मुख्य लक्ष्य है, और असली भारत गाँवों में ही है। अतः हमें चलना होगा और ग्राम-निर्माण के कार्य को आगे बढ़ाना होगा। प्रत्येक देश का इतिहास साक्षी है कि देश की अवस्था में परिवर्तन के बाद ही यदि क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओं में लक्ष्य-भ्रष्टता एवं विलासिता आ जाती है तो फिर उस परिवर्त्तन का कोई मूल्य नहीं, उससे कोई खास लाभ नहीं। गुलामी गयी और आजादी आयी। इतना बड़ा परिवर्त्तन हुआ किन्तु उसका उचित फल हमें अबतक प्राप्त न हो सका, क्यों ? इसी जटिल समस्या का समाधान हमें खोज निकालना है।

आज हमारा कार्य क्षेत्र बदल गया है। हमारे कार्य-कर्त्ताओं का, निर्माताओं का कार्यक्षेत्र गाँव ही था। लेकिन अब गाँव जीवन शून्य होता जा रहा है। लोगों ने शहर को आबाद किया है गाँव को विरान बनाकर। जिस कार्य के आधार पर हमने सब कुछ हासिल किया था, वही कार्य ठप पड़ गया है जब कि उस में और भी अधिक गति लाने की आवश्यकता थी। हम अपना लक्ष्य ही भूल बैठे और फलस्वरूप भटक गये। प्रारंभिक सफलता में ही हम हुमायू की तरह ऐसी खुशियाँ मनाने लगे कि आगे पीछे की सुधि ही भूल बैठे।

क्या ऐसी कठिन परिस्थिति में देश के सच्चे सेवकों का कुछ कर्त्तव्य नहीं है ? इतनी कुर्बानी के बाद जो आजादी हमें मिली है क्या उसे हम योंही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खो देंगे या उसकी जड़को मजबूत बनाकर अपने राष्ट्र का विकास करेंगे? गाँव देश की एक इकाई हैं। हमें हरएक इकाई को मजबूत बनाना है, हर प्रकार से। आज गाँवों में अपनापन की भावना विलीन हो गयी है। हमारा आदर्श है वसुधैव कुटुम्बकम् किन्तु हमारे एक परिवार में भी मिल्लत नहीं; अपनापन नहीं। एक साथ मिलकर कुछ करने की प्रवृत्ति नहीं। मंजिल दूर है। बिहड़ पथ है। लेकिन हमें चलकर पहुँचना ही है। चलना ही जीवन है। चुपचाप बैठकर मरण को स्वीकार करना कायरता है। गाँव में हमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान करना है। पूज्य बापू ने हमें प्रकृति की क्रिया से निवृत होने से लेकर आध्यात्म तक की बात बतायी है। उनके उपदेशों को हम कार्यान्वित करें। गाँवों को अपना कार्यक्षेत्र बनावें। गाँवों में ही भारत की आत्मा कुण्ठित होकर पड़ी है। हमें उसे जागृत करना है। हमारा कल्याण और देश का उत्थान इसी में निहित है। इसलिए हमारा नारा हो—'कार्यकर्त्ता अब गाँवों में चलें।'

---

# पंचायत राज्य ही क्यों ?

ले० श्री ब्रजनन्दन शर्मा

[ जिला पंचायत अफसर, राँची ]

पंचायत राज्य तो भारतीय प्रजातंत्र की नींव होगा। आज के शासक नौकरशाही पर ही खड़े हैं और शासन की सतह को उठाना या गिराना उन्हीं के हाथ है। जनता पहले के शासन काल से, नौकरशाही से अत्यन्त ही भयभीत है। अतएव कुछ भी सुधार उनमें क्यों न आया हो अभी तक वे जनता के विश्वासपात्र नहीं हो सके हैं। दरोगा जी को आज भी जनता भयंकर रूप में ही देखती है तथा अपने से दूर समझती है। इसी तरह अन्य सरकारी कर्मचारियों के पास जनता न तो पहुंच ही सकती है और न अपनी बात ही सुना सकती है। फिर एस० डी० ओ० २०-२५ कोस दूर बड़े शहर में रहते हैं। बड़े महल में, कोर्ट के दरवाजे पर खड़ा उनका अरदली वस्त्रहीन, गंदे देहातियों को हाकिम तक जाने से रोकता है। उनके पास वकीलों की भरमार, काम की भरमार और समय कहाँ कि वे इस तरह के बेकार लोगों की बातें सुनें। फलतः गरीब ग्रामीण कचहरी तक पंहुचने की साहस भी कैसे करें? दूसरी ओर हाकिम भी क्या करें? आस पास के प्रतिष्ठित लोगों से समझ बूझ कर जन कल्याण के काम करते हैं और बहुत-सी उनकी लाभ की चीज जो सरकार उनके लिए भेजती है कुछ विशेष व्यक्तियों के ही काम में आती है। कभी तो उनको पता भी नहीं लगता कि उनके लाभ के लिए क्या मिल रहा है। यदि मालूम भी हुआ तो उसको प्राप्त करना उन्हें आता नहीं अपनी बातें सुनाना नहीं आता और आधी या तीन चौथाई रकम इन्हीं कामों में लुट जाती है। इस दौड़ा-दौड़ी तथा खर्च से जो कुछ प्राप्त भी होता है वह ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि उनकी सरकार ने यह सब उनके लिए किया है। मन कुछ तंग हो जाता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सरकार के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

उनको अपना प्रतिनिधि धारा सभा तथा अन्य सरकारी स्थानीय संस्थाओं में भेजने का अधिकार मिला है। लेकिन अभी तक भोट के मेला के सिवा उनको और किसी बात का ज्ञान नहीं हो सका है। बहुत लोगों ने अपने प्रतिनिधियों को देखा तक नहीं है फिर अपना दुःख सुनावे तो किसे? चुनाव के समय प्रतिनिधि बनने को लोग खड़े तो होते हैं पर उनमें से बहुत को उस स्थान से परिचय तक नहीं रहता। तरह-तरह के तमाशा और प्रचार कर चुनाव खतम होता है। फिर सरकार की ओर से उन्हीं का पैसा उनके प्रतिनिधियों का वेतन या भत्ता के रूप में दिया जाता है लेकिन उनके प्रतिनिधि नेता न तो उनकी खबर लेते हैं और न देहातों में खोजने पर मिलते ही हैं। वे तो ज्यादा तर शहरों में बैठ जाते हैं फिर जनता तकलीफ सुनावे तो किसे?

पंचायत राज्य इन्हीं विडम्बनाओं का हल है। उसके प्रतिनिधि वे ही होगें जो रात दिन उसके साथ रोते और हँसते हैं। गांव के कुटुम्ब हैं। हर समय भेंट होगी तथा उलहना या दुःख उनके पास पहुंचाया जा सकता है। उनको वे ही चुनते हैं और मुखिया बनने पर उनके सामने सपथ लेते हैं कि वे उनकी सेवा करेगें। यदि पथभ्रष्ट हुए या जन-सेवा में उन्हें अरुचि हुई तो गांव की जनता इकट्ठी होकर उनको हटा देगी। अतएव जनता का सीधे उनपर अधिकार है और इससे उनमें जनता के प्रति जिम्मेदारी की भावना स्वाभाविक रूप से रहेगी। इसके साथ वे अनुभव करेगें कि यह मुखिया हमारा भाई, भतीजा, बेटा, जाति, पड़ोस या गांव का है और जरूर ही कुछ अपनापन रहेगा। फिर यह भी सोचेंगे कि हम भी मुखिया हो सकते हैं और हमारी राय के खिलाफ ये कुछ करेंगे तो हम भी इसका विरोध कर सकते हैं। ऐसा होने से स्वराज्य की भावना आयेगी।

गांव के हर काम में उनकी राय तथा सहयोग की कीमत समझी जायगी जिससे उनमें स्वावलम्बन, जिम्मेवारी, कर्त्तव्य पालन तथा आपसी सहयोग की भावना जाग्रत होगी। धीरे धीरे गांव के प्रश्नों पर सोचने का, उत्तम काम करने वाले व्यक्तियों के हाथ गांव की सेवा का अधिकार सौंपने तथा कठिनाइयों का सम्मिलित रूप में सामना करने की भावना जाग्रत होगी।

सहयोग तथा अनुशासन की भावना पैदा करने के लिए जवानों की एक विशेष संगठित शक्ति रहेगी जिसके जिम्मे गांव को प्राकृतिक, तथा अन्य संकटों का सामना करनेका कार्यक्रम रहेगा। उनको कवायद जरूर सिखलाया जायगा पर वे केवल कानून रक्षा करने तथा शान्ति कायम रखने के लिए सिपाही नहीं बल्कि **गांव का निर्माण** करने वाले, समाज सुधारने वाले, लोगों को प्रेम का अनुशासन सिखलाने वाले पंचायत के कर्मठ स्वयं सेवक दल होगें। केवल कानून का पालन लोगों से कराना नहीं बल्कि उत्तम लाभदायक कानून तथा नियम का जन्म देने के लिए उनका संगठन होगा।

गांव में आपस में प्रेम बढ़ाने, भाई भाई के झगड़े को मिटाने तथा लोगों की शान्ति की नींद में बाधा देने वाले, कलह करने वालों के प्रति उचित कारवाई करने के लिए ग्राम कचहरी होगी जो समाज के दुश्मनों को कानून तोड़ने के लिए दण्ड भी देगी।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बुनकरों की समस्याएँ

ले० श्री रामलगन राम

एक समय था जब यहाँ के बुनकर कर्घा चला कर ही अपना जीवन यापन करते थे और अपनी सारी समस्याओं का हल अपनी इसी कमाई के बल पर कर लेते थे तथा अपने पड़ोसी भाईयों के साथ आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन वह दिन अब नहीं रहा। समय ने पलटा खाया। मशीन का युग आया अपने साथ फैशन का सन्देश लेकर। लोगों ने उसे हाथों-हाथ बाँट लिया। फलस्वरूप कर्घा चलाने वाली तांती, गांड़ा, कोष्टा, दास, पांड़, चीक बड़ाईक आदि जातियाँ अपने पड़ोसी-उरांव, मुण्डा, हो आदि से ही उपेक्षित होने लगीं। लोग चर्खा से कते और कर्घा से बुने मोटे वस्त्रों को नापसन्द करनेलगे। परिणाम स्वरूप लाभ मशीन मालिक एवं पूंजीपति सेठों के हाथ में चला गया। वस्त्र-कुटीर-उद्योग के भरोसे जीवन यापन करने वालों का रोजी-रोजगार दिन प्रतिदिन ठप पड़ने लगा। आज कर्घा बुनकरों के जीविकोपार्जन का साधन नहीं रहा वरन एक पूरक मात्र। भूमि विहीन बुनकर मजदूर बनने को लाचार हो रहे हैं। हमारी उत्कट अभिलाषा है कि स्वतंत्रता के बाद हम भी अपने उन्नत भाइयों के साथ कदम मिलाकर एक साथ चलें। देश सेवकों से प्रोत्साहन और सरकार से सराहनीय मदद भी मिल रही है। किन्तु वह बुनकरों के लिये एकांगी है सिर्फ शिक्षा की ओर। ऐसी शिक्षा जो हमारी उत्पादक शक्ति को ही कम करती जा रही है।

आर्थिक जीवन में प्रवेश करने के लिये तथा वस्त्र उद्योग की शिक्षा के निमित्त बुनकरों को जो मदद मिल रही है वह सिर्फ ईसाई और मोमिन बुनकरों को। ईसाई मिशनरियों के अच्छे अच्छे बुनाई स्कूल हैं किन्तु वहाँ पिछड़े आदिम जाति बुनकरों को अपने धर्म की सुरक्षा के साथ सुविधा नहीं मिलती है। इस कारण अपने पड़ोस में बुनाई स्कूल होने पर भी लोग वहाँ शिक्षा प्राप्त करने नहीं जाते हैं। इन बुनकरों में जो इसाई या मोमिन हुए बहुत आगे बढ़ गये। ईसाई और मोमिन बुनकर धोती, साड़ी, तौलिया, पलंग को सुशोभित करने वाले चादर, कमीज और जाकीट के लायक सुन्दर कपड़ बुन लेते हैं। इनके बुनने की रफ्तार पिछड़े बुनकरों से दुगुनी है। किन्तु इनका ध्यान अपने पैदाईस की ओर कभी नहीं गया। परिणामतः इनके कर्घे और अपने ढर्रे पर स्थिर रहने वाले पिछड़े बुनकरों के बुनाई औजार में बहुत अन्तर है। ये वर्त्तमान मांग के अनुसार अपने अनुन्नत कर्घा पर कपड़ा तैयार नहीं कर पा रहे हैं। बीस से ज्यादा नम्बर के सूत को ये बुन नहीं सकते।

यह लिखते हुए बहुत दुःख होता है कि कुछ नेता जो हरिजन कल्यान के लिये उनकी गलियों में झाड़ू लगा सकते हैं और मोमिन कल्यान के जबरदस्त समर्थक हैं, वे ही इन पिछड़े बुनकरों की उन्नति नहीं चाहते। इन बुनकरों को उनके लाभ की बात बताने वाले कार्यकर्त्ताओं पर जातीयता का आरोप लगाया जाता है। लेकिन वस्तुस्थिति को कोई भी विवेकशील इन गरीब बुनकरों के बीच आकर देख सकता है। इन दलित बुनकरों को आगे बढ़ाने में जो व्यक्ति कुछ भी मदद करेंगे उनके ये आभारी रहेंगे। हमारी जनप्रिय कांग्रेस सरकार आदिम जातियों को शिक्षा के लिये बहुत कुछ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रही है। इस अभूत पूर्व प्रयाससे अब हजारों की संख्या में आदिम जाति पढ़-लिख रहे हैं यह बहुत खुशी की बात है। किन्तु क्या हम वन-प्रान्त के पढ़े-लिखे लोग जो कल तक कर्घा के बुने वस्त्र पहनते थे, आज पहनते हैं ? कदापि नहीं। यह तो एक प्रत्यक्ष सत्य है। खादी प्रचार से सम्बन्धित संस्था के कार्यकर्त्ता-गण खादी प्रचार के लिये जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं। लेकिन क्या इसका कुछ भी प्रभाव इन दिन दूने रात चौगुने बढ़ने वाले शिक्षित लोगों पर हो रहा है ? एकदम नहीं। असल में वर्त्तमान समाज की रुचि ही मिल के वस्त्रों की ओर है। एक दिन ऐसा आयगा जब यहाँ सब शिक्षित होंगे। सबकी रुचि बदल जायगी और ये पिछड़े बुनकर नहीं रह जायेंगे। इसी काले भयावने भविष्य से बुनकर लोग त्रस्त हैं और इससे राहत पाने के लिये सरकार की ओर लालायित आँखों से ताक रहे हैं। अपने पिछड़ेपन का बोझ ये सरकार पर नहीं लादना चाहते, अपना बोझ ये आप सम्हाल लगे। इन्हें चाहिये उठने के लिए सिर्फ सहारा मात्र।

अभी तक कुछ बूढ़े और अशिक्षित आदिम जाति के लोग हैं जिनको पुरानी रुचि से इन बुनकरों का कर्घा के येणकेण प्रकारेण चल रहा है। इनके कर्घे से ऐसी ही साड़ी, चादर और अँगोछा बनता है जिसे सिर्फ थोड़े से आदिम जातियों के सिवा कोई नहीं पूछता। इनके कर्घे के साथ कानून का पूरा सहयोग है। इस नियंत्रण के समय में जब सूत मिलना बन्द हुआ तो सैकड़ों बुनकर आसाम, बंगाल के चाय बगानों में कुली बनकर चले गये। सूत के व्यापारी सेठों ने नियंत्रण-पदाधिकारियों का ईमान चाँदी के टुकड़े से तौल लिया और काफी धाँधली मचायी। बुनकरों की मण्डली ने धनी सेठों की राक्षसी माया से मुक्त होने के लिये सूत के व्यापार को अपने हाथ में कर लेने की खूब कोशिश की। किन्तु सारा प्रयत्न अब तक अरण्य रोदन रहा। एक देहाती कहावत 'दर्वे से सर्वे जे चाहवे से कर्वे' चरितार्थ होती रही। बुनकरों की मांग कोपूरा करने का अर्थ है पूँजीपतियों के चंगुल से गरीब बुनकरों की रक्षा करना। ऐसी विकट परिस्थिति में सरकार के सहयोग बिना ये पिछड़े बुनकर कदापि नहीं उठ सकेंगे। आदिम जाति तथा पिछड़े लोगों के उत्थान के लिये सरकारी व्यय से कल्याण विभाग और आदिम जाति सेवा मण्डल चल रहा है। भारतीय संविधान के अनुसार कानून दस वर्ष तक ही इन्हें विशेष सुविधा देगा। ऐसे सुअवसर और सुविधा से लाभ उठाने का हक इनको है। इन पिछड़े आदिम जाति के बुनकरों के रोजी रोजगार को इनसे छीनना अच्छा नहीं। इनकी जीविका को वापस कर कायम रखने के लिये अच्छा होता, सरकार कल्याण विभाग अथवा आदिम जाति सेवा मण्डल के द्वारा इनको उन्नत वस्त्र कुटीर उद्योग की शिक्षा देने का बन्दोवस्त करती।

—:():—

'ऐसे व्यक्ति को अहिंसा में अभ्यस्त नहीं किया जा सकता, जो करने से डरता है अथवा प्रतिकार की शक्ति या साहस ही नहीं रखता। बिना मारे मर जाने को मैं बेहतर समझता हूँ, परन्तु यदि साहस न हो तो मारते हुए मरना ही अच्छा है — जीने के लिए मरने में कोई बड़ाई नहीं। खतरे से भागना तो बुजदिली है।

—गांधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# राँची से बम्बई

ले० श्री सुरेश सामन्त
[ तृतीय वर्ष, कला, राँची कालेज ]

राँची शहर के कालेजों में काफी संख्या में आदिवासी लड़के एवं लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ये लोग खास तौर से छोटानागपुर के बाशिन्दे हैं। पर्यटन भी शिक्षा का एक आवश्यक अंग है। इसलिए हम सब बहुत पहले से इसके लिए तैयारी में लगे थे। हम लोगों का जत्था तैयार हुआ। जत्थे में हम लोग सुश्री शान्ता सुधारानी धान, जगदम्ब टिर्की, जगदीश किसपोटा, पुनाई उराँव, डोमन सिंह, चन्द्र मोहन सुण्डी, दुर्गा कच्छप, बन्दी उराँव, लपण भगत सुना उराँव और इन पंक्तियों का लेखक कुल ११ आदमी थे। १६ मई को जत्था निकला पड़ा।

गया होते हुए पटना जाकर हमलोग एक रोज के लिए ठहर गये। वहाँ पटने के सभी प्रसुख और मशहूर स्थानों को देखा। पहले से समय निश्चित नहीं करने के कारण महामहिम राज्यपाल, मुख्य मंत्री श्री बाबू एवं कल्याण मंत्री श्री कृष्ण वल्लभ बाबू के दर्शन न हो सके। केवल कल्याण विभाग के सभा सचिव श्री देवेन्द्रनाथ सामन्त जी से साक्षात्कार हो सका। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक हम छात्रों का स्वागत किया तथा विद्यार्थियों के आवश्यक कर्त्तव्यों को बतलाया। वहाँ प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों के अलावे गोलघर, सरकारी भवन, सचिवालय इत्यादि हम लोगों ने देखे।

दूसरे दिन हम टुण्डला के रास्ते आगरा पहुंचे। वहाँ स्टेशन के समीप ही एक भोजनालय में हम लोगों ने आश्रय लिया। आगरा मध्ययुगीन भवनों का शहर मालूम पड़ा। प्रेम का प्रतीक ताजमहल, सामने का दिलपसन्द बाग सत्तरहवीं शताब्दिके सम्राट शाहजहाँ तथा मुमताज़ महल की याद दिलाते हैं। उस प्रेम स्मारक का वर्णन थोड़े शब्दों में होना कठिन है। दम्पति इसी विशाल भवन के अन्दर अनन्त नींन्द में सोये पड़े हैं। यह शहर से करीब डेढ़ मील हट कर जमुना के किनारे स्थित है। यह दुनियां की अजीब चीजों में एक है जिसके निर्माण में २० साल लगे थे। यहाँ का किला भी विशाल और देखने योग्य है। किले का एक हिस्सा फौज के अधिकार में है और दूसरे हिस्से में शाहजहाँ का दीवानेखास, दीवाने आम, मोती मसजीद, शीश महल, अंगूरी बाग इत्यादि भरे पड़े हैं। ये महल शाहजहाँ के पहले के मालूम पड़ते हैं। संगमरमर का काम शाहजहाँ के वक्त का है। बीच बीच में फूल फल तथा हर किस्म की कारीगरी मिलती है। इस बेशकीमती कारीगरी ने विदेशियों को ललचाया और लूटने को आमंत्रित किया। अगल बगल में हर किस्म के पेड़ तथा फौव्वारे लगे हुए हैं। दयालबाग में राधा स्वामी सम्प्रदाय वालों का महल भी पूरा नहीं हो सका है जो ताज महल को मात करने को कमर कस रहा है, ऐसा मालूम पड़ता है। आर्थिक दृष्टि से आगरा सम्पन्न मालूम पड़ता है। खाने पीने की चीजें उचित मूल्य पर प्राप्य हैं। घनी आवादी के लिहाज से शहर गन्दा नहीं है। सवारी में रिक्सा एवं तांगे का ही उपयोग अधिक होता है।

आगरा से मथुरा होते हुए हम लोग दिल्ली पहुँचे और वहाँ चार रोज ठहरे। यहाँ मध्ययुग और उसके पहले के भी बहुत से चिन्ह अबतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मौजूद हैं। इन्द्रप्रस्थ का पुराना किला, कुतुबमीनार लाल किला आदि यहीं पर हैं। इन्द्रप्रस्थ में महाभारत काल के कुछ चिन्ह अब भी देखने को मिलते हैं। कुतुबमीनार बहुत ही पुराना मीनार है। यह आकाश को छूता-सा दीख पड़ता है। इसके अन्दर ही अन्दर सीढ़ियाँ बनी हैं जिससे लोग ऊपर जाकर देखते हैं। इसके पास ही में गुप्तवंश के काल का लाठ है और बहुत से खण्डहर पड़े हैं। इन सब स्थानों को देखकर आश्चर्य होता है। लाल किला पहले शाहजहाँ का दुर्ग था। इसके चारों ओर बड़ी दीवारें हैं तथा किनारे किनारे चारों ओर गहरी खाई जिसमें बचाव के लिए पानी भरा रहता था।

हम लोग दिल्ली में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद का दर्शन किया। उन्होंने आधे घन्टे से भी अधिक समय हम लोगों को दिया और आशीर्वाद भी। उनकी साधारण पोशाक देश रत्न की सादगी का परिचय दे रहा था। इसके बाद हम लोग भारत के प्रधान मंत्री प० जवाहर लाल नेहरू से मिले। उन्होंने भी थोड़े वक्त हम लोगों के लिए निकाल कर हम लोगों के ऊपर बड़ी कृपा की। नेहरू जी ने हम से भ्रमण का उद्देश्य और आखिरी मंजिल के संबन्ध में पूछ ताछ की। हम लोगों से मिलकर और भ्रमण के बारे में जानकर उन्होंने बड़ी खुशी प्रकट की।

फिर परिगणित जातियों के कमिश्नर श्री कान्त जी ने हम लोगों का स्वागत किया। हम लोगों के कार्यक्रम से उन्हें भी बड़ी प्रसन्नता हुई। हम आदिवासी छात्रों से मिलकर उन्हें इतनी खुशी हुई कि अगले साल हम लोगों की झोपड़ियों में पहुंचने का उन्होंने अश्वासन दे डाला। उनके समान जन सेवक अफसर से आदिवासियों को बहुत कुछ आशा है।

हम लोगों ने दिल्ली के दर्शनीय स्थानों का निरीक्षण किया। यहाँ सचिवालय, सरकारी भवन, संसदभवन तथा आँल इण्डिया रेडियो को देखा। दिल्ली का बिड़ला मन्दिर भी देखने लायक है जहाँ बापू ने अन्तिम साँस ली। यहाँ का गोल मार्केट भी देखने योग्य है। दिल्ली की गर्मी असह्य है। यहाँ की रहन सहन का स्तर ऊँचा है। यहाँ चावल खाने वालों के लिए दिक्कत है क्योंकि भोजनालयों में ज्यादातर रोटियाँ ही मिलती हैं। आने जाने की सवारी का भाड़ा बहुत अधिक है। नयी दिल्ली साफ सुथरी जगह है क्योंकि सभी सरकारी भवन यहीं पर हैं। पुरानी दिल्ली घनी आबादी के कारण गन्दी मालूम पड़ती है।

दिल्ली के बाद बड़ौदा होते हुए हम लोग बम्बई पहुंचे। बड़ौदा के इलाके में शायद हिन्दुस्तान में सब ज्यादा गर्मी पड़ती है, ऐसा ही हम लोगों को अनुभव हुआ। बम्बई में २ दिन रहने का अवसर मिला। बम्बई परियों का शहर और हिन्दुस्तान का सब से सुन्दर नगर है। यहाँ के लोगों की रहन सहन ऊँची है। सभी चीजें महँगी मिलती हैं। लेकिन खाने पीने की चीजें तथा आने जाने का खर्च सुविधाजनक मालूम पड़ा। ट्राम तथा बसें आप को चार पैसे में मीलों का सैर करा देंगी। यहाँ का सम्पूर्ण शहर ही देखने लायक है। घर बहुत बड़े-बड़े तथा ऊँचे-ऊँचे हैं। एक-एक मकान में सैकड़ों और हजारों लोग रह सकते हैं। शहर धनी है। इसलिए मोटर कारों की भरमार आप देखेंगे। वालकेश्वर रोड में चले जाइये। दोनों तरफ के सभी मकान एक ही समान मिलेंगे। बम्बई के तीन ओर समुद्र है। इसलिए समुद्र के सैर में लोगों को बड़ा मजा आता है। जुहू तट पर प्रति रविवार को नहाने वालों का एक मेला लग जाता है। इण्डिया गेट के सामने ताजमहल होटल है जो शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दुस्तान का सब से बड़ा होटल है। यहाँ पर जेनेरल पोस्ट आफिस, सचिवालय, सरकारी भवन, अजायब घर, चिड़ियां खाना, मालावर हिल्स तथा छाया गृह इत्यादि देखने लायक हैं। एक दो स्टूडियो में भी जाने का मौका हम लोगों को मिल गया था। इसके बाद हम लोग मध्य प्रदेश की राजधानी नागपुर पहुंचे। यहाँ के सचिवालय, पोस्ट औफिस, आल इण्डिया रेडियो, रानी महल, विश्वविद्यालय, कपड़े की मिलें इत्यादि देखने लायक हैं। यहाँ भी बड़ी गर्मी पड़ती है। यहाँ पहुंचते-पहुंचते हम लोग काफी थक चुके थे। इसलिए चक्रधरपुर के रास्ते हम राँची ३१ मई की सन्ध्या को वापस आ गये। उपर्युक्त सभी जगहों का पर्यटन हमलोगों ने किया लेकिन राँची की जैसी अच्छी जलवायु कहीं नहीं मिली हालांकि दूसरी दृष्टियों से वे स्थान बहुत आगे और बढ़े चढ़े हैं।

---

# मुसहर सेवा मण्डल

लेo श्री वीर भद्र शास्त्री

मुसहर सेवा मण्डल, मुसहरों की समस्याओं को हल करने के लिये उनके बीच सेवाकार्य कर रहा है। उत्तरी बिहार में मुसहरों की संख्या लगभग १२ लाख से भी अधिक है। खेतिहरों में इनका स्थान सर्व प्रथम गिना जायगा। पढ़े-लिखे मुसहरों की संख्या ऊंगली पर गिनने लायक भी नहीं है। ये खेती करना जानते हैं। खेत में ही इनका जन्म होता है, खेत ही में पलते हैं, बसते हैं और खेत में ही मर जाते हैं। इस तरह इनका हक बहुत पुस्तों से चला आ रहा है। लेकिन, आजकल उनकी कठिनाइयां इतनी बढ़ गयी हैं, कि वे तबाह हो रहे हैं। जमीन्दार और अन्य किसान इनकी जमीन पर इतनी बेदर्दी के साथ दखल जमा रहे हैं कि कुछ तो रहने के लिये सड़कों और मैदानों के किनारे पड़े रहते हैं। कहीं भी ये निश्चिन्त रूप से नहीं रह पा रहे हैं केवल जोर जुल्मों से डरकर भटकते फिरते हैं। काम में पकड़ने पर उनको एक तो मजदूरी कम दी जाती है वह भी देर से। पूरी मजदूरी मांगने पर बिना समझे बांध कर पीटा जाता है। खमौरा के एक मुसहर ने इसी तरह का बयान मण्डल के मंत्री की उपस्थिति में सरकारी अधिकारी के सामने दिया था कि काम करने से लाचारी जाहिर करने पर उसे बांध कर खूब पीटा गया। इस तरह आये दिन कितनी ही घटनाएँ होती रहती हैं। मनमानी मजदूरी तो दी जाती है और माँगने पर मुंह बन्द करने के लिये बांध कर पिटना। जोर जुल्मों का शिकार, बेबस मुसहर जाति कितनी ही कठिनाइयों का सामना कर रही है। जमीन की अधिकारी रसीद नहीं दी जाती, उसकी बरारी और जमीन पर लोगों ने अधिकार जमा लिया है। फसल लूट ली गयी। इन्हीं समस्याओं को हल करने के लिये मुसहर सेवा मण्डल जी जान से काम कर रहा है। कार्यकर्त्ताओं में श्री राम चरण दास, श्री नमदेश्वर झा, श्री सीता राम, श्री ब्रज बिहारी कुंवर, श्री भरत शरण सिंह आदि की सेवा विशेष प्रशंसनीय है। प्रधान कार्यालय अभी रोसड़ा (दरभंगा) में है।

कार्यक्षेत्र का विस्तार भी बहुत है। दरभंगा के सदर, मधुबनी और समस्तीपुर, सबडिविजन, मुंगेर के बख्तियार पुर, चौथम, बखरी, बलिया, तारापुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गोगरी आदि, भागलपुर के अमरपुर, शाहकुण्ड, सुल्तान गंज थाना, पुर्णिया में करन दीघी, किसनगंज, फारबिस गंज, घुरना बयासी आदि थाने जहाँ जहाँ मुसहरों की आबादी पायी जाती है वहाँ सेवा मण्डल का कार्यक्षेत्र है। ठक्कर बापा विद्यामन्दिर भी बनाया गया है जिसमें उनके बच्चों को शिक्षा दी जा सके।

२५ फरवरी १९५१ को तिलकेश्वर गढ़ में मुसहर सेवा मण्डल की २ री बैठक हुई थी। जिसमें बहुत जगहों से मुसहर दर्शक, मुखिया और प्रतिनिधि के रूप में आये हुए थे। करीब दो हजार से भी अधिक मुसहर दर्शक और सैकड़ों मुसहरनियाँ भी शामील थीं। इस सम्मेलन में महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। लूट पाट, अत्याचार और बलात्कार से जो ५० लाख व्यक्ति पीड़ित हैं उनकी ओर विहार सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया और हरिजनों खासकर मुसहरों को कानून की सुविधा के लिये माँग की गई। जमीन का खतियान या तत्सम्बन्धी कागज माँगने पर उन्हें मिल जाय, शिक्षा का प्रबन्ध हो, इत्यादि बातों का भी जिक्र किया गया। इस तरह मण्डल का काम आगे बढ़ता जा रहा है।

इसका सारा खर्च 'हरिजन सेवक संघ' दिल्ली से मिलता है। फरवरी माह में ७७४=)।।, मार्च में ५२६।।।=)।।, अप्रील में ५२६=)।।, और मई में ५७८।।।=) खर्च हुए। मुसहर सेवा मण्डल के सभी कार्यकर्त्ता जगह जगह दौरा कर समस्या हल करने मुसहरों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। इस संस्था के संचालक प्रोफेसर बलदेव नारायण जी हैं जो जीवन भर उपेक्षितों और पीड़ितों की सेवा में लगे रहे हैं। नाम से अधिक काम ही उनके जीवन का सिद्धान्त है।

---

# हमे आत्म निर्भर होना चाहिये

ले० सुश्री मधुर माला

[ ११ वीं श्रेणी, सरकारी बालिका विद्यालय, रांची ]

आज की दुनियां जिस ढंग से अपनी संस्कृति तथा सभ्यता को छोड़ती हुई आगे बढ़ रही है, इसका परिणाम प्रत्यक्ष है। आज संसार में कितनी अशान्ति फैली हुई है? लोग महान से महान अन्याय करने में नहीं हिचकते हैं। दूसरे के जी को दुख कर भी लाभ उठाना आज के लोगों के लिए साधारण बात हो गयी है।

ऐसी स्थिति में अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ होना हम बालिकाओं का मुख्य धर्म है। प्राचीन आदर्श नारियों ने अपनी शक्ति का जो परिचय दिया है वह हमारे प्राचीन ग्रन्थों में अंकित है। उन ग्रन्थों को पढ़कर आज भी हम बालिकाओं का सिर गर्व से उन्नत हो जाता है। हम वे दिन भी भूले नहीं हैं जब भारतीय नारियां दुर्गा की शक्ति लेकर युद्धों में अपने प्रियतम की रक्षा करती थीं। इतना ही नहीं अपने तपोबल से अपने पति को मृत्यु के चंगुल से छुड़ाने में समर्थ होती थीं। जगत की सारी यन्त्रणाएँ उन्हें अपने पथ से बिचलित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर सकतीं थीं। सीता के समान आदर्श नारी हमारे देश में ही उत्पन्न हुई थीं। राम के जीवन में सीता ने पूर्णता लाकर दुष्टों का संहार किया था। जब जब संसार में पापाचार अधिक फैलता है तब तब किसी न किसी नई शक्ति का आविर्भाव होता है और पापाचारी का नाश होता है। जिस समय दानवों की दुष्टता उग्र रूप धारण कर चुकी थी, उस समय स्वयं भगवती सिंहवाहनी ने प्रकट होकर उसका विनाश किया था।

मैं समझ रही हूं, इस समय हमारी जाति के ऊपर दुःख के घने मेघ छाये हुए हैं, किन्तु इससे डरना और घबड़ाना तो कायरता है। हमें सूर्य की दिव्य ज्योति बनकर उस मेघाच्छन्न आकाश को साफ करना होगा। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे आज भी महिलाएँ अपने अधिकार और शक्ति को समझें तो बहुत कुछ हो सकता है। अब वह समय नहीं रह गया कि परमुखापेक्षी होने से काम चल सकेगा। विलासिता में आज की तरह डूबे रहने से भी काम न चलेगा।

इस लिये बहनो! पद-पद पर बाधाएँ हैं लेकिन उससे क्या? अब आलस्य में पड़ी रह कर अपनी शक्ति को व्यर्थ नष्ट न करो। अपने पैरों की आशा कर अपनी जाति को एक सूत्र में संगठित कर अपने कर्त्तव्य पालन के लिये कदम बढ़ाओ। जब हम में शक्ति का संचार होगा तो स्वतः संसार की बाधाएँ पृथक हो जायेंगी, आपत्तियां दूर हट जायेंगी, दुःख नष्ट हो जायेंगे, तब हम अपने को स्वावलम्बिनी के रूप में पायेंगी। इस युग में जो व्यक्ति अपने पर निर्भर रहता है वही संसार में आगे बढ़ सकता है। आत्मनिर्भरता ही हमारे लिये पथ प्रदर्शिका है। आत्म निर्भर होने से ही हम लोगों में ताकत पैदा हो सकेगी।

---

# यह आप के प्रश्न का उत्तर है

## प्रश्न

मैंने आप का 'सिंचाई' शीर्षक लेख 'ग्राम-निर्माण' के अप्रिल अंक में पढ़ा। मई अंक में सिंचाई के विभिन्न साधनों के लाभ पर प्रकाश डाला गया है। मैंने एक सक्सन पम्प खरीदा है जो ५ हार्स पावर का है। लेकिन कभी कभी पानी खींचने में वह असमर्थ हो जाता है। क्या आप सक्सन पम्प की खराबियों एवं उसकी दुरुस्ती के विषय में प्रकाश डाल कर अनुगृहित करेंगे?

—डा० विश्वनाथ मिश्र
पो० कुरडेग जि० राँची

## उत्तर

प्रिय महाशय,

आप का पत्र ता० १२-६-५१ का 'ग्राम-निर्माण' के सम्पादक जी के द्वारा मिला। आपने अपने पम्प का जो दोष बतलाया है उसके कई कारण हो सकते हैं। ईंजन में यदि दोष नहीं है तो पम्प में जो पानी नहीं खींचने का दोष है वह आसानी से हटाया जा सकता है। दोष के कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:—

(१) वेल्ट जो ईंजन और पम्प में लगा है उस के ढीला होने के कारण। इस दोष से पानी निकलेगा पर गति कम होगी और पानी भी कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निकलेगा। पम्प के आगे के सेटींग जो फ्रेम से लगा है उस को ढीला करके उसे कुछ आगे बढ़ा दीजिये। वह ठीक हो जायगा। अथवा बेल्ट को अंदाज से काट कर फिर जोड़ लीजिये।

(२) पाइप का वह हिस्सा जो पानी में रहता है उसके एक सिरे पर छेददार लोहे का गोलक लगा है जिसे फुटबाल कहते हैं। इस फुटबाल को खोलने से उसके भीतर एक चमड़े की चकती लगी है और उस चमड़े की चकती पर लोहे का एक गोल टुकड़ा लगा है वह गोल टुकड़ा ऊपर से दबा कर छेद को बन्द रखता है और पानी को बाहर निकलने से रोकता है। यदि यह ठीक रूप से नहीं बैठा हो तो पानी ठीक से नहीं खींचा जा सकता। फुटबाल को खोल कर इसे अच्छी प्रकार बैठा लें जिससे पानी बाहर नहीं निकले।

(३) पाइप का एक सिरा पम्प से जुड़ा रहता है। जहाँ पाइप से जुड़ा रहता है वहां यदि किसी प्रकार से हवा घुसती हो तो ठीक से काम नहीं होगा।

(४) यदि पाइप में पानी ठीक से नहीं भरा जाता होगा तो भी पम्प ठीक से काम नहीं कर सकता। अब आप स्वयं देखलें कि क्या बात है। आप दोष हटा लें।

अनुमानतः आपके फुटबाल में दोष मालूम होता है। पम्प के भीतर कुछ दोष होने की आशा कम है इसलिये कि भीतर कोई विशेष या छोटे पुर्जे नहीं हैं।

भवदीय
योगेन्द्रनाथ तिवारी

# देश विदेश

—श्री जगन्नाथ सहाय था० क० अफसर, हुड़ा लिखते हैं कि गत माह हुड़ा थाने के अनेक गावों में अस्पृश्यता निवारण सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विशेष रूप से हुड़ा केशर गढ़, आमला तोड़ा तथा सामुक गोड़िया आदि गांव उल्लेखनीय है। इन गांवों में सभाएँ हुईं। जिनमें हरिजन, आदिवासी तथा अन्य लोग भी अधिक संख्या में सम्मिलित थे। छूआछूत निवारण सम्बन्धी भाषणों में अधिकतर युवकों ने भाग लिया तथा प्रस्ताव भी पास किये गये। लखनपुर आदिवासी सभा में करीब १००० हरिजन स्त्रियों ने भी भाग लिया। सभापति मानभूम के डिप्टी कमिश्नर थे। कल्याण अफसर और पंचायत अफसर ने विशेष रूप से भाग लिया।

शिक्षा का प्रचार पटना जिले में सबसे अधिक है। इसके बाद क्रमशः शाहाबाद, सिंहभूम और और धनवाद का नम्बर आता है। शिक्षा में सबसे पिछड़ा हुआ जिला पलामू है।

१९२१ से १९५१ तक यानी ३० वर्षों के मध्य में बिहार की जनसंख्या में १ करोड़ १० लाख की वृद्धि हो गई है। इस तरह इस वृद्धि से हमें मालूम होता है। हर तरह के सामान की कमी हो जाती है और आवश्यकता बढ़ती ही जाती है; सामानों का दाम चढ़ता जाता है। फलस्वरूप जनता की कठिनाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जारही है। जिससे आपस में कलह, वैमनस्य, विग्रह आदि बुराइयां बढ़ने लगी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गत फरवरी माह में राशन का अनाज ६ छटक से ४॥ छटक कर दिया गयाथा, वह फिर ६ छटाँक हो गया है। १९५१ में बिहार को १० लाख टन, मद्रास को १० लाख टन, बम्बई को ११ लाख टन, पश्चिमी बंगाल को ५ लाख टन और आसाम को १ लाख टन तथा ट्रावणकोर कोचीन को ४ लाख टन खाद्यान्न मिलने की संभावना है। इस आशय की राष्ट्रव्यापी घोषणा श्री के० एम० मुन्शी ने ११ जून को की है।

भारत सरकार की ओर से आदिवासियों और हरिजन छात्रों की पढ़ाई में प्रगति के लिये १५०० छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। इसमें लगभग १०,००,००० रुपये वार्षिक खर्च होते हैं।

आचार्य कृपलानी की अध्यक्षता में १६-१७ जून को पटने में 'किसान मजदूर-प्रजा पार्टी' की स्थापना की गयी है। स्मरण रहे कि कृपलानी जी ने गतवर्ष कांग्रेस अध्यक्ष न चुने के बाद कांग्रेस के अन्तर्गत जनतात्रिक मोर्चे की स्थापना की थी। श्री नेहरू और आजाद के प्रयत्न से वह पार्टी भंग कर दी गयी। पटने की किसान मजदूर प्रजा पार्टी की सभा में करीब ११ सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

श्री जवाहर लाल नेहरू ने १६ जून को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में करीब २ लाख की भीड़ में लोगों के सामने भाषण दिया। भारत तथा विश्व की शान्ति के लिये नेपाल की स्वतंत्रता में बाधक है या हस्तक्षेप करता है, यह उनकी गल्ती है।

पं० नेहरू नेपाल की राजधानी काठमाण्डू से दरभंगा, और दरभंगा से १६ जून को पटना पधारे। पटना के हवाई अड्डे में बहुत बड़ी भीड़ ने उनका स्वागत किया। गाँधी मैदान में श्री नेहरू जी ने भाषण दिया। ५ लाख से भी अधिक आदमियों की भीड़ थी। बिहार की खाद्य समस्या के हल के लिये उन्हों ने कहा कि सरकार इस काम में बहुत अधिक प्रयत्न शील है। २० जून को सदाकत आश्रम में भी कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के समक्ष उनका भाषण हुआ।

चार महीने के बाद नेपाल के मन्त्रिमण्डल ने इस्तीफा दे दिया और नया मंत्रिमण्डल बनाया गया। इस मन्त्रि मण्डल में अन्तर इतना ही है कि राणा मोहन शमशेर के छोटे भाई उत्तराधिकार के नम्बर में प्रधान मन्त्री के बाद दूसरे नम्बर में हैं। राणा की जगह नेपाल के दिल्ली स्थित राजदूत जनरल सिंह और नेपाली कांग्रेस के श्री भारतमणि शर्मा की जगह श्री सूर्य प्रसाद उपाध्याय ने शपथ ग्रहण कर लिया है।

बहुत दिनों के बाद अमेरिका से आने वाला अन्न १२ जून को अमेरिकन राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हो जाने पर १०० टन गेहूँ भारत आ रहा है। १६ जून को वह अन्न वहाँ के न्यूयार्क बन्दरगाह से चल चुका है। इस अन्न के लिये अमेरिका स्थित भारत के राजदूत श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित ने अमेरिकन सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मण्डल की गतिविधि—

गत १८ जून को निवारण आश्रम में आदिम-जाति सेवा मण्डल की उपसमिति की बैठक हुई। बैठक में संस्था के मंत्री श्री नारायण जी, पं० योगेन्द्र नाथ तिवारी, श्री भैया राम मुण्डा, श्री सिंहराज सिंह, श्री रामचरित्र सिंह, श्री धनुष प्रसाद सिंह, श्री प्यारे केरकेटा, श्री छेदी साहु, श्री अनिरुद्ध सिंह, श्री फणि भूषण बनर्जी, श्री राम दास साहु, श्री शुकरू उराँव तथा श्री पाण्डेय प्रद्युम्न प्रसाद उपस्थित थे।

बैठक के प्रारंभ में श्री नारायण जी ने सब कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम लोग ढ़ाई सौ से अधिक स्कूल तो चला रहे हैं; किन्तु उन स्कूलों की जिस रूपरेखा की कल्पना की गई थी, उसे आज तक हम मूर्त्तरूप नहीं दे सके। इसका कारण यह है कि हमारे कार्यकर्त्ताओं ने अब तक इस ओर अपनी पूरी शक्ति नहीं लगायी है। यदि हमारे स्कूल सरकार के साधारण स्कूलों की अपेक्षा अच्छे नहीं होंगे तो हमारे लिए चिन्ता की बात है।

हमारी संस्थाओं में जितना जीवन रहना चाहिये, उतना नहीं है। इसका कारण यही मालूम पड़ता है कि कार्यकर्त्ताओं में सजीवता और स्वावलम्बन की भावना की कमी है। हम जब तक खुद चैतन्य नहीं होंगे और मुस्तैदी से काम नहीं करेंगे तब तक हमारी संस्थाएँ आदर्श न बन सकेंगी।

बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुए।

१ (क) सर्वसम्मति से यह तै हुआ कि मण्डल के सब कार्यकर्त्ता इस सिद्धान्त को मानेंगे कि मण्डल के स्कूलों को स्वावलम्बी बनाना है।

(ख) इस सिद्धान्त को कार्यान्वित करने के लिए फोरी में शिक्षण केन्द्र खोला जाय और उसके संचालन का उत्तरदायित्व श्री छेदी साहु के ऊपर रहेगा।

(ग) प्रत्येक स्कूल में कम से कम २० फीट × २० फीट जमीन को घेर कर उस में कम से कम ४ देवकपास के गाछ, कुछ तरकारी एवं फूलपत्तियाँ अवश्य लगायी जायँ।

२ गाँधी स्मारक निधि योजना के अनुसार जाहेर, गुमला, खूंटपानी, मोरांगी, खूंटी, लवागड़ा, कोना पाड़ा आदि स्थानों में 'गांधी घर' का निर्माण किया जाय जिसके द्वारा आस पास के गाँवों के उत्थान के लिए रचनात्मक कार्य्यों द्वारा शक्तिभर प्रत्यन किया जाय।

३ बापा स्मारक निधि के लिए प्रति व्यक्ति कम से कम चार आने की मांग करनी है। उसके लिए किस इलाके में कम से कम कितने व्यक्तियों से मिलकर चार आने फी आदमी की माँग करनी होगी, इसका कोटा निम्न प्रकार निश्चित किया गया।

खूंटी ५० हजार, गुमला ५० हजार, सिमडेगा ५० हजार, पलामू ७५ हजार, सिंहभूम एक लाख, मानभूम १ लाख, राँची सदर ५० हजार हजारीबाग ७५ हजार।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आदिम जाति सेवा मण्डल
आयुर्वेदिक औषधालय
निवारण आश्रम, राँची।
यहाँ वैज्ञानिक ढंग से, शास्त्रीय पद्धति के अनुसार हर प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियाँ तैयार की जाती हैं। प्रयोग के बाद ही इनके गुण जाने जा सकते हैं। आप एक बार अवश्य परीक्षा कर देखें। जिसको जिस प्रकार की दवा की आवश्यकता हो ऊपर के पते से लिखें।

राष्ट्रीय भाषा
छोटानागपुर का एकमात्र हिन्दी दैनिक
क्या आप एक ही साथ उच्च विचार और ताजा समाचार होनों चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो
'राष्ट्रीय भाषा' पढ़िये
और विज्ञापन दे कर लाभ उठाइये

यदि आप नहीं जानते हैं
तो
नोट कर लें
हमारे यहाँ हर किस्म के नक्शे, ग्लोब, चार्ट, एजुकेशनल चार्ट और स्कूली किताबें सस्ते दामों पर मिलती हैं।
आइडियल बुक स्टोर्स
मेन रोड, राँची।

विजयी भण्डार
को
स्टेशनरी के सभी प्रकार के सामान, पुस्तकें आदि चीजों के लिए याद रखें।
पता:—विजयी भण्डार
अपर बाजार, राँची।

सुदर्शन प्रेस
चर्च रोड, राँची
सस्ती छपाई, सफाई और शीघ्रता के लिए
प्रसिद्ध

आलसी हमेशा पछताते हैं
इसलिए आप आलस्य छोड़ कर
शीघ्र ही 'ग्राम-निर्माण' के ग्राहक
बन जायँ और व्यवसायी विज्ञापन देकर लाभ उठावें
क्योंकि
यही पत्रिका है जिसकी पहुँच गाँव-गाँव में हैं।
विज्ञापन दर

| | | |
|---|---|---|
| कवर का चौथा पृष्ठ | ... | १००) |
| कवर का तीसरा पृष्ठ | ... | ७५) |
| क्रोड़ पत्र प्रारंभ में पूरा पृष्ठ | ... | ६०) |
| क्रोड़ पत्र अंत में पूरा पृष्ठ | ... | ५०) |
| भीतर लेख के साथ कालम का प्रति इंच | | ३॥) |

वर्ष भर के लिये विज्ञापन देने वालों को सुविधा दी जायगी।
—व्यवस्थापक

याद रहे !
राँची में सुन्दर और सस्ती छपाई
सिन्हा प्रेस
में
होती है।
पता:—सिन्हा प्रेस
पो० बक्स न० ६७, राँची।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# नव-ज्वरहरि

( Regd. )

मलेरिया सम्बन्धित बुखार
एवं
शर्दीवाली बुखार की आपके पसंद औषधि

## नव-भारत लेबोरेट्रिज की औषधियों

पर निर्भर करें, क्योंकि वे शास्त्रोक्त और विशुद्ध होती हैं

नोट—खुजली, दाद, फुन्सी में 'स्कीना' फलदायक है


## 'ग्राम-निर्माण' के नियम

१ ग्राम-निर्माण हर महीने के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।

२ ग्राम-निर्माण में प्रकाशित लेखों का सारा उत्तरदायित्व लेखकों के ऊपर ही रहेगा।

३ ग्राम-निर्माण में प्रकाशनार्थ उपयोगी एवं स्वस्थ रचनाएँ ही भेजी जायँ।

४ लेख, कविताएँ एवं कहानियाँ सम्पादक, ग्राम-निर्माण पो० हिनू, राँची के पते से भेजनी चाहिये।

५ लेखक अपनी रचनाओं के साथ अपना तथा विषय से संबन्धित ब्लाक भेजेंगे तो उन्हें भी सहर्ष स्था दिया जायगा।

६ रचनाओं को स्वीकृत, अस्वीकृत करने तथा घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

७ रचनाओं को स्पष्ट अक्षरों में तथा पृष्ठ के एक ही ओर लिखकर भेजना चाहिये।

८ जो लेखक चाहें कि रचना अस्वीकृत होने पर वापस कर दी जाय उन्हें इसके लिये टिकट रचना साथ ही भेजना चाहिये।

९ ग्राम-निर्माण का ग्राहक किसी भी महीने से बना जा सकता है। ग्राहकों को अपना चन्दा मनिआ द्वारा भेजना चाहिये। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।

१० कानूनी दिक्कत के कारण ऐसे समाचार 'देश-विदेश' वाले स्तंभ में नहीं छप सकेंगे जिसके साथ भेजने वाले का पूरा नाम और पता न रहेगा।

आदिम जाति सेवा मण्डल द्वारा प्रकाशित तथा सुदर्शन प्रेस, राँची द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

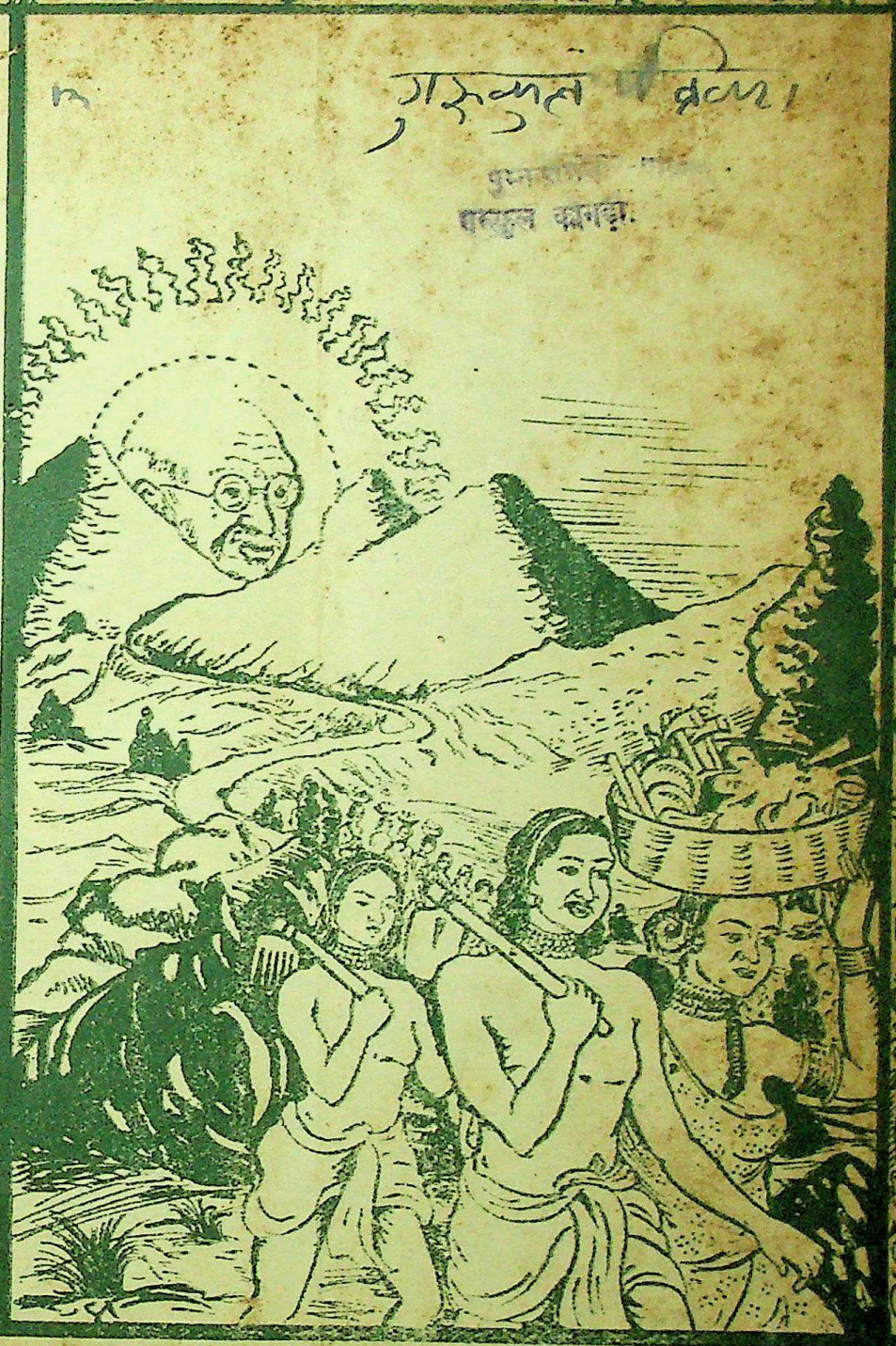

सम्पादक
रामचरित्र सिंह
स० सम्पादक
आदित्य मित्र, 'मतवाला'

जनवरी—फरवरी १९२८
वर्ष—२ अंक—१-२
वार्षिक चन्दा— ६)
अर्द्ध वार्षिक— ३)
एक प्रति— ॥)
इस प्रतिका—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्षमा याचना

चुनाव का तूफान आया। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक एक अजीब चहल पहल मच गयी। देश के एक एक आदमी को, जो थोड़ा भी जागरूक है, इसमें भाग लेना ही पड़ा। हमारे कार्यालय के भ छोटे बड़े सभी कार्यकर्त्ता अवकाश लेकर अपने अपने क्षेत्र में या पसन्द के उम्मीदवारों के लिये कार्य कर चले गये। प्रेस भी इस चुनाव का एक अनिवार्य, और महत्वपूर्ण साधन बना। प्रेस के जिम्मे भी चुना के इतने काम आ गये कि दूसरे सभी काम स्थगित कर देने पड़े। इसी कारण 'ग्राम निर्माण' क जनवरी अंक निकलना संभव न हो सका। हाँ, हमे खेद है कि इसकी सूचना हम अपने ग्राहकों को समय पर न दे सके। आशा है हमारे ग्राहक बन्धु क्षमा करेंगे। इसी लिए जनवरी और फरवरी का स संयुक्त अंक निकालना पड़ा है। आगे से फिर पहले की तरह ही समय पर सभी अंक निकला करेंगे।

—संचालक

# इस अंक में पढ़िये

१. सम्पादकीय, २. सर्वोदय यात्री का संदेश—३. गीत (कविता)—श्री त्रिगुणायत, ४. गाँधी: एक पैगम्बर—श्री दिवाक ५. बुनियादी शिक्षाका अभिप्राय—श्री लक्ष्मीनारायण, ६. भगवान का सार्टिफिकेट (कहानी)—श्री राधाकृष्ण, ७ अहिं क्रान्ति में शिक्षाक स्थान—श्री धीरेन भाई, ८. जन, जनमत और जननेता—श्री पट्टनायक, ९. आर्थिक समता के f सर्वोदय असंभव—श्री केजरीवाल, १०. बाँछरी—श्री जगदीश त्रिगुणायत, ११. आर्थिक स्वाधीनता की संभावना श्री मुकुल, १२. ग्रेजुएट (कहानी)—श्री उन्मन, १३. रैनदिन रोने का वरदान (कविता)—श्री 'मनमोहन', १४. स (कविता)—श्री सुरेश झा, १५. खेत कोड़ने ·· डिप्लोमा मिले—श्री नेहरू, १६. गाँव की काया पलट—पं० देवनार मिश्र, १७. घूसखोर पकड़ने का तरीका, १८. श्री माथुरका 'नया पुजारी'—श्री रजनी कान्त तिवारी, १९. तंगुआ गुफाएँ—सरदार पणिक्कर,—२०. दहेज (कहानी)—श्री जटाधारी मिश्र, २१. व्यथा (कविता)—श्री 'कवि क २२. हाथी कैसे पकड़े जाते हैं?—सुश्री शान्तिलता, २३. बिहार—श्री जगदीश, २४. मानवविकास के सिद्धान्त क्रान्ति, २५. छोटानागपुर और रेशम उद्योग—श्री करामत हुसेन, २६. चुनाव की विचित्र घटनाएँ; २७. बिह निर्वाचित मदस्य, १८. सर्वोदय मेला, २९. विधान सभाएँ, ३०. माण्डल की गतिविधि।

बढ़ियाँ, टिकाउ तथा सुन्दर सूटकेशों के लिये याद करें—

**एम० ए० फैजी, बिहार ट्रंक फैक्टरी**

हिन्दपीढ़ी, राँची

हमारे कारखाने में पुराने बक्सों, सूटकेशों आदि की मरम्मत बहुत खूबी के साथ होशियार कारीगरों द्वारा की जाती है। रंगाई का काम भी बहुत ही अच्छा होता है।

पुराने बक्सों को हम बिलकुल नया बना देते हैं।

एक बार परीक्षा कर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत

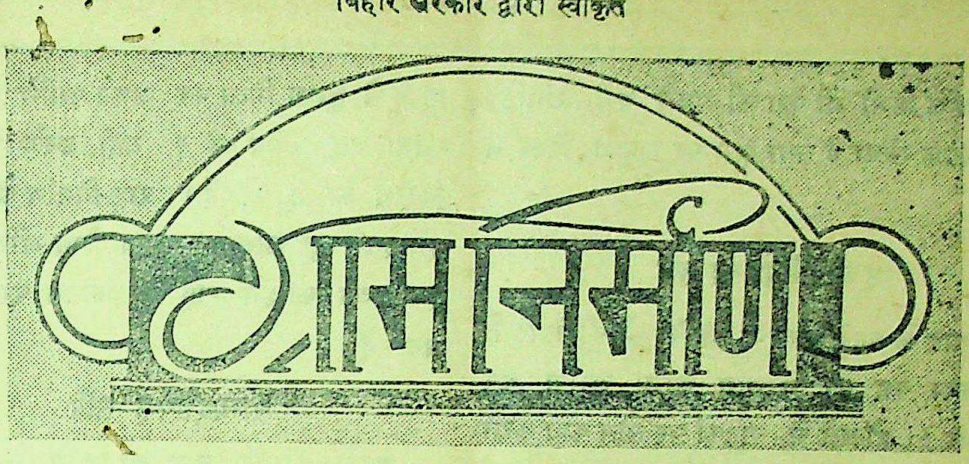


वर्ष २ ॥ * राँची, जनवरी–फरवरी * ॥ अंक १-२

## सम्पादकीय

### चुनाव से सबक

हिन्दुस्तान का आम चुनाव समाप्त हो गया और हमारे देश से दिलचस्पी रखने वाले दुनिया के सभी लोगों ने इस चुनाव की सराहना की है। एक तरह से सभी ने कहा कि दुनियां में चुनाव का यह अद्वितीय दृश्य था। इतने बड़े कार्य में इधर उधर कुछ गलतियों का हो जाना स्वाभाविक ही था पर कांग्रेस सरकार के कट्टर विरोधी श्री जयप्रकाश नारायण तथा श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने भी स्वीकार किया है कि चुनाव अच्छे ढंग से ही समाप्त हुआ। इस चुनाव से हमें कुछ ऐसे सबक मिले हैं जिन्हें हम भूल नहीं सकते।

### काँग्रेस की शक्ति

चुनाव के समय में कांग्रेस के विरोधियों ने ऐसी समां बांध दी थी कि मालूम होता था जैसे कांग्रेस की जड़ ही हिल गयी और इस चुनाव के धक्के से वह धरासायी हो जायेगी। लेकिन आज यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस विरोधियों ने कांग्रेस को शक्ति को ठीक ठीक न आंका था। कांग्रेस को, जिसने सदा देश की सेवा की है, लोगों ने भुलाया नहीं है और ५ वर्षों के लिए फिर उसी के हाथों में सत्ता की बागडोर सौंप दी है। मद्रास, ट्रावनकोर-कोचीन, पेप्सू प्रान्तों को छोड़कर सब जगह कांग्रेस की ही विजय हुई है। और यदि अलग अलग दल को लिया जाय तो इन जगहों में भी कांग्रेस ही बड़े दल के रूप में है। गरज, इस चुनाव ने कांग्रेस को धरासायी नहीं किया बल्कि उसकी जड़ को और मजबूत ही कर दिया है। कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष आचार्य कृपलानी, पंजाब के भूतपूर्व प्रधान मंत्री डा० गोपीचन्द भार्गव, भारत सरकार के मंत्री डा० अम्बेदकर, मद्रास के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री टी० प्रकाशम्, बंगाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री पी० सी० घोष, सोशलिस्ट नेता श्री जयप्रकाश नारायण और आचार्य नरेन्द्र देव और कम्युनिस्ट नेता डांगे जैसे कर्मठ और बड़े बड़े लोगों ने कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा बनाया था। पर इन सबको जनता-रूपी समुद्र की लहरों में कहीं स्थान नहीं मिला। वे घास पात की तरह किनारे फेंक दिये गये हैं। इस तरह इस चुनाव से प्रथम सबक हमें यह मिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि कांग्रेस अभी भी देश की सबसे बड़ी, संगठित और सेवक संस्था है तथा इसी पर सबका विश्वास है।

## पूँजीपतियों का रुख

चुनाव के पहले लोगों ने कांग्रेस को पूँजीपतियों की संस्था कह कर बदनाम करना आरंभ कर दिया था। होटलों में, सड़कों पर लोग कहा करते थे कि कांग्रेस राजा महाराजाओं की चीज हो गयी है। किन्तु इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया कि राजा और पूँजीपति कांग्रेस को अपना एकमात्र दुश्मन समझते हैं। बिहार में देखिये—दरभंगा महाराज रातू के राजा, रामगढ़ के राजा श्री कमाख्या नारायण सिंह आदि जितने बड़े-बड़े जमीन्दार हैं, सब कांग्रेस के खिलाफ खड़े हुए थे। पूंजीपति व्यवसाइयों ने भी कसकर कांग्रेस से मोर्चा लिया। साथ ही उन्होंने विरोधियों की मदद भी की। राँची के भी दो मारवाड़ी कांग्रेस के खिलाफ खड़े हो गये थे। और इस शहर के मारवाड़ियों के सभी वोट किसको मिले, शहर के बच्चे-बच्चे जानते हैं। राष्ट्र के प्राणस्वरूप पण्डित जवाहर लाल नेहरु जैसे व्यक्ति को हराने के लिए करोड़ों रुपये किसने खर्च किये हैं, सभी जानते हैं। इस तरह यह साफ है कि पूँजीपति बृटिश सरकार के समय जिस तरह कांग्रेस की मुखालफत करते थे, आज भी कर ही रहे हैं। कांग्रेस का ध्येय है गरीबों की सेवा करना, हिन्दुस्तान से गरीब और अमीर के भेद को मिटा देना। हाँ, यह ठीक है कि कम्युनिस्टों की तरह कांग्रेस पूँजीपतियों की हत्या नहीं करना चाहती। उन्हें भी राष्ट्र का एक नागरिक बनाकर रखना चाहती है। पर पूँजीपति अपनी अट्टालिकाओं से उतर कर गरीबों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर अपने पसीने की कमाई खाना चाहें तब न ? यही उनके भय और विरोध का कारण है। राष्ट्र-निर्माण के कार्य में हमें इनसे खूब सावधान रहना होगा और चुनाव के इस सबक को हम राष्ट्र की कीमत पर ही भुला सकते हैं।

## साम्प्रदायिक साँप

हमारे देश में बापू की हत्या के बाद भी साम्प्रदायिक संस्थाएँ कायम रही। कहीं वे जनसंघ के नाम से सिर उठाती हैं, कहीं रामराज्य परिषद, कहीं गणतंत्र परिषद, तो कहीं झारखण्ड आदि आदि के नाम से। ये सभी संस्थाएँ साम्प्रदायिक संस्थाएं हैं जो जात और धर्म के नाम पर देश के अशिक्षित लोगों को उभाड़ते हैं और प्रजातंत्र की जड़ में ही कुल्हाड़ी लगाते हैं। प्रजातंत्र पार्टियों के आर्थिक और राजनैतिक कार्यक्रम पर ही ठीक ठीक चल सकता है। साम्प्रदायिकता प्रजातंत्र का घोर दुश्मन है और है राष्ट्र के लिए भयंकर आस्तीन का साँप। जब तक हम इसे नहीं मिटायेंगे; हमारा शिशु प्रजातंत्र पनप नहीं पायेगा। यह सही है; देश ने इन्हें पहचान लिया है और इन्हें इस चुनाव में उखाड़ भी फेंका है। इनके लाख चिल्लाने पर भी कांग्रेस की ही विजय हुई है। लोगों ने कांग्रेस का ही साथ दिया! पर अभी भी हमें जागरूक रहने की आवश्यकता है और अपने समाज से साम्प्रदायिकता को बिलकुल ही उखाड़ फेंकना है।

## कांग्रेस की कमजोरी

इस चुनाव ने कांग्रेस की कमजोरियों को भी स्पष्ट कर दिया है। कभी कभी कांग्रेस के ऊँचे से ऊँचे नेता भी स्वार्थान्ध हो जाते हैं। फिर निम्न श्रेणी के कार्यकर्त्ताओं का क्या पूछना ? चुनाव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आरंभ में उम्मीदवारों की नामजदगी के समय इस बार दिल्ली में जो दृश्य देखा गया, वह सब के सामने ताजा ही है। यह कांग्रेस की जड़ को हिला देने वाली चीज है। कांग्रेस के सभापति श्री जवाहरलाल नेहरू ने इस कमजोरी को पहचान लिया है। उन्हों गश्तीपत्र भी भेजा है और उम्मीद है, कांग्रेस के सभी लोग आज इस चीज को समझ जायंगे और इसे हटाने की चेष्टा करेंगे।

## सरकारी कर्मचारी

कांग्रेस के बड़े दुश्मनों में कुछ सरकारी कर्मचारी भी हैं। छोटानागपुर में खासकर जंगल और कन्ट्रोल विभाग के कर्मचारियों से लोगों को शिकायत है। इनकी धांधली से लोग त्रस्त हो गये और इन्हीं को सरकार मानकर चुनाव के आरंभ में लोगों ने तै कर लिया था कि कांग्रेस को वोट देंगे ही नहीं। पर पीछे वस्तुस्थिति को साफकरने पर लोगों ने कांग्रेसियों से प्रतिज्ञा करवा ली कि वे इन कर्मचारियों की धांधली से लोगों की रक्षा करेंगे। अतः आज कांग्रेस का भी कर्त्तव्य है कि वह इसकी जाँच करे और इस सम्बन्ध में लोगों की जो भी कठिनाई है, उसे दूर करने की कोशिश करे।

## वामपक्षियों की शक्ति

देश ने अपना विश्वास कांग्रेस के प्रति दिखलाया। मद्रास, ट्रावनकोर-कोचीन को छोड़कर प्रायः सर्वत्र वामपक्षी हारे ही हैं। फिर भी इन लोगों ने जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और अगर कांग्रेस कम से कम सरकारी कर्मचारियों की धांधली को अगले ५ वर्षों में न रोक सकी तो वामपक्षियों के लिए रास्ता साफ हो जायेगा। अतः कांग्रेस का ध्यान इस ओर जाना चाहिए। हमें देश से गरीबी को दूर करना है। अशिक्षा को मिटाना है। लोगों की रहन सहन के स्तर को ऊँचा करना है। पर राष्ट्र-निर्माण के इन सारे कामों में हमारे अस्त्र तो सरकारी अफसर ही रहेंगे। और उनमें यदि जंग लगा रहा तो कभी भी हमें कामयाबी नहीं मिलेगी। इस कारण हमें अपने अस्त्र को अवश्य साफ करना होगा।

## गांववालों पर मुखियों का आधिपत्य

इस बार अधिकांश लोगों ने समझ बूझकर वोट दिया, इसमें सन्देह नहीं, पर यह स्पष्ट है कि आज गाँव वालों पर गांव के कुछ मुखियों का आधिपत्य है और कहीं कहीं इनका रुख बहुत गर्हित था। इस कारण वोट के महत्व के प्रचार की भी आवश्यकता है—खास कर पढ़े लिखे लोगों में। इस बार के चुनाव में लोगों को एक विचित्र अनुभव हुआ। देहात के लोगों ने चुनाव में काफी दिलचस्पी ली और कहीं-कहीं तो ७० फी सदी लोगों ने वोट दिया। पर शहरों के पढ़े लिखे लोग ३०-४० फी सदी से अधिक न आ सके। यह भी एक ध्यान देने की चीज है।

इस तरह चुनाव ने हमें कई सबक सिखाये और अगर हमने इनसे लाभ उठाया तो देश का बहुत बड़ा कल्याण होगा।

---

## झारखण्ड पार्टी की जीत या हार ?

अभी २४ जनवरी को बिहार में चुनाव यज्ञ समाप्त हुआ और कहा जाता है कि इसमें झारखण्ड पार्टी की विजय हुई है। इसमें सन्देह नहीं कि राँची, सिंहभूम और संथाल परगना में झारखण्ड पार्टी के कुछ सदस्य चुने अवश्य गये हैं पर इससे यह निष्कर्ष निकालना कि झारखण्ड पार्टी की जीत हो गयी, भ्रमात्मक होगा। बिहार असेम्बली में कुल ३३० सदस्य होंगे जिनमें झारखण्ड पार्टी के कुल ३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और कांग्रेस के २४१ सदस्य । अब २४१ सदस्य के सामने झारखण्ड पार्टी के ३२ सदस्य क्या कर सकेंगे, यह समझने की बात है। इतना ही नहीं, सारे बिहार की बात छोड़ दें और केवल छोटानागपुर को ही लें जिसे झारखण्ड पार्टी वाले अपना गढ़ समझते हैं तो यहाँ भी झारखण्ड पार्टी को मुंह की खानी पड़ी है। यहाँ भी निर्वाचित कांग्रेसी सदस्यों की संख्या झारखण्ड पार्टी से अधिक है। छोटानागपुर में कुल ६८ सदस्य निर्वाचित हुए हैं जिनमें झारखण्ड पार्टी के कुल २१ और कांग्रेस के २६ सदस्य हैं। इस प्रकार समूचे बिहार की सदस्य-संख्या को देखें तो उसमें झारखण्ड पार्टी का कहीं कोई स्थान ही नहीं है। पर, अगर केवल छोटानागपुर को ही लें तो यहाँ भी झारखण्ड पार्टी को कांग्रेस ने पछाड़ा ही है। इस तरह स्पष्ट है कि झारखण्ड पार्टी को कुछ लोगों ने वोट तो दिया और उस के कुछ सदस्य चुने भी गये पर वास्तव में जीत तो कांग्रेस की ही हुई और बिहार में कांग्रेस का ही शासन अगले पांच सालों तक बना रहेगा। अब प्रश्न यह है कि उनका क्या होगा जिन्होंने उड़े उमंग और उत्साह से झारखण्ड पार्टी को वोट दिया है!

## मिथ्या प्रचार

चुनाव के सिलसिले में झारखण्ड पार्टी ने बड़ी बड़ी धोखे की टट्टी खड़ी की थी। उसका सबसे पहला प्रचार यह था कि कांग्रेस की जड़ हिल गयी है। इसलिए कांग्रेस के हाथ में अब शासन नहीं रहेगा। शासन झारखण्ड पार्टी के हाथ रहेगा। पर उनका यह सपना तो सपना ही रह गया। कांग्रेस की वह शानदार विजय हुई जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। कांग्रेस के सदस्य जिस अनुपात में आज चुने गये हैं, बिहार असेम्बली में कभी नहीं चुने गये थे। अभी तो ३३० के बीच में ३२ झारखण्डी ही गये हैं। पर पहले १५२ में कांग्रेस को केवल ६६ जगहें मिली थी। इसलिए जिन लोगों ने इस आशा से वोट दिया था कि झारखण्ड पार्टी की विजय होगी और इसका राज्य स्थापित होगा तथा इस पार्टी के लोग अब गुलछर्रे उड़ायेंगे, उन्हें पूरी निराशा हुई है। झारखण्ड पार्टी का राज्य न हुआ और न कभी होगा ही।

झारखण्ड पार्टी की ओर से यह भी प्रचार हुआ था कि जंगल कानून टूटेगा और कन्ट्रोल उठ जायेगा। छोटानागपुर के देहातों के लोग अशिक्षित हैं। उनको गुमराह बनाना कोई कठिन काम नहीं है। झारखण्ड पार्टी ने इसका फायदा खूब उठाया। लोगों को जंगल कानून और कन्ट्रोल के खिलाफ उभाड़ा गया और यहाँ तक लोगों को विश्वास दिलाया गया कि वोट देने के बाद ही वे निर्भय होकर जंगल काट सकते हैं, और झारखण्ड पार्टी वाले उन्हें बचा लेंगे। अशिक्षित गरीब आदिवासियों ने बड़ी खुशी से झारखण्ड पार्टी को वोट दिया और घर लौट कर अपनी कुल्हाड़ी लेकर नाचते गाते जंगल काटने चले। वे क्या जानते थे कि उन्हें धोखा देकर वोट ले लिया गया है! आज अनेक आदिवासी इसी कारण कठिनाई में पड़े हुए हैं और सिर धुन कर पछता रहे हैं कि उन्होंने कैसी गलती की है!

## साम्प्रदायिकता का जहर

प्रजातंत्र के खिलाफ झारखण्ड पार्टी ने एक दूसरा भयंकर अपराध किया है कि उसने साम्प्रदायिकता का खूब प्रचार किया। यह प्रजातंत्र की जड़ को खोदने वाली बात है। पर झारखण्ड पार्टी अपना शासन स्थापित करने की कोशिश में अन्धी हो रही थी। अतः साम्प्रदायिकता का विष बोने में उसे तनिक भी हिचकिचाहट नहीं हुई। चारों ओर क्रिश्चियनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को खूब उभाड़ा गया। उन्हें क्रिश्चियन राज्य का सब्जबाग दिखलाया गया। झारखण्ड पार्टी को तो इस नारे ने तात्कालिक सफलता अवश्य दी किन्तु जनता को तो निराश ही होना पड़ा है। न झारखण्ड पार्टी का राज्य हुआ और न क्रिश्चियन ही सत्तारूढ़ हुए, न जंगल कानून टूटा और न कन्ट्रोल ही हट सका। झारखण्ड पार्टी की ओर से पाप तो सब तरह के किये गये पर अंत में कांग्रेस, जिसकी अमिट छाप प्रत्येक हिन्दुस्तानी के हृदय पर पड़ी हुई है, की ही जीत होकर रही और ऐसी जीत कि झारखण्ड पार्टी जीतकर भी हार गयी और कांग्रेस कुछ जगहों में हारकर भी जीत गयी।

## कांग्रेसियों को जान मारने की धमकी

प्रचार के सिलसिले में झारखण्ड पार्टी वालों ने देहात के लोगों को डराया धमकाया भी। लोगों को धमकियाँ दी गयी कि जो लोग झारखण्ड पार्टी को वोट नहीं देंगे उन्हें गाँव से निकाल दिया जायगा। कांग्रेस के प्रचारकों को जान मारने की धमकी दी गयी। चैनपुर में तो बोनीफेस लकड़ा की हत्या करने की पूरी तैयारी कर ली गयी थी। और करीब १५० आदमी तीर, धनुष, भाला, गड़ांसा आदि लेकर निकल भी पड़े थे।

## कांग्रेस वाले सेवा करते ही रहेंगे

कांग्रेस गरीबों की संस्था है। यह गरीबों के लिए लड़ती है और लड़ती रहेगी। यही कारण है, गरीबों के दुश्मन कांग्रेस को अपना दुश्मन समझते हैं। छोटानागपुर के लोगों को याद होगा कि किस तरह इस चुनाव में एक एक करके सभी जमीन्दार लोग कांग्रेस के खिलाफ उठ खड़े हुए थे। पर आज उनके प्रहार के बाद भी गरीबों की सहायता से कांग्रेस विजयी हुई है। इस विजय से कांग्रेस मदान्ध नहीं हुई है। वह जनता की सेवा करने वाली संस्था है और पूरे उत्साह से फिर जनता की सेवा करेगी। किसने वोट दिया, किसने नहीं दिया, इसकी उसे तनिक भी परवाह नहीं। कांग्रेस की दृष्टि में सभी एक हैं। आदिवासी और हरिजन पूर्ववत इसकी सेवा के महत्वपूर्ण लक्ष्य बने ही रहेंगे। कुछ लोग समझते हैं कि कांग्रेस आदिवासियों की सेवा वोट के लिए ही करती है। आज वैसे लोगों की आँखें खुल जानी चाहिये और उन्हें कांग्रेस को पहचानना चाहिये। कांग्रेस के सामने यह प्रश्न कदापि न आवेगा कि कौन इसके पक्ष में हैं और कौन विपक्ष में। चूंकि आदिवासी और हरिजन पिछड़े हुए हैं, इसलिये कांग्रेस का खास ध्यान इनकी ओर है। जंगल कानून आदिवासियों के हित के लिये ही बना है और उसे उनके हित के लिए कायम रहना चाहिये। हाँ, जंगल विभाग के कुछ अफसर धांधली करते हैं, चुनाव काल में कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं को इसका पता चला है। चुनाव के पश्चात कांग्रेस की ओर से इस धांधली को मिटाने की पूरी चेष्टा होनी चाहिये। सामान की कमी है, इसी कारण कन्ट्रोल है। जबतक सामान की कमी दूर नहीं होगी, कन्ट्रोल रहना चाहिए। पर चुनाव के सिलसिले में लोगों को यह पता चला है कि कन्ट्रोल विभाग के अफसर कहीं कहीं धांधली मचा रहे हैं। अब से उनपर पूरी निगरानी रखी जानी चाहिये। आदिवासियों की शिक्षा का काम भी आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिये। चुनाव काल में झारखण्ड पार्टी ने कहा था कि अगर कांग्रेस का राज्य हुआ तो मुर्गी और उसके अण्डे पर भी टैक्स लगाया जायगा। यह सब सरासर झूठ और बिलकुल धोखा था। झारखण्ड पार्टी हार गयी तथा कांग्रेस विजयी हुई। अब फिर कांग्रेस को अपनी पूरी ताकत के साथ राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लग जाना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

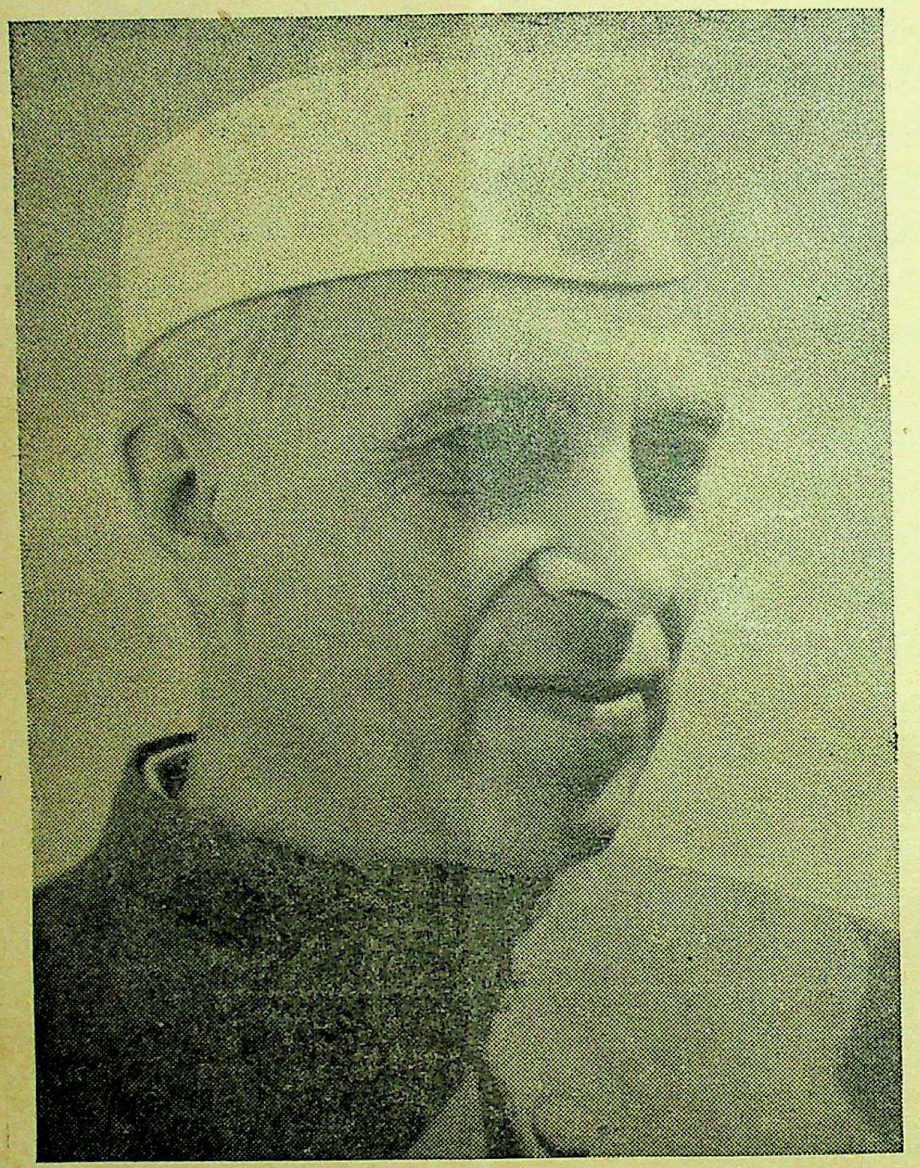

[ सम्पादक—'सण्डे प्रेस' के सौजन्य से ]

# हमारे जननायक वीर जवाहर

**जो इलाहाबाद-जौनपुर क्षेत्र से संसद के लिए उम्मीदवार थे और विरोध में देश के प्रतिक्रियावादियों एवं बड़े-बड़े भारतीय यहूदियों के लाख प्रयत्न और करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद जिन की शानदार जीत होकर रही।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सर्वोदय के यात्री का संदेश

## आचार्य विनोबा

[ परंधाम (पवनार) से शिवरामपल्ली (हैदराबाद) तक की पैदल-यात्रा करते हुए, पूज्य विनोबाजी ने अनेक स्थानों पर रुककर ग्रामवासियों के समक्ष विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यस्त किये थे। उनके भाषणों कुछ अंश यहां दिये जाते हैं।—सम्पादक ]

### यात्रा का उद्देश्य

सर्वोदय सम्मेलन में सब लोग जिस तरीके से जा सकते हैं उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो इस तरह नहीं जा सकते हैं वे रेलगाड़ी से आयेंगे तो भी उसमें दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है, जनता के साथ सम्पर्क आता है और उसे सर्वोदय का स देश पहुंचा सकते हैं। वह संदेश सुनने और उसमें से सांत्वना प्राप्त करने के लिए लोग बहुत उत्सुक हैं। लोगों को इस समय सांत्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमें से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमें किसी एक का दोष है, ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है।

### गुण-दर्शन

एक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है। वह गुण है 'अनिंदा'। एक जमाना था जब मैं कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिए और दूसरों के गुण। लेकिन एक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिए; क्योंकि आखिर हम कौन हैं? वही शुद्ध चेतन आत्म-स्वरूप हम हैं तो फिर दोष किसके देखें? दोषों का भान हम जरूर रखें; लेकिन चिन्तन तो गुणों का ही करना चाहिए। दोष तो सिर्फ गुणों की छाया-रूप होते हैं। बिना छाया के तस्वीर नहीं खींची सकती। वैसे बिना दोषों के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते हैं। दोषों को हम जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिए और गुणों को बाहर आने का मौका देते रहेंगे। इस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जायंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे।

### मौजूदा अन्न संकट का एक हल

हिन्दुस्तान में पांच लाख देहात हैं। उनके सवाल दिल्ली की सरकार, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, अकेली हल नहीं कर सकती। सवाल हल करने का इलाज आपके हाथ में है। वह कौन-सा? पैसे के दर ऊपर-नीचे होते हैं। एक रुपये में में कभी चार पायला ज्वार तो कभी दो पायला। वह भी कभी मिलती है, कभी नहीं। मैंने सुझाया कि सालदारों की तरह आप मजदूरों को भी कुछ निश्चित प्रमाण में ज्वार क्यों नहीं देते? यह प्रमाण, मैंने रोज पचास तोला ज्वार सुझाया। स्त्री हो चाहे पुरुष, ज्वार में फ़रक न किया जाये मजदूरी में भी जो फर्क करना है, वह पैसे से किया जाये। ५० तोला ज्वार दे देने के बाद ऊपर से जो भी पैसे देने हैं उसमें चाहें तो फर्क कर सकते हैं। इस तरह मजदूरों को उनकी रोजी में कम से-कम ५० तोला ज्वार और बाकी के पैसे देंगे तो आपके मजदूर भूखे नहीं रह सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## दुखियों की सेवा

सारी दुनिया में जो परमेश्वर भरा है उसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से होनी चाहिए, और परमेश्वर की पूजा यानी दुखियों की सेवा। तो आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछें कि अपनी देह के लिए तो मैंने सब कुछ किया, लेकिन दूसरे के लिए क्या किया? गाँव के लिये क्या किया? कोई बीमार था तो क्या उसे दवा दी है? कहीं गन्दगी पड़ी थी तो उसे साफ किया है? मेरा देह और मेरा घर छोड़ कर गांव के लिए मैंने अगर कुछ नहीं किया है तो समझना चाहिए कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। व्यर्थ जिया। इस तरह तो पशु-पक्षी सभी जीते हैं। भगवान् ने हरएक को प्राण दिया है तो सब खाते हैं और जीते हैं, लेकिन दूसरे के लिए जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना इसमें जो समाधान मानव को प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीज में नहीं होता।

## व्यसन-निषेध

अगर हम आलस्य छोड़ेंगे, उद्योग करेंगे तो छोटा गांव होने पर भी हम सुखी रह सकते हैं। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं चाहिए। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीड़ी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन और आजकल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप ही सोचिये कि इन चीजों का न देह के लिए उपयोग है, न आत्मा के लिए ही। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य-देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े आये हैं! इसलिए गांव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

## स्त्रियों का दायित्व

स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार को जिन्दा रखा है। इसलिए उनके बालकों की जिम्मेदारी होती है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगी तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आपकी बड़ी स्टेट हैं। इनसे बढ़कर कौनसा धन है? कौशल्या की कोख से भगवान् रामचन्द्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान् श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए हैं उनकी माताएं धर्म परायण थीं। जिस घर की स्त्रियां भगवान् का स्मरण करती हैं, सत्य का पालन करती, प्रेम-भाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते हैं, यह बात दुनिया भर में प्रसिद्ध है।

## स्वराज्य का उदय कब?

स्वराज्य आया, कहते हैं। लेकिन वह है कहां? कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। तेल, खली, गुड़ बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं, रस्सियां भी आप बाहर से ही मोल लेते हैं। तो फिर स्वराज्य काहे का? एक आदमी को प्यास लगी थी। पानी कहां से मिलेगा? उससे कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी में है। वह दुःखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगंगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उससे कहा, "अरे, तू क्यों दुःखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पड़ा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई, नजदीक हुआ तो क्या हुआ? पानी गले में उतरेगा तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लन्दन से दिल्ली आ गया और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया; लेकिन वह तुम्हारे किस काम का? सूर्य जबतक गांव में नहीं उगेगा तबतक आप सूर्योदय हुआ ऐसा मानने को तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य आप के हाथ में है। हम और आप काम करने लग जायंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

## वस्त्र-समस्या का हल

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूंजी और इतनी अकल खर्च हो रही है वे हिन्दुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिन्दुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपड़ा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज़ कपड़ा तैयार होता है और इस साल कहा गया है कि हड़ताल आदि कारणों से कपड़ा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलों का बाहर साल का पराक्रम!

इस हालत में अगर लोग खुद कातने लग जायं और रोज एक घंटा भी दें तो सालभर में फी आदमी १५ गज़ कपड़ा तैयार होगा। मैं कहता हूं, आधा घंटा भी वे दें तो साढ़े सात गज़ कपड़ा तैयार होगा। मिलों में बारह गज़ होता है उसमें यह साढ़े सात गज़ और बढ़ेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं?

## भारत की संस्कृति और आत्मा देहात में

हिन्दुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं।

प्राचीनकाल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों में मौजूद है। देहातों में आप देखेंगे कि वहां के लोग बहुत दीन बन गये हैं, खाने को भी उन्हें पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ-साथ यह भी देखेंगे कि किसी घर पर अगर भूखा आदमी पहुंच जाये तो किसी-न-किस तरह उसको खिला ही देते हैं। उसका आदर करते हैं। गरीब से-गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में में है। देहातों में काम करने के औजार भी करीब-करीब पुराने जमाने के हैं। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाये तो देहातियों की पोशाक में वह जरूर फर्क देखेगा, लेकिन उसके जमाने की भावना का अंश वह आज देहातों में जरूर देखेगा, इसमें सन्देह नहीं।

## ग्रामोद्योग

सर्वोदय वालों का काम है देहात की चिन्ता करना, उनकी देखभाल करना। यह किस तरह होगा? देहातियों के जो उद्योग हैं वे उनके हाथ में रखने चाहिए। देहात के कुछ उद्योग ऐसे हैं जो उनके हक के हैं। वे अगर उनसे कोई छीन लेगा तो उसके खिलाफ बगावत करनी चाहिए और कहना चाहिए कि ये हमारे उद्योग हैं, हम नहीं छोड़ेंगे। जिन उद्योग का कच्चा माल देहात में होता है उनका पक्का माल करने का उद्योग देहात में ही होना चाहिए। सिर्फ किसानी से यानी खेती से किसानी का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड़ बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात में ही बनना चाहिए। ऐसा होगा तभी देहात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ताजा-तवाना होंगे और दुनिया के सामने हिन्दुस्तान हिम्मत के साथ खड़ा रहेगा।

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालों के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिए मर-मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिए तैयार होंगे, क्योंकि अपने वतन का, खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र भावना देहात को ही हो सकती है। कारण कि देहात वाले जमीन से चिपके हुए हैं। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिए अगर सिर्फ शहर-वालों पर निर्भर रहा तो खतरे में रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियों से ही होगी। इसलिए सर्वोदय-वालों ने यह संकल्प किया है कि हम देहातियों की सेवा करेंगे।

## मानव-देह की सार्थकता

हम सारे भगवान के पैदा किये हैं। वे परमपिता और हम सब उनके पुत्र हैं। हम अगर आपस में लड़ेंगे तो उनको बहुत दुःख होगा। 'अमृतस्य पुत्राः' सबके सब अमृत के पुत्र हैं, देह को क्या देखते हो? आखिर सबको खाक में ही मिलना है। फिर कौन-सी खाक ब्राह्मण की है, कौन-सी हरिजन की है, या और किसी की है, यह पहचाना भी नहीं जायेगा। आत्मा एक है उसीका ध्यान रखो। हम देह में इसलिए आये हैं कि अपने पड़ोसियों की, दीनों की और सबकी सेवा हम करें और परस्पर प्रेम करें। इसी में मानव-देह की सार्थकता है और यही हरिनाम का अर्थ है।

## अस्पृश्यता-निवारण

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहां का कुंआ और हनुमानजी का मन्दिर सबके लिए, हरिजनों के लिए भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा है। भगवान् के सामने भेद-भाव रखना गलत है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मन्दिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिए आपने जो काम किया है वह बहुत ही अच्छा है।

## परहित में निजहित

हम लोगों में एक आदत पड़ गई है कि हम अपने परिवार के बाहर निगाह नहीं डालते। घर का कचरा पड़ोसी के दरवाजे पर डालते हैं। घर के बरतन साफ रखेंगे, लेकिन गाँव का कुंआ साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि वह तो सबका है। मैं क्यों फिकर करूं? लेकिन चेचक एक को भी हो जाये तो सारे गांव में फैलती है। इसलिए सारा गांव मेरा और सारे गांववाले मेरे इस तरह सोचेंगे तो गांव वैकुण्ठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गाँव में कम-से-कम एक कार्यकर्त्ता का निर्माण होना चाहिए। हिन्दुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव में कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। मांडवी में अभी मैं गया था। वहां एक अच्छे भाई हैं तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गांव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं, बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं, बल्कि स्मशान है।

लोगों को एक ही स्थिति में समाधान नहीं होता। मन की शांति के लिए तीर्थयात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक-दूसरे की सेवा करेंगे और चिन्ता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनन्द तो पशु को भी होता है; लेकिन खिलाने का सन्तोष मनुष्य को ही होता है। आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के गांव में एक भी दुःखी आदमी नहीं रहना चाहिए। दुःखीलोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुःखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आपने सुना है कि साधु-संत सब जातियों में हुए हैं हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा हैं। वैसे सब पापी पापी हैं। मरने के बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तुम ब्राह्मण हो या रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य। यह जो पैसा आप कमा रहे हैं वह साथ नहीं जाने वाला है। इसलिए जिसके पास जो भी धन है वह लोगों की सेवा में लगा दे। तभी आप भगवान् के सामने खड़े रह सकेंगे।

## स्वावलम्बन

खाने के लिए अन्न गांव में ही पैदा करना चाहिए। उसी तरह पहनने के लिए कपड़ा चाहिए तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिए। घर में कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिए। घर में ही कातना चाहिए और बुनना भी घर ही में चाहिए। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर में उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगड़े भी नहीं होंगे।

## विपरीत स्थिति

वास्तव में किसान मालिक हैं और व्यापारी सेवक। सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिन्दुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिए। लेकिन बात उल्टी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान् कैसे बना? मालिक को लूट कर। अगर आज उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखा दे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिए अब मालिक को ही जाग जाना चाहिए। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे।

## स्वराज्य का अर्थ

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते हैं कि हमारे गांव फिर से सुखी हों; लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहात का रक्षण नहीं कर पायेंगे, देहात के उद्योग कायम नहीं रख सकेंगे तो हमारे गांव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्य का अर्थ ही यही है कि अपने गांव का कपड़ा पहनना चाहिए। अपने ही गांव की चीजें खरीदनी चाहिए। बाहर का पक्का माल आपको नहीं खरीदना चाहिए; बल्कि अपने गांव में खुद कच्चे से पक्का माल बनाना चाहिए। आपके गांव में पक्का माल बनेगा तो शहर वाले खरीदेंगे और आप को लाभ होगा; लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहर से खरीदेंगे तो आप को नुकसान होगा। अगर अपने ही गांव में कच्चे से पक्का बनाते हैं तो मजदूरी आपको मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है।

## ग्राम-राज्य

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर में अगर ज्यादा कपड़ा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गांव में कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे, जिनके लिये खुद सूत कातना सम्भव नहीं होगा। तो वे अपने गांव में कते सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैंने कपड़े के लिए कहा वही दूसरे उद्योगों के लिए भी लागू है। तेल गांव में बनाना चाहिए। गुड़ गांव में बनाना चाहिए। आटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घर-घर पिसा जाना चाहिए। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह राज्य आपका होगा। इसको ग्रामराज्य कहते हैं। ग्राम में जब स्वावलम्बन होगा, गांव अपनी शक्ति पर खड़ा होगा तब वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, सब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, सब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिए स्वराज्य तो आया है, लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिए अब हमें झगड़ना है, मेहनत करन है। वह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

## घर का पैसा घर में

अपने गांव वालों पर जो प्रेम नहीं करते वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चमार है। वह जूता बनाता है। यदि उसका जूता हम नहीं खरीदते और बाहर का खरीदेंगे तो गांव का चमार मर जायगा। इस तरह हमारे चमार को हम रक्षण नहीं देते हैं तो उसपर हम प्रेम नहीं करते। इसी तरह तुम्हारे गांव के तेली का तेल तुम्हें खरीदना चाहिए। अपने गांव के बुनकर का कपड़ा पहनना चाहिए। लेकिन हम कहते हैं कि हमारे गांव के चमार का जूता महंगा है। इस तरह अगर गांव के चमार का जूता, तेली का तेल, बुनकर का कपड़ा, गांव का गुड़ और गांव की चीजें हमें महंगी लगेंगी तो हम जी नहीं सकेंगे। हम महंगा-महंगा कहते हैं लेकिन वास्तव में वह महंगा नहीं है। गांव के तेली का तेल उसी गांव का चमार खरीदता है और चमार का जूता तेली खरीदता है तो इसका पैसा उसके घर जाता है, उसका पैसा इसके घर में आता है। हम अपने घर की लड़कियां दूसरों के घर देते हैं, उनकी लड़कियां अपने घर लेते हैं। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है? इसी तरह अगर तेली का पैसा चमार के घर और चमार का पैसा तेली के घर जाता है तो किसको नुकसान होता है? इस तरह जिसे आप महंगा कहते हैं वह महंगा नहीं है; बल्कि उस पर ही हमारे गांव का जीवन चलता है।

## परकीय सत्ता क्यों?

परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोगों में आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी एकता नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं? परकीया सत्ता इसलिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रमहीन होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, पराक्रमहीन हैं तो स्वराज्य आया, कैसे कह सकते हैं? लोगों में परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग आलसी हैं। अगर आज भी लोग आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं? इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी, वैसी आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है तो मैं कहूंगा कि दिन नहीं हुआ है; बल्कि छोटी-सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि पहले रात थी और आज भी रात है, लेकिन जरा-सी लालटेन लग गई। लेकिन उतनी लालटेन से दिन नहीं होता है। दिन के लिए तो सूर्य का प्रकाश चाहिए जो घर-घर में पहुंचता है।

## दो भाषाओं का ज्ञान

हमारी विधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिए अब हरेक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिए। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आँखें होती हैं वैसे हरेक हिन्दुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा।

## वर्त्तमान शिक्षा

मैं तो बहुत दफा कह चुका कि शहरों में विद्यालय तो बहुत खुले हैं; लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयों में जो विद्या पढ़ाई जाती है, वह बिल्कुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजों में होनी चाहिए। वह वहां मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की? आजकल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है। उसमें फौरन परिवर्त्तन होना चाहिए, ऐसा कहते-कहते सरदार वल्लभ भाई पटेल चले गये। और मैंने तो कई दफा कहा है कि भाई, इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहतर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती है तो कम-से-कम पुरानी विद्या तो बन्द कर दो। चार-छः महीने बच्चों को छुट्टी दे दो, कोई नुकसान नहीं होगा।

बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिए पैसा खर्च करते हैं और बच्चे बिना काम किये जिन्दगी कैसे बसर हो, इसकी खोज में रहते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिली है, वह निर्वीर्य है। तो बच्चों के शरीर भी नाजुक बनते हैं। कोई रूहानी यानी आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं।

इस हालत में देश का कोई भला यह शहर की तालीम नहीं कर रही है। उससे बेकारी में वृद्धि होती है, मनुष्य के दिल में एक तरह का असन्तोष पैदा होता है। इसलिए यद्यपि शहरों में इतने विद्यालय हैं, फिर भी देश का भला हो, मानवता ऊंची उठे, दीनों के दुःख मिटें, परस्पर सहकार बढ़े, सारा देश वीर्यवान, बलवान हो, ऐसा कोई काम हम कर नहीं पाते और सारे शहर एक तरह से राष्ट्र के लिए भार-रूप से हो गये हैं।

## सब मेहनत करें

सेवा व्याख्यान-श्रवणादि से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-श्रम से होगी। आज हिन्दुस्तान के हरएक नागरिक से और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उससे जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिए उसे करना चाहिए। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते हैं कि सर्वोदय क्या है? मैं कई तरह के अर्थ समझता हूं। एक अर्थ यह भी समझता हूं कि सर्वोदय यानी सबका प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिए कि जिसने देश के लिए कुछ-न-कुछ काम नहीं किया है। इसीलिए गांधी जी ने हरएक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोड़ा सूत अगर कात लेता है तो देश की पैदावार में उतनी ही वृद्धि होती है। जैसे बूंद-बूंद से नदी बनती है वैसे ही हरएक मनुष्य से इस वक्त परिश्रम होना अत्यन्त जरूरी है।

## संगठित शक्ति

शहर वालों में कुछ शक्तियां पड़ी हैं। लेकिन वे सारी एक-दूसरे के खिलाफ काम करती हैं तो उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शक्तियों का जोड़ नहीं होता; बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते हैं तो दोनों मिलकर दो ही शक्ति रह जाती हैं। लेकिन दस के साथ आठ लगते हैं तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधी गणित की बात है। तो हमारे देश में शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का साक्षात्कार हमें तब होगा जब कि वह सारी एक दिशा में लग जाये। नदी का पानी कई जगहों से एक दिशा में आता है तो शक्तिशाली नदी बनती है। लेकिन पानी इधर-उधर दौड़ता चले और नदी न बने तो वह सारा-का-सारा पानी कहीं-न-कहीं गायब हो जायगा। उसमें से कोई विशेष महान् प्रवाह बनता हुआ नहीं दिख पड़ेगा। वैसे हम में शक्ति कम नहीं है; लेकिन वह सारी अगर एक दिशा में लग जाती है तो उसका प्रकाश पड़ेगा, उसका स्वरूप दीख पड़ेगा, उसके परिणाम का अनुभव आयेगा।

### सेवकों की आवश्यकता

भारत में सेवकों की बहुत कमी है और यह सेवकों की कमी हमारे हर काम में बाधा डाल रही है। मानो फसल तो बहुत ज्यादा है और काटने वालों की कमी है। हमारे देश में आज तरह-तरह के सेवकों की जरूरत है। आजतक स्वराज्य नहीं था तो वह प्राप्त करने में कार्यकर्त्ताओं की शक्ति लगी थी; लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर कार्यकर्त्ताओं को सेवा के काम में लग जाना चाहिए।

---

## —गीत—

[ श्री जगदीश त्रिगुणायत ]

—००—

कुछ चिरन्तन गान दे दो!
घोर इस मेरी तमी का हो न हो चाहे सवेरा,
प्राण, इस तन में भले छाया रहे युग--युग अंधेरा
दीप बन चिरकाल मैं जलता रहूं वरदान दे दो!

मैं करुण अपनी पुकारें सर्वदा तुमको सुनाऊँ
ढूँढ़ने को दो विकल--मन पर न तुमको ढूँढ़ पाऊँ,
जो भटकती ही रहे वह एक टूटी तान दे दो!

छाँह में जिसकी सदा पलती रहे उर प्यास मेरी
स्नेह से जिसके सरस जलती रहे हर सांस मेरी,
प्राण, मेरे आंसुओं में वह सजल मुसकान दे दो!
कुछ चिरन्तन गान दे दो!

—००—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गांधी : एक पैग़म्बर

श्री रघुवीर शरण दिवाकर

जो लोग गांधी को हिन्दू संत के रूप में देख कर सिर नवाते हैं या भारतीय राष्ट्र का कर्णधार होने के नाते ही उनका लोहा मानते हैं, वे गांधी के साथ न्याय नहीं करते हैं। कल्पना-जन्य जातीयता के छोटे भावों को अथवा किसी भी संकीर्ण व झूठी मर्यादाओं को लेकर गांधी को मान देना एक विडम्बना है। गांधी उस धरातल पर खड़े है, जहां बंधी नहीं, खुली दृष्टि ही पहुंच सकती है। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई की नहीं, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और इंग्लिस्तान की नहीं; बल्कि मानव-मात्र की दृष्टि से, अखिल विश्व की अपेक्षा से ही गांधी का मूल्य आंका जा सकता है। गांधी-अध्ययन की पृष्ठ भूमि एक और अखण्ड मानवता न होकर कोई भी सम्प्रदाय विशेष होगा तो यथार्थ का साक्षात्कार न हो सकेगा। फिर दृष्टि का सर्वाङ्गीण होना भी आवश्यक है। राजनीति का चश्मा चढ़ाकर गांधी को देखने में कोई सार नहीं है। अर्थनीति के वृत्त में घिरे रहकर भी गांधी का विराट दर्शन कर सकना असम्भव है। गांधी सम्प्रदाय गत चहार-दीवारियों से बाहर हैं। राष्ट्र की सीमाओं से भी परे हैं। कैसी भी संकीर्णताओं या अच्छी मर्यादाओं में हम उन्हें नहीं बांध सकते। वे मानव हैं, महामानव हैं और इसी भव्य रूप में वे परम वन्दनीय हैं।

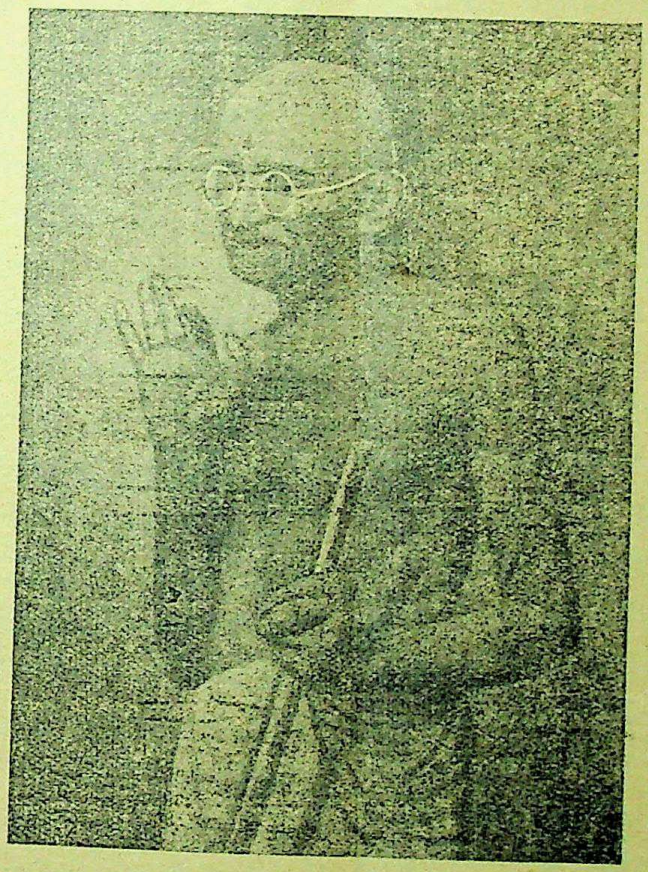

## पैग़म्बर गांधी

पर गांधी महा-मानव ही नहीं, पैगम्बर भी हैं। पैगम्बर विरले ही होते हैं। यह एक बहुत ही ऊंची-सबसे ऊंची—पदवी है। सम्भवतः बहुत से 'गांधी-भक्त' भी उन्हें यह पदवी देने के लिए तैयार नहीं हैं। वे उन्हें महात्मा मानते हैं, पैगम्बर नहीं। पर यहां दृष्टिदोष ही है। पैगम्बर का यथार्थ स्वरूप हम समझ लें और उसे लेकर फैली हुई भ्रान्त धारणाओं को दूर हटा दें तब हम देखेंगे कि गांधी एक पैगम्बर ही नहीं, बल्कि अपने ढंग के अकेले और निराले पैगम्बर हैं।

## पैग़म्बर कौन ?

कुछ लोगों को यहां तक गलतफहमी है कि पैगम्बर होने के लिए वे यह जरूरी नहीं समझते कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यक्ति विकास की उच्च श्रेणी पर हो या महात्मा हो। उनकी धारणा है कि पैगम्बर एक तरह की पण्डिताई है, जीवन शुद्धि से उसका अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है। पर सच तो यह है कि पैगम्बर वही है जिसका सारा जीवन ही एक पैगाम हो। पंडित और पैगम्बर में बड़ा अन्तर है। पंडित बुद्धि व तर्क चमत्कार दिखाता है, पैगम्बर उसे भी परे अपनी पैनी दृष्टि डालकर, बुद्धि की ही नहीं, हृदय की आंखों से भी दूर तक देख कर, मानव-जीवन के अन्धकारपूर्ण स्थलों को विवेक की प्रकाश-किरण से आलोकित करता है। पैगम्बर मूल प्रणेता है, मूल रचयिता है। पंडित सम्पादक है अथवा टीकाकार या समालोचक है। पैगम्बर प्रतिपादन करता है। पंडित विश्लेषण करता है। पंडित जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाता है, हवा में उड़ता है, बाल की खाल निकालता है, पर पैगम्बर जमीन पर चलता है, धरती की बात कहता है, सीधी-साधी भाषा और सुलझी हुई शैली में जीवन का सुमधुर व कल्याण कारी सन्देश देता है और बात से काम ज्यादा करता है। इस तरह पैगम्बर पंडित से बहुत ऊंचा है। वह मानवसमाज को एक नई प्रेरणा, एक जगमगाता प्रकाश, एक पैनी दृष्टि और एक मौलिक विचार देता है। वह एक मनुष्य है, और मनुष्य कोई भी हो, वह भूलों से धारा देने वाला महामानव है। पैगम्बर महामानव है और होना भी चाहिए; पर हर महामानव पैगम्बर हो यह जरूरी नहीं है। सूत्र-रूप में कह सकते हैं कि पैगम्बर महापंडित—महामानव है।

## मानव-समाज की निधी

एक बात और है। पैगम्बर न किसी देश की बपौती है और न किसी जाति या सम्प्रदाय का ही उसपर एकाधिकार है। वह मानव-समाज की अमूल्य निधि है। वह 'कापी राइट' नहीं है कि कोई दाम या रुपया देकर खरीद ले वह तो सूर्य है, जिससे हर कोई प्रकाश और शक्ति ले सकता है। वह चाँद है जो हर किसी को शीतलता प्रदान करता है। वह बहता हुआ झरना है जिसका स्वच्छ जल पीकर कोई भी अपने अन्तर की प्यास बुझा सकता है। वह खुली वायु है, खुला आकाश है। वह अखिल विश्व का है। जो भी उसे अपनाए, वह उसी का है।

## महापुरुष की सम्पदा

बहुत-से लोगों की यह धारणा है कि प्राचीन काल में ही पैगम्बर हुए या हो सके थे। पर 'प्राचीन' एक सापेक्ष शब्द है। जिसे वे प्राचीन कहते हैं, अपने समय में वह नवीन था। आज जो नवीन है, भविष्य में वही पुराना बनने वाला है। अतः महावीर और बुद्ध पुराने ही नहीं, नए भी हैं। इसी तरह मार्क्स और गांधी नये ही नहीं हैं, पुराने भी हैं। फिर, नई हो या पुरानी, मिट्टी मिट्टी है, सोना सोना है। काल-भेद को लेकर द्रव्य-भेद करना बेईमानी है। भूतकाल को गौरव के साथ देखने और वर्त्तमान पर नाक-भौं सिकोड़ने के पीछे सत्य नहीं प्राचीनता का महत्व है। भूत में ऐसी सामग्री अवश्य है जिस पर गर्व किया जा सके; पर वही ऐसी सामग्री भी है जिस पर लज्जा भी आनी चाहिए। यही बात वर्त्तमान को लेकर है। यही भविष्य के सम्बन्ध में समझना चाहिए। अतः भूतकाल अच्छा ही अच्छा था और उसने ही पैगम्बर पैदा करने का ठेका ले रखा था, इस धारणा को तरह अन्धश्रद्धा है।

दूसरी ओर कुछ लोगों का मत है कि पुराने पैगम्बर आज बेकार है। अब नए पैगम्बर से ही काम चल सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उनका माना हुआ नया पैगम्बर कल जब पुराना हो जायगा तब वह भी बेकार हो जायगा। पैगम्बर कोई खिलौना नहीं है कि जब भी जैसी अपनी रुचि या आवश्यकता हो, वैसा गढ़ लिया जाय। पैगम्बर कभी कभी ही जन्म लेते हैं। हर किसी युग में उन्हें ढूँढ़ना या नित्य-नये पैगम्बर की तलाश करना व्यर्थ है।

सच यह है कि 'पैगम्बर' को लेकर नये-पुराने का यह विचार-भेद निस्सार है। पैगम्बरपन के मूलभाव यथार्थ स्वरूप से उसका कोई मेल नहीं है। यह ठीक है कि पैगम्बर अपने समय की व अपने चारों ओर की परिस्थितियों व समस्याओं को अपेक्षित रखकर ही अपना पैगाम देता है और उन सीमाओं में रह कर ही अपने व्यक्तित्व की गरिमा का परिचय दे पाता है; पर यह उसका दोष नहीं, बल्कि मानवीय जीवन की प्रकृत सीमा का ऐसा अनिवार्य बन्धन है जिसमें बंधे बिना कोई भी जीवधारी नहीं रह सकता मनुष्य का दुर्भाग्य है कि वह इस वस्तुस्थिति को न देखकर पैगाम को एक काल विशेष के पिंजड़े में बन्द कर देना चाहता है। वास्तव में पैगम्बर अपने युग का आलम्बन लेकर जो सन्देश देता है, वह उस युग के लिए ही नहीं, अनन्त भविष्य के लिए है, महाकाल के लिए है। जरूरत है पैगाम को परिस्थितियों की अपेक्षा देखने की, पैगाम की दिशा समझने की। वृथा सन्तोष व अन्धविश्वासजन्य जड़ता के साथ पैगाम को एक अटल, अबाधित तथा पूर्ण सत्य न माना जाय, उसके बाहरी ढांचे या शरीर-मात्र को ही नहीं, ज्ञान-चक्षुओं से उसके प्राणों पर भी दृष्टि डाली जाय तथा उसे चारों ओर घिरी हुई व स्थिर जलराशि नहीं, सतत् प्रवाहशील जलधारा समझा जाय तो हम देखेंगे कि पैगम्बर काल विशेष की नहीं महाकाल की सम्पत्ति है। वह महाकाल के नभमण्डल का एक जाज्वल्यमान मांगलिक नक्षत्र है।

## पैगम्बर—एक मनुष्य

पैगम्बर को लेकर प्रायः लोगों की यह धारणा है कि वह एक पूर्णपुरुष ही हो सकता है। उनकी राय में पैगम्बर भूलों से परे है। मानव-जीवन का सम्पूर्ण आदर्श पैगम्बर में होना ही चाहिए ऐसी उन्हें अपेक्षा है। पर यहाँ मूल में ही भूल है। कोई व्यक्ति हर प्रकार से आदर्श जीवन नहीं बिता सकता है। अधिक-से-अधिक उसका जीवन काल्पनिक पूर्णआदर्श जीवन का एक छोटा-सा अंश ही बन सकता है। मनुष्य का शरीर, मनुष्य का मन और मनुष्य का मस्तिष्क हीं ऐसा है कि यहाँ पूर्णता नहीं मानी जा सकती। आत्म-शुद्धि की पूर्णता के आदर्श को शिरोधार्य करके भी यह मान्य नहीं किया जा सकता कि मन और मस्तिष्क पर, जो शरीर के ही अंग है, निर्भर रहते हुए कभी ऐसी स्थिति आ सकेगी जब विकास—मन-मस्तिष्क का अनवरत परिमार्जन—रुक जायगा, जीवन का स्पन्दन व सतत परिवर्तन बन्द हो जायगा। ऐसी स्थिति की कल्पना करना जीवन की नहीं, जड़ता की कल्पना करना है। जहाँ जीवन है, वहाँ विकास है और जहाँ विकास या पूर्णता की ओर बढ़ने की गति है, वहां अपूर्णता है ही। पर लब्धि रूप से पूर्णता मान भी ली जाय तो भी उपयोग की दृष्टि से हरगिज उसे नहीं माना जा सकता। आखिर, उपयोग सामाजिक परिस्थिति आवश्यकता पर निर्भर है। कोई भी व्यक्ति हर परिस्थिति में तथा प्रत्येक आवश्यकता की अपेक्षा से आचरण कर सके या संदेश दे सके, यह नितान्त असंभव है। सभी पैगम्बरों ने मानव-समाज के सम्मुख उच्चतम मानवीय आदर्श रखे हैं; पर उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बुनियादी शिक्षा का अभिप्राय

श्री लक्ष्मी नारायण, मंत्री, बिहार खादी समिति, मुजफ्फरपुर

बुनियादी शिक्षा जीवन की शिक्षा है, ऐसी शिक्षा जिससे विद्यार्थियों में अपने जीवन के उत्तरदायित्वों को भलीभांति पूरा करने की क्षमता पैदा हो। महात्मा गांधी का कहना है कि वास्तविक शिक्षा तो वह है जिससे विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संभावनायें प्रस्फुटित हो सकें। उनके शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का साथ साथ विकास होना चाहिये। इस कारण यह व्यवस्था की गई है कि बुनियादी शिक्षा किसी बुनियादी उद्योग और सामाजिक परिस्थिति को माध्यम बनाकर दी जाय। जाहिर है कि यदि समाज के वातावरण से सम्बन्ध स्थापित कर बुनियादी शिक्षा प्रदान करनी है, तो हमें अपने सामने एक ऊँचा आदर्श रखना होगा। यह आवश्यक है कि हमारे कार्य और व्यवहार का स्वरूप और दिशा निर्धारित करने वाला जीवन का सुनिश्चित लक्ष्य हमारे सामने बराबर विद्यमान रहे। प्रश्न है यह आदर्श क्या हो ?

महात्मा गांधी कहा करते थे, मैं ईश्वर का साक्षात दर्शन करना चाहता हूं। उनके जीवन का महान् आदर्श यही था और हम सबों के लिये भी उन्होंने यही आदर्श बताया। उन्होंने अपने जीवन में सारे कार्य इसी विचार को केन्द्र बिन्दु मान कर किये। पर यह ध्यान देने की बात है कि वे केवल व्यक्तिगत हानि-लाभ की दृष्टि से कभी न सोचते थे और न काम करते थे। उन्होंने हमारे सामाजिक और राजनैतिक जीवन में आध्यात्मिकता लाने की कोशिश की, और राजनीतिक आदर्शों के साथ आध्यात्मिक मूल्यों का समुचित समन्वय स्थापित किया। इस हेतु उन्होंने हमारे सामने जीवन के कुछ मूल सिद्धान्त उपस्थित किये, जिनके आधार पर लोग अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का निर्माण कर सकें। 'मंगल प्रभात' पुस्तिका में महात्मा जी के ये विचार संग्रहित हैं। जब वे यरवदा जेल में थे तो अपने मौन दिवस के बाद प्रत्येक मंगलवार को इन विषयों पर लिखा करते थे। ये सिद्धान्त अति प्राचीन काल से चले आ रहे हैं और शाश्वत हैं, पर गांधी जी ने आज की परिस्थिति को ध्यान में रखकर केवल पुनः उनका निरूपण किया है। इनमें से प्रत्येक सिद्धान्त का अपना खास महत्व है, पर महात्मा जी ने इस ढंग से उन्हें उपस्थित किया है कि एक के बाद दूसरे का विचार सहज स्वभाव से आ जाता है। इसमें से कुछ का विचार हम इस प्रसंग में करते हैं।

हां, तो ईश्वर का साक्षात दर्शन करने की बात। ईश्वर की व्याख्या तो हो नहीं सकती फिर भी दार्शनिकों और पंडितों ने उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। गांधी जी की दृष्टि में ईश्वर सत्य है, अथवा, जैसा कि उन्होंने अक्सर कहा सत्य ही ईश्वर है। सत् का अर्थ है जो बराबर विद्यमान रहे। जो नाशवान नहीं। इस सत्य के दर्शन के लिये मनुष्य को अहिंसा का मार्ग ग्रहण करना होगा, और अहिंसा का ही दूसरा नाम प्रेम है। यदि हम अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का भाव रखते हैं, तो हमारा प्रेम हमें उसकी सेवा में लगायेगा।

अतः ईश्वर के दर्शन के लिये यह आवश्यक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि मनुष्य अपने भीतर अधिकाधिक सेवाभाव जाग्रत करे। सेवा का तात्पर्य है कि कुछ ठोस काम किया जाये। जनता के आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा करने का निरन्तर प्रयास हो। हमारे प्राचीन साहित्य में जो यज्ञ शब्द आया है उसका भी यही आशय है। इसलिए कहा है कि धर्मात्मा पुरुष यज्ञ करके ही भोजन करते हैं, और इस प्रकार अपनी मुक्ति का मार्ग साफ करते हैं। इसके विपरीत, जो व्यक्ति बिना यज्ञ किये भोजन करता है वह चोरी करता है। और जैसा कि गीता में में कहा है, यज्ञ के लिये किया गया कर्म ही कर्म है और शेष सब कर्म बन्धन का कारण है। बुनियादी शिक्षा आप से इसी वृत्ति से काम करने की अपेक्षा रखती है।

यदि बुनियादी विद्यालयों के अध्यापकगण उपरोक्त भावना से काम करें तो वे अपने विद्यार्थियों को केवल लिखने पढ़ने की ही शिक्षा न देंगे वरन् उन्हें स्वाश्रयी और सम्मानित नागरिक बनाने में समर्थ होंगे। मनुष्य ईश्वर के यहां से ही भोजन की आवश्यकता के साथ संसार में आया है। प्रकृति ने आश्रय की आवश्यकता पैदा कर दी है, और मनुष्य ने स्वयं कपड़े की अवश्यकता महसूस की। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मनुष्य को पुरुषार्थ करना है। पर उसे समझ बूझकर बुद्धि-पूर्वक और अपनी सामाजिक स्थिति का ख्याल किये बिना पुरुषार्थ करने की वृत्ति पैदा करनी चाहिये। बुनियादी शिक्षा इस प्रकार के जीवन बिताने की क्षमता प्रदान करने वाली शिक्षा है।

यह ठीक है कि जनता का कुशल सेवक होने के लिये मनुष्य को आवश्यक शारीरिक आराम और सुविधा के साधन उपलब्ध होने चाहिये, और यह राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे सेवकों की इन आवश्यकताओं की पूर्त्ति करे। पर रुपया कमाना ही जीवन का लक्ष्य कदापि नहीं होना चाहिये। रुपया के पीछे परेशान रहने वाला व्यक्ति भोग विलास में ही लीन रहता है। इससे उसका जीवन विकृत हो जाता है। उसे न तो आनन्द और न शान्ति प्राप्त होती है। सब समाज के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने से ही सच्चा आनन्द मनुष्य को प्राप्त होता है, और इस सिलसिले में आदमी को कष्ट भी सहना पड़े तो उसमें भी उसे आनन्द ही मिलता है। वह स्वयं अपना विकास करता है और दूसरों को भी उन्नत बनाता है। ये बातें कठिन मालूम हो सकती हैं, पर आप लोग एक ऐसे कठिन काम के अगुआ हैं जिससे समाज का मानस और स्वरूप बदल जाने वाला है।

बुनियादी शिक्षा एक नया प्रयोग है। यद्यपि ऐसा कहना गलत न होगा कि यह प्रयोग की अवस्था को सफलतापूर्वक पार कर चुकी है, फिर भी इसे अनेक प्रकार की प्रतिकूल धारणाओं और विघ्न-बाधाओं का सामना करना है। इसे श्रद्धावान और विचारशील सेवकों की आवश्यकता है। अभी बहुत निष्ठा और धीरज के साथ काम करने की जरूरत है। इस परीक्षा में सफल होने के लिये आप को कठिन साधना करनी होगी। आप बापू के उपदेशों से मार्गदर्शन लें और अपने कार्यक्रम में सदा दृढ़ विश्वास बनाये रखें तथा अध्यवसाय और लगन के संबल से परिपूर्ण रहें। बस, आपकी सफलता निश्चित है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# भगवान का सार्टिफिकेट

श्री राधाकृष्ण

पहले तो विपिन को विश्वास ही नहीं हुआ कि यही भगवान जी हैं; लेकिन जब भगवान ने अपना आश्चर्य-जनक करतब दिखलाया तो विपिन को विश्वास करन ही पड़ा।

विपिन को दिखलाकर उन्होंने पर्वत में राई को घुसा दिया और फिर उस राई को निकाल कर उसमें पर्वत डाल दिया। उन्होंने जानवर को पक्षी की तरह आसमान में उड़ा दिया और पक्षी को रेखा-गणित में परिणत करके विपिन को आश्चर्य से चकित कर दिया। विपिन यह सब देख कर चकरा गया और पूछने लगा—आप तो बहुत कुछ कर सकते हैं। क्या सूर्य को सोशियलिस्ट भी बना सकते हैं?

श्री भगवानजी ने मन्द-मन्द मुसकुराते हुए कहा प्रिय वत्स, यह अत्यन्त साधारण-सी बात है। मैं सूर्य को सोशियलिस्ट, चांद को कम्युनिस्ट और हवा को हिन्दू सभाई भी बना सकता हूँ।

यह कहते हुए श्री भगवान जी ने कपड़े को पकौड़ी में परिणत कर डाला और रुपये को अचार बनाकर दिखला दिया। उसके बाद चतुर्भुज रूप धर खड़े हो गये। अहा, क्या सुन्दर रूप था! चार हाथ दो पैर। गले में वैजयन्ति माला, हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म। इस रूप को देख कर विपिन एकदम लोटपोट हो गया और हाथ जोड़ कर भगवान की स्तुति करने लगा—

"श्री रामचंद्र कृपालु भजुमन हरण भय भव दारुणं।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं॥
कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्"

इतना गाने के बाद विपिन ने कहा—हे प्रभो इसके आगे की पँक्तियां मैं भूल गया हूँ। याद ही नहीं आता।

श्री भगवान बोले—खैर कोई हर्ज नहीं। इतना भी तुमने जो याद करके रखा है सो बहुत अच्छा किया है। अब तुम्हारी क्या इच्छा है; वह वर मांग लो।

विपिन कहने लगा—हे प्रभु; जब आप मुझपर प्रसन्न हैं तो मैं आपसे वर क्या मांगू! आप तो सर्वशक्तिमान हैं। आपकी महिमा कोई कह भी नहीं सकता। आप श्रीप्रकाश को गवर्नर बना सकते हैं। जानमथाई को मंत्री पद पर नियुक्त कर सकते हैं। आपकी लीलाओं का कोई क्या वर्णन कर सकेगा!

श्री भगवान जी ने कहा—हमारी लीलाओं को जानना बहुत कठिन है। फिजिक्स और कैमिस्ट्री पढ़ जाने पर भी हमारी लीलाएँ समझ में नहीं आ सकती। मगर अब तुम अपने बारे में बतलाओ तुम्हें कुछ मांगना है या मैं अन्तर्धान हो जाऊँ?

विपिन बोल उठा—हां प्रभो, मुझे आपसे एक चीज मांगनी है। आजकल नौकरी-चाकरी के बिना मैं बड़ी तकलीफ में हूँ। अगर आप कृपा कर मुझे कहीं कोई नौकरी दिलवा देते तो आपका बड़ा अहसान होता।

श्री भगवान जी ने कहा—बतलाओ तुम्हें कौन सी नौकरी चाहिये। कहीं कोई काम खाली भी है या नया काम चाहिये!

विपिन ने हाथ जोड़ कर कहा—हे प्रभो, हमारे शहर के एडीशनल कलक्टर के यहां एक किरानी की जगह खाली है। मगर आजकल कुछ ऐसा हो गया है कि बिना कोशिश के नौकरी मिलती ही नहीं। इसलिए यदि आप एडीशनल कलक्टर साहब से कह दें तो... ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्री भगवान जी ने मुसकुराते हुए कहा—वत्स एडीशनल कलक्टर और हमारी पोजीशन में भेद है। हम चाहें तो रोज एडीशनल कलक्टर और सेक्रेटेरियट के सेक्रेटरी और रजिस्ट्रार उत्पन्न किया करें। तुम्हारे एडीशनल कलक्टर से तो हम कहने नहीं जायंगे।

विपिन ने हताश हो कर कहा—तो प्रभु मुझे सार्टिफिकेट ही दीजिये। आपका सार्टिफिकेट होगा तो हमें कोई नहीं रोक सकेगा। हे भगवान, इतनी दया जरूर कीजिये।

विपिन का प्रस्ताव भगवान जी को जंच गया। उन्होंने तुरंत विपिन को सार्टिफिकेट लिख कर दे दिया—

'श्री विपिन कुमार वर्मा को मैं उनके जन्म के पहले से ही जानता हूँ। यह काम के लायक आदमी है। इसके मस्तिष्क में ज्ञान और शरीर में शक्ति है। इसे जो कुछ भी काम दिया जायगा यह मजे में मन लगा कर करेगा। अतएव मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि इसे एडीशनल कलक्टर के किरानी का का काम दे दिया जाय। यद्यपि किरानी के काम में अक्ल और योग्यता की जरूरत नहीं, फिर भी यह मन लगा कर उस काम को करेगा। इति शुभम्। और, इतना लिख कर श्री भगवान जी ने नीचे अपना दस्तखत कर दिया। बोले-जाओ वत्स; मैंने तुम्हें अपना सार्टिफिकेट दे दिया। अब तुम्हें नौकरी जरूर मिल जायगी।

(२)

जब उस सार्टिफिकेट को एडीशनल कलक्टर साहब को दिखलाया गया तो आश्चर्य से अवाक् हो गये। विपिन से बोले—अहा, तुम धन्य हो। तुम्हें सर्वशक्तिमान भगवान ने सार्टिफिकेट दिया है। अगर इस सार्टिफिकेट को ब्रिटिश म्युजियम में दे दो तो तुम्हें बहुत रुपये मिलेंगे। मगर नहीं, आजकल अपने देश की राष्ट्रीयता को महत्व देना चाहिये। इसलिए मैं महूँगा कि यह सार्टिफिकेट पटना म्युजियम में रखने लायक है।

मगर विपिन को इस बात से कोई दिलचस्पी नहीं थी कि वह सार्टिफिकेट पटना म्युजियम में रखा जाय या एडीशनल कलक्टर साहब के पास ही छोड़ दिया जाय। वह तो अपनी नौकरी के लिये आया था—मगर श्रीमान मुझे नौकरी देने के बारे में क्या कहते हैं?'

"अरे हां यह तो मैं भूल ही गया था!" एडीशनल कलक्टर महोदय ने चौंक कर कहा - नौकरी के बारे में श्री भगवान जी ने लिखा तो जरूर है; लेकिन अब सवाल पैदा है कि सरकारी नौकरियों के मामले में सर्वशक्तिमान दीनप्रतिपालक श्री भगवान जी के सार्टिफिकेट का क्या महत्व है?

एडीशनल कलक्टर साहब आंखें बन्द करके इस वैधानिक समस्या पर सोचने लगे।

विपिन ने कहा—श्रीमान, अगर सार्टिफिकेट का महत्व हो सकता है तो श्री भगवान जी के दिये हुए सार्टिफिकेट का महत्व भी जरूर हो सकता है।

एडीशनल कलक्टर साहब समस्या में डूबते हुए बोले—अच्छा, तुम बतला सकते हो कि भगवान जी पैदा कहां हुए थे? वे इण्डियन युनियन में डोमिसाइल्ड हैं या पाकिस्तान में?

विपिन ने कहा—यह कहना तो बहुत मुश्किल है। 'शायद वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों जगह रहते हैं। बल्कि वे सारे संसार में ही रहते हैं।'

'यह तो बड़ी भारी समस्या है।' एडीशनल कलक्टर साहब ने कहा—श्री भगवान जी के स्थान का भी पता नहीं। मालूम भी नहीं कि वे अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रेवेन्यू और इनकम टैक्स गवर्नमेंट को देते हैं।

फिर उन्होंने कुछ सोच कर विपिन से पूछा—अच्छा, क्या तुम बतला सकते हो कि भगवान जी ने कभी आई० सी० एस० जैसी कोई परीक्षा पास की है?

विपिन ने कहा—श्रीमान् मैंने तो ज्यादा पढ़ा नहीं; सिर्फ महाभारत और तुलसीकृत रामायण पढ़ी है। भगवान जी ने शुम्भ-निशुम्भ का संहार किया था, रावण का वध किया था, गज और ग्राह को उबारा था; लेकिन आई० सी० एस० की परीक्षा उन्होंने दी थी ऐसा तो मालूम नहीं होता। और मेरा ख्याल है कि चारों वेद, छहो शास्त्र और अठारहों पुराण में कहीं ऐसा लिखा हुआ नहीं मिलेगा कि भगवान जी ने आई० सी० एस० के कम्पीटिशन में उम्मीदवारी की हो। आइ० सी० एस० भी वे नहीं हैं।

"तब तो बड़ी मुश्किल है; ऐसी अवस्था में मैं आपको कैसे रख सकता हूं? जिसने आपको सार्टिफिकेट दिया है उसकी योग्यता का कोई पता नहीं।" एडीशनल कलक्टर साहब असमंजस में पड़ कर कुछ सोचने लगे! फिर सोच विचार कर उन्होंने पूछा—अच्छा श्री भगवान जी कभी विलायत या अमेरिका गये थे?

विपिन ने कहा—यह तो पता नहीं कि भगवान जी कभी विलायत गये थे, लेकिन मैं इस बात को जोर देकर कह सकता हूँ कि श्री भगवान जी ने ही विलायत को बनाया है।

एडीशनल कलक्टर साहब ने कहा—अजी जनाब, विलायत को बनाना दूसरी बात है और विलायत में रह कर साल डेढ़ साल पढ़नो-लिखना बिलकुल दूसरी बात है। एसी अवस्था में लाचार हूँ। मुझे अफसोस है कि मैं आपको रख नहीं सकता।

विपिन को काटो तो खून नहीं। उसके पैरों तले से धरती निकल भागी। अगाध में डूबते हुए उसने पूछा—आप सर्वशक्तिमान भगवान के सार्टिफिकेट को भी नहीं मानते?

एडीशनल कलक्टर साहब ने हँसते हुए कहा-मुझे अफसोस है कि जिनका तुम सार्टिफिकेट लाये हो उनकी कोई भी योग्यता तुम नहीं बतला सके। ऐसी अवस्था में मुझे लाचारी है। मैं मानता हूं कि तुम्हारे पास श्री भगवान जी का सार्टिफिकेट है, लेकिन प्रश्न है कि उनकी योग्यता और हैसियत क्या है? राष्ट्र और समाज में उनका पोजीशन क्या है? अगर वे किसी ग्राम पंचायत के मुखिया भी होते तो भी कोई बात थी; लेकिन न तो उनकी कोई हैसियत है, न योग्यता है और न कोई पोजीशन ही। ऐसी अवस्था में मुझे कहना पड़ता है कि इस सार्टिफिकेट को मानने से मैं लाचार हूं।

विपिन ने तड़प कर कहा-साहब!... अच्छी बात है; मैं प्रान्तीय मंत्रिमंडल के सदस्य के पास जाता हूं।

एडीशनल कलक्टर साहब ने कहा—आजकल तो सभी लोग मंत्रियों के पास जाया करते हैं। आप भी जाकर हो आइये। अगर मंत्रियों ने भगवान जी के सार्टिफिकेट को स्वीकार कर लिया तो आपके लिए अच्छा ही होगा। ऐसी अवस्था में मैं भी आपको बहाल कर लूंगा।

( ३ )

जिस समय वह प्रान्त के मंत्री के पास पहुंचा उस समय सबेरे के साढ़े नौ बजे थे। मंत्री जी के आगे-पीछे आस-पास फाइलों का ढेर लगा था और सरकारी फाइलों के बीच में बैठे हुए चर्खा चला कर मधुर स्वर में हरिनाम संकीर्तन कर रहे थे——

"रघुपति राघव राजाराम, सबको सन्मति दे भगवान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर अल्ला तेरे नाम, रघुपति राघव राजाराम।"

हरिनाम संकीर्तन करते हुए जब वे उठ गये, तो विपिन की ओर देखा। बोले—कहो भाई तुम कहां से आते हो? तुम्हारे इलाके का क्या हाल है? अबकी के चुनाव में तुम्हारे इलाके में कांग्रेस को वोट मिलेगा न?

बात बदलने की नीयत से विपिन ने कहा-आप बड़ी देर से हरिनाम संकीर्तन करते हैं।

मंत्री महोदय ने कहा-नहीं। देर तो हुई ही नहीं, मैं तो अभी सो कर उठा हूं। कल रात को पार्टी की मिटिंग थी, वहाँ चला गया था। उसके बाद एक विधवा विवाह का उद्घाटन करना था। उसी उद्घाटन में रात के दो बज गये। अभी सोकर उठा। अब ये सैकड़ों दर्जन फाइलें हैं। उसके बाद एसेम्बली जाना है। मगर आपका आना कैसे हुआ?

विपिन ने कहा—श्रीमान् मेरे पास भगवान का दिया हुआ सार्टिफिकेट है।' 'वहवा, लाओ तो देखूं जरा!" मंत्री महोदय खुशी के मारे उछल पड़े सार्टिफिकेट को हाथ में लेकर बोले—तुम धन्य हो जो तुम्हारे पास सर्वशक्तिमान भगवान का सार्टिफिकेट है। भगवान की महिमा का ध्यान बापूजी भी किया करते थे। भगवान ने ही पूज्य बापू को सत्य का प्रकाश और अहिंसा की शक्ति दी थी। भगवान जी की कृपा से बापूजी स्वराज्य लाने में सफल हुए।

'मगर देखिये तो!' विपिन ने कहा-हमारे यहां के एडीशनल कलक्टर साहब भगवान के सार्टिफिकेट को मानते ही नहीं। पूछते हैं कि भगवान की योग्यता क्या है? वे अई० सी० एस० हैं या नहीं?

मंत्री महोदय गम होकर बोले—तुम्हारे एडीशनल कलक्टर साहब गलत पूछते हैं। योग्यता के बारे में सवाल करना ठीक नहीं। योग्यता हम-लोग नहीं देखना चाहते। हम तो सिर्फ यही पूछते हैं कि भगवान जी कभी कांग्रेस के मेम्बर रहे या नहीं?

'जी नहीं; वे कांग्रेस के सदस्य तो नहीं रहे!'

'अच्छी बात है, वे कभी जेल गये हैं या नहीं?'

'जी नहीं; वे तो जेल भी नहीं गये!'

तब मंत्री महोदय ने कहा-तब तो जनाब, मेरे पास भी इस सार्टिफिकेट का कोई महत्व नहीं!

( ४ )

आखिर लाचार होकर विपिन ने उस सार्टिफिकेट को भगवान जी के पास वापस लौटा दिया। बोला हे प्रभो, आपके सार्टिफिकेट का आज धरती पर कोई महत्व नहीं। किसी मुखतार या ग्राम-पंचायत के मुखिया का भी सार्टिफिकेट आज मान लिया जाता है; लेकिन आपके सार्टिफिकेट को कोई मानने को तैयार नहीं। व्यापारियों के पास जाता हूं तो वे भी कहते हैं कि जिसके पास भगवान का सार्टिफिकेट हैं वह तो हमें न ब्लैक करने देगा न इनकम टैक्स और सेलटैक्स हड़पने देगा। ऐसे आदम को रख कर हम क्या करेंगे?

और पहली बार सन् १९५० ईस्वी में भगवान को एक बार अचम्भा हुआ।

GC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अहिंसक क्रान्ति में शिक्षा का स्थान

[ बेसिक ट्रेनिंग कालेज तुरकी, जि० मुजफ्फरपुर के विद्यार्थियों के बीच अखिल भारत चर्खा संघ के सभापति, श्री धीरेन मजुमदार का भाषण । ]

हमलोगों ने म० गांधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता प्राप्त की है। गांधी जी के नेतृत्व की मुख्य विशेषता यह थी कि, उन्होंने अहिंसक मार्ग से देश को आगे बढ़ाया। उन्होंने देश की क्रान्तिकारी प्रवृत्ति को अहिंसात्मक रूप दे दिया, और एक ऐसी नवीन युद्ध-पद्धति का विकास किया जिसे दुनिया ने अबतक नहीं देखा था। अब तक क्रान्ति का अर्थ था हिंसात्मक परिवर्त्तन। पर महात्मा जी हिंसात्मक भावों को मिटाकर क्रान्ति शब्द के साथ नये भाव और मूल्य जोड़ दिये। स्वयं कष्ट सह कर और बदला लेने का विचार त्याग कर, अन्याय का विरोध करना, इसमें सन्निहित है। क्रान्ति के रुढ़िगत स्वरूप से यह बिलकुल भिन्न वस्तु है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महात्मा जी ने हमारे विचारों में क्रान्ति लाने का प्रयत्न किया। उन्होंने बताया कि विचार और भाव में की गई क्रान्ति ही बाहरी क्रान्ति के रूप में प्रगट होती है। आज हम पुनः क्रान्तिकारी परिस्थिति से गुजर रहें हैं। या तो हमें इस परिस्थिति का अहिंसात्मक रूप से उपयोग कर हितकर परिणाम निकालने होंगे, या हम इसकी बाढ़ में डूब जायेंगे। इसका अर्थ हुआ कि या तो हम गांधीवादी क्रान्ति की परम्परा को आगे बढ़ायें, या युगों से भारत जिन तत्वों का प्रतीक रहा है, उनका सर्वनाश होने दें।

यदि हम अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हैं, तो हमें राष्ट्रपिता के बताये मार्ग का अनुसरण करना होगा। वे हिंसा को हटाकर, अहिंसक समाज का निर्माण करना चाहते थे। हिंसा दो प्रकार से होती है। शरीर पर, और आत्मा पर। व्यक्ति के श्रम का शोषण ही शारीरिक हिंसा है। और व्यक्ति की आत्मा को इस प्रकार दबा देना कि वह स्वयं अपने या दूसरों के शोषण में सहयोग देने लगे, आत्मा की हिंसा है। किसी को भी दूसरे की हत्या करने या उसे कष्ट पहुंचाने में कोई आनन्द नहीं मिलता है। आदमी दूसरे की हत्या इसलिये करना चाहता है कि उसके शोषण में बाधा उपस्थित होती है। आज संसार में हिंसा की वृत्ति परिव्याप्त है। अतः चारो ओर अशान्ति और कटुता का वातावरण होना स्वाभाविक है।

इस दुष्ट क्रम का अन्त करने के लिये महात्मा जी जीवन भर सचेष्ट रहे। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये, जन-व्यापी आधार पर एक वैज्ञानिक प्रयोग किया, जिसका नाम उन्होंने सत्याग्रह रखा। वे सामाजिक और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते थे। सामाजिक स्वतन्त्रता के आदर्श ने संसार में लोकतन्त्र की कल्पना का जन्म दिया है। पर लोकतन्त्र को क्रियात्मक रूप देने की जो वर्त्तमान पद्धति है, वह जनता के शोषण का अन्त करने में असमर्थ साबित हुई है। बल्कि, उल्टे इससे शोषण कार्य में सहायता ही मिल जाती है। क्योंकि, इस के चलते शोषण क्रम को नैतिक बल प्राप्त हो जाता है, और सत्तारूढ़ व्यक्तियों को यह कहने का मौका मिल जाता है, कि उनकी रीति-नीति जनता को पसन्द है, और वह उसका समर्थन करती है। अतः यह प्रगट है कि आज जिस पद्धति के अनुसार वोट द्वारा सरकार बदली जाती है, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सामाजिक व्यवस्था सामान्यतः ज्यों की त्यों बनी रहती है, उस पद्धति से सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना हो नहीं हो सकती। सच्चा लोकतन्त्र तो सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक किसी प्रकार के शोषण को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

महात्मा गांधी वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्त्तन करना चाहते थे। वे मानते थे कि सच्चा लोकतन्त्र तभी संभव है जब जनता का प्रत्यक्ष नियन्त्रण शासन तन्त्र पर हो। और यह नियन्त्रण तभी संभव है जब शासन तन्त्र के कुकृत्यों और अधिकार के दुरुपयोग के विरुद्ध सुसंस्कृत रूप से विद्रोह करने की शक्ति जनता में हो। अर्थात् जनता को पूर्ण विश्वास सत्याग्रह की शक्ति में होना चाहिये, और जरूरत पड़ने पर सत्याग्रह करने की क्षमता भी उसमें होनी चाहिये। वोट का सदुपयोग तभी होना संभव है, और वोट की पद्धति का उद्देश्य भी तभी पूरा हो सकता है, जब इसके पीछे सत्यग्रह का बल हो। व्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रादुर्भाव भी तभी होगा।

पर वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था एक ऐसी किलाबन्दी है जो भ्रष्ट शासन तन्त्र के विरुद्ध सत्याग्रह का शक्ति जगाने में रुकावट डालता है। इस सुसंस्कृत विद्रोह के लिये दो बातों का होना आवश्यक है। इस विद्रोह के नेतृत्व का विकास जनता के बीच से होना चाहिये। दूसरी बात, जनता के जीवन पर दूसरों का नियन्त्रण न होना चाहिये, यानी जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिये जनता को दूसरों पर निर्भर न रहना चाहिये। जनता स्वावलम्बी हो। स्वावलम्बी न होने से, जीवन के जरूरी सामान के उत्पादन पर नियन्त्रण रखने वाले लोगों का विरोध करना कठिन हो जाता है। आदमी में आन और जान का मोह, दोनों होता है। कुछ थोड़े से लोग तो जान दे कर भी आन की रक्षा कर सकते हैं। पर अधिकांश लोगों में आन देकर जान की रक्षा करने की प्रवृत्ति होती है। इस लिये विकेन्द्रित उत्पादन व्यवस्था ला कर उपरोक्त दोनों बातों को पूरा करना होगा। सका अर्थ यह हुआ कि समाज का ऐसा नवीन गठन किया जाय। ज समें पूँजीवाद और शोषण का अन्त हो जाय।

इस विषय में एक सैद्धान्तिक मतभेद उपस्थित होता है। मार्क्सवादी विचार भी पूँजीवाद और शोषण क अन्त करना चाहता है। परन्तु इस विचार से लोगों की यह मान्यता है कि उत्पादन के साधनों के राष्ट्रीयकरण से पूँजीवाद का नाश हो जायेगा। गांधीवादी विचार यह मानता है कि इस तरीके से पूँजीवाद के स्वरूप में केवल परिवर्त्तन हो जाता है, उसके सारतत्व सभी विद्यमान रह जाते हैं। उपरोक्त क्रम से केवल इतना होता है कि व्यक्ति के बदले राज्य का अधिकार साधनों पर हो जाता हैं, और इस तरह वर्त्तमान पूँजीवाद के स्थान में राष्ट्रीय पूँजीवाद आ जाता है। परिणामस्वरूप, पूँजीवाद के दोष प्रायः बने रह जाते हैं। असल में मुख्य प्रश्न तो यह है कि हम उत्पादन की कौन सी पद्धति चलाना चाहते हैं? पूँजी के आधार पर या श्रम के आधार पर? रूढ़िवादी मार्क्सवादी लोग पूँजी के आधार पर गठित व्यवस्था को श्रेयस्क मानते हैं। यह व्यवस्था केन्द्रीभूत होती है, और इसमें व्यक्ति की स्वतन्त्रता की प्रतिष्ठा नहीं है। गांधीवादी श्रमवादी व्यवस्था को श्रेयस्कर समझता है। इसमें अधिक से अधिक विकेन्द्रीकरण होगा और स्वावलम्बन और स्वतन्त्रता का वातावरण रहेगा।

इसी प्रकार आजकल शोषण शब्द का भी रूढ़िगत अर्थ हो गया है। केवल बड़े बड़े जमीन्दार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पूँजीपति ही शोषक समझे जाते हैं। मार्क्सवादी मत के अनुसार बौद्धिक श्रम करने वाले लोग मजदूर ही समझे जाते हैं। पर महात्मा गांधी मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ उत्पादक शारीरिक श्रम करना ही चाहिये। ऐसा नहीं करने वाला व्यक्ति सच्चे अर्थ में श्रमिक कहलाने का हकदार नहीं है। इस दृष्टि से विचारने पर हम देखते हैं कि हमारे समाज में आज दो प्रकार के लोग हैं। शोषक जन ——————इस वर्ग में बौद्धिक श्रम करने वाले लोग भी शामिल हैं ————और शोषित जन। अथवा यों कहें कि हजूर और मजूर। इस वर्ग विरोध का लोप करना होगा। पर यह कार्य वर्ग-परिवर्त्तन द्वारा होना चाहिये, विनाश द्वारा नहीं। अर्थात् शोषक वर्ग के लोग उत्पादक शारीरिक श्रम करके मजूर बन जायं, और शोषण के दाग को धो डालें। यह अहिंसक परिवर्त्तन की क्रान्ति होगी। विनाश द्वारा वर्ग के अन्त करने की कोशिश हिंसा और अधिकाधिक हिंसा का दुष्ट चक्र पैदा करती है, और सच्ची स्वतन्त्रता के लक्ष्य को बराबर दूर ही करती जाती है। इस कार्य का श्रीगणेश बौद्धिक श्रम करने वालों को करना होगा। इसे पूरा करने में कुछ समय लग सकता है। यह भी संभव है कि काम शुरू करने के बाद भी काफी समय तक इन लोगों की पुरानी आदत बिल्कुल न जाय, और बहुत काल तक ये लोग नरसिंहावतार के समान आधा हजूर, आधा मजूर बने ही रह जायें। पर यदि हम यह कार्य करने का संकल्प कर लें, तो यह अहिंसक क्रान्ति पूरी होकर ही रहेगी, और हिंसात्मक विद्रोह न होने पायगा।

इस श्रमवादी और सच्चे लोकतंत्र के निर्माण के लिये हमें नागरिक बनाना होगा। सहकारी अराजक बाद के लिये लोगों को तैयार करना होगा। इस कार्य में शिक्षा पद्धति का भी एक खास स्थान है। पर अहिंसक क्रान्ति को सफल बनाने में यदि हम शिक्षा पद्धति से भी सहायता लेना चाहते हैं, तो पहले शिक्षा पद्धति में ही क्रान्ति करनी होगी। नई तालीम या बुनियादी शिक्षा, शिक्षा पद्धति का यही क्रान्तिकारी रूप है।

आप लोगों को यह मालूम है कि बुनियादी शिक्षा किसी उत्पादक उद्योग और सामाजिक वातावरण के माध्यम द्वारा दी जाती है। उद्योग से विद्यार्थी श्रम करना सीखता है, और उससे कुछ आमदनी भी कर सकता है। यदि वह श्रमिक वर्ग का है, तो श्रम करने की उसकी आदत बाद में भी बनी रह जायगी। यदि वह श्रमिक वर्ग का नहीं है, तो उसे काम करने की आदत लगेगी, और वह श्रमिक बनेगा। दूसरी बात, इस पद्धति से हम सहकारी जीवन और विकेन्द्रित व्यवस्था की ओर बढ़ेंगे। स्वावलम्बी व्यवस्था में सहकारिता की वृत्ति उत्पन्न होने की अधिक संभावना है।

केन्द्रीभूत पूँजीवादी व्यवस्था में प्रतियोगिता की वृत्ति बढ़ेगी। उद्योग का तीसरा लाभ यह है कि इसके द्वारा हम सभी बच्चों को शिक्षक बन सकते हैं। केवल किताब द्वारा शिक्षा देने की पद्धति में हम सभी बच्चों को पूरी शिक्षा नहीं दे सकते, क्योंकि, तब उन्हें काम से हटाना होगा जो संभव और वांछनीय नहीं है। इसका नतीजा यह होगा कि हम केवल थोड़े से लोगों को शिक्षित बना सकेंगे और शेष लोगों को केवल साक्षर बना कर ही संतोष मान लेंगे। सामाजिक बातावरण से सम्बन्धित होने के कारण नई तालीम से बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ता-भाव जाग्रत और परिपुष्ट होता है। मानव भी बचपन से ही इस तालीम में होता है। यदि
भाव की दुर्बलताओं के कारण समाज में जो आप इसी भावना से काम करेंगे, तो आप अपने
समस्यायें उठती रहेंगी। उन्हें समझने का अभ्यास जीवन में अवश्य सफल होंगे।

[ पृष्ठ १७ के आगे ]

भ्रमवश, परिस्थितियों से विवश होकर अथवा बादशाह बनकर भी फकीर का-सा जीवन बिताया
अनुभूति की गहनता को लेकर कोई गलत दावा कौन कह सकता है कि इस मानवश्रेष्ठ का जीवन
किया हो या कोई गलत बात कही हो तो इसका यह एक जलती हुई मसाल नहीं हैं? ऐसा नहीं है कि
अर्थ नहीं है कि वे पैगम्बर नहीं थे। इसी तरह उनसे भूलें नहीं हुई। यही नहीं, गलत दावे भी
मुहम्मद ने, असंख्य देवताओं की पूजा के नाम पर उन्होंने किए, पर फिर भी वे पैगम्बर थे, यह संदेह
हद दर्जे गिरे, बुत परस्ती में डूबे हुए और बुरी तरह से परे है। यही बातें महावीर और बुद्ध को लेकर
अपस में लड़ते हुए जंगली व खूंखार कबीलों को है। गांधी भी इसी कोटि में आते हैं। उनसे
भाईचारे का, सहिष्णुता व प्रेम का संदेश दिया, भूलें हुई हैं, गलतियां हुई हैं। उन्होंने अपनी
इन्सानियत का पाठ पढ़ाया और इसके लिए उन्होंने गलतियों को माना भी है। भूल होने पर उन्होंने
यातनाएं सहीं, गालियों व अपमान के कड़वे घूंट प्रायश्चित किया है, उसे सुधारा भी है। पर फिर
पिए, इट पत्थर की बौछारें झेलीं और अन्त में भी वे पैगाम्बर हैं।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जन, जनमत और जननेता

श्री प्रफुल्ल चंद्र पट्टनायक, उत्कल

'जनमत' को कहीं-कहीं 'लोकमत' और 'गणमत' के नाम से भी अभिहित किया जाता है। 'जन' एक व्यक्ति का बोधक है और 'जनों' से ही एक समाज का गठन होता है। किसी समाज में रहने वाले जनों का मत ही उस समाज का मत है।

## जनमत के प्रकार

'जनमन' एक शुद्र समाज का भी हो सकता है और किसी एक देश की संपूर्ण जनता का भी हो सकता है। समस्याओं की बिस्तृति जहाँ तक होगी जनमत की व्याख्या भी वहीं तक होगी। 'हिन्दू कोड बिल' के लिए खासकर हिन्दुओं का 'जनमत' क्या है, कश्मीर की समस्या के लिए हिन्दू- पाक का जनमत क्या है और तृतीय महायुद्ध के लिए दुनियाका जन मत क्या है इसे हम जानने। का प्रयत्न कर सकते हैं।

'लोकमत' और 'गणमत' का भी करीब करीब यही अर्थ है। 'लोक' शब्द दर्शनशास्त्र में भी 'संपूर्ण जीवसृष्टि' का बोध करने के लिए आया है, पर यहाँ 'लोकमत' का संबंध शुद्ध राजनीति से है।

अतः, 'जनमत' एक का नहीं अनेक का मत होता है। यानी, एक ऐसे समाज का मत है जिसका स्वार्थ किसी भी तरह से एक हो चाहे वह स्वार्थ क्षुद्र हो या महान्।

## निर्विवाद लोक नेताः

एक व्यक्ति के मत से समाज चालित हो तो उसमें विश्रृंखलताओं की भी सृष्टि हो सकती है और होती ही है। पर वह व्यक्ति जिसका कि किसी तरह के खास समाज से स्वार्थ नहीं है और जिसका स्वार्थ क्षुद्रता के बंधनों से ऊँचा-बहुत ऊँचा-उठ चुका हो अपने मन या विचार के द्वारा समाज में बिश्रृंखलताओं के बदले श्रृंखलता स्थापित करना है और समाज तथा उसके नेता भी ऐसे व्यक्ति के विचारों से अनुप्रेरणा ग्रहण करते हैं ऐसा व्यक्ति निर्विवाद रूपसे 'जननेता' के पद से भूषित होता है। समस्याओं और संगठनों के अनुसार 'जननेता' भी एक क्षुद्र समाज का, एक वृहत समाज या देश का और दुनिया भर का हो सकता है। पर निर्विवाद रूप से संपूर्ण देश या सारी दुनिया किसी को जन नेता मानले, ऐसे व्यक्ति बिरले ही मिलते हैं।

## अहं की असीमताः

अगर प्रत्येक व्यक्ति को अपने अपने मनोनुकूल समाज में बरतने की छूट दे दी जाय तब उस समाज की शृंखलाएँ छिन्न-भिन्न हो जाएँ और उसे फिर से जोड़ने के लिए जो रास्ता अपनाया जायगा उसका नाम जनतंत्र न होकर कुछ दूसरा ही होगा—जिसे १६ वीं सदी में स्पेन ने, फ्रांस में नेपोलियन ने, जर्मनी में बिस्मार्क और हिटलर ने और इटली में मुसोलिनी ने अपना कर निश्चित विफलता पायी है। फिर उनका चलाया तंत्र भी—चूँकि एक ही व्यक्ति का चलाया तंत्र है—अतः अवश्य ही विफल होगा। क्योंकि, व्यक्ति के अहं की कोई सीमा अभी तक निर्धारित नहीं हो सकी है। एक देश की सीमा से बढ़कर जब उसका अहं अपर देश की सीमा का अतिक्रमण करने के लिए जायगातब निश्चित है कि उस देश की और साथ-साथ दुनिया भर की 'लोकशांति' भंग होगी। हिटलर और मुसोलिनी का दुर्दान्त उदाहरण हमारे समुख ही है। सिर्फ इतना ही क्यों, सिकंदर से लेकर हिटलर तक का यही उदाहरण है। जिसने एक देश पर विजय पायी उसकी लालसा फिर विश्व-विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यूरोप का ही यह कोई जातीय रोग नहीं लिक व्यक्ति के 'अ' का ही दोष है।

इसी लिए एक 'व्यक्ति' को मुख्यता न देकर धुनिक समाज विज्ञान ने 'जनमत' को ही प्रधानता दी है। सबों का मत एक नहीं हो सकता है। अतः आज का समाजशास्त्र 'बहुमत' पर ही आधारित है। अधिनायक तंत्र में एक व्यक्ति समाज के ऊपर अपना विचार बलात् लादता है और प्रजा-तंत्र में बहुमत मिलकर अपना-अपना मत समाज को देते हैं—चाहे समाज को वह मान्य हो या अमान्य।

## जन देवता की उपासना

हिन्दू शास्त्रों ने तो 'जन' को ही देवता और जनता को जनार्दन की ही उपाधि दे डाली है। उन शास्त्रों में इसीलिए जनसेवा को जीवन का मुख्य ध्येय माना है। इन सबों का दुनियावी अर्थ सिर्फ यही है कि समाज में रहने वाले व्यक्तियों का पारस्परिक स्वार्थ कहीं आपस में ही लड़ न जाय। व्यक्ति अगर सिर्फ अपने ही लिए जीना-मरना सीखे तो समाज का समाज ही कहीं आपस में टकराकर चूरचूर न हो जाय इसीलिए जनत को जनार्दन मान कर जनसेवा करने की विधि पसंद की गई।

वास्तविक-जनमत तो वही है जिससे सब जनों की सेवा हो सके या कम से कम जो 'बहुजन हिताय' 'बहुजन सुखाय' भी हो सके।

## समाज चाहता है

१-- व्यक्ति या तो देवता बनकर सबों के स्वार्थ के लिए अपने स्वार्थों की बलि दे दे--

२- महान बनकर पहले जनसेवा करे और पीछे अपनी या—

३- सामाजिक बनकर अपनी सेवा के साथ-साथ जनसेवा भी करे या—

४- मनुष्य बनकर सिर्फ अपनी ही सेवा करे, पर दूसरे की हानि नहीं।

लेकिन समाज उससे यह अपेक्षा कभी भी नहीं रखता कि:—५-व्यक्ति अपने लिए दूसरे की हानि करे या—६- बिना कारण ही दूसरे का नुकसान करे और उससे खुश हो।

## समाज को चाहिये

समाज के उपर्युक्त इन ६ वर्गों में से 'जनमत' तो वर्त्तमान विधान के अनुसार—सबों का है, लेकिन नीतिशास्त्र के अनुसार 'जनसेवा' का अधिकार प्रथम तीन कोटि के ही व्यक्तियों को है। जिस समाज में प्रथम तीन कोटि के व्यक्तियों का अधिकार नहीं है और अपर तीन कोटि के व्यक्ति प्रबल हैं वहां का 'जनमत' और जनमत-अधिकारी भी उसी कोटि के होंगे और फलतः वह समाज भी क्षुद्रता, हिंसा, द्वेष, स्वार्थ और कलुष से परिपूर्ण होगा। समाज को चाहिये कि इसका विचार वह गंभीरता पूर्वक करे।

## बाजी किसके हाथ ?

आज हिन्दुस्थान में प्रथम तीन कोटि के व्यक्ति तो हैं, पर वे दर किनार हो गये हैं। वे क्यों कर किनारे हो गए हैं इसकी जवाबदेही जितनी उनके ऊपर है उतनी ही समाज के ऊपर भी है। न वे अपने विचारों का व्यापक प्रचार ही करते हैं और न यह चाहते हैं कि समाज उनका वरण ही करे और न समाज के अधिकांश लोग ही जानते हैं कि ऐसे व्यक्ति भी उनके बीच रह रहे हैं। समाज के जो भी पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं, हमारे दुर्भाग्य से और आज की शिक्षा के दुष्परिणाम से उनमें से अधिकांश चतुर्थ और पंचम वर्ग के ही होंगे। इसीलिए बाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज उन्हीं की है और यही कारण है कि आज हिन्दुस्तान जनतंत्र के मामले में निश्चित तौर पर विफलता की ओर तेजी से बढ़ रहा है। हिन्दुस्तान के सम्मुख आज जनतंत्र का एक रक्त-मांस-हीन कंकाल ही खड़ा है।

## विफलता में सफलता

धीरे-धीरे जनतंत्र की महत्ता को समझने पर ही आगे एक सच्चे जनतंत्र की स्थापना हो सकती है। तभी व्यक्ति और समाज के बीच के स्वार्थों का सामंजस्य भी स्थापित हो सकता है। सिर्फ स्वार्थों का ही नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक नियम, रीति, परंपरा तथा आचार व्यवहार भी इसी के अनुसार उदार बन सकते हैं। जैसे-जैसे तंत्र में सफलता मिलेगी हमारी उदारता की सीमाएँ भी वैसे ही बढ़ती जायंगी। इसीलिए निश्चेष्टता और निष्क्रियता से यही श्रेयष्कर है कि हम एक दो बार विफल हों तभी हमारी सफलता की सीढ़ी उन्मुक्त होगी।

## जनतंत्र उर्फ अधिनायक तंत्र

कभी-कभी जनतंत्र से संगठित दल भी दलगत या व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण अधिनायक तंत्रों भी बन बैठते हैं और उन्हें कानून का भी सहारा मिल जाता है। चूंकि, तात्कालिक शासनसूत्र उन्हीं के हाथों रहता है। इसी तरह कभी-कभी जनतंत्री भावनाप्रवण जननेता भी आवश्यकता से अधिक जन-सम्मान पाकर और अपनी बेजोड़ योग्यता के कारण अधिनायक के जैसे काम कर बैठता है। वह दुहाई तो देता है जनतंत्र की, पर काम करता है अधिनायक के जैसे। अगर भावना शुद्ध हो तो ऐसा नेता खतरनाक नहीं भी हो सकता है; पर ये दोनों ही लक्षण जनतंत्र सिद्धांत के विपरीत पड़ते हैं। ऐसी दशा में साधारण जनों को सचेत होकर स[illegible] उच्च स्वार्थों के अनुकूल पृथक रूप से संगठित [illegible] चाहिये।

## नवीन विचारों के लिए असहनशीलता नहीं

इसीलिए, जनतंत्र में नए-नए दलों की बराबर सृष्टि होती है और तभी नए और पुराने विचारों में बराबर सामंजस्य होता रहता है। जबतक पुराना दल नवीन दल के संशोधनों को नहीं ग्रहण करेगा तब तक वह आगे प्रगति नहीं कर सकेगा और ऐसी दशा में उनकी पराजय भी निश्चित है।

देश में रहने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने देश को संगठित, शृंखलित और सुखी बनाने के लिए विचार करे और उसके लिए प्रयत्न भी करे। उसे यह स्वतंत्रता है और यह उसका नैतिक अधिकार है कि वह अपने विचारों का प्रचार करे। उसी के अनुसार वह संगठित होकर काम भी करे। इसी तरह किसी भी व्यक्ति का यह भी अधिकार है कि वह उसमें शामिल हो या न हो। इसीलिए नवीन विचारों के प्रति असहनशीलता का जनतंत्र में स्थान नहीं है।

## वैष्णव बिलाड़

पर आजकल जिस तरह के जननायकत्व की संख्या बढ़ रही है अगर आदर्श यही रहा तो उससे देश को निश्चित खतरा है। उनमें से अधिकांश अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए न सिर्फ एक व्यक्ति की हानि कर सकते हैं, वरन संपूर्ण समाज की सुख-शांति को कुठाराघात कर सकते हैं। ऐसे ही लोग निःस्वार्थ सेवा की सफेद चादर के बीच अपने-अपने कुत्सित स्वार्थों को छिपाकर समाज के सामने आते हैं। उनके शब्द बड़े तेज होते हैं, उनकी वक्तृत्व कला बड़ी मोहक होती है, उनके उदाहरण बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


होते हैं, उनका व्यक्तित्व बड़ा गंभीर होता है उनकी मुख मुद्रा में सदा परसेवा की पुनीत वना झलकती रहती है। ऐसे मांसाहारी वैष्णव बिलाड़ों को पहचान लेना—साधारण जन तो क्या बड़े-बड़ों के लिए भी—आसान नहीं है।

### जनमत चोर

धन से, चालबाजी से, झूठे प्रचार से और क्षमता के अल्पव्यवहार से जो जनमत प्राप्त किया जाता है वह सच्चे अर्थ में 'जनमत' नहीं है। ऐसे लोगों को 'जननायक' की उपाधि तो दी नहीं जा सकती है, हाँ, निःसंदेह उन्हें 'चोर' कहा जा सकता है—चूँकि वे जनमत की चोरी करते हैं। ऐसे लोगों को जो भी जनमत मिलता है उसमें समाज की ही कमजोरी रहती है। अतः एक सचेत समाज ही वास्तविक जनतंत्र का अधिकारी है।

### इसका परिणाम पूंजीवाद है

जिस देश में जनतंत्र का कोई मूल्य ही नहीं समझा जाता है और उसकी खरीद-बिक्री मिठाइयों, पूड़ियों, शराब और रुपयों से होती है—समझना चाहिये वह देश कितना मूर्ख, अनैतिक तथा अयोग्य है। ऐसे देश में सिवा पूँजीवाद के और कोई भी तंत्र काम नहीं कर सकता है। और, ऐसे ही देशों के कारण शोषण, उत्पीड़न तथा अनवरत युद्धज्वर दुनिया में बना रहता है।

### हम मोमबत्ती की तरह जलें

जिस देश की जनता को इतना भी पता नहीं हो कि उसका वास्तविक स्वार्थ किसमें निहित है और कोरे सिद्धांतों के वाक्जाल में अपने वास्तविक हित को भूल कर वह किसी ठग को वोट दे देता है उस देश में जनतंत्र की कल्पना कैसे की जा सकती है? ऐसे देश में जन चेतना और जन-जाग्रति के लिए शिक्षा का पुनरुद्धार, पुनर्व्यवस्था और व्यापक प्रचार की आवश्यकता है। पर काम अकेले किसी सरकार से—शासन से और सिर्फ रुपयों से नहीं हो सकता है। ऐसे कार्य के लिए लाखों त्यागी और बलिदानियों की आवश्यकता है—जो स्वयं प्रकाश देने के लिए मोम की बत्ती की तरह जल सकें।

### विनोबा की क्रान्ति चाहिये

जनतंत्र सिर्फ बोलने और सिखने की स्वतंत्रता ही नहीं देती, वरन वह हमें यह भी सिखाती है कि हम जिस देश के निवासी हैं उस पर हमारा समान और नैतिक हक है। उसकी भूमि पर हम बस सकें। ऐसी दशा में जिस देश में किसी के पास तो लाखों-एकड़ भूसंपति हो और किसी को घर बनाने के लिए भी एक बीघा जमीन न हो – उस देश में प्रजातंत्र की सफलता कहाँ तक होगी? ऐसे देश में प्रजातंत्र की सच्ची सफलता के लिए विनोबा जी की तरह व्यापक अहिंसक क्रान्ति की नितांत आवश्यकता है। यह भी याद रखने की आवश्यकता है कि सिर्फ नियम, विधान और शासन के जोर से अगर ऐसी क्रांति हुई या ऐसी क्रांति में हिंसा का या जोर अबर्दस्ती का स्थान रहा तब वह क्रांति न आदर्श ही हो सकती है और न उसे स्थायित्व ही मिल सकता है। अनुकूल अवसर पाते ही बँटी हुई जमीन फिर से कुछ ही लोगों के हाथों में केन्द्रित हो जा सकती है। इसीलिए विनोबा जी की यह क्रांति ही सफल, स्थायी और दुनिया के लिए आदर्श हो सकती है। वह दिन साफ नजर आ रहा है जब कि इसी क्रांति से हिन्दुस्तान में एक सच्चे प्रजातंत्र की नींव डाली जायगी।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक समता के बिना सर्वोदय असंभव

श्री मोतीलाल केजरीवाल

सर्वोदय तो वही कहा जायगा जहाँ जाति, पाँति, रंग, वर्ण, धर्म, नर-नारी आदि भेदों का ख्याल न करते हुए सबका विकास या उत्थान हो। वह विकास एकांगी न होकर सर्वांङ्गी हो। सब का सभी दृष्टि से विकास। नैतिक ( मानसिक और आध्यात्मिक ) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, बौद्धिक, शैक्षिक और शारीरिक—इन सभी दृष्टियों से सभी लोगों का विकास हो तभी सर्वोदय का पूरा अर्थ निकलेगा। संक्षेप में सर्वोदय समाज में कोई अनीतिवान होगा, न कोई जन्म के कारण नीचा या छोटा; न कोई दीन-हीन या गरीब होगा, न कोई मूर्ख और बलहीन। आर्थिक समता सर्वोदय का एक प्रमुख लक्षण या चिन्ह है। सर्वोदय समाज में दिल्ली, कलकत्ता तथा बम्ब की ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं, महलों और प्रासाद के साथ ही साथ जीर्ण-शीर्ण झोपड़ियों का अस्तित्व नहीं रह सकता और कोई करोड़पति और कोई अत्यन्त गरीब नहीं रह सकता। सर्वोदय समाज में तो सबके रहने के तथा उपयोग की सामग्री बहुत कुछ एक जैसी रहेगी।

## परमात्मा का आदेश

परमात्मा का आदेश है कि हम सभी मानव आर्थिक दृष्टि से समान रहें। ईश्वर का यह स्पष्ट आदेश हमें सभी जगह लिखा हुआ दिखाई पड़ता है। विशुद्ध बुद्धि की सूक्ष्म आँखों के द्वारा हम उस आदेश को देख सकते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, दिन, रात, हवा, पानी आदि पदार्थ हमें इसकी साक्षी दे रहे हैं। विश्व के धन कुबेरों या सम्पतिशालियों एवं गरीबी का दुःखपूर्ण जीवन बिताने वाले सभी व्यक्तियों को सूर्य समान रूप से प्रकाश पहुंचाता है, हवा सबको समान रूप से ही स्पर्श तथा स्पंदित करती है। यदि कोई अधिक लेना भी चाहे तो वह नहीं ले सकता। यह दैवी विधान है।

## सृष्टि की रचना दो तरह से

परमात्मा ने ही उस सृष्टि की रचना की है। सूर्य, चाँद, सितारे, हवा, पानी, अग्नि, वृक्ष, उद्भिज और खनिज आदि सभी पदार्थ उसी ने बनाया है। उन्होंने इसे दो तरह से बनाया है। एक तो स्वयं जैसे सूर्य, चाँद, हवा, पानी आदि। दूसरे वह इन पदार्थों को मनुष्य के द्वारा तैयार कराया है। जैसे अन्न आदि उद्भिज पदार्थ तथा लोहा, कोयला आदि खनिज पदार्थ।

मनुष्य जब हल चलाता, कुदाल से जमीन खोदता तथा जोरदार परिश्रम करता है तब भूमि फाड़कर उद्भिज और खनिजपदार्थ निकल पड़ते हैं। अतएव यह सिद्ध हुआ कि सृष्टि की सारी चीजें ईश्वर के द्वारा सीधे (Directly) और मनुष्य के द्वारा (Indirectly) बनायी जाती है। सीधे बनी हुई चीजें मनुष्य को समान रूप से आवश्यकतानुसार मिला करती हैं, किन्तु वे चीजें जो सीधे न बनाकर मनुष्य के द्वारा बनवायी जाती हैं उन्हें वह मनुष्य ईमानी से अधिक हथिया लेता है। अन्न को ही लीजिये। यद्यपि इसे भगवत् कृपा ने जमीन से निकाला है, फिर भी कोई अपनी आढ़त में रहने के कारण अपनी ठेक ( कोठा ) में हजारों मन धर लेता है और किसी की फूटी झोपड़ी में कुछ भी नहीं जा पाता। अबरख, कोयला, किरासन, ताम्बा आदि खनिज पदार्थों की भी यही बात है। कोई उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अतुल सम्पतिशाली हो गया और कोई कंगाल हो गया।

### इस बेईमानी को दूर करना होगा

मनुष्य को चाहिये कि वह ऐसी बेईमानी न करे। हवा, पानी और प्रकाश पर जैसे सबका समान तथा अबाध अधिकार है वैसे ही अन्न आदि उद्भिजों और कोयला आदि खनिजों पर भी उनका समान अधिकार होना चाहिये। निश्चय ही वे लोग विश्वशांति के लिए घातक हैं जो अपनी सम्पत्ति या धन-दौलत को बढ़ाने में लगे हुए हैं। भगवत् गीताने ऐसे लोगों को राक्षसी भावना का मानकर ही कहा है कि "इहन्ते कामभोगार्थः मन्यावेनार्थ सञ्चयान" अर्थात् राक्षसी वृत्ति के लोग विषय भोगोंकी पूर्त्ति के लिये अन्यायपूर्वक धनादिक पदार्थों का संग्रह करने की चेष्टा करते हैं। भगवान ने इसीलिये बार-बार दुहरा कर कहा है कि परिग्रह यानी धन संग्रह करनेवाले व्यक्ति शांति नहीं पाते। साफ शब्दोंमें उसे बेईमानी ही कहना चाहिये। सर्वोदयवादियों को उचित है कि वह इस बेईमानी को, जिसने एक आर्थिक व्यवस्था का रूप ले लिया है, मिटाने का प्रयत्न करे अथवा कम से कम ऐसी विषमता (असमानता) के विरुद्ध वातावरण तैयार करे। जहाँ आर्थिक समता नहीं वहाँ सर्वोदय हो ही नहीं सकता। सामाजिक समानता का दरवाजा तो आर्थिक समानता के बाद अपने आप ही खुल जाने वाला है। अतएव कार्यकर्त्ताओं को आर्थिक समानता का प्रचार जोरों से करना चाहिये।

---

## सूचना—

जो लोग अपने स्वस्थ और सुन्दर बच्च किसी उत्सव एवं अन्य मनोरम दृश्यों का फोटो 'ग्राम-निर्माण' में प्रकाशित करना चाहें, वे ब्लॉक भेज सकते हैं। फोटो और १०) रु० नगद आने पर यहां भी इन्तजाम कर दिया जायेगा।

लेखक या कवि उपर्युक्त रकम के साथ अपना फोटो भी भेज सकते हैं।

——सम्पादक


## सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य २॥), तीन शीशी एक साथ लेने पर ६॥) बाल आधा पका हो तो ३॥), एक साथ ३ का ६) और कुल पका हो तो ५) व ३ का १२) बेफायदा साबित होने पर कीमत वापस।

## महात्मा प्रदत्त

### श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके लेप से सफेदी के दाग को पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें –) का टिकट भेज कर शर्त लिखालें। मू० ३)

तेज दवा का मूल्य ५) रु०।

श्री हिन्द फार्मेसी ( ४१ )

पो० जसीडीह ( संथाल परगना )


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बाँसुरी *

श्री जगदीश त्रिगुणायत

बाँसुरी आदिवासियों की चिरसहचरी है। वन के एकान्त में वह सदा इनका मन बहलाती है। इस बात का श्रेय इन्हीं वनवासियों को है कि बाँसुरी का आविष्कार—जिससे बढ़कर मधुर और सरस वाद्य आज तक सभ्यता ने नहीं निकाला—इन्हीं का है। बाँसुरी सारे संसार के मानव की आदिम सभ्यता का वह मधुर अवशेष है जो प्रेम के समान अनादि और गीत के समान चिरन्तन है।

प्रकृति की लीला भूमि में जब मनुष्य के हृदय में राग पैदा हुआ तभी उसने वन के अधरों पर बजने वाली बाँसुरी का मधुर स्वर पहिचाना। वृक्षों और बाँस-कुंजों में वायु की सिसकार ने मनुष्य को इस रहस्य-मयी वस्तु से परिचित कराया। तभी से आदिवासी प्रकृति के कंठों से निकले हुये इस सबसे मीठे स्वर को पहिचानते हैं। वस्तुतः वनलोक के वातावरण में इससे अधिक प्रभावशाली और कोई वस्तु नहीं हो सकती।

आदिवासियों की दुनिया में यह एकान्त में गायें चराने वाले चरवाहों का सहारा है। वन के कंटीले रास्ते में थके हुए राहियों का मधुर

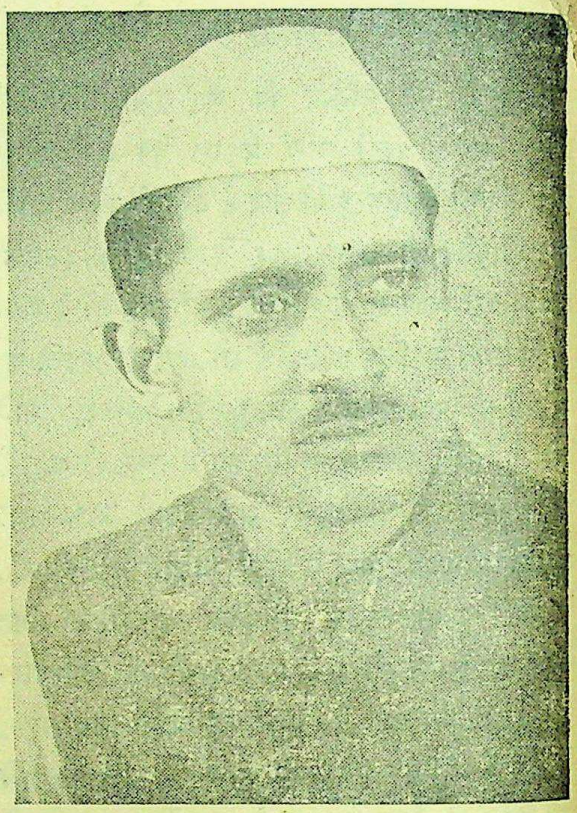

लेखक—

सम्बल है। रात के सूनेपन में विरही के हृदय से निकली हुई करुण पुकार, और किसी झरने के एकान्त तट से मिलनातुर प्रेमी का आकुल संकेत है। बाँसुरी इनके गीतों में प्राण भरती है और इनके वाद्यों का शृंगार करती है। बाँसुरी आदिवासी सभ्यता की सरलता और मधुरता का ज्वलन्त प्रतीक है।

* लेखक की शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'बन देवता' से उद्धृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक स्वाधीनता की संभावना

श्री शंभुनाथ बलियासे मुकुल

आयरिस कवि जार्ज रासेल साहित्य संसार के ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हो गये हैं। उन्होंने Nationalbring नामक सुविख्यात पुस्तक में जिन सामाजिक समस्याओं का उल्लेख कर उनके समाधानार्थ अनेक उपायों को बतलाने की चेष्टा की है। हमारी समझ से वे बहुत अंशों में हमारी समस्याओं के अनुरूप यानी मिलती जुलती है। ऐसी हालत में हमारे लिये जार्ज रासेल की विचारधाराएं भी काफी उपयोगी और काम की सिद्ध हो सकती हैं।

जार्ज रासेल ने उक्त पुस्तक में एक स्थान पर कहा है कि "जो हृदय को छोटा बनाकर बाहर बहुत बड़ा प्रदर्शन करना चाहता है, वह जरूर ठगाता है। बाहर के सौंदर्य और महत्व यदि भीतर के सौंदर्य और महत्व के बिंब नहीं हों तो उनमें स्थायित्व नहीं हो सकता। देश के प्राण को पुष्ट और सौंदर्य मय बना लेने से उसका बाहरी रूप भी पुष्ट और सौंदर्यमय दिखलाई पड़ेगा। भारत की राजधानी दिल्ली के आनन्दमय उत्सव को देखकर या वहाँ के सौंदर्य को देखकर यदि कोई सारे देश के सम्बन्ध में एक राय निश्चित कर ले--एक धारणा बना ले--तो वह अवश्य ही धोखा खा जायगा। समय आने पर वह बेवकूफ भी सिद्ध हो जा सकता है।

कवि रासेल की राय से वर्त्तमान सभ्यता में Democracy in Ecomonic's या अर्थनैतिक साम्य एक तरह से असम्भव है। इसी लिये वे आधुनिक सभ्यता पर हमेशा खड्ग-हस्त से लगते हैं।

वर्त्तमान कल-कारखानों ने ग्रामीण सभ्यता को ध्वंस कर नगर सभ्यता की जो सृष्टि की है इसे वे मानव-सभ्यता का विरोधी बतलाते हैं। वे कहते हैं कि स्वाधीन यूरोप के घर घर में जो स्वाधीनता की बात सुनी जाती है वह सिर्फ मुट्ठीभर धनवानों और पैसे वालों की कल्पना मात्र है। उस स्वाधीनता में कृषक-मजदूरों का कोई स्थान नहीं है। संख्या में उनकी अधिकता रहने पर भी अल्पसंख्यक धनी और मध्यवित्त के लोगों पर उन्हें निर्भर करना पड़ता है। तथाकथित गणतंत्रवाद सिर्फ धनी और व्यापारियों के लिये है। आधुनिक युग में कृषक-मजदूरों की जो अवस्था है, उसमें दास यानी गुलाम के सिवा और कुछ नहीं है। जो दास या गुलाम होता है उसके हृदय में स्वाधीनता का कोई स्थान नहीं रह जाता है। दासत्व प्रथा आज भी समाज से लुप्त नहीं हुई है, सिर्फ रूपान्तरित हुई है।" रासेल के मतानुसार देश के असंख्य लोगों को इस तरह दासत्व की शृंखला में आवद्ध रख कर उनकी आत्मा को हर प्रकार से कुचल कर सभ्यता की सृष्टि करना बालू की दीवाल पर आलीशान महल खड़ा करने के समान है। जिस सभ्यता के भीतर इतना खोखलापन हो यानी जिसकी नींव इतनी कमजोर हो, उसके बाह्य ऐश्वर्य पर गर्व करना नासमझी है। तनिक बोझ पड़ते ही उसे मिट्टी में मिलना होगा। इसलिए कवि रासेल ने देश वासियों के लिये कहा है कि "हमलोग ऐसी भूल न करें। इस भूल से संसार की बड़ी-बड़ी सभ्यता का सत्यानाश हो गया है। हमारी सभ्यता की सृष्टि होगी समाज के दीनतम, हीनतम लोगों को साथ लेकर—किसी को बाद देकर नहीं--चलने से अर्थात् सबों को साथ लेकर हमें आगे बढ़ना पड़ेगा। कोई किसी का मालिक नहीं होगा, कोई किसी का दास या गुलाम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होगा, सब के साथ हम सब रहेंगे।

समाज के सभी लोगों को लेकर सभ्यता की सृष्टि होगी वह किस प्रकार होगी? रासेल कहते हैं कि "वर्त्तमान नागरिक सभ्यता में थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर जिस सभ्यता के निर्माण की चेष्टा की जा रही है, उसमें प्रकृत डिमाक्रेसी या गणतंत्र का स्थान नहीं है।" उसके मतानुसार यह नगर-सभ्यता ही वर्त्तमान समय में सभी समाज के पक्ष में घातक हो गयी है। उन्होंने कहा है:—

"Our civilisations are a nightmare a bad dream they grow meaner and meaner as they grow mor and more urbanised."

हमारी वर्त्तमान सभ्यता जैसे एक दुःस्वप्न हो। सभ्यता जितनी नगराभिमुखी हो रही है वह उतनी ही हीनतर होती जा रही है। इसलिये रासेल ने वर्त्तमान समय में ग्रामीण सभ्यता की प्रतिष्ठा को ही श्रेष्ठ बतलाया है। सिर्फ मजदूरों के पारिश्रमिक को बढ़ाकर, या काम करने के घंटे को कमा कर या लाभांश का किंचित् अंश देकर धनी और मजदूर के सम्बन्ध को प्रकृत रूप गणतंत्रात्मक नहीं बनाया जा सकता है। रासेल ने इसके लिये कहा है कि:—

"The creation of a rural civilisation is the greatest need of our times."

उनके मतानुसार वर्त्तमान सभ्यता को ग्रामोन्मुखी करने के लिये सर्वप्रथम ग्रामीण समाज की प्रतिष्ठा करनी होगी। ग्राम्य-समाज की पुनः प्रतिष्ठा किये बगैर ग्राम-सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। ग्राम्य-समाज को इस तरह बना लेना होगा, जिससे वहाँ पर ही लोगों को आध्यात्मिक, मानसिक और सामाजिक आशा-आकांक्षा परितृप्त हो सके। ग्रामों में वासकर लोगों का प्राण जैसे हाँफने न लगे। ग्रामों को इस प्रका[illegible] लेना होगा जिससे, उसे त्यागने में लोग[illegible] मालूम पड़े। रासेल ने कहा है:—

"The fight now is not to bring back [illegible] the land but to keep those who are on th[illegible] land contented, happy and prosperous. An[illegible] we must begin organising then to defend what is left to them, to take, industry b[illegible] industry, what was stolen from them."

शहरों से गाँव लौटाये जाँय या न लौटाये जा[illegible] पर जो ग्रामों में हैं, वे जैसे सुख से रहें, उन्हें शांति और निश्चितता मिल सके इसकी व्यवस्था करनी होगी। ग्रामों के जो उद्योग नष्ट हो गये हैं, उनकी पुनः प्रतिष्ठा की, ग्रामांचलों के क्रय-विक्रय, आमदनी रफतानी, उत्पादन-वितरण सब को समवाय नीति से परिचालित करना होगा।

इसके अंत में रासेल ने कहा है--जगत के बहुतांश में वाध्यतामूलक सामरिक शिक्षा की व्यवस्था है हम लोग अपने देश के असामरिक वाध्यता मूलक शिक्षा से उन्नत करें। मनुष्य को मारने की शिक्षा प्राप्त करने में यदि देश के युवक अपने चार-पाँच वर्षों के समय को लगा सकते हैं तो इस प्रकार देश को प्रकृत रूप में स्वाधीन करने में अपने चार पाँच वर्षों के समय को क्यों नहीं लगायेंगे? अन्यान्य राष्ट्र यदि प्राणियों के संहार के लिये युवकों का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं तो रास्ता, घाट, गृहादि निर्माण के लिये, नष्ट जमीन के उद्धार, खनिज पदार्थ और वन-वैभव के रास्ते के लिये, यानी सार्वजनिक हित के कार्य के लिये आयरलैंड के युवक अपने जीवन के कुछ वर्षों को देने में क्यों पीछे हट जायेंगे।

चिंतक आयरिस कवि रासेल की उपर्युक्त उक्तियों और महात्मा गाँधी के निर्माणात्मक विचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साम्य मालूम पड़ता है। भारत के लोगों के कल्याण की चेष्टा करना त्मा गांधी के जीवन का लक्ष्य था। , स्वच्छंदता और संतोष की भित्ति से य-भारत के असंख्य दरिद्र, दुर्गत और हाय नर-नारी को किस प्रकार आर्थिक स्वाधीनता दान की जाय—यही उनके जीवन के हर दिन की न्ता और हर रात का स्वप्न था। ग्रामीणों को अवर्णनीय दुःख-दुर्दशा से व्यक्ति होकर उनके पुनर्गठन के लिये उन्होंने कहा था--"कांग्रेस के अधिकाअधिक सदस्य यदि ग्रामीण होते और वे ग्रामों की सर्वांगीण उन्नति की चेष्टा करते, तो ग्राम्य-भारत की अवस्था आज इस प्रकार सोचनीय नहीं रहती।"

फ्रांसीसी चिंता नायक रोम्यां रोलां ने एक बार कहा था :—

Anyone, who has more than enough to live upon, is a monster, a human cancer preying upon the lives of humanity"

गांधी जी भी धनिकों के घोर विरोधी थे। इस विषय में उन्होंने कई बार सतर्कता पूर्वक अपना विचार प्रगट किया है कि "धनिक वर्त्तमान समय की शोषणवृत्ति की सहायता से यदि धन संचय करेंगे तो एक न एक दिन शोषितों के सर्वहारा दल क्षिप्त होकर उनके अस्तित्व को विपन्न कर देगें।" वास्तव में गांधी जी के किसान मजदूर या रामराज्य में धनी-गरीब का भेदाभेद एक दिन के लिये भी नहीं रहेगा।

"The contrast between the palaces of New Delhi and the miserable horels of the labouring class cannot last for one day in a free India in which the poor will enjoy the same power as the richest in the land."

Canstructive programme.

वास्तव में अपने देश के पुनर्निर्माण पर यदि ध्यान दिया जाय या विचार किया जाय तो सर्व प्रथम ग्रानोत्थान की ओर ही जाना पड़ेगा। उसे ही सब से पहले करना पड़ेगा। देश के विभाजन के पूर्व ४० करोड़ भारत के निवासियों में से ३४ करोड़ तो ७ लाख गाँवों में ही वास करते थे। अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजों की दुर्नीति से सारा गृहोद्योग नष्ट कर दिया गया जिससे सभी ग्राम वासियों के जीवन का आधार कृषि से उत्पादित अन्न भर ही रह गया। जन संख्या की वृद्धि एवं भूमि अनौचित्य पूर्ण बंटवारे के कारण कृषि कार्य क्रमशः खर्चीला होता गया। साथ ही कृषि-शिक्षा के अभाव में उपज भी कम होती गयी। अतः ३४ करोड़ आदमियों के ग्राम में बसने पर भी ग्राम धीरे-धीरे कमजोर और अभाव ग्रस्त होता गया। ग्राम वासियों को अन्न और वस्त्र का अभाव होने लगा। इसके अलावे ग्रामवासियों को दारिद्र्य की अंतिम सीमा तक पहुँचाने में धनी सेठों, व्यापारी एवं शासनाधिकारियों ने भी कुछ उठा नहीं रखा। फलस्वरूप शहरी क्षेत्रों में यंत्रों का प्रचार जोरों से हुआ। जिससे उद्योग और व्यवसाय कुछ पैसे वालों के हाथों में केंद्रीभूत हो गया। ऐसी अवस्था में जो परिणाम होना चाहिए, वही हुआ। अर्थ नैतिक वैषम्य से सर्व साधारण की दुर्गति का ठिकाना नहीं रहा।

महात्मा गांधी ने ऐसी अन्याय पूर्ण शोषण व्यवस्था की कड़ी आलोचना करते हुए कहा था कि "शिल्प और अर्थ दोनों ही मनुष्य के लिये आवश्यक हैं, पर मनुष्य शिल्प और अर्थ से बड़ा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसी लिये उन्होंने भारत जैसे घनी आवादी वाले देश में यंत्र शिल्प की अनुपयुक्तता को बतलाते हुए ग्राम-ग्राम में गृह-उद्योग को प्रचारित करने कहा था। भारत के सात लाख गावों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के ख्याल से ही उन्होंने खादी एवं गृह-उद्योग के प्रचार पर जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि कुछ ग्रामों में एक एक की यूनिट यानी इकाई बनाकर उन ग्रामों के उत्पादन-व्यापार आदि की सारी व्यवस्था का भार जनता द्वारा चुनी पंचायत के जिम्मे दे देना चाहिए। गृह उद्योग का प्रचार करना चाहिए। इससे बेकारी की समस्या दूर हो जायगी।"

हम लोग यदि अब भी ग्रामोन्नति की ओर ध्यान नहीं दें, ग्रामीणों के लिये सुख-शांति की चिंता न करें तो ग्राम ध्वंसस्तूप के रूप में आकर परिणत हो जायेंगे। फिर शहरों की रौनकता अन्न के बिना फीकी पड़ जायगी और बिजली के प्रकाश में सब को टुकर-टुकर ताकते रह जाना पड़ेगा।

यह सच है कि अंग्रेजी शासन के पूर्व भारत के किसानों की दशा इतनी सोचनीय नहीं थी। उस समय के समाज ने इन्हें स्वीकार कर लिया था, वे इन्हें अपना अंग मानते थे। वे समझते थे कि इन लोगों की दुरवस्था होने पर संपूर्ण देश के लोगों की दुरवस्था हो जायगी। किन्तु अंग्रेजी शासन काल में ग्रामीण मर्यादा, ग्रामीण सभ्यता ज[illegible] दी गयी और शहरी सभ्यता का प्रचार [illegible] नव शिक्षित का दिमाग बदल गया। उन ले[illegible] देशवासी का अर्थ शिक्षित समाज भर ही सम[illegible] स्वभावतः ग्रामीणों की ओर उपेक्षा का भाव बढ़ [illegible] गया। उस उपेक्षा भाव का कैसा भीषण परिणा[illegible] आज संपूर्ण देश के लोगों को भुगतना पड़ रहा है यह अब किसी से अज्ञात नहीं रह गया है।

अर्थनैतिक (आर्थिक) स्वाधीनता के बिना राजनैतिक स्वाधीनता आज व्यर्थ-सी सिद्ध हो रही है। आ[illegible] सभी शासनाधिकारारूढ़ व्यक्तियों को गालियां दे[illegible] और उन्हें अयोग्य प्रमाणित करने की बहुत सा[illegible] बातें करते हैं। अधिकारारूढ़ लोग भी परीशान [illegible] कि वे अन्न-वस्त्र जैसी आवश्यक समस्या का सम[illegible] धान नहीं कर पा रहे हैं। काफी चेष्टा के बावजू[illegible] कहने के लिये हम चाहे उन्हें गाली दे लें पर ज[illegible] तक शिक्षितों के विचार में परिवर्त्तन नहीं होता, ग्रामोन्नति की ओर ध्यान नहीं देते, गृह-उद्योग [illegible] प्रश्रय नहीं देते तब तक देश की ये दो जरू[illegible] समस्याएं रहेंगी ही। इनका हल काफी चेष्टाओं [illegible] बाद भी सम्भव नहीं हो सकेगा। अस्तु आज आर्थि[illegible] स्वाधीनता लाने की ओर ध्यान देना परमावश्यक [illegible] जो ग्राम या ग्रामीणों की उपेक्षा से नहीं आ सकत[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ग्रेजुएट

## श्री रामकृष्ण प्रसाद 'उन्मन'

मनमोहन को बी०ए० पास किये हुए आज पाँच वर्ष हो गये लेकिन अबतक कोई नौकरी नहीं मिली। पटने के सारे औफिस छान मारे उसने। लेकिन अभी तक कहीं ठिकाना नहीं लग सका। वह बहुत ही गरीब परिवार का था। घर में केवल वह और उसकी बुढ़िया माँ थी। पिता उसे बचपन में ही छोड़कर परलोक सिधार गये थे और माँ ने उसे पढ़ाने लिखाने में अपनी सारी संपत्ति खर्च कर दी थी और वह भी इसी आशा पर कि बेटा पढ़ लिख जायेगा तो कोई अच्छी नौकरी तो मिल ही जायगी। और फिर किसी बात की कमी नहीं रहेगी। परन्तु जब मनमोहन को कोई काम नहीं मिला तो वह अपने आप पर बहुत खीझ उठती—'व्यर्थ पढ़ाने लिखाने में इतना खर्च किया। कैसा जमाना है! पढ़े लिखे आदमी बेकार पड़े रहते हैं। अभी अपनी संपत्ति रहती तो कम से कम कोई कारोबार तो हो सकता था।' लेकिन इतना खीझने पर भी वह रोज भगवान से मनाती, भगवान को रोजी दो। इतने वर्षों की आशाएँ पूरी करो। मैं मिठाइयाँ चढ़ाऊँगी। सत्यनारायण की कथा सुनूँगी।, मनमोहन भी अपने जीवन से बहुत ऊब रहा था। कभी-कभी तो निराशाएँ उसे इतना अभिभूत कर देतीं कि वह सोच बैठता, आत्म हत्या कर लेगा लेकिन उसी क्षण उसे अपनी बुढ़िया माँ का ख्याल हो आता और उसका मन किसी अज्ञात वेदना से सिहर उठता। उसने बहुत सोचा कि वह क्या करे। इतना तो निश्चय था कि अन्त में वह इही निष्कर्ष पर पहुँचा कि कहीं और भाग जाय। लेकिन कहाँ जायगा? उसने सोचा- 'राँची बिहार की दूसरी राजधानी है। वहाँ बहुत से औफिस हैं। क्यों नहीं वहीं चले। शायद वहाँ उसको कोई काम मिल सके।'

और दूसरे ही दिन ४०) जेब में रख कर वह राँची रवाना हो गया।

लेकिन राँची आकर भी उसके साथ वही हुआ जो पटने में होता आया था। राँची आये पन्द्रह दिन हो गये और वह अब तक बेकार ही है। डी० सी० औफिस, ए० जी० औफिस, पी० डब्लू० डी० औफिस, सेल्स टैक्स औफिस आदि सभी औफिसों की खाक छान डाली उसने। और अन्त में निराशा। वही बेकारी। राँची आकर वह एक होटल में ठहरा हुआ था। और जैसे जैसे दिन बीतते जाते थे, उसके रुपयों में भी कमी आती जाती थी।

एक दिन, शाम को, दिनभर इधर-उधर घूमने के बाद थका हुआ मनमारे होटल की ऊपरी मंजिल के बैठके पर बैठा हुआ एक किताब पढ़ रहा था। होटल के ठीक सामने ही एक रिक्शा-गैरेज था जो ऊपर बैठक से साफ दिखाई देता था। उसने देखा, कितने रिक्शा चलाने वाले आ रहे हैं और अपने दिन भर की कमाई लेकर हँसी-खुशी घर जा रहे हैं। उसे रिक्शा चलाने वालों में न जाने क्या दिलचस्पी दिखाई दी। तीन-चार दिन बड़े गौर से वह देखता रहा कि रोज सवेरे वे रिक्शा ले-लेकर जाते हैं और शाम को रिक्शा जिम्मा देकर, अपने हिस्से का पैसा लेकर हँसते-बोलते हुए लौट जाते हैं। उसके मन में एक अजीब विचार आया कि वह भी क्यों नहीं, जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तक बेकार है, रिक्शा ही चलाये। कम से कम खाने भर तो कमा ही लेगा और अगर होटल का खर्च निकल आयेगा तो वह राँची में रहकर काम की तलाश कर सकता है। और फिर काम मिल जाने पर रिक्शा चलाना छोड़ देगा। लेकिन चलाना शुरू करने के पहले यह जान लेना जरूरी था कि इसकी आमदनी कितनी है? उसी समय उसने एक रिक्शेवाले से पूछा कि वह रोज कितना कमा लेता है।

'बाबू जी, एक रुपया मालिक को देकर करीब करीब रोज तीन रुपये कमा लेते हैं।' रिक्शे वाले ने कहा।

मरता क्या न करता? और, मनमोहन ने भी निश्चय कर किया कि वह रिक्शा चलायेगा। दूसरे दिन सवेरे ही वह रिक्शा मालिक के पास पहुँचा और अपना मंतव्य कह सुनाया। पहले तो रिक्शा-मालिक ने उसे सिर से पाँव तक देखा फिर कहा—'आप तो पढ़े-लिखे हुए बाबू जान पड़ते हैं। भला आप क्या रिक्शा चलाएँगे! यह काम तो गँवारों का है। मैं आप को नहीं रख सकता।' और मनमोहन को एक बार फिर पछाड़ खानी पड़ी। वह न जाने क्या-क्या सोच बैठा क्षण भर में ही—'या भगवान क्या रिक्शा खींचना भी भाग्य में नहीं लिखा है? लेकिन वह निराश नहीं हुआ। फिर ठीक दूसरे ही दिन फटे-चुटे कपड़े पहन कर एक दूसरे रिक्शा मालिक के पास गया और काम की दरख्वास्त की। और वह रख लिया गया।

इस तरह 'पढ़े फारसी बेचे तेल' वाली कहावत पर गोली मारकर उसने, ग्रेजुएट होते हुए, भी, रिक्शा चलाना शुरू किया। अब उसकी रुटीन थी, दिन भर फटे-चुटे कपड़े पहन क[illegible] चलाना और फिर जब वह शाम को अ[illegible] लेकर लौटता तो अच्छे कपड़े पहन, सज-ध[illegible] कभी लाब्रेयरी, कभी पार्क, कभी सिनेमा, क[illegible] कहीं और चाला जाता।

लेकिन जब भाग्य खराब रहता है तो सोना भी छूने से मिट्टी हो जाता है। उसके सौभाग्य या दुर्भाग्य से उन्हीं दिनों एक सरकारी सी० आई० डी० आकर उसी होटल में ठहरा हुआ था। सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर ने उसको देखा तो बहुत आशंकित होने लगा। उसे इस तरह रोज सवेरे फटे-चुटे कपड़े पहन कर बाहर जाते, दिन भर रिक्शा चलाते, और शाम को बहुत ही अच्छे-अच्छे कपड़े पहन कर घूमते तथा रात को किताबें पढ़ते देखकर इन्स्पेक्टर को शक हो आया कि वह कोई विदेशी गुप्तचर तो नहीं है जो यहां छिप-छिप कर कुछ खास बातें मालूम करने आया हो। इन्स्पेक्टर ने दूसरे ही दिन छिप-छिप कर उसके चार फोटो खींचे। एक, जब वह कपड़े बदल कर होटल से बाहर आ रहा था, दूसरा, जब वह रिक्शा चला रहा था, तीसरा, जब वह कपड़े बदल कर घूमने जा रहा था, और चौथा, जब किताबें पढ़ रहा था। इन्स्पेक्टर ने उसके बारे में पूरा मालूम कर लेना चाहा और होटल के मालिक से पूछा, वह कौन है, कहां से आया है, क्या करता है इत्यादि बहुत से प्रश्न। लेकिन होटल वाला उसको इतना ही बता सका,—"मैं नहीं जानता वह कौन है और कहां से आया। मैं, केवल इतना ही जानता हूँ कि वह होटल में मामूली खाना खाता है। दिन-भर जहां-तहां घूमता और रात को आकर सो जाता है। यह इन्स्पेक्टर की उत्सुकता शान्त होने के बजाय और बढ़ गई। दूसरे दिन वह खुद भेष बदल कर मनमोहन के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ार अपना परिचय एक मामूली क़ुर्क के रूप हुए उसके बारे में जानना चाहा और ोहन ने बेखटक उसको सब कुछ बतला दिया क वह क्या है, कहां से आया है और किस लिये रांची में ठहरा हुआ है। सब कुछ सुनकर इन्स्पेक्टर के मन में मनमोहन के प्रति आशंका के बदले सहानुभूति और करुणा उत्पन्न हो आई। उसे अपने देश पर ऐसा क्षोभ हो आया—जहां पढ़े-लिखे लोगों को भी रिक्शा खींचना पड़ता है। लेकिन उसके जाने के बाद मनमोहन को कुछ भी समझ में नहीं आया कि यह आदमी कौन था और किस लिये मेरे बारे में पूछ रहा था।

उसके तीसरे दिन अखबार में मोटे-मोटे अक्षरों में छपा हुआ था—"एक ग्रेजुएट रिक्शा चलाने वाला" और उसके साथ ही साथ चार चित्र भी छपे हुए थे और मनमोहन के बारे में पूरा बयान था। मनमोहन ने यह सब देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ पर वह कुछ भी नहीं समझ सका कि किसने ऐसा किया और क्यों छपवाया। वह अपने आप को बहुत असम्मानित और लज्जित महसूस कर रहा था।

उसी दिन मनमोहन को वह सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर अपने साथ पटने ले गया। और फिर दूसरे दिन अखबार में छपा हुआ था—"वह रिक्शा चलाने वाला ग्रेजुएट सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर नियुक्त किया गया।" और साथ ही साथ इन्स्पेक्टर की वर्दी पहने हुए मनमोहन की एक तसवीर छपी हुई थी।

अब मनमोहन पटने में सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर की हैसियत से काम कर रहा है। उसको यह नौकरी इसलिये दी गई क्योंकि उस इन्स्पेक्टर ने उसके बारे में सिफारिश की थी कि वह रिक्शा चलाकर, तकलीफ सहकर, मामूली खाना खाकर, जैसे-तैसे वातावरण में रहकर बड़ी-बड़ी बातों और भयंकर षड़यंत्रों का पता लगा सकता है।


## * मासिक धर्म रुकावट *

बन्द मासिक धर्म नारी संजीवनी दवा के सेवन से बिना किसी तकलीफ या खतरे के बन्द मासिक धर्म को सहज में खोल कर कर चालू करदेता है। इस औषधि के व्यवहार से कमर, पेडू, पेट का दर्द, सिर में चक्कर आना आदि को दूर कर शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। यह गर्भवती को न दी जानी चाहिए क्योंकि गर्भ गिर जायगा। मू० ५)। अधिक महीने वाले रोगी के लिए "स्पेशल पावर" की दवा मंगानी चाहिए। किमत ८॥)।

**किसी भी दवा को बेफायदा साबित करने पर मूल्य वापस।**

## * पुत्रदा (शर्तिया पुत्र उत्पन्न करने की दवा) *

साधारण स्त्रियों को "पुत्रदा" से सुपुत्र होवेगा हीं, परन्तु जो बाँझ अथवा जिन्हें अरसे से रजस्वला होना बन्द हो गया हो उनको भी शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। हजारों ने 'पुत्रदा' सेवन कर पुत्र पाया है। आज तक किसी को भी हताश नहीं होना पड़ा। यदि आप को पुत्र की इच्छा हो तो एकबार अवश्य परीक्षा कर देखें। मू० ५)।

**हिन्द कल्याण औषधालय न० ४०६**
**पो०—जसीडीह (संथाल परगना)**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

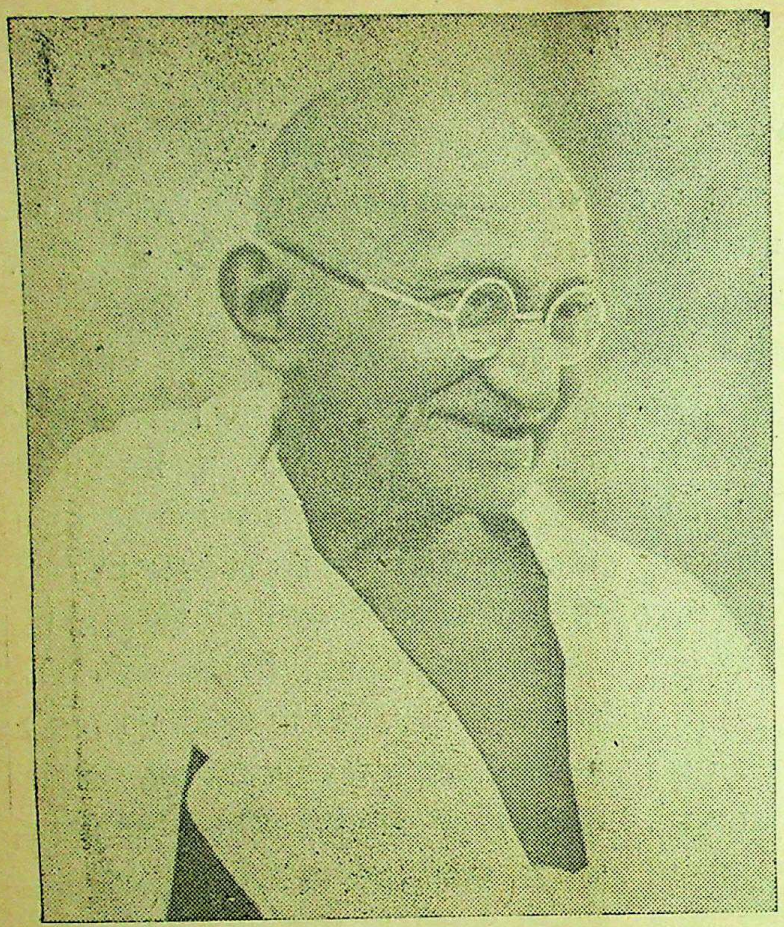

[ सम्पादक—'मण्डे प्रेस' के सौजन्य से ]

# आप की पु—

'ग्राम निर्माण' के मंत्रदाता

## अमर बापू

गत ३० जनवरी को देश भर में लोगों ने आप की पुण्य तिथि मनायी। १२ फरवरी को अनेक स्थानों में सर्वोदय मेले का आयोजन हुआ, जहाँ लोगों ने अपने हाथ के कते सूत की एक-एक गुण्डी दे कर बापू के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

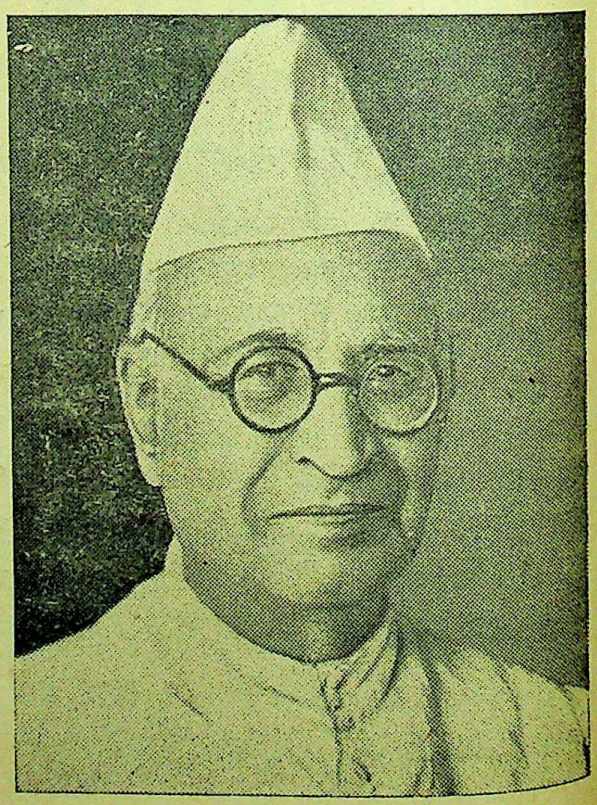

भारत के आधुनिक दधीचि

## स्वर्गीय श्री ठक्कर बापा

आप एक व्यक्ति नहीं एक संस्था और सेवा की साक्षात मूर्ति थे। हरिजनों, आदिम जातियों, एवं अन्य पीड़ितों के लिए आप मसीहा थे।

गत १९ जनवरी को आप की पुण्यतिथि मनायी गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# थियाँ मनायी गयीं

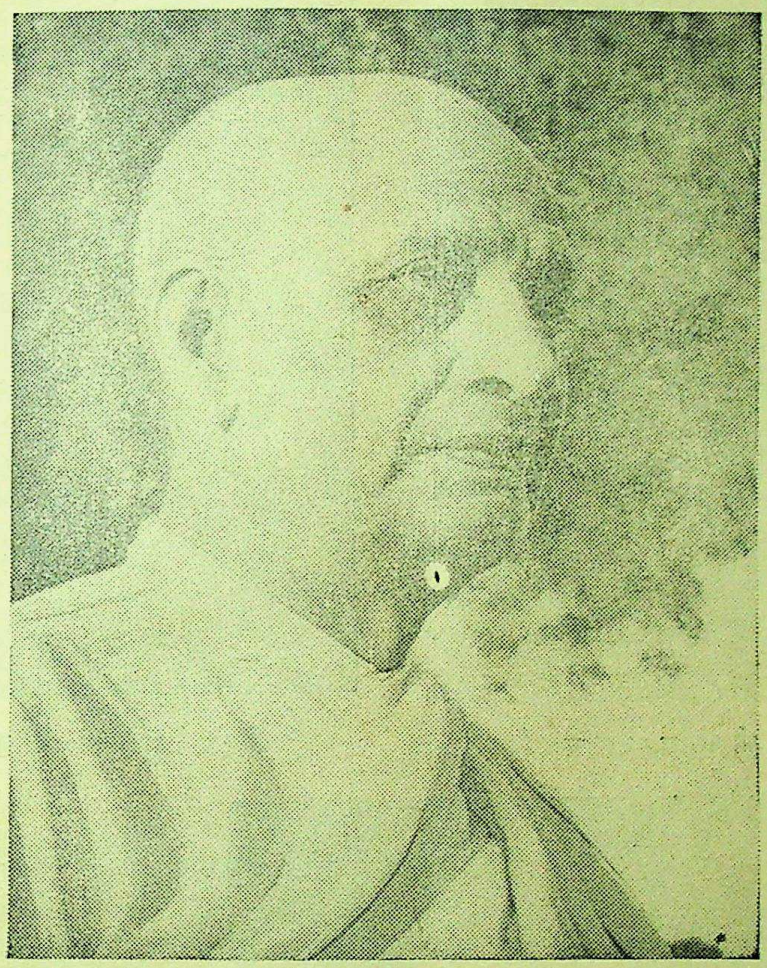

[ सम्पादक—'सण्डे प्रेस' के सौजन्य से ]

## भारत के लौहपुरुष

### स्व० सरदार वल्लभ भाई पटल

गत १७ दिसम्बर को आप की पुण्यतिथि मनायी गयी।

मौन रहकर ठोस काम करना आप की खास विशेषता थी।

आप के इस गुण को भारतीय नेता याद रख कर कार्य करें तो यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धञ्जलि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चुनाव संग्राम के हमारे तीन विजेता

बिहार विभूति श्री अनुग्रह नारायण सिंह

बिहार केशरी डा० श्री कृष्ण सिंह

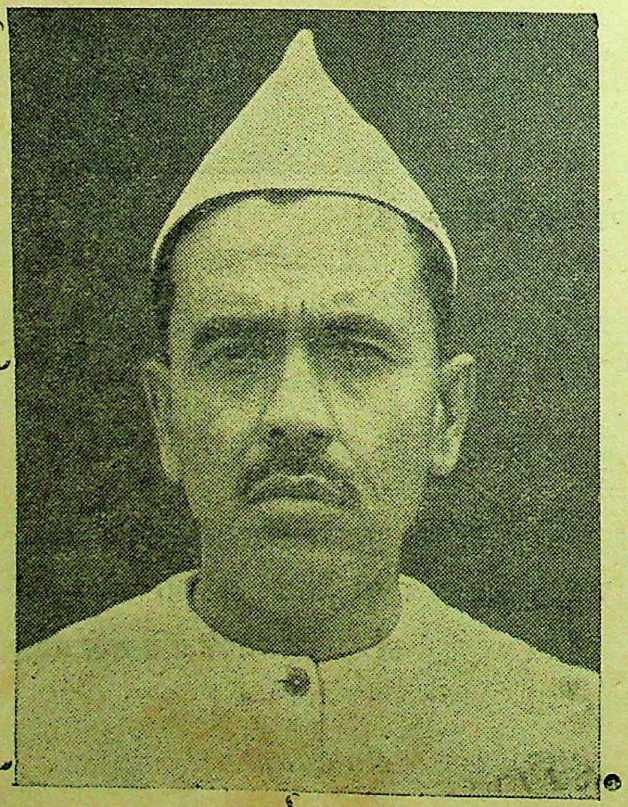

मा० श्री कृष्ण वल्लभ सहाय

आप के प्रयत्नों के ह
फलस्वरूप बिहार में जमीन्दार
प्रथा अन्तिम साँस ले रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ये हमारे लेखक हैं

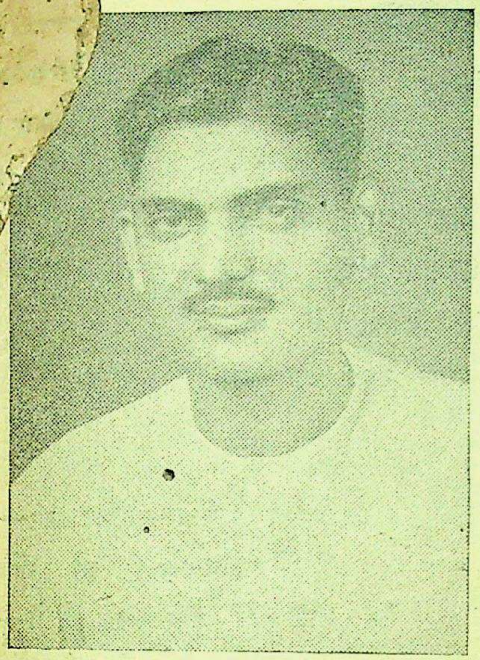

श्रीयुत सच्चिदानन्द सिंह
हिन्दी के कवि तथा लेखक

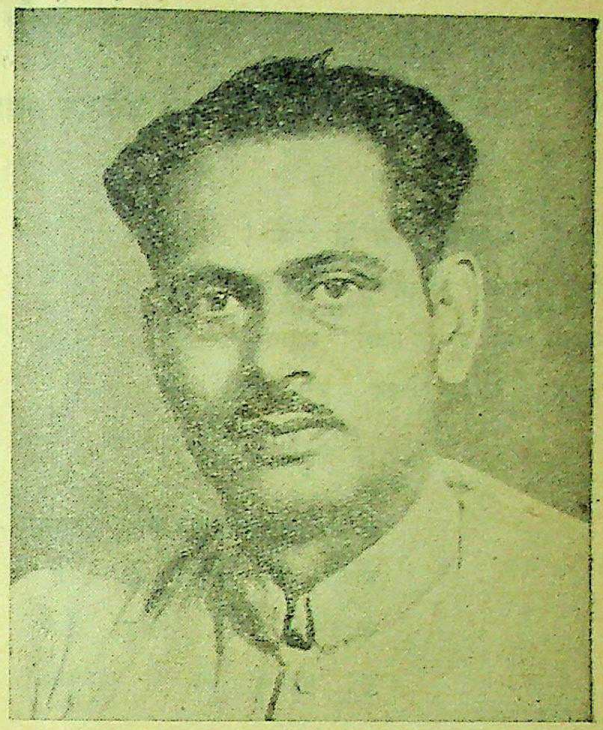

श्री राधा कृष्ण
हिन्दी संसार के विख्यात कहानीकार तथा
सफल हास्य लेखक

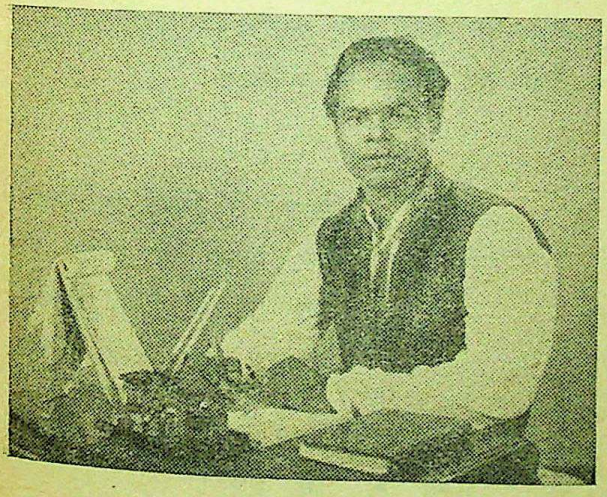

श्री आदित्य मित्र 'संताली'
'ग्रामनिर्माण' के सहायक संपादक

श्री मदनमोहन मिश्र बी० ए०(आनर्स)
उदीयमान लेखक तथा उत्साही कार्यकर्त्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रैन दिन रोने का वरदान

## श्री उमेश्वर प्रसाद 'मनमोहन'

१

अरे! अनजान स्वर्ग के लाल!
लिये जर्जर जीवन का भार।
बनाने भू को स्वर्ग महान
उतर आये लेकर रसधार॥

२

अरे! ओ! दीन क्षीण मजदूर
सींचते निज खूनों से हाय!-
जगत-वेलि को, निष्ठुर प्राण
हुए पल्लवित जो थे असहाय!

३

तड़पते हैं कोमल से प्राण-
पेट में ज्वाला रही धधक।
दीन जर्जर से लेकर काय-
ढके हो चिथड़ों से अबतक!

४

शिशिर, गर्मी, बरसात लगी-
घटा घन घोर उठी ऊपर।
काँपते, जलते तुम निरुपाय!
भींगते—चूता सारा घर।

५

त्याग की मूर्ति! दीन किसान
ले चल कंधों पर उस ओर-
चले जिस ओर ऋद्धि औ' सिद्धि,
मिलाते जग को ओर से छोर।

६

यदि मिट्टी तुम देते छू—
वही बनता सोना तत्काल।
दिये पूँजी पतियों में बांट—
नगीने खिले ताज पर लाल!

७

बहाकर सरिता शोणित की—
दिये जीवन-पौधों को सींच
उसी से फल सके हैं वे—
ज्ञान की डोरी क्यों ली खींच

८

अरे! अस्तित्व मिटा जाता—
हिन्द के दुर्बल दीन किसान!
बने धन हीन और असहाय—
भरा तुम में फिर भी अभिमान।

९

रहे कर रैन दिवस उप वास—
लिए अपना ही जीवन भार
बचा तन में केवल कंकाल—
झुलसता दीन दुःखी संसार

१०

अरे! भारत के दीन मजूर!
अरे! भारत के दीन किसान!
मिला है तुमको केवल हाय!
रैन दिन रोने का वरदान!

—••—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्मृति

श्री सुरेश झा बी० ए०

कवि

शोषण उत्पीड़ण औ जब जब
बढ़जाता है अत्याचार।
बतलाता इतिहास पुरातन
देव स्वयं आता साकार॥
असह वेदना करुणस्वर में
भारत की जब सुनी पुकार।
गिरि-कैलाश-शिखर तब डोला,
बाहन सब की सुन हुँकार॥
'बापू' का जब बजा बिगुल
तो शेष नाग फिर घबड़ाये।
महाक्रान्ति-भूडोल हुआ फिर
हम निरीह हिन्दी जागे॥
'करो' 'मरो' आदेश ग्रहण कर
पहने केसरिया बाना।
'अँगरेजों, भारत छोड़ो'
प्रण अपने मन हमने ठाना॥
माया ममता त्याग देश-हित
मा, तूने आशीष दिया।
मैं भी च. सहर्ष जंग में
शिरोधार्य आदेश किया॥
कर स्वतन्त्र अपने भारत को
हुए स भी हम सफलीभूत।
अन्तरिक्ष से उत्तर आया
धन्य, धन्य तू आज सपूत॥
किन्तु देख पथभ्रष्ट आज तू
मुझ से हो मुख मोड़ चली
शक्ति हमारी क्षीण हुई औ,
बगिया तेरी सूख चली॥
नष्ट हुआ धन धान्य हमारा,
बढ़ता जाता हाहाकार।
फिसल रहे हैं पाँव हमारे
हुआ विकट जीवन का भार॥
बने मदान्ध हो रहा शोषण
पोषण का अब नाम नहीं
हैं व्याकुल मजदूर कृषक, क्या
यह हालत है और कहीं?
यत्र तत्र सर्वत्र हिन्द में
आज कलह का छाया राज।
रूढी रही अधिक दिन अब तो
टूट पड़ेगा सिर का ताज॥
अन्तरिक्ष से जननी तू
एक बार फिर अपनाओ।
देकर निज आशीष आज
वात्सल्य-प्रेम फिर दर्शाओ॥
शोषण, कलह, कोलाहल औ
दुख दैन्य आदि सब मिट जायें।
दैविक, दैहिक, भौतिक तीनों
ताप आपसे हटजायें॥
भारत हो फिर देवलोक
यह चैन पुनः लहरा जाये।
सुख, समृद्धि शान्ति का सोता
घर घर में फिर बह जाये॥

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# खेत कोड़ने-जोतने वालों को ही डिप्लोमा मिले

## श्री जवाहर लाल नेहरू

भारत के सभी विश्वविद्यालय तथा कालेज छात्र-छात्राओं को तभी डिप्लोमा या डिग्री दें, जब ये कुछ समय तक खेत कोड़ें या हल चलावें। भारतीय कृषक अनुसंधान समिति के समावर्त्तन समारोह के भाषण का सारांश ।

खाद्य-उत्पादन की योजना केवल किसी दफ्तर के चारों कोने तक ही न रह जाय। जबतक वह खेतों में नहीं पहुंचेगी तबतक वह निष्फल होगी। भारत में एक मनोवृत्ति बन गई है कि शिक्षित जनता शारीरिक परिश्रम से घृणा करती है और इसे नीच काम समझती है। यह खतरनाक बात है, इससे देश का नुकशान होगा। केवल दफ्तर का काम करने में शान नहीं है। इसलिये मैं सभी विश्वविद्यालयों और कालेजों से सिफारिश करता हूँ कि छात्रों एवं छात्राओं को तबतक कोई डिग्री या डिप्लोमा न दिया जाय जबतक वे कुदाली लेकर जमीन न कोड़ें अथवा उसमें हल न चला लें। इसके लिये छः मास, एक वर्ष या उससे अधिक निश्चित किया जा सकता है। न केवल यह उनकी शारीरिक शक्ति की वृद्धि के लिये जरूरी है; बल्कि उनकी बुद्धि तेज करने के लिये भी। इससे यह विचार भी हट जायगा कि शारीरिक परिश्रम नीच काम है। वस्तुतः यह कार्य छात्रों की ट्रेनिंग का एक अनिवार्य भाग बनाया जाना चाहिए।

मुझे कुछ ऐसे भारतीय छात्रों के नाम याद हैं जो कृषि की ट्रेनिंग लेने अमेरिका गये थे। दो वर्ष पहिले जब मैं वहां गया था तो एक कृषि कालेज प्रिन्सिपल ने मुझसे कहा भारतीय छात्र शारीरिक परिश्रम करने में हि हैं। जब उन्हें गौ दुहने को कहा गया तो उन्ह इस पर अचरज प्रकट किया। ऐसा इस कार से हुआ चूँकि वे समझते हैं कि शारीरिक श्रम छोटा काम है और उन्हें केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना है। भारतीय दिमाग का ढांचा बदलना है। यहाँ मोटर रखने वाला एक शोफर चाहेगा और शोफर एक सफाई करने वाला चाहेगा, किन्तु मोटर इंजिनीयर इन दोनों में एक भी नहीं चाहेगा।

खाद्य के मामले में भारत के १९५१ में ही आत्म-निर्भर होने के प्रसंग में मुझे दुःख है कि सरकार अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर सकी। खाद्यान्न का आयात पाप है। कई स्थितियों में तो अनाज मंगाना जरूरी ही है किन्तु भारत स्थायी-रूप से इसके लिये अन्य देशों पर निर्भर नहीं कर सकता; क्योंकि इससे देश की स्वतंत्रता पर धक्का पहुंचेगा। युद्ध या अन्य अंतर्राष्ट्रीय उपद्रव के समय भी भारत को अन्न नहीं मिल सकेगा, उस हालत में क्या होगा! इसलिये खाद्य के उत्पादन को सबसे अधिक प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

इससे प्रकट है कि पैदावार बढ़ाने की कितनी बड़ी गुंजाइश है। कृषि वैज्ञानिकों के ऊपर इस देश की आत्मनिर्भर बनाने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गाँव की काया पलट

पं० देवनारायण मिश्र आयुर्वेदाचार्य

पिछले साल तो आपने देखा ही होगा कि आस पास के देहातों में तमाम हैजा का दौरा महीनों तक चलता रहा पर मेरी बस्ती काशी की तरह इस मृत्युभुवन से अलग ही रही। यहाँ किसी को अजीर्ण तक नहीं हुआ। बल्कि हमारे ग्राम के सेवासंघ ने बराबर देहात के अन्य गाँवों में जाकर सफाई और रोगियों की सेवा की, किन्तु इस संक्रामक रोग का प्रभाव हम लोगों पर कुछ भी न पड़ा। आयुर्वेद में लिखा है कि ये जनपद विध्वंसक अर्थात् महामारी बीमारियाँ अधर्म से हुआ करती हैं। यह अधर्म सर्व प्रथम ग्राम या जनपद के मान्य बड़े लोग करते हैं पश्चात् इनके अनुयायी साधारण जन। बाद सभी इसको परम्परा या धर्म समझ कर नित्य बरतने लग जाते हैं। जैसे-बाबू वर्ग के किसी व्यक्ति ने अपने घर के आस पास की गली और घर आदि की सफाई अपने आलस्य को कार्यव्यस्तता में और अज्ञानता को सभ्यता में छिपाकर नहीं की। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने इसका अनुकरण किया। पश्चात् सभी इसी तरह करने लगे। परिणाम यह हुआ कि हैजा, शीतला, प्लेग आदि महामारियों ने वहाँ अड्डा बना लिया। और, यही कारण है इन रोगों के असमय में आने और अधिक दिनों तक रहने क ।

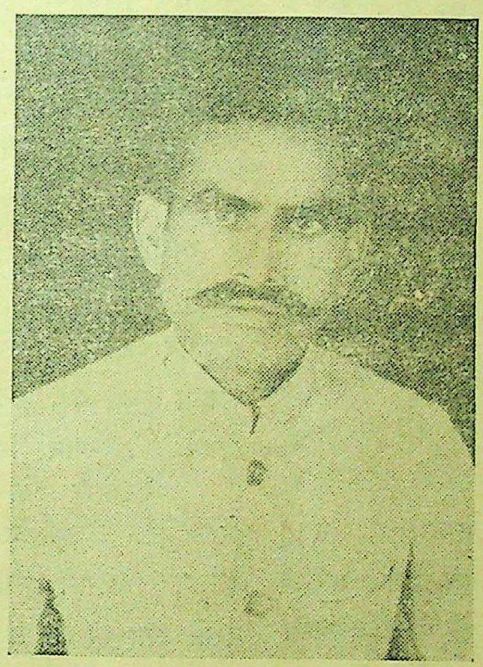

लेखक

इस लिये कहता हूं, लाला जी, कि इनारे के पास दतौन के चीरे नहीं फेंकने चाहिये। कम से कम इनारे से तीन गज के अन्दर थूकना, चीरे फेंकना, कपड़ा साफ करना और बर्तन माँजना नहीं चाहिये। अन्यथा, तृण - डण्टल जैसे यादवों के नाश के लिये बाण बने थे, ये हम लोगों के नाश के लिये रोग के कीटाणु बनेंगे। अपने साथ ही सभी ग्राम वासियों पर दया किजिये। बड़ी नम्रता से पञ्चम भगत ने लाला देवी सहाय से कहा।

"बस मेरा स्नान हो ही गया भगत जी, क्रोध को भीतर ही दबा कर लालाजी ने उत्तर दिया। पर अपनी धोती की गन्दगी इनारे में उछाल कर ही छोड़ा। लालाजी ने घर जाकर यह घटना अपने अनुयायियों से कह सुनायी। सभी ने बड़ी उछल-कूद की। किसी ने इनारे पर कूड़ डालने की प्रतिज्ञा की, तो किसी ने गलियों को गन्दा करने की। एक ने अपने-अपने बच्चों को पाठशाला जाने से रोकने का प्रस्ताव रखा। दूसरे ने इनारे में गन्दगी उछालने के लिये लालाजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पर ये सभी प्रस्ताव और प्रतिज्ञायें योंही रह गई। कार्यरूप में परिणत करने का किसी को साहस नहीं हुआ।

इधर भगतजी और लालाजी की बातचीत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोगों के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिससे मन ही मन लोगों ने प्रतिज्ञा की कि अबसे कहीं भी गन्दगी फैलने नहीं देंगे। भगतजी इस ग्राम की प्रारम्भिक पाठशाला के शिक्षक हैं और सेवा संघ के प्रधान। सेवासंघ ने न केवल इस ग्राम को बल्कि अपनी सेवा, सफाई और प्रार्थना के बल पर महामारी से ग्रसित कई अन्य ग्रामों को भी बचाया है। इसी लिये भगतजी को कोई सिद्ध, कोई योगी, कोई ओझा और कोई औलिया फकीर मानते हैं। पर गान्धी टोपी वालों से स्वाभाविक द्वेष रहने के कारण लालाजी ढोंगी, पतित, नीच आदि सहस्त्र नाम बनाकर उनकी शिकायत करते थे और उनके कामों में विघ्न डाला करते थे।

लाला जी पहले इस ग्राम के धनीमानी व्यक्ति थे। इनका नाम सुनते देहात थर्राता था। क्योंकि दरोगा जी के वे बड़े दोस्त थे। अतः इनको कोई भी अप्रसन्न करना नहीं चाहता था। इनकी थोड़ी भी अप्रसन्नता लोगों को सौ दौ सौ की चपत लगा ही देती थी। गरीबों के घर की तरकारियां तथा दूध, दही, घी मानों इनकी अपनी चीज थी। इसी कारण बेचारे गरीब लोग तरकारी बोना, मवेशी पालना धीरे धीरे छोड़ रहे थे। इसी बीच महात्मा जी ने निर्भयता का मन्त्र फूंका। लोगों के हृदय से दरोगा जी का डर जाता रहा। साथ ही लाला जी की चलती भी। अब लोग लाला जी से डरते नहीं, पर सम्मान वैसे ही करते हैं। लालाजी सफाई और सुधार की बातें सुन मन ही मन जला करते थे। क्योंकि सफाई-सुधार वालों ने ही इनकी चलती पर पानी फेर दिया था। पर करते क्या? गाँव के अधिकांश लोग सुधार पसन्द करते हैं। चिढ़ के कारण इन सुधारकों के विरुद्ध ही ये आचरण करने लगे। फल यह हुआ कि गन[illegible] अनियमितता के कारण इनका स्वास्थ्य दि[illegible] बिगड़ने लगा। आखीर अपने को संभाल नहीं [illegible] सख्त बीमार हो गये। इनके लोग शहर [illegible] अस्पताल से दवा ला ला कर इन्हें पिल[illegible] जा रहे थे। पर स्वास्थ्य-सुधार के लक्षण नहीं दी[illegible] रहे थे। गाँव वाले लाला जी से अन्तिम भेंट कर[illegible] जाते और लौटती असार संसार की निन्दा करते चले जाते।

इसी सिलसिले में एक दिन भगत जी भी दर्शन के लिये गये। दरवाजा पर जाते ही उन्होंने देखा कि एक बहुत बड़ी कूड़े की ढेर लगी है। यह इस लिये कि धन की कमी के कारण लाला के घर नौकर तो था नहीं, और अपने कूड़ा फेंकना सम्मान के विरुद्ध ही समझते थे। पत्नी बेचारी लाला जी के डर से एक पैर बाहर और एक पैर दरवाजे के भीतर ही रख कर जितनी दूर फेंकना संभव था, कूड़े को फेंक दिया करती थी या बच्चों को पैखाना फिरा दिया करती थी।

दरबाजे के भीतर जाने पर भगतजी ने देखा कि नाली साफ न रहने के कारण आंगन के एक चौथाई हिस्से में पानी जमा हो कर सड़ रहा है। इसमें कीड़े कुलबुला रहे हैं। कुछ दीवार पर भी चढ़ गये हैं। नजदीक ही एक बहुत पुराना कुआं है। बँधा तो खपड़ा से है अवश्य पर खपड़ा एक भी दुरुस्त नहीं है। कोई है एक चौथाई तो कोई है आधा, तीन चौथाई तो शायद ही कोई। बीच बीच में घास भी है। जमीन से कुएँ के मुँह की ऊँचाई नहीं के बराबर है। बगल में दो चार ईंट रखे हैं। जिसपर लोग स्नान करते हैं। कुएँ के सटे ही एक तरफ दतुअन के चीरों की ढेर पड़ी है। आंगन की दूसरी तरफ बच्चों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पड़ा है। उस पर मक्खियों का हो रहा है। आगे चलकर उस घर में गये लालाजी पड़े थे। लाला जी की सेवा में उनकी ड़ी लड़की अनुराधा थी। वह अपनी छोटी बहन ो सामने बैठा कर उसके माथे से ढील चुन रही थी और नख पर मारती जाती थी। जब लाला जी ने पानी मांगा तो उसी हाथ से उसने पिला दिया।

भगत जी ने सामने जाकर लाला जी को प्रणाम किया। प्रणाम के उत्तर में लाला जी फूट फूट कर रोने लगे और कहने लगे कि भगत जी, अब तो महायात्रा के लिये मैं एक पैर आगे बढ़ा चुका हूं। ये मेरे प्यारे बच्चे और बच्चियां अनाथ हो जायेंगी। या इनका भी भरोसा क्या? एक को प्लीहा बढ़ने के कारण छः महीना से ज्वर आरहा है। दूसरे को खाना हजम नहीं होता। अनुराधा की माँ को कै की बीमारी है। भोजन के बाद बराबर कै हो जाया करती है। यही एक बेचारी अनुराधा है जो मेरी सेवा हो रही है। यह भी प्रतिदिन सूखती जा रही है। न जाने क्यों दैव रुष्ट है? यह कहते कहते जोरों से खाँसने लगे। लाला जी कुछ स्थिर हुए तो भगत जी ने उनसे पूछा —"आज्ञा हो तो मैं सेवा करूं"।

'नहीं-नहीं, आपसे सेवा लेकर में अपनी जाति नहीं बिगाड़ूंगा' —लाला जी ने उत्तर दिया। क्यों कि लाला जी की धारणा थी कि यह भगत भङ्गियों की नाली, पैखाना साफ किया करता है। अतः भङ्गियों से भी नीच और अस्पृश्य है यह। भगत जी ने बड़ी शान्ति से समझाते हुए लाला जी से कहा —अभी से ही क्यों अपने जीवन से निराश होने लगे? मैं अपनी सेवा से आपको स्वस्थ करना चाहता हूं। मौका दीजिये। पर लाला जी मोम नहीं थे जो भगत जी के साधारण प्रयत्न से ही पिघल जाते। उन्होंने उसी अपमान जनक शब्दों में उत्तर दिया—नहीं-नहीं, अब जीवन की आशा करना व्यर्थ है। इस लोभ में पड़ कर परलोक बिगाड़ना नहीं चाहता मैं यद्यपि लाला जी ने बार बार इन्कार किया पर भगत जी पर निराश न हुए। सच्चे सेवकों को अपमान विचलित नहीं कर सकता। इसलिये भगत जी ने लाला जी से पुनः प्रार्थना की कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। केवल आपही को नहीं आपके सब परिवार को चन्द दिनों में चङ्गा कर दूंगा। आपने जो परलोक बिगाड़ने की बात कही, उस विषय में प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आपको पानी नहीं पिलाऊँगा। पर, पानी बनाकर अपने सामने पिलवाऊँगा। भोजन भी अपने सामने बनवाकर खिलाऊँगा। शेष सेवा तो मैं करूँगा। इसमें आपको कोई एतराज नहीं होना चाहिये। क्यों लाला जी? इस तरह भगत जी की प्रतिज्ञा और बच्चों को नीरोग देखने की इच्छा ने लाला जी को हठ से विचलित कर दिया। अतः लाला जी ने परास्त प्रतिवादी की तरह अपनी इच्छा भगत जी की इच्छा में अर्पित कर दी। और कहा जैसी-इच्छा आपकी भगत जी।

भगत जी आज्ञा पाते अपने सहयोगियों को बुलाकर नाली, आंगन, कूड़ा आदि सभी साफ करवाया। स्वयं गरम पानी में कपड़ा भींगाकर लाला जी के शरीर को पोंछा और कपड़े बिछावन आदि बदल दिये। घर गोबर से लीपा गया। तमाम जगह कपूर के घोल से सींचा और धूप जलाया। लाला जी के कपड़े को खौलते हुए पानी और सोडा में देकर साफ करवाया। ढहते हुए गन्दे कुएँ के जल को बन्द कर गाँव के बाहर के साफ सुथरे कुएँ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल पीने के लिये मंगवाया और काफी उबाल कर दिया जाने लगा। भोजन स्नान कर पर्याप्त पवित्रता से बनाने का आदेश था। फल यह हुआ कि एक सप्ताह बितते बितते ही लाला जी के स्वास्थ्य में काफी परिवर्तन दीखने लगा। जीवन की आशा हो गई। अभी तक केवल बकरी का दूध और उसी में उबाला हुआ दाख ही पथ्य था। पर आज आठवें दिन अधिक भूख लगने पर पुराने चावल का भात और मूंग की दाल भी दी गई। बच्चों के अपच की शिकायत और ज्वर को भी केवल कालमेघ के रस और घृतकुमारी एवं पपीता ने खतम कर दिया। अनुराधा की माँ उचित समय पर भोजन करने से कै की बीमारी से छुटकारा पा चुकी थी। इस तरह भगत जी की केवल पन्द्रह दिनों की सेवा से लाला जी और उनके परिवार के लोग स्वस्थ होने लगे। और सभी काम नियमित रूप से करने लगे।

प्रातः घर और देह की सफाई, सम्मिलित प्रार्थना और जलपान के बाद सेवाकार्य अनन्तर मध्याह्न के पूर्व भोजन कर अपना आवश्यक काम तथा सार्वजनिक कार्य करने का नियम सा बन गया।

अब लाला जी और इनके परिवार के ल— जी के अनन्य भक्त हो गये। इसलिये भगत ह कार्यों का अब कोई विरोध नहीं करता बल्कि उ से अधिक सहयोग मिलने लगा। भगत जी पहले आदर्श पाठशाला और ग्राम सेवासंघ चलाते थे पर अब लाला परिवार तथा कई भावुक व्यक्ति सहयोग से पाठशाला के साथ ही उन्होंने ग्रामकला-विद्यालय और सेवा संघ के साथ सेवाश्रम तथा क्रय विक्रय केन्द्र भी खोल दिया। सेवाश्रम को अनुराधा की मां, और क्रयविक्रय केन्द्र को लाल जी बड़ी लगन से चला रहे थे। अन्य व्यक्तियों पर शिक्षा विभाग के संचालन का भार देकर भगत जी स्वयं सेवा संघ का कार्य करने लगे। अब यह ग्राम ग्राम नहीं नगर है पर बम्बई और कलकत्ता जैसा नहीं जिसमें फुट पाथ पर भूख से तड़पते हुए को अन्न, दर्द से कराहते हुए को दवा नहीं मिलती। बल्कि सम्राट अशोक के समय का पाटलिपुत्र है। सब लोग मिल जुलकर सुख पूर्वक रहते हैं। इस तरह से भगत जी के प्रयत्न से न केवल लाला जी की प्रत्युत गाँव भर की कायापलट हो गई।

—:o:—

# घूसखोर पकड़ने का विचित्र तरीका

## दस्त के साथ सौ रु० का नोट निकला

नदिया जिला (बंगाल) के धान संग्रह विभाग के एक किरानी बाबू घूस लेने के कारण बड़े मनोरंजक ढंग से पकड़ लिये गये। कहा जाता है कि उस किरानी बाबू ने एक आदमी को धान और चावल बेचने का लाइसेन्स दिलवाने का आश्वासन देकर कई बार रुपये लिये। ऊपर के अधिकारियों को देनेके नामपर भी रुपये लिये। अचानक उक्त विभाग के इन्सपेक्टर साहब वहाँ आगये। उस आदमी ने उनसे जाकर शिकायत करदी कि कईबार उस किरानी के मार्फत रु० देनेपर भी अब तक उसे लाइसेन्स नहीं मिल सका है। इन्सपेक्टर साहब ने उस किरानी को बुलाया और पूछा कि तुम कई बार इससे ले चुके हो और आज भी लिया है, ऐसा क्यों? किरानी के इन्कार करने पर इन्सपेक्टर ने उसकी तलाशी ली। तलाशी में केवल दो रुपये का नोट निकला। इन्सपेक्टर को सन्देह हुआ। उसने उस किरानी को अस्पताल ले जाकर एक्सरे करवाया तो पता चला कि इसके पेट में नोट है जिसे तलाशी में पकड़ाने के डर से वह निगल गया था। डाक्टर ने उसे जुलाब देकर दस्त करवाया तो उसके पेट से १००) रु० का एक नोट निकला जिसे देखकर लोग दंग रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्री माथुर का 'नया पुजारी'

पं० रजनीकान्त तिवारी

श्री जे० सी० माथुर आई० सी० एस० बिहार सरकार के सचिव हैं। और शिक्षा विभाग संभालते हैं। कहना चाहिए, श्री माथुर बिहार स्टेट के वर्त्तमान और भविष्य के निर्माता हैं। आप केवल एक योग्य शासक ही नहीं, अपितु उच्च कोटि के साहित्यिक एवं लब्धप्रतिष्ठ हिन्दी के विद्वान भी हैं। पटने में आये दिन होने वाली साहित्यिक गोष्ठियों में आप के द्वारा भी साहित्यिक चर्चायें हुआ करती हैं। पड़ोसी प्रान्तों से आये हुए सुलेखक एवं चोटी के विद्वानों का स्वागत और उनके व्याख्यानों की सुन्दर समीक्षा आप के द्वारा हुआ करती है। राष्ट्र-भाषा परिषद के जन्म, उसके संचालन, उसके द्वारा होनेवाली इस प्रदेश की सेवा का सारा श्रेय श्री माथुर को ही प्राप्त है। आचार्य श्री शिवपूजन सहाय जी जैसे चोटी के साहित्यिक को आप की योग्यता ने ही आज योग्य आसन पर बैठाया है, और उनके द्वारा योग्य एवं स्वतंत्र देश के गौरव को बढ़ाने वाले कार्य का संपादन प्रारंभ करवाया है। आपके सुन्दर और मजे हुए लेख भी समय समय पर पत्र पत्रिकाओं में निकला करते हैं।

बिहार शिक्षक संघ के पूर्णियाँ से निकलने वाले मुखपत्र 'राष्ट्र निर्माता' में कुछ दिन पूर्व श्री माथुर लिखित 'नया पुजारी' शीर्षक लेख छपा था। इस लेख द्वारा श्री माथुर ने गांव के लाखों-लाख शिक्षकों का अपने ओजस्वी शब्दों द्वारा राष्ट्र निर्माण के लिए आह्वान किया था और लिखा था इस पुनर्निर्माण काल में शिक्षक समुदाय को ही आगे बढ़ना है और प्रत्येक गांव में उन्हें उस भद्दे रूप में नहीं रहना है, जिस रूप में वे अब तक रहते आये हैं, और केवल गांव के शुद्ध वायुमंडल को अपनी कुचेष्टाओं द्वारा दूषित करने की सरतोड़ चेष्टा करते आये हैं। वे लिखते हैं—'उन्हें तो पूर्वकाल के उन पुजारियों के समान अपने आप को बनाना है जिनके द्वारा गांव का सर्वतोमुखी कल्याण होता आया है। श्री माथुर ने उक्त लेख में बतलाया है कि शिक्षक यदि अपने आप को इस परिवर्त्तित युग में ठीक कर लेता है तो वह केवल बच्चों का ही नहीं वरन् उस गांव के सभी लोगों का हृदय सम्राट बन जाता है। और उसके द्वारा एक मात्र गांव का ही नहीं अपितु नवजात राष्ट्र का अपार कल्याण हो जाता है।'

विद्वान लेखक के इस लेख का विषय कितना गंभीर एवं पथ-प्रदर्शन का काम करने वाला है, किसी पढ़े लिखे व्यक्ति से छिपा नहीं है। श्री माथुर केवल एक मात्र लेखक ही होते तो हम उनकी मंजी लेखनी के सहारे होने वाले मंथर-गति से सुधारों की आशा में चुपचाप बैठे रहते और धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा करते होते कि "एक समय आयेगा जब इस ओजस्वी लेखनी का जन-समुदाय लोहा मानने लगेगा और समाज सुधार की इस परिधि में अपने आप को अवश्य डाल देगा।" पर हमारा परम सौभाग्य है कि श्री माथुर केवल लेखक या संपादक ही नहीं, जो एकान्त कमरे में बैठे तरह-तरह की सुनहली इमारतों का सांचा तैयार करते रहते हैं। ये तो इस प्रदेश के शासक भी हैं। जिनके शासन के अन्तर्गत लाखों-लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शिक्षक एवं हजारों-हजार निरीक्षक (इन्सपेक्टर) उनके इशारे पर काम कर रहे हैं। जब ऐसे विद्वान एवं सुलेखक शासक के विभाग की शासन-कड़ी इस तरह एकदम ढिली-ढाली हम देखते हैं तो देश के भाग्य को कोस कर ही रह जाना पड़ता है।

आज सारा राष्ट्र 'ग्राम-निर्माण' की चर्चा कर रहा है। कहना नहीं होगा, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का रामराज्य भी ग्राम के उत्थान पर ही अवलम्बित है। उस चर्चा एवं ग्रामोन्नति के कार्य में सर्वोच्च स्थान शिक्षा को ही दिया जा रहा है। उसमें तरह-तरह के सुधार की आशायें की जा रही हैं। और इधर शिक्षा विभाग के सरकारी कर्मचारी डिप्टी इंसपेक्टर, सब-इन्सपेक्टर और न जाने, किन-किन रूपों में ये गांव में तरह तरह के कुत्सित व्यापार चालू कर रहे हैं। उनके ऐसे कुत्सित व्यापार के सधे सधाये एजेन्ट हैं गांव के लाखों-लाख शिक्षक या यों कहिये श्री माथुर के "नये पुजारी।" ये सरकारी कर्मचारी उनकी (शिक्षकों की) नौकरी ले लेने का भय दिखलाते हैं और तरह-तरह की निम्नतर कोटि की घण्टे में लिखी जानेवाली मनमानी बेकाम की पुस्तकें गरीब ग्रामीणों के बच्चों में बिकवाते हैं। आज गांव के मूक निवासी इन तरह-तरह के बेकार पुस्तकों के भार से बेतरह दबे जा रहे हैं। वह जब पहले वर्ग में अपने बच्चे का नाम दर्ज कराने जाता है तब साथ में एक लम्बी छपी हुई पुस्तकों की सूची लाता है। वह सूची करीब करीब छे सात रुपयों की होती है। उसमें कुछ न कुछ ऐसा लिखा होता है जिससे लोग उन प्रलभों को सरकार से संन्धित समझें और अवश्य खरीदें।

यह देख ग्रामीण का उत्साह धीमा पड़ जाता है। उनके स्वप्न शिखर टूट जाते हैं और उस बच्चे को उसी छोटी अवस्था में बकरी चराने — वह पुनः भेज देता है। और, इस युग भारत के कर्णधार को पढ़ाई से वंचित कर देत यह दशा उस प्रदेश की है जहां का शासक उच्च को का साहित्यिक एवं उच्च कोटि का स्वप्नदर्शी है।

समय है। अभी भी सुधारने का समय है। लोग चाहते हैं ढिली सिली इन कड़ियों को कसा जाय। इन इन्सपेक्टर और सब-इन्सपेक्टरों की 'दुकानदारी मनोवृत्ति' को निर्दयता-पूर्वक कुचला जाय, अन्यथा यह कहानी रह जायगी कि श्री माथुर जैसे योग्य विद्वान के शासन काल में भी शिक्षा विभाग में इतना भ्रष्टाचार फैला कि स्वतंत्र भारत के बच्चे पढ़ने से सर्वथा वंचित रह गये। और इस तरह जो कुछ वर्षों में ही राष्ट्र निर्माण (ग्राम-निर्माण) का कार्य सम्पन्न होने वाला था, वह इस कुत्सित मनोवृत्ति के कारण यों ही पड़ा रह गया।

### सरकारी सूची

क्लास १

(१) स्वतंत्र भारत साहित्य II—।।)

(२) नवीन गणित II — ।)

कुल जोड़ ।।।)

### सब इन्स्पेक्टरों की सूची

क्लास १

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ स्वतंत्र भारत साहित्य | ।।) | ७ ड्राइंग बुक | ।) |
| २ शिशु गणित | ।)।। | ८ संक्षिप्त इतिहास | ।=) |
| ३ शिशु रचना | =) | ९ कताई लेखा | ।।) |
| ४ वृहत मानसांक गणित | ।।) | १० छात्र विवरण | -)।। |
| ५ नवीन पत्र बोध | ।=) | ११ छात्र स्वास्थ्य | -)।। |
| ६ भूगोल | ।-) | १२ मौसमी चार्ट | =) |
| | | १३ डायरी के पन्ने | =) |

कुल जोड़ ३।।।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बौद्ध भिक्षुओं की तपोभूमि तंगुआं की गुफाएँ

सरदार के० एम० पणिक्कर

तंगुआं गुफायें चीन की गोबी मरुभूमि के बीच में हैं। यह स्थान संसार के अत्यंत दुर्गम स्थानों में से है। मरुभूमि के बीच में एक पर्वत श्रेणी, जिसमें लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष पहले बौद्ध भिक्षुओं ने वैराग्य तथा तपस्या का जीवन बिताने के लिये गुफायें बनायी थीं। उन गुफाओं में उन्होंने इतने सुन्दर भित्ति चित्र बनाये कि संसार में उनकी तुलना केवल अजंता तथा बाघ के चित्रों से ही की जा सकती है।

जिस स्थान पर गुफायें बनी हैं वह चारों ओर से पर्वतों से घिरा हुआ है और बीच में एक सुन्दर छोटी सी घाटी है। समीप ही छोटा सा झरना शांत स्वभाव से बहता हुआ दूर मरुभूमि में लुप्त हो जाता है। इस स्थान पर लगभग एक हजार वर्ष तक बौद्ध भिक्षु भक्ति तथा तपश्चर्या का जीवन व्यतीत करते रहे, किन्तु १४ वीं शती के लगभग मध्य काल में वे लोग यहां से चले गये और धीरे-धीरे लोग इस स्थान को भूल गये।

बीसवीं शताब्दी में पुनः इसकी खोज से संसार में एक हलचल सी मच गई। यद्यपि १९ वीं शताब्दी में भी इक्के दुक्के विदेशी वहाँ पहुंचे किन्तु बीसवीं शताब्दी में सर आरेल स्टीन के वहाँ पहुंचने पर संसार को यह ज्ञात हुआ कि वहाँ की एक गुफा में चित्रों तथा हस्तलिपियों का एक महान संग्रहालय छिपा हुआ है। सर स्टीन ने जैसे तैसे करके वहाँ के एक पुजारी को मनाकर और ५००) रु० की छोटी सी रकम देकर वहाँ से अधिक हस्तलिपियाँ प्राप्त कर लीं। इसके बाद फरांसीसी विद्वान पीलियट ने वहाँ की खूब छानबीन की और महत्व की सभी वस्तुएँ अपने साथ ले गये। जब यह ज्ञात हुआ कि लोग वहाँ से पुरानी पुस्तकों का अतुल कोष उठाकर विदेशों के पुस्तकालयों तथा अजायबघरों में ले गये हैं तो चीनी जनता में विक्षोभ की लहर दौड़ गयी और साथ ही वहाँ के विद्वानों तथा शिक्षाविदों में इन गुफाओं के प्रति रुचि पैदा हुई। बड़े बड़े कलाकारों के संरक्षण में वहाँ एक संस्था स्थापित की गयी और उन गुफाओं से कुछ भी बहुमूल्य पदार्थ न ले जाने देने के लिये कानून पास किये गये। नये चीन के अधिकारियों ने यह जान लिया कि इन गुफाओं में अतीत की चीनी कला का विशाल कोष छिपा हुआ है। अतएव इसकी ओर उन्होंने विशेष ध्यान दिया।

१९५१ में पीकिंग में विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें इन गुफाओं में बने चित्रों की प्रतिलिपियों के संकलन प्रदर्शित किये गये। इस प्रकार लगभग सात शताब्दी के बाद तंगुआं की गुफाएँ कला के महान पुनरुत्थान का एक केन्द्र बन गयी है।

तंगुआं गुफाओं की संख्या ४६० से कम नहीं है। इनमें से कुछ बहुत बड़ी तथा कुछ छोटी हैं। ये गुफायें मूर्तियों तथा चित्रों से सुरक्षित हैं। चट्टानें काट कर गुफायें बनाने की प्रणाली, गुफाओं में बने चित्रों के कथानक तथा अन्य बहुत सी बातों से स्पष्ट होता है कि इन सब पर भारतीय प्रभाव बहुत अधिक है। चित्रकला तथा मूर्तिकला तो भारतीय कला से बहुत मिलती जुलती है कि तंगुआं की ये गुफायें अजंता तथा उनकी समसामयिक अन्य गुफाओं से कम से कम दो सौ वर्ष बाद बनी।

तंग चित्रकारों ने लोगों के जो चित्र बनाये हैं वे भारतीयों तथा चीनियों के मिले जुले चित्र जान पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त उन चित्रों के कथानक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुद्ध के बलिदानों तक ही सीमित नहीं हैं वरन् उनमें बुद्ध तथा ब्राह्मणों का मतभेद भी व्यक्त किया गया है। एक कथानक यह है कि एक राजकुमार ने बुद्ध को शाही छतरी भेंट की जिसको ब्राह्मण मतावलम्बी राजा ने वापस लेने का यत्न किया। इस पर वह राजकुमार, उसकी पत्नी, बच्चे तथा नौकर चाकर भिक्षु बन गये। यह कथा बहुत सी गुफाओं में चित्रित की गयी है। ज्ञात होता है कि ह्यूनसांग के भारत से वापस चीन जाने पर चीनी लोगों के मानस में भारत के विषय में यह भावना बन गयी कि भारत एक पवित्र देश है। अतएव, उन्होंने पवित्र देश (भारत) के काल्पनिक दृश्यों के चित्र बनाये। तीन बड़ी बड़ी गुफाओं में परिनिर्वाण के बाद बुद्ध की विशाल मूर्तियां बनी हुई हैं और भक्त लोग पास में शोकमुद्रा में बैठे हैं। इन मूर्तियों के निर्माण में तंग कलाकारों की उत्कृष्ट कला का आभास मिलता है। बैठी हुई मुद्रा में गौतम बुद्ध की दो और विशाल मूर्तियां वहां पर हैं, जिनमें से एक तो ६० मीटर ऊँची है। छोटी मूर्ति २० मीटर ऊँची है और बहुत सुंदर है। इस विशाल गुफा की दीवारों पर असंख्य रूप से सुन्दर चित्र बने हुए हैं। तंग गुफाओं में चित्रकला तथा मूर्ति-निर्माण कला के अत्यन्त उत्कृष्ट नमूने मिलते है।

बाद में बनी तंग गुफाओं के चित्रों आदि की कला अपेक्षाकृत घटिया है। इनमें बौद्ध धर्म की पवित्रता तथा अध्यात्मिकता के भाव उतने स्पष्ट रूप से नहीं झलकते। ज्ञात होता है कि समय के साथ साथ बौद्ध आदर्श एवं मान्यताओं का प्रभाव धीरे धीरे कम होता गया यह बाद के चित्रों तथा मूर्तियों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

तंगुआं क्षेत्र जब 'साओ' के तुर्की परिवार के अधीन चला गया तो उनके शासक ने दे[illegible] गुफायें खोली और गौतम बुद्ध के जीवन संबंध[illegible] सुन्दर चित्रों से उनको सुसज्जित किया। उस [illegible] के कलाकारों ने नये चित्र तथा मूर्तियां बनाने [illegible] अतिरिक्त पुराने चित्रों को फिर से ताजा कर दिया।

इसके बाद मंगोल खानदान के समय में तंगुआं के वातावरण में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। तंत्र विद्या में विश्वास होने के कारण उस समय के कलाकारों ने मैथुन-क्रियाओं के चित्र बनाये। कलात्मक दृष्टिकोण से ये भी सुन्दर चित्र हैं।

तंगुआं गुफाओं में बौद्ध विचारों को व्यक्त करने वाले चित्रों का आधिक्य है किन्तु इनके साथ ही साथ वहाँ की बहुत सी गुफाओं में साधारण दिनचर्या के दृश्यों को भी चित्रित किया गया है। नृत्य, गायन तथा अन्य आमोद प्रमोद के चित्र भी वहां मिलते हैं। इस प्रकार इन गुफाओं में बने चित्र तथा मूर्तियाँ विभिन्न मतावलम्बियों की कला का दिग्दर्शन कराती हैं। इन गुफाओं को निश्चय ही एशिया का एक महान कला भण्डार कहा जा सकता है।

अब, सब से आवश्यक बात यह है कि भारत तथा चीन, दोनों देशों में भित्ति चित्रों के संरक्षण में लगे लोगों को एक दूसरे के निकट सम्पर्क में पूर्ण सहयोग से काम करना चाहिये। यह भी आवश्यक है कि अजंता, बाघ तथा तंगुआं की गुफाओं की कला का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय। चीनी सांस्कृतिक शिष्ट मंडल के सदस्य के रूप में तंगुआं संस्था के निर्देशक डा० चांग के भारत आगमन से संभवतः इस कार्य का श्री गणेश होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दहेज

## श्री जटाधारी मिश्र

न घर में शान्ति और न बाहर ही। घर के अन्दर दम रखते रवि बाबू का चिंतित मन किसी निश्चय को ढूँढ़ने लगा। भोजन की इच्छा थी पर वेला की प्रेरणा तथा आभाके स्नेह ने बरबश उन्हें थाली पर बैठा दिया। किसी तरह आत्म रक्षा के लिए थोड़ा भोजन कर लिया। फिर बिछावन पर लेटे तो, लेकिन नींद कहाँ? उसी उधेरबुन में लगे थे। नींद तो आज तीन साल से अपनी स्थिरता खोचुकी थी। केवल एक ही समस्या से सारे परिवार में सुख का अभाव हो गया था। जहाँ कहीं भी हों, रवि बाबू को एक ही चिन्ता सवार रहती थी की आभा की शादी कैसे सम्पन्न हो। याद आते ही पृथ्वी थाम लेना पड़ता था।

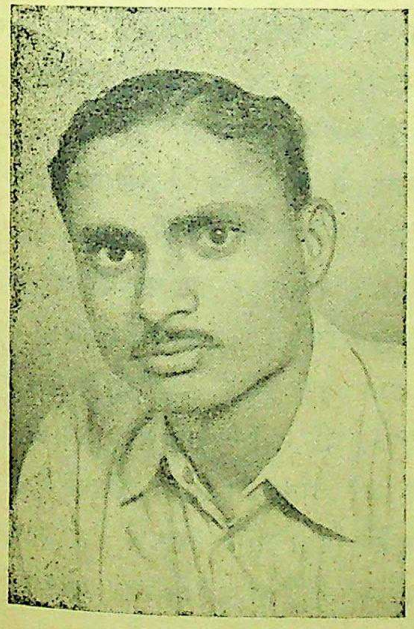

लेखक

एक दिन इसी चिन्ता में लीन थे कि उनके एक परम स्नेही आ धमके। क्लान्त उदासीन देख उन्हों ने पूछा, भाई! तुम्हारी शकल ऐसी क्यों दीख रही है? आकृति से भान होता है कि बहुत बड़ी विपत्ति में पड़े हो। बात क्या है? कुछ मैं भी तो सुनूँ! इच्छा न रहने पर भी वे कहने को विवश थे। उन्होंने कहा—भाई! परिशानी सिर्फ यही है कि आभा की शादी कहीं ठहरा नहीं पा रहा हूँ। सैकड़ों गांवों को छान डाला पर अभी तक पूर्ण रूपेण बात पक्की कहीं नहीं हुई। आज बीस दिनों के बाद घर का मुँह देख सका हूँ। अन्य दूसरे-तीसरे गाँवों में केवल सूर्यपुरा वाला ही लड़का मुझे पसन्द है। यह बाबू कमला प्रसाद का लड़का है, इसी साल तो प्रयाग से एम० ए० पास किया है। देखने में सुन्दर और स्वस्थ है। रूप के साथ-साथ गुण भी है। इन बातों से मैं आकृष्ट हूँ किन्तु उनकी माँग सुनते ही मेरे पाँव उखड़ गये। वे चाहते हैं कि सम्पूर्ण पढ़ाई का खर्च मुझसे ही वसूल कर लें। उनके बड़े लड़के राघव बाबू को भी दहेज के रूप में कोई कम रकम न मिली थी, लेकिन मेरे सामने अब प्रश्न है कि १५०००) रूपये आवेंगे कहाँ से?

श्याम बाबू ने वे खटके कहा—यार! आज तक तू बुद्धू के बुद्धू ही रहे! सुनो, जिस मार्ग का अनुसरण संसार कर रहा है, उसी पथ को तुझे भी अपनाना चाहिए। एक उपाय है। अगर इसे काम में लाओ तो साँप भी मर जाय और लाठी भी नहीं टूटे।

रवि बाबू—बताओ भी तो सही, वह कौन सा उपाय है?

श्याम—तुमने यदि मेरी बात मान ली तो बेड़ा पार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रवि—सुनूं तो सही।

श्याम—कमला बाबू को ठगना तो बायें हाथ का खेल है। इनसे भी आले-अ.ले लोगों के साथ अपना उल्लू सीधा कर चुका हूँ। सिर्फ पन्द्रह हजार रुपये देने का वाद। करलो। विवाह के समय सारी रकम चुका दी जायेगी, इस भाँति तय कर लेने पर अपनी विजय है।

रवि—भाई! सरासर झूठ मैं कभी नहीं बोल सकता।

श्याम ने खीझ कर कहा—झूठ सच नहीं बोलोगे तो और खूब घूमो।

'और घूमो' ने हृदय को वेध डाला। विवशता इनके समक्ष मुंह बाये खड़ी थी, स्वीकृति देनी पड़ी। मानने के लिए तैयार हूँ पर यह चक्र रचा कैसे जायेगा?

इस फिक्र के लिए आप क्यों परिशान हैं? मैं जो हूं—श्याम ने कहा।

सूर्यपुरा पहुंच कर श्याम ने रवि बाबू की इतनी लम्बी-चौड़ी प्रशंसा कर दी कि मुग्ध होकर बात पक्की कर ली गई। वहां से श्याम उछलते-कूदते लखनऊ आ गये। अपने जीवन में ऐसे अनेक काम कर चुके थे आप घर के रईश सम्पन्न या कुलीन हों, ऐसी बात न थी। हां चलता पुर्जा अव्वल दर्जे के अवश्य थे। इसी के बल पर आपका गुजर चल रहा था।

बारात आ गई बड़ी शान शौकत के साथ। बाजे-गाजे, हाथी, घोड़े, नौकर-चाकर तथा बरातियों का तो ठिकाना ही नहीं था। किन्तु, रविबाबू के प्रबन्ध से सभी कृतज्ञ थे। एक-एक व्यक्ति के लिए उच्च श्रेणी की व्यवस्था देख कर सभी चकित थे।

पर अब इधर गहरी उदासी छायी हुई थी। आखिर १५०००) रुपये कहां से जुटाये जांय? जितने ऋण लिये गये थे। वे सब स्वागत में ही समाप्त हो गये। ऋण मिलना भी असंभव है। कोई नाम ले तब न? अगर रुपये नहीं दिये आभा को जिन्दगी भर उपेक्षा और उलाहना पड़ेगा। चिन्ता ने रवि बाबू की बुद्धि को चक्कर डाल दिया।

आभा ससुराल पहुंची। विपिन की मां और उसके पिता तो आभा को फूटी आँखों भी देख नहीं पाते थे। उसे हर प्रकार से दुखित करके उसके बाप से वे लोग बदला चुकाना चाहते थे। हां, एक विपिन था जो उसे मानता था किन्तु परिवार में वह छोटा था। लोगों की नजर बचाकर जितना वह कर सकता था, करता था।

आभा सोचती—जीवन में क्या धनही सब कुछ है? मनुष्यता और भलमनसाहत का मोल कुछ भी नहीं! हाय रे समाज! तू धन का इतना भूखा है?

पिता के वृद्ध होने की वजह से जमींदारी की देख-रेख राघव बाबू कर रहे थे। कमला बाबू का स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिरता ही जा रहा था। खांसी-बुखार ने तो खास तौर से उन्हें धर दबाया था। पेचाने की बीमारी भी उनका पीछा नहीं छोड़ रही थी। रात-दिन खाट पर पड़े-पड़े दिन काट रहे थे। घर वाले उन से तंग आकर उनकी बातों पर जरा भी कान नहीं देते। राघव तो बीमार पड़ने के बाद से दर्शन भी नहीं दे रहा था। उसकी कानपुरी श्री मती जो तो अलग से ही झीड़क देती—'क्या इसी लिए मेरे पिता जी ने आपके घर ब्याहा है! विपिन की माँ तो सेवा कर ही रही थी पर बुढ़ापे के कारण अधिक करने में असमर्थ थी।

बेचारी आभा विपिन के साथ सेवा सुश्रूषा में निरत रहने लगी। कोई भी काम ऐसा नहीं होता जो स्वयं न करती। उनकी सेवा में खाना-पीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती। परिचर्या के द्वारा बीमारी को में तो सफलता पायी किन्तु काल को में असमर्थ रही।

मायामय संसार से विदा होते समय कमला बू के कण्ठ से निकल पड़ा —'पुत्री आभा ! आज तक तुझे मैंने नहीं पहचाना, पहचानता भी क्यों, सम्पत्ति का भूत जो मेरे उपर सवार था ! मनुष्यता और सम्पति ने बहुत अन्तर है। एक जगह दोनों चीजें नहीं मिल सकतीं ? तुझे मैंने बहुत दुःख दिया है। पुत्री आभा, तुझसे कभी भी उऋण नहीं हो सकता। तेरी आकांक्षायें मेरी दुष्टता से कभी भी न पनप सकीं। तेरे उपकार न जाने कितने हैं।

'--बेटी एक बार मुझ अधम पिता को क्षमा कर दे। पुत्री ! आभा, क्षमा कर दे, तू देवी हो, तुझ से..... क्षमा न मिलने पर स्वर्ग में भी मुझे शान्ति न मिल सकेगी ऐसा मुझे लगता है।

विपिन, देवी आभा की पूजा से ही सुखी हो स.....को .... गे। —

# व्यथा

## श्री कुमार शर्मा 'कवि कहार'

तब तुम्हारी — याद आई !

प्रज्वलित विरहाग्नि से,
मेरा हृदय जब जल रहा था !
और मैं उसकी व्यथा वश,
हाथ केवल मल रहा था !!
आंख में सजनी तुम्हारी जब उधर तसवीर आई !
तब तुम्हारी — याद आई !!

घिर रही थीं घोर नभ में—
घूम जब काली घटायें !
बादलों की गर्जना,
अथवा श्रवण से लौट जायें !
उपवनों में कूक जब, कोयल विरह के गीत गाई !
तब तुन्हारी — याद आई !!

तुम अकेली, सोचता था,
हो, तथा मैं भी अकेला !
गोद में निस्तब्ध रजनी
के लिये अगणित झमेला !!
नीद-या- आकुल दृगों को, जब-न-किञ्चितमात्र भाई !
तब तुम्हारी — याद आई

जोड़ युगकर कल्पना के
सिन्धु में गोता लगाता !
भीख भी जब मांग कर —
प्यारी ! न इच्छित दान पाता !
स्वप्न में, अथवा जहाँ जब,—प्रेम की आशा दिखाई !
तब तुम्हारी — याद आई !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

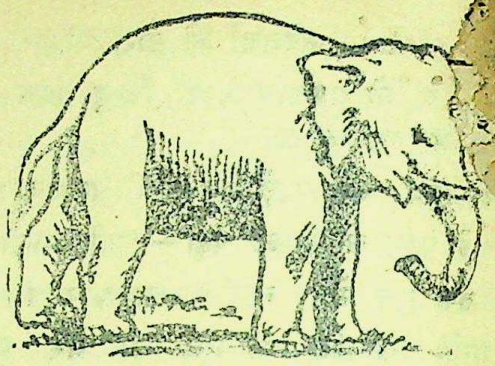

# हाथी कैसे पकड़े जाते हैं

सुश्री शान्तिलता

साबूराम नामक एक बूढ़ा महावत था। शहर-वालों ने रामलीला के जलूस के लिये उसे बुलाया था। रामलीला से एक दिन पहले वह अपने प्यारे हाथी मोती को लेकर, इलाहाबाद पहुंच गया था। उसके पहुँचते ही शहर के बच्चों ने उसे घेर लिया।

साबू ने बच्चों को बताया कि हाथी पकड़ने के कई उपाय हैं। इन उपायों में से एक तो यह है कि जंगल में किसी ऐसे स्थान को, जहां पहाड़ के एक तरफ नदी होती है, चुना जाता है। हाथी पकड़ने वाले जब इस काम में निपुण हो जाते हैं, वह अपने साथ थोड़े से पालतू हाथी भी ले चलते हैं। और वायु के अनुकूल होने पर ये आदमी तीन तीन मील दूर से ही जंगली हाथियों के आने का पता, उनकी गंध से ही लगा लेते हैं। और इसी के अनुसार प्रस्तुत हो जाते हैं। नाना प्रकार के शब्द करके और एक साथ चिल्ला कर यही प्रयत्न करते हैं कि पहाड़ के ऊपर सब हाथी एकत्र हो जायें और फिर पानी तो हाथियों को पसन्द है ही। दूसरी ओर नदी का पानी देख कर यह स्वाभाविक है कि नदी में वे सब उतर जाते हैं। और इसी तरह पकड़े जाते हैं।

दूसरा उपाय, जहां पहाड़ अथवा नदी न भी हो, वहां भी लग सकता है। लकड़ियों के खंभों तथा रस्सियों द्वारा घास फूस से ढँक कर एक घेरा सा बना लेते हैं। इस घेरे को हाथी पकड़ने वाले की भाषा में 'खेदा' कहते हैं। जब हमें पता लगता है कि हाथियों का समूह उसी के आस पास आ गया तब हम सब मिल कर जोर जोर से कोलाहल करना आरम्भ करते हैं और साथ साथ कोलाहल बढ़ाने के लिये टोकारी भी बजाते हैं।

मुकेश ने पूछा, साबू जी, यह टोकारी क्या होती है।

साबू ने उत्तर दिया, मुकेश भय्या! टोकारी बांस के कुछ अंश को चीर कर बनाते हैं। दूसरी ओर इस प्रकार बना लेते हैं कि पकड़ने के लिये सुविधा हो। इसी को हिलाने डुलाने से बांस का यह चीरा हुआ अंश बज उठता है और इसी को टोकारी कहते हैं।

बच्चों ने कहा—साबू जी, हमें दो उपाय तो आ गये हैं, पर हमें यह तो बताइये कि मोती और उसके मां-बाप को आपने किस उपाय से पकड़ा था।

साबू—जिस गिरोह में मोती था, हाथियों का वह झुंड बड़ा उपद्रवी था, आस पास के धानों के खेत को उजाड़ना तथा गावों के कच्चे मकान तोड़ना इसका काम था। जिस जंगल में यह झुंड था उसके पास ही एक नदी थी। हमारे साथ इस खेदा में भाग लेनेवाले लगभग दो हजार मनुष्य थे। हमने नदी के दूसरे पार सात आठ एकड़ की जमीन का एक टुकड़ा ८ फीट गहरी और ६ फीट चौड़ी खाई खेंच कर घेर लिया। इस खाई के बीच में फाटक भी लगा दिये। फिर इस घेरे में नदी के पार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ड़ी के खंभे गाड़ कर एक बड़ा सा घेरा । ६-७ लाइनों में लकड़ी के मज़बूत तने गाड़ । इसी घेरे में खदेड़ कर लाये हुए हाथियों के स्सियां बांधी गई थीं। इस घेरे का मुंह नदी की ओर था, सामने बड़ा सा फाटक था। इतनी तैयारियां होने पर नदी के उस पार के जंगलों से मनुष्यों ने हाथियों के झुंड को हल्ला करके नदी की ओर खदेड़ना शुरू किया।

हाथी पानी के प्रेमी होते हैं। फिर नदी के उस पार घेरे में हमने हाथियों के मन को लुभाने के लिये, खाद्य सामग्री भी रख दी थी। खदेड़े जाने पर हाथी, हल्ले से घबड़ा कर नदी में उतर गये। वहां तारों द्वारा रास्ता रोक कर, पालतू हाथियों की मदद से इन जंगली हाथियों को घेरे हुये किनारे पर जाने से मजबूर किया गया। खाने के लोभ से और पीछे से खदेड़े जाने पर हाथी ठाक लकड़ी के घेरे में ज्यों ही घुसे, फाटक गिरा दिया गया।

छोटे बच्चों को मां सूंड़ पर उठा कर नदी पार करने में मदद देती है। हाथी के बच्चे जब डर जाते हैं तो चलते समय अपनी मां के पेट के नीचे हो लेते हैं।

जब सब हाथी घेरे में घुसे तब फाटक गिरा कर बन्द कर दिया गया। अब हाथी यह समझ गये कि वे कैद किये गये हैं। इसलिये घेरे में वे ऊधम करने लगे। एक दो दिन बाद होशियार महावतों ने सिखाये हुए पालतू हाथियों की मदद से इन जंगली हाथियों को घेर कर, इनके गले और पांवों में रस्सियों के फंदे डाल कर बांध लिया। यह काम है बड़े जोखिम का। तीन चार दिन जोर लगा कर जब ये थक गये, पालतू हाथियों की सहायता से इन्हें नदी पर पानी पिलाने के लिये ले गये। वहां से उन्हें ले जाकर साफ किये जंगलों में पेड़ों से बांध दिया। कुछ दिन खा पी कर सुस्ता कर जब ये ताजे हो गये तो इन्हें फिर हम ट्रेनिंग कैम्प में ले आये। जहां इन्हें पालतू बनाया गया। इस प्रकार मोती एक होशियार और समझदार हाथी बन गया।

मदन—सिखाने वाले क्या हाथियों को मार कर, डरा, डरा कर सिखाते हैं?

साबू—नहीं, वे इनकी खूब देख भाल करते हैं। इनको खिलाते पिलाते, और नहलाते हैं, तथा पीठ मल देते हैं। मोती भी इसी तरीके से चार पांच महीने में बात समझना, उठ बैठ करना, बोझ उठाना, महावत को चढ़ाना इत्यादि सीख गया था। यहां तक कि इस पर चढ़ कर टेलिफोन वाले भी, बिना सीढ़ी के टेलिफोन के तार लगा लेते थे।

मुकेश-साबू जी, भारत में हाथी कितने ऊंचे होते हैं?

साबू राम—बेटा, भारत में हाथी आठ फुट से दस फुट तक ऊँचे होते हैं और वज़न प्रायः दस हज़ार पौंड होता है। परन्तु अफ्रीका में यह बारह फुट भी ऊंचा होता है और आकार और वज़न में इससे बड़े होते हैं।

बचन बोला—जब हाथी का वज़न ही इतना है तो भला यह क्या क्या खाता होगा और न जाने कितना खाता होगा?

साबू राम—बेटा खाने के लिये यह तुम्हारी तरह नखरा नहीं करता है। सबज़ी, पत्तियां, मटर, फल आदि सभी खा लेता है। डेढ़ मन से अधिक घास तथा वृक्ष की टहनियां भी खा लेता है और सेरों पानी पी लेता है।

अशोक ने पूछा—क्या मोती केवल दो दांत से इतना खा लेता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साबू राम—मुकेश जी, देखने में मोती के दो ही दांत हैं। परन्तु वास्तव में इसके मुंह में सिल की तरह बने हुये और भी दांत होते हैं। चार नीचे और चार ऊपर, एक एक दांत फुट भर लम्बा होता है। खाना चबाने का काम मोती इन ही दांतों से लेता है। जब यह दांत टूट जाते हैं उसी स्थान पर नये दांत आ जाते हैं। सूंड के आस पास जो दो दांत होते हैं वह केवल ऊपर के जबड़े में होते हैं। अफ्रीका के हाथी के ऐसे एक एक दांत वज़न में, एक आदमी के बराबर होता है। यह दांत एक ऐसे पदार्थ के बने होते हैं, जो कि हड्डी से भी कठोर होता है। कलम-दान, कलम, गहना और सजावट की अन्य वस्तुएँ इससे बनती हैं। यह बड़ा मज़बूत होता है। मोती इन दो दांतों से अस्त्रों का भी काम लेता है। इसी के सहारे वज़न उठाता है और वृक्षों की जड़ें खोदता है और समय पड़ने पर लड़ता भी है।

छोटी सी विनीता अब तक मोती की सूंड को देखती जा रही थी। बार बार हिलाते डुलाते देख कर उसने कहा—छाबु जी, बाबा ले, कितनी लम्बी है इसकी नाक!

यह सुन कर सब लड़के भी हंस पड़े, फिर साबूराम ने मुस्करा कर कहा—इसमें इसकी नाक, ऊपर के होंठ और गाल मिले हुये हैं। लम्बाई में यह प्रायः सात फुट है, सूंघता है, चिंघाड़ता है, पानी भी पीता है, और नहाने में इससे फव्वारे का काम भी लेता है। सूंड के अन्त का अंश बड़ा नरम होता है। सोते समय मोती इसको बड़ी स से लपेट कर रखता है। गरदन छोटी है कारण मोती झुक तो सकता नहीं, न गर्दन घुमा सकता, इसीलिये हाथों का काम भी सूंड से लेता है।

नन्हीं सविता बोली—साबू जी, मोती का सिर जब इतना बड़ा है तो पशुओं में निश्चय ही यह सब से अधिक बुद्धिमान गिना जाता होगा?

साबू राम बोला—सविता जी, इस में सन्देह नहीं कि हाथी का सिर बड़ा है परन्तु औ की तुलना में यह पशु यथेष्ट मूर्ख है। कुत्ता इस से अधिक बुद्धिमान होता है। मैंने प्रा देखा है कि हाथी खड्डों में अति सहज रूप से गिर जाता है। अन्य हाथी गिरे हुये हाथी को देख हुये भी उसे निकालने का कुछ भी प्रयत्न नहीं करते बुद्धिमान होते तो उसको निकालने के लिये क करते ही।

परन्तु पालतू पशु की दृष्टि से यह एक ब ही चतुर और व्यावहारिक पशु है। स्वभावत भयभीत होने के कारण आज्ञा भी शीघ्र मानता है। अच्छा, बच्चो! अब तुम देखो कि आज्ञा सुन कर मोती किस तरह उसका भट पालन करता है और तुम सब से जय हि करता है।

'मोती' जय हिन्द' यह कहते ही सूंड उठा मोती ने झट जय हिन्द किया, और सब बच्चे प्रसन्न हो कर उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिहार

## श्री जगदीश

भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद का जन्म स्थान, बिहार कई दृष्टियों से अद्वितीय स्थान रखता है।

बिहार राज्य के गवर्नर श्री एम० एस० अणे हैं। आप पुराने देश भक्त हैं। जब महात्मा गांधी ने सन् ४२ में अनशन किया था तब आप वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य थे, लेकिन इस विषय में मतभेद होने पर आपने इस्तीफा दे दिया था। फिर आप लंका में भारत के हाई कमिश्नर रहे। अबतक बिहार राज्य का शासन दो भवनों द्वारा होता रहा है। ऊपर के भवन के सदस्यों की संख्या २६ और लोक भवन, जिसमें आम जनता के प्रतिनिधि निर्वाचित होते हैं, की सदस्य संख्या १५२ है। इनमें ४ स्त्री सदस्या होती हैं। लेकिन नये विधान के मुताबिक बिहार की विधान सभा के सदस्यों की संख्या ३३० रहेगी जो बालिग लोगों के द्वारा चुने जायेंगे और विधान परिषद में ७२ सदस्य रहेंगे।

बिहार मंत्रिमण्डल में नौ मंत्री हैं। राज्य के मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह हैं। आपके अधीन प्रबन्ध और कानून विभाग हैं। आप जिला मुंगेर के रहने वाले हैं। पहले आप वकालत करते थे। आप बहुत उदार, विद्यानुरागी सहृदय व्यक्ति हैं। इसी कारण आप से सब प्रेम करते हैं।

बाबू अनुग्रह नारायण सिंह, अर्थ व रसद मन्त्री हैं। आप भी वकालत करते रहे हैं। आप प्रोफेसर भी रह चुके के हैं। आप औरंगाबाद सब डिविजन (गया) के रहने वाले हैं। आप का अर्थ सम्बंधी ज्ञान बहुत गम्भीरऔर विस्तृत माना जाता है।

डा० सैयद महमूद विकास मन्त्री हैं। वकालत की सबसे ऊंची परीक्षा बैरिस्टरी, आप पास हैं। आपका घर पटना में है। मुस्लिम लीग के विरोध के बावजूद भी आपने सदा राष्ट्रीय आंदोलन क साथ दिया।

श्री जगलाल चौधरी, आप स्वास्थ्य मंत्री हैं। सन् १६२१ से आप महात्मा गांधी के मार्ग पर चल रहे हैं। आपके जीवन के १४ साल जेल में व्यतीत हुए हैं। सन् ४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में आपका युवा पुत्र अंग्रेजी शासन विरोधी जलूस का नेतृत्व करता हुआ पुलिस की गोली का शिकार बना।

श्री कृष्णवल्लभसहाय, आप माल व आबकारी मन्त्री हैं। आप हजारीबाग जिला के रहने वाले हैं। बहुत प्रतिभा शाली, परिश्रमी और क्रियात्मक व्यक्ति हैं।

श्री विनोदानन्द झा, आप स्वायत्त शासन मन्त्री हैं। आपका निवासस्थान देवघर है। आप बहुत उदार तथा प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति हैं।

आचार्य ब्द्रीनाथ वर्मा, आप शिक्षा मन्त्री हैं। आप बड़े अच्छे विद्वान हैं। और राज्य की शिक्षा प्रगति में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं।

श्री रामचरित्र सिंह, आप सिंचाई व बिजली विभाग के मन्त्री हैं। मुंगेर के रहने वाले हैं। अन्य मन्त्रियों के समान आप भी कई बार देश सेवा में जेल जा चुके हैं।

श्री कयूम अंसारी, आप सार्वजनिक निर्माण विभाग के मन्त्री हैं। आप शाहाबाद के रहने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



### कांग्रेस शासन के कार्य

कांग्रेस सरकार ने पिछले साल पंचायत एक्ट बनाया। इसका उद्देश्य गांवों को अपना शासन उनके ही हाथों में सौंपना तथा जनतंत्र की शिक्षा देना है। इस एक्ट के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों को विस्तृत अधिकार दिये गये हैं। आपसी झगड़े तय करने तथा गांवों का प्रबन्ध चलाने का भार इन्हीं पंचायतों पर है। अगला बड़ा सुधार जो सरकार करने जा रही है, वह है, जमींदारी प्रथा का नाश। पिछले साल जमींदारी-उन्मूलन कानून बनाया गया था। लेकिन कई क़ानूनी अड़ंगे के कारण वह कार्य पूरा न हो सका। जमींदारों को कुछ मुआवजा देकर उनसे जमीन ले ली जायगी और वह जमीन किसानों को दे दी जायगी। इस प्रकार भारत के इतिहास में पहली बार किसान धरती का मालिक बन सकेगा। इतना ही नहीं सरकार ने किसानों के हित में टेनेन्सी एक्ट बनाया। इसके अन्तर्ग कोई जमींदार किसान को बेदखल नहीं कर सकता

शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति हुई है राज्य में पिछले वर्ष ४३५ नए स्कूल और नए ट्रेनिंग कालेज खोले गये। पिछले वर्ष सरका ने १५३८ छात्रवृत्तियां दीं। १८ लाख रुपे हरिजन छात्रों की भलाई, शिक्षा आदि पर ख किए। सिंदरी में मेकेनिकल एण्ड इलेक्ट्रिक कालिज का निर्माण हो रहा है जहां काम शुरू गया है। बिहार में १० प्रतिशत व्यक्ति शिक्षि हैं। और राज्य भर में १३६ पत्र पत्रिकाएं निकल हैं। राज्यमें दो बड़े बांध बन रहे हैं—प कोसी नदी पर और दूसरी दामोदर योजना। ज ये दोनों बांध सम्पूर्ण हो जायेंगे तो, राज्य अन्न की पैदाबार बहुत बढ़ जायगी। राज्य विभाजन के बाद से ४६ हजार शरणार्थी आ जिन्हें बसाने का सरकार पूरा प्रबन्ध कर रही है

---

# मानव-विकास के सिद्धान्तों में क्रान्ति !

## ७५,००० वर्ष पुराने अस्थिपंजर प्राप्त

अमेरिका के दो मानव विकास-शास्त्रियों द्वारा की गई अस्थिपंजरों की खोज ने मनुष्य के विकास सम्बन्धी नये सिद्धांत उपस्थित कर दिये हैं। पेन्सिल्वेनिया यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एक छात्र ने उत्तरी ईरान में हड्डियां पाई हैं। कहा जाता है ये ७५,००० वर्ष पुरानी हैं और सम्भव है' मनुष्य जाति की प्राप्त हड्डियों में सबसे पुरानी हों।

पेन्सिल्वेनिया यूनिवर्सिटी के डा० कार्लटन एस० कून इस खोज के संचालक थे। उन्होंने कहा कि उनकी धारणा है की इस ओर कि इस खोज का यह अर्थ होगा कि आधुनिक मनुष्य जाति के अनुरू मनुष्य जाति, ५०,००० पुरानी "नियैन्डरथल (तथाकथित) मनुष्य जाति जैसी अविकसि जातियों के पहले भी विद्यमान थी।

जो तीन ढांचे पाये गये हैं उनकी बनावट आ के मनुष्य से बहुत मिलती है। उनकी लम्बा लगभग ५ फुट ८ इंच है। मुख्य भिन्नता मस्तिष्क के आकार में है। आधुनिक मनुष्य के मस्तिष्क का आयतन उससे लगभग ३०० घन सेंटिमीटर अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# छोटानागपुर और रेशम उद्योग

श्री करामत हुसेन

छोटानागपुर के अधिकांश किसान अत्यधिक गरीब हैं। इस कमिश्नरी के कुछ हिस्सों को छोड़कर बाकी जमीन ऐसी है जहां बरसात के दिनों को छोड़कर बाकी दिनों में जमीन परती ही रह जाती है। फलस्वरूप एक फसल पैदा करने के बाद लोगों को साल भर बैठ कर खाना पड़ता है। वर्ष के इन खाली महीनों में भी लगे रहने के लिए यदि कोई ऐसी फसल या रोजगार खोज निकाला जाय जिससे इनके खाली समय का उचित उपयोग हो और उससे लोगों को इतना लाभ हो जाय कि लोग उससे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें तो कितना अच्छा हो!

इसलिए बिहार की कांग्रेसी सरकार की ओर से प्रयत्न किया जा रहा है कि इस प्रकार की फसलों के सम्बन्ध में छोटानागपुर के किसानों को समुचित जानकारी करायी जाय तथा उस कार्य में यथा संभव सहायता भी दी जाय जिससे यहां के किसानों की दयनीय दशा में सुधार हो सके, उनकी जीवन यात्रा आसान हो जाय तथा उनके चेहरे पर की मुर्दनी दूर होकर एक आह्लादकारी चमक उत्पन्न हो सके।

बहुत से उद्योग धन्धे, खेती की फसल या कारोबार ऐसे हैं जिनको आप नया नहीं कह सकते। वे आप के पुराने धरोहर के रूप में हैं, किन्तु आप उन्हें भूल चुके हैं और उसमें जंग लग गया है जिससे आप अभी उस ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं। कुछ तो देश की गुलामी का दोष था किन्तु अब अधिकांश दोष आप के आलस्य का ही है। रेशम पैदा करना भी ऐसे ही उद्योगों में से एक है।

आप के पास काफी टांड़ और बंजर भूमि है। उसमें आप थोड़े परिश्रम से शहतूत, बेर महुआ, रेंड़ी आदि के पेड़ लगा ले सकते हैं। इन पेड़ों की पत्तियों के सहारे आप आसानी से रेशम के कीड़े पाल सकते हैं। रेशम का कीड़ा पालना कोई ऐसा कठिन काम नहीं है जिसके करने में आप दिक्कत का अनुभव करें। किसी प्रकार की कठिनाई आ जाने पर सरकार आप की संभव सहायता करेगी। इस के पालने के आसान तरीके बतलाये जायंगे। इस कार्य के लिए बिहार सरकार ने अनेक अफसर बहाल कर रखे हैं जो इस कार्य्य को कर रहे हैं। आप अपने इलाके के अफसर का उपयोग अपनी दिक्कतों को हल करने में कर सकते हैं।

वे अफसर आप को बतलायेंगे कि आपको अपने कार्यक्रम के अनुसार कितनी जमीन चाहिये, कितने रेशम के कीड़े को कितनी पत्तियां कब और किस तरह खिलाना चाहिये, वर्ष भर में आप रेशम की कितनी फसलें पैदा कर ले सकते हैं, रेशम के कोए से किस तरह सूत निकाल सकते हैं, और सूत के कपड़े किस तरह तैयार कर सकते हैं।

हिसाब लगाकर देखा गया है कि एक एकड़ टांड़ जमीन में यदि शहतूत के पेड़ लगा दिये जायँ तो उससे पाले गये कीड़े से जितना रेशम तैयार होगा, उसका दाम लगभग एक हजार रु० होगा। क्या आप गोड़ा और मड़ुआ से उतना पैदा कर सकते हैं? कदापि नहीं। और, बहुत ऊसड़ जगहों में जहां मड़ुआ और गुन्दली की फसल अच्छी नहीं हो पाती है, वहां आप शहतूत, बेर आदि के वृक्ष लगा कर रेशम उपजा सकते हैं। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए आप रेशम-उद्योग परामर्शदाता, मोराबादी पहाड़ी, रांची से पूछताछ कर लाभ उठा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चुनाव की विचित्र घटनाएँ

बम्बई के गृह मंत्री श्री मुरार जी देसाई अपने प्रान्त के बड़े नेता हैं, किन्तु इस बार चुनाव में अपने नवजवान भतीजे से हार गये।

मद्रास के मुख्य मंत्री श्री कुमार स्वामी राजा भी इस चुनाव में हार गये हैं। उन्हें भी उसके एक आत्मीय ने ही हराया है।

कृष्णा जिला (मद्रास) के तिरुभार क्षेत्र के कांग्रेसी उम्मीदवार को उसके कम्युनिस्ट बेटे ने अत्यधिक वोट से हरा दिया है। बाप हारकर भी इसलिए खुश है कि उसका बेटा विजयी हुआ है।

मैसूर के एक क्षेत्र की मतदान-पेटी जब खोली गयी तो देखा गया कि उसके भीतर दीमक लगे हैं और कुल मतदान-पत्र वे खा चुके हैं। इस लिए उस क्षेत्र के अन्य लोगों के बक्से की गिनती भी स्थगित कर दी गयी।

कोरापूत (उड़ीसा) अंचल के एक मतदान-केन्द्र के अफसर जब केन्द्र में जा रहे थे तो एक बाघ और एक सियार ने आकर उनके रास्ते को रोक दिया। बड़ी देर के बाद उन्हें जाने का मौका मिला। मतदाताओं को भी उन जानवरों ने कुछ देर के लिए रोका और फिर कुछ देर बाद जाने दिया। जब मतदान-केन्द्र से अफसर लोग वापस आ रहे थे तो उन दोनों जानवरों ने आकर फिर रास्ते को रोक दिया। कोई उपाय न देख एक शिकारी को बुलाय गया। शिकारी ने बाघ और सियार दोनों को मार गिराया तब कहीं रास्ता मिला उन लोगों को। इस प्रकार उन दोनों हिंसक पशुओं ने इस आम चुनाव में काफी दिलचस्पी दिखलाई। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग उन दोनों को शहीद बतलाते हैं, ऐसा सुना जाता है।

लखिमपुर (आसाम) के चाय बगान अंचल में एक विचित्र घटना हो गयी। जिस स्थान पर मतदान-केन्द्र बनाया गया, लोगों ने उसे नापसन्द किया। लोगों के आग्रह के अनुसार स्थान परिवर्त्तन नहीं किया गया। फलस्वरूप मतदान के दिन उस केन्द्र के अफसर महोदय दिनभर मत-पत्र पेटी सजाये बैठे रह गये; किन्तु एक भी मतदाता वहाँ नहीं आये। सब ने संगठित होकर उस केन्द्र का बहिष्कार कर दिया।

पलासी (बंगाल) के करीमपुर थाने की खबर है कि मतदान के दिन पाकिस्तान के कुछ लोग दल बांधकर वोट देने के नाम पर चले आये। जब आस पास के गाँवों के लोग मतदान-केन्द्र में मत देने के लिए आये हुए थे तो उन गाँवों से गाय भैंस वगैरह जानवरों को लेकर वे लोग भागे। किन्तु कुछ ही देर में लोगों को पता चल गया और पीछा करके सीमा पार करने के समय उन लोगों से जानवर छीन लिये गये। भारतीय पुलिस ने भी ग्रामीणों की सहायता की इस कार्य में।

अहमदाबाद से भारतीय संसद के उम्मीदवार श्री मावलंकर के विरोध में खड़े उम्मीदवार श्री कृष्ण-जीवन जी महाराज की मतदान-पेटी जब गिनती के वक्त खोली गयी तो एक पेटी के लगभग ५० मत-पत्रों को दीमक खा चुके थे। उक्त उम्मीदवार के एजेन्ट के विरोध के कारण उक्त मत-पत्र रद्द नहीं किये जा कर जायज करार दिये गये।

रफीगंज—के एक मतदान-केन्द्र में कांग्रेस पार्टी वाले प्रत्येक मतदाता को एक कागज का टुकड़ा देते थे जिसमें बैल का चित्र छपा था और मतदाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का नम्बर लिखा होता था। मतदान-केन्द्र के फाटक पर उस टुकड़े को फाड़ कर फेंक दिया जाता था और दूसरा टुकड़ा उन्हें दिया जाता था जिसमें नम्बर लिखा हुआ था। कांग्रेस विरोधी लोगों ने कहना शुरु किया कि कांग्रेस को वोट देने कोई हिन्दू कैसे जायेगा? वोट देने के पहले ही बैल छाप को दो टुकड़ा करवाना पड़ता है। फिर कांग्रेस की जीत होगी तब गाय बैलों की क्या हालत होगी?

फिर क्या थी, सभी हिन्दू मतदाता उलट गये। कांग्रेस को मत देने वाले भी विरोधी के बक्से में वोट गिराने लगे। कांग्रेस वाले सुन कर दंग रह गये। जब उक्त बैलछाप पुर्जे का फाड़ना रोकवाया गया तब कहीं लोग शान्त हुए और फिर कांग्रेस को वोट देने लगे।

सिमडेगा सब-डिविजन (राँची) के एक मतदान केन्द्र में एक युवती वोट देने आयी। विरोधी पक्ष ने उसके सम्बन्ध में आपति की, कि जिसको औरत यह अपने को बतलाती है, उसकी औरत नहीं है बल्कि बहन है। लेकिन युवती कह रही थी कि मैं उस की बहन नहीं, औरत हूं। फिर उसके बाप को बुलाया गया और पूछा गया—कि अमुक आदमी तुम्हारा कौन है? उसने कहा—बेटा। फिर पूछा गया कि यह युवती कौन है? तो उसने कहा—बेटी। फिर पूछा गया कि आपस में इन दोनों की शादी कब हुई? तो उसने कहा कि भाई के साथ बहन की कहीं शादी होती है? तब तक युवती शरमा कर वहाँ से खिसक चुकी थी।

अम्बाला (पंजाब) के दो नेत्रहीन बुड्ढों को उस दिन मतदान देते समय गहरी निराशा हुई; क्योंकि इच्छानुसार वे अपने मन के उम्मीदवार को अपना मत नहीं दे सके। दोनों को यह कहा गया कि वे उस विशेष उम्मीदवार को अपना मत नहीं दे सकते। एक तो काफी जिद्दी था और उसने अपना मतदान दे ही दिया, जिसे सभापति महोदय ने वहीं रद्दकर दिया। दूसरा मतदान-स्थल ही छोड़कर चला गया चूंकि उस उम्मीदवार का कोई मतदान-बक्स वहाँ था ही नहीं। दोनों व्यक्ति पंजाब (हि०) के शाहाबाद तथा होशियार पुर के रहने वाले थे। और दोनों पं० जवाहरलाल नेहरू के पक्ष में अपना मत देना चाहते थे, जो इलाहाबाद से खड़े थे।

देवघर (संथालपरगना) निर्वाचन के दूसरे दिन यहाँ एक मनोरंजक घटना हुई। एक ग्रामीण यहाँ आया और मतदान पत्र लेकर मतदान-स्थल के बाहर चला गया। बाहर निकल कर वह एक वट वृक्ष पर चढ़ गया। जब वह नीचे उतरा तो उसे फिर मतदान-स्थल में ले जाया गया। पूछने पर उसने बतलाया कि वह अपना मत समाजवादी दल को देना चाहता था। जिसका प्रतीक है वट वृक्ष। इसलिए अपना मतदान-पत्र वह उसी वृक्ष पर लटका आया है।

अम्बाला के (पंजाब) एक निर्वाचन-प्रतिनिधि की बातों का अक्षरशः पालन करने में यहाँ एक ग्रामीण का मतदान यों ही व्यर्थ चला गया। बात ऐसी है कि उस विशेष प्रतिनिधि ने उस ग्रामीण को उस बक्स में अपना मतदान-पत्र गिराने को कहा जिस पर दीपक का प्रतीक हो। वहाँ मतदान-स्थल पर कोई मिट्टी का दीपक नहीं पाकर उस ग्रामीण ने वहाँ एक बुझे हुए लालटेन में अपना मतदान-पत्र गिरा दिया। सभापति-महोदय ने उसे रद्द कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिहार विधान सभा के निर्वाचित सदस्य

## पटना

कांग्रेसः—

१. श्री रामेश्वरप्रसाद शास्त्री
२. „ जगत नारायण लाल
३. „ आचार्य बद्रीनाथ वर्मा
४. „ मुंगेरी लाल (हरिजन)
५. „ सैयद मुहम्मद मेहदी
६. „ देवशरण सिंह
७. „ राम खेलावन सिंह
८. „ मती सरस्वती देवी (हरिजन)
९. „ धनराज शर्मा
१०. „ लाल सिंह त्यागी
११. „ शिवशरण प्रसाद शर्मा
१२. „ महावीर प्रसाद (हरिजन)
१३. „ जगदीश नारायण सिंह
१४. „ राणा शिवलाखपति सिंह
१५. „ ताजुद्दीन
१६. „ गिरीवर धारी सिंह
१७. „ सैयद मुहम्मद वकील
१८. „ मती सुन्दरी देवी
१९. „ मती मनोरमा देवी
२०. „ श्री रामलखन सिंह यादव

## गया

कांग्रेसः—

१. श्री मंजूर अहमद
२. „ चेतूराम (हरिजन)
३. „ शक्ति कुमार (हरिजन)
४. „ राम किशुन सिंह
५. श्री राधाकृष्ण प्रसाद
६. „ महावीर चौधरी (हरिजन)
७ „ केशव प्रसाद
८. „ देवधारी चमार (हरिजन)
९. „ जगलाल महतो
१०. „ जगेश्वर प्रसाद खलिश
११. „ रामेश्वर मांझी (हरिजन)
१२. „ मिथिलेश्वर प्रसाद सिंह
१३. „ तलीफुर रहमान
१४. „ प्रियव्रतनारायण सिंह
१५. „ अनुग्रह नारायण सिंह।

समाजवादीः—

१. श्री पदारथ सिंह
२. „ मुद्रिका सिंह
३. „ रामनरेश सिंह
४. „ शिवभजन सिंह
५. „ रामचरण सिंह
६. „ गुदानी सिंह।

स्वतंत्रः—

१. श्री रामेश्वर प्र० यादव
२. „ रामचन्द्र यादव
३. „ रामेश्वर यादव।

## शाहबाद

कांग्रेसः—

१. श्री अम्बिका प्रसाद सिंह
२. „ रंग बहादुर प्रसाद
३. „ देवनारायण सिंह
४. „ गुप्तनाथ सिंह
५. „ राम नगीना सिंह
६. श्री दुलारचन्द राम (हरिजन)
७. „ जगन्नाथ सिंह
८. „ गोविन्द चमार (हरिजन)
९. „ रामचन्द्र राय
१०. „ राजाराम राय
११. „ लक्ष्मीकान्त तिवारी
१२. „ हरिहर प्रसाद सिंह
१३ „ ललन प्र० सिंह
१४. „ मती सुमित्रा देवी
१५. „ हेमराज यादव
१६. „ रामानन्द उपाध्याय
१७. „ रघुनाथ प्रसाद

समाजवादीः—

१. श्री रामानन्द तिवारी
२. „ बसावन सिंह
३. „ राधामोहन राय
४. „ देवी दयाल सिंह

राम राज्य परिषदः—

१. श्री राम विलास सिंह।

## छपरा

कांग्रेसः—

१. श्री शिवकुमार पाठक
२. „ कमला राय
३. „ मिया अब्दुल गफूर
४. „ शिववचन त्रिवेदी
५. „ नन्द किशोर नारायण
६. „ चन्द्रिकाराम (हरिजन)
७. „ जनार्दन सिंह
८. „ मुहम्मद सगिरुल हक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



९. श्री रामबसावन राम (हरिजन)
१०. " शंकर नाथ
११. " गदाधर प्रसाद
१२. " रामायण शुक्ल
१३. " रामानन्द यादव
१४. " गिरीश तिवारी
१५. " लक्ष्मी नारायण सिंह
१६. " हरिकिशोर प्रसाद
१८. " बैजनाथ सिंह
१९. " महथा शुकदेव नारायण सिंह
२०. " मती रामस्वरूप देवी
२१. " विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
२२. " मुरली मनोहर प्रसाद
२३. " जगलाल चौधरी (हरिजन)
२४. " प्रभुनाथ सिंह
२५. " दारोगा प्रसाद राय
२६. " राम विनोद सिंह
२७ " जगदीश शर्मा ।

किसान मजदूर प्रजापार्टी:—

१. श्री महामाया प्रसाद सिंह

## चम्पारण

कांग्रेस:—

१. श्री केदार पाण्डे
२. " जगन्नाथ प्रसाद (हरिजन)
३. " रघुनी बैठा ( हरिजन )
४. " विश्वनाथ सिंह
५. " फैजुल रहमान
६. " सुदामा मिश्र
७. " प्रजापति मिश्र
८. " मती पार्वती देवी
९. श्री जयनारायण प्रसाद
१०. " हरवंश सहाय
११. " यमुना राम ( हरिजन )
१२ " गणेश प्रसाद साहु
१३ " राधा पाण्डे
१४. " राम सुन्दर तिवारी
१५. " मौलबी मसूद
१६. " गदाधर सिंह
१७. " वृजबिहारी शर्मा
१८. " शिवधारी पाण्डे
१९. " मती पार्वती गुप्ता

समाजवादी—

१. श्री राम अयोध्या प्रसाद ।

## मुजफ्फरपुर

कांग्रेस:—

१. श्री मती रामदुलारी सिंह
२. " चुल्हाई दुसाध ( हरिजन )
३. " ठाकुर गिरिजानन्दन सिंह
४. " कुलदीप नारायण यादव
५. " महंथ श्याम नारायण दास
६. " डा० हबीब
७. " वृजनन्दन प्र० सिंह
८. " राम चन्द्र प्रसाद शाही
९. " यमुना त्रिपाठी
१० " कपिल देव नारायण सिंह
११. " वीरचंद पटेल
१२ " नवल किशोर सिंह
१३. " हरिहर शरण दत्त
१४. " ललितेश्वर प्र० शाही
१५. " चौधरी चन्द्रमणिलाल ( हरिजन )
१६. श्री सरयू प्रसाद
१७. " हरवंश नारायण सिंह
१८ " जनक सिंह
१९. " मथुरा प्रसाद सिंह
२०. " नीतीश्वर प्र० सिंह
२२. " विन्ध्येश्वरी प्र० वर्मा
२३. " महेश प्र० सिंह
२४. " शिवनन्दन राम (हरिजन)
२५ " दीपनारायण सिंह

स्वतंत्र:—

१. श्री राम सेवक शरण
२. " विवेकानन्द गिर
३ " तिलधारी महतो
४. " रामचरित्र राय

समाजवदी:—

१. श्री फुदेनी प्रसाद (हरिजन)
२. " नथुनी लाल महेता
३. " दामोदर झा

## दरभंगा

कांग्रेस:—

१. श्री अब्दुल समी नदवी
२. " रामरूप राय
३. " यदुनन्दन सहाय
४. " सुन्दर महतो (हरिजन)
५. " सहदेव महतो
६ " देवकी नन्दन झा
७ " महावीर राउत
८. " बालेश्वर राम (हरिजन)
९. " सईदुल हक
१०. " हृदय नारायण चौधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



११. श्री राधा कान्त चौधरी
१२. " बाबूलाल महतो (हरिजन)
१३. " मुहम्मद सफी
१४. " देवचन्द्र मिश्र
१५ " मती कृष्णा देवी
१६. " जयनारायण झा
१७. " नरेन्द्र नाथ दास
१८. " गजेन्द्र नारायण सिंह
१९. " जानकीनन्दन सिंह
२०. " मती जनक किशोरी देवी
२१. " महावल कुमार
२२. " अहमद शकूर
२३. " देवनारायण यादव
२४ " हरिनाथ मिश्र
२५. " योगेश्वर घोष
२६. " कपिलेश्वर शास्त्री
२७ " काशीनाथ मिश्र
२८ " सुबोध नारायण यादव

समाजवादी:—
१. श्री कपूरी ठकुर
२. " धनपति पासवान
३. " वसिष्ठ नारायण सिंह

स्वतंत्र:—
१. श्री रामकृष्ण महतो (हरिजन)

## मुंगेर

कांग्रेस:—
१. श्री कृष्ण सिंह
२. " वासुकीनाथ राय
२ " योगेन्द्र महतो
३. " निरापद मुखर्जी
५. " भागवत प्रसाद (हरिजन)
६. " राजेश्वरी प्रसाद
७. श्री चन्द्रशेखर सिंह
८ " गुरु चमार (हरिजन)
९ " दुर्गा मण्डल
१०. " कृष्ण मोहन प्यारे सिंह
११. " रघुनन्दनप्रसाद (हरिजन)
१२. " शाह मुश्ताक़ साहब
१३ " मिठ्ठन चौधरी
१४. " राम चरित्र सिंह
१५. मुहम्मद इलियास
१६. " सरयू प्र० सिंह
१८. " ब्रह्मदेव नारायण सिंह
१९. " द्वारका प्रसाद
२०. " जियालाल मण्डल
२१. " मिश्री मुसहर (हरिजन)

समाजवादी—
१. श्री रामनारोयण चौधरी
२. " सूरज नारायण सिंह
३. " कुमार त्रिवेणी कुमर

## राँची

कांग्रेस:—
१. श्री रामरतन राम (हरिजन)
२. " भोला नाथ भगत
३. " सोमा भगत (आदिमजाति)

झारखण्डपार्टी—
१. श्री पौलदयाल
२. " जगन्नाथ महतो
३. " नियारण मुण्डा
४. " हरमन लकड़ा (आदिमजाति)
५. " सुकरा उराँव (आदिमजाति)
६. " जुनस सुरेन (आदिमजाति)
७. " लुकस मुण्डा (आ० जा०)
८ " एस० के० बागे (आ० जा०)
९. श्री अलफ्रेड उराँव (आदिम जाति)
१०. " बलिया भगत (आ० जा०)
११. " श्री इगनेस कुजूर (आ० जा०)

जनता पार्टी—
१. श्री देवचरण मांझी (आ० जा०)

## पलामू

कांग्रेस—
१. श्री राजकिशोर सिंह
२ " देवचन्दराम पासी (हरिजन)
३. " मती राजेश्वरी सरोज दास
४. " अमिय कुमार घोष
५. " जीतूराम (हरिजन)
६. " भुवनेश्वर चौबे
७. " गिरजानन्दन सिंह
८. " भागीरथ सिंह (आदिम जाति)

## मानभूम

कांग्रेस—
१. श्री मती मनोरमा सिन्हा
२. " रामनारायण शर्मा
३. " टीकाराम मांझी (आ० जा०)
४. " पुरुषोत्तम चौहान
५. " बुधन मांझी (आ० जा०)
६. " शरतचन्द्र मोची (हरिजन)
७ " देवेन्द्रनाथ महतो

स्वतंत्र—
१. श्री आनन्द प्रसाद चक्रवर्ती
२. " शंकरो प्रसाद देव।

लोक सेवक संघ—
१. श्री श्रीशचन्द्र बनर्जी
२. " दीनू चर्मकार (हरिजन)
३. " निताई सिंह सरदार (आ० जा०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



४. श्री समरेन्द्र नाथ ओझा
५. ,, सत्यकिंकर महथा
६ ,, अतुलचन्द्र सिंह भुइंया (आ० जा०)
७. ,, भीमचन्द्र महथा।

जनता पार्टी०—
१ ,, पूर्णेन्दु नारायण सिंह
२. ,, कालीप्रसाद सिंह।

## सिंहभूम

कांग्रेस०—
१. श्री शिवचन्द्रिका प्रसाद।

झारखण्डपार्टी०—
१. श्री शुभनाथ देवगम (आ० जा०)
२. ,, सुखदेव मांझी (आ० जा०)
३ ,, सिदीन हेमरम (आ०जा०)
४. ,, अंकुरा हो (आ० जा०)
५. ,, सुरेन्द्रनाथ बिरुवा (आ० जा०)
६ ,, उपेन्द्र लाल हो (आ० जा०)
७. ,, कैलास प्रसाद (हरिजन)
८. ,, हरिपद सिंह
९ ,, धानीराम संथाल (आ० जा०)
१०. ,, मुकुन्द राम तांती

गणतंत्र परिषद०—
१. ,, मिहिर कवि।

## भागलपुर

कांग्रेस:—
१. श्री कामता प्र० गुप्ता
२ ,, खूबलाल महतो
३. श्री लहटन चौधरी
४. ,, विन्देश्वरी मण्डल
५. ,, भोला सरदार (हरिजन)
६ ,, जगेश्वर हजरा (ह०)
७ ,, उपेन्द्र नारायण सिंह
८. ,, शिवनन्दन मण्डल
९. ,, कमलेश्वरी प्र० यादव
१० ,, रघुनन्दन प्र० कुमर
११ ,, राम जनम महतो
१२ ,, सत्येन्द्रनारायण अग्रवाल
१३. ,, राम विहारी लाल
१४. ,, पशुपति सिंह
१५. ,, भोला नाथ दास (हरिजन)
१६. ,, सैयद मकबूल अहमद
१७ ,, राघवेन्द्र नारायण सिंह
१८ ,, शीतल प्र० भगत
१९ ,, पीरू मांझी (आदिम जाति)
२० ,, सियाराम सिंह

समाजवादी:—
१. श्री तनुकलाल यादव
२ ,, रामनरेश झा

## पूर्णियाँ

कांग्रेस:—
१ श्री डुमर लाल बैठा
२ ,, रामनारायण मण्डल
३ ,, लक्ष्मीनारायण सिंह सुधांशु
४. ,, भोला पासवान (हरिजन)
५. ,, अनाथ कान्त वसु
६. ,, चौधरी महम्मद अफाक
७. ,, रावत मल अग्रवाल
८ श्री मुहम्मद अहसान
९. ,, मौलवी मोहिउद्दीन मोख्तार
१० ,, जीवत्स शर्मा
११ ,, बोकाई मण्डल
१२ ,, पुण्यानन्द झा
१३ ,, मुहम्मद ताहीर
१४. ,, अबुल अहम मुहम्मद नूर
१५. ,, कमल देव नारायण
१६ ,, बाबूलाल मांझी (आ० जा०)
१७ ,, सुव्रदेव नारायण सिंह
१८. ,, श्रीमती पार्वती देवी

समाजवादी:—
१. श्री मोतीलाल पण्डित

स्वतंत्र:—
१. श्री हाजी जियाउर रहमान

## संथालपरगना

कांग्रेस:—
१ श्री सागर मोहन पाठक
२. ,, बुद्धिनाथ झा 'कैरव'
३. जगदीश नारायण मण्डल
४ ,, श्रीमती ज्योतिर्मयी देवी
५. ,, बुरहान उद्दीन खां
६. ,, जानकी प्र० सिंह

झारखण्ड पार्टी:—
१. श्री जेठा किस्कू (आ० जा०)
२. रामचरण किस्कू ,,
३. बाबूलाल टुडु ,,
४. ,, चेमका हेम्बरम ,,
५. ,, सुपई मुर्म. ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



६. श्री देवी सोरेन (आ० जा०)
७ „ शत्रुघ्न बेसरा „
८. „ मदन बेसरा „
९ „ विलियम हेम्ब्रम „
१० „ जीतू किस्कू „
११. ;, गोकुल महरा (हरिजन)

फारवर्ड ब्लॉकः—
१. श्री भुवनेश्वर पाण्डेय

स्वतंत्रः—
१. श्री कृष्ण गोपाल दास

## हजारीबाग

कॉंग्रेसः—
१. श्री किसुन राम दास (हरिजन)
२ „ सदानन्द प्रसाद
३. „ अवधबिहारी दिक्षित
४ , पुनीत राय
५. „ लछुमन मांझी (आ० जा०)
६ „ सुखलाल सिंह
७. „ कृष्णवल्लभ सहाय

जनता पार्टीः—
१. श्री कामाख्या नारायण सिंह
२ „ कामाख्या नारायण सिंह
३ „ कामाख्या नारायण सिंह
४ „ वसंत नारायण सिंह
५. „ बीगन राम (हरिजन)
६. „ रामेश्वर प्र० मेहता
७ „ गौरी चरण सिंह
८. „ कामाख्या नारायण सिंह

---

# सर्वोदय मेला

गत १२ फरवरी को देश के अनेक स्थानों में सर्वोदय मेले का आयोजन किया था। जहां लोगों ने आकर अपने हाथ के कते सूत की एक-एक गुण्डी देकर बापू के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

रामगढ़ में दामोदर नदी किनारे, जहा गांधी जी की अस्थि विसर्जित की गयी थी, सर्वोदय मेला लगा। बिहार खादी समिति के अध्यक्ष श्री रामदेव ठाकुर के सभापतित्व में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने छोटानागपुर में रचनात्मक कार्यक्रम को व्यापक रूप देने पर विचार विमर्श किया। वहां एक घण्टे तक सामूहिक सूत्रयज्ञ किया गया। श्रद्धांजलि में सूत की ९५६ गुण्डियां अर्पित की गयीं। गांधी साहित्य एवं ग्रामोद्योगी वस्तुओं की प्रदर्शिनी भी सजायी गयी थी। इस मेले की सफलता का श्रेय राँची खादी भण्डार के व्यवस्थापक श्री उमेश चौधरी को है। आदिम जाति सेवा मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी का सहयोग प्रशंसनीय था।

आदिम जाति सेवामण्डल द्वारा संचालित सेवा केन्द्र, गुमला की ओर से भी उक्त तारीख को सर्वोदय सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें फोरी स्कूल के सभी छात्र, फोरी आश्रमवासी एवं गुमला इलाके के अन्य रचनात्मक कार्य करने वाले लोग सम्मिलित हुए। वहां सर्वोदय विचार-धारा, रचनात्मक कार्यक्रम आदि विषयों पर विचार विनिमय हुआ जिसका सम्मेलन में उपस्थित लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विधान सभाएँ

सभी प्रान्तों की विधान सभाओं के चुनाव समाप्त हो चुके हैं। जितने परिणाम निकल चुके हैं, वे निम्नलिखित हैं। बाकी अगले अंक में दिये जायेंगे।

| प्रान्त | कुल सदस्य संख्या | कांग्रेस | समाजवादी | कि० म० प्रजा पार्टी | जन संघ | हिन्दू महा सभा | एस०सी० एफ० | क० और अन्य वाम पक्षी | स्वतंत्र | अन्य | कुल कितने परिणाम निकले |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिहार | ३३० | २४१ | २३ | १ | ० | ० | ० | ० | १२ | ५३ | ३३० |
| पश्चिमी बंगाल | २३८ | १५१ | ० | १५ | ६ | ४ | ० | ५४ | ११ | ४ | २३८ |
| पेप्सू | ६० | २५ | ० | १ | २ | ० | १ | ३ | ६ | १६ | ६० |
| पंजाब | १२६ | ६८ | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ६ | १६ | १२६ |
| भूपाल | ३० | २५ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | ३ | ० | ३० |
| मैसूर | ६६ | ७२ | ३ | ८ | ० | ० | २ | १ | १३ | ० | ६६ |
| उड़ीसा | १४० | ६८ | १० | ० | ० | ० | ० | ७ | १६ | ३६ | १४० |
| अजमेर | ३० | २० | ० | ० | ३ | ० | ० | ० | ४ | ३ | ३० |
| कुर्ग | २४ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | २४ |
| सौराष्ट्र | ६० | ५५ | २ | ० | ० | ० | ० | ० | २ | १ | ६० |
| दिल्ली | ४८ | ३६ | २ | ० | ४ | १ | ० | ० | २ | ० | ४८ |
| बम्बई | ३१४ | २६६ | ८ | ० | ० | ० | १ | १ | १७ | १८ | ३१४ |
| हिमाचल | ३६ | २४ | ० | ३ | १ | ० | १ | ० | ७ | ० | ३६ |
| हैदराबाद | १७५ | ६३ | ११ | ० | ० | ० | ५ | ४२ | १४ | १० | १७५ |
| ट्रावन-कोचीन | १०८ | ४४ | १२ | ० | ० | ० | ० | ३२ | ११ | ६ | १०८ |
| मद्रास | ३७५ | १५२ | १३ | ३५ | ० | ० | २ | ६१ | ६३ | ४६ | ३७५ |
| विन्ध्य प्रदेश | ६० | ४० | ११ | ३ | २ | ० | ० | ० | २ | २ | ६० |
| उत्तर प्रदेश | ४३० | ३२२ | १४ | १ | २ | १ | ० | ० | १० | ३ | ३५३ |
| राजस्थान | १६० | ८१ | १ | १ | ८ | २ | ० | ० | ३५ | ३१ | १५६ |
| मध्यप्रदेश | २३२ | १६५ | १ | ८ | ० | ० | ० | ० | २१ | ५ | २३० |
| आसाम | १०८ | ७६ | ५ | २ | ० | ० | ० | १ | १२ | ६ | १०५ |
| मध्यभारत | ६६ | ७५ | ४ | ० | ४ | ११ | ० | ० | ३ | २ | ६६ |
| त्रिपुरा | ३० | ७ | ० | ० | ० | ० | ० | १० | ५ | २ | २४ |
| मनिपुर | ३० | १० | १ | ० | ० | ० | ० | २ | १ | १६ | ३० |
| कच्छ | ३० | २८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | ३० |

# भारतीय पार्लियामेण्ट (संसद)

संसद के चुनाव के परिणाम भी निकल रहे हैं। संसद में कुल ४८६ जगहें हैं। इस पन्ने के छपने तक कुल मिलाकर ३६१ जगहों के परिणाम निकल चुके हैं जिनमें २७६ स्थानों में कांग्रेस के उम्मीदवारों ने विजय प्राप्त की है। शेष ११५ में अन्य सभी दलों के लोग हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मण्डल की गतिविधि

आदिम जाति सेवा मंडल गत पांच वर्षों से छोटानागपुर के राँची, पलामू, हजारीबाग, सिंहभूम और मानभूम जिलों में आदिम जातियों के बीच सेवाकार्य करता आ रहा है। इन पांचों जिलों में आदिम जातियों की संख्या लगभग २५ लाख है और इनमें उरांव, मुन्डा, हो, संथाल, खड़िया आदि मुख्य हैं। आदिम जाति के लोग अन्य लोगों के मुकाबले शिक्षा, धन आदि सभी क्षेत्रों में पिछड़े हुए हैं। इसलिए मण्डल ने इनके लिए पाठशालाएँ, छात्रावास, दवा वितरण केन्द्र एवं खादी केन्द्र खोल कर अनेक प्रकार से इनकी सेवा की है ताकि ये लोग शिक्षा अर्थ, स्वास्थ्य आदि सभी बातों में ये अन्य लोगों के समकक्ष बन सकें।

अभी मंडल द्वारा संचालित पाठशालाओं की संख्या २६० है जिनमें ४६१ शिक्षक कार्य करते हैं। इन पाठशालाओं में पढ़ने वाले आदिम जाति लड़कों की संख्या ६७११ और लड़कियों की संख्या १८२२ है। मंडल ने देखा कि केवल पाठशालाओं के खोल देने पर भी दूर देहात के अनेक लड़के लड़कियां पढ़ने में असमर्थ हैं। विद्यालयों में नाम लिखाने के बाद भी उन्हें रहने के लिए जगह नहीं मिल पाती है। अतः मंडल ने छात्रावासों की आवश्यकता महसूस की और इस पर जोर दिया। फलस्वरूप अभी पाँचों जिलों में मंडल की ओर से २५ छात्रावास चलाये जा रहे हैं। सभी छात्रावासों में कुल मिलाकर ११८७ छात्र रहते हैं। इन छात्रावासों में रहने वाले लड़कों में २२६ लड़कों को मंडल की ओर से निःशुल्क भोजन दिया जाता है तथा प्रत्येक आदिम जाति छात्र को प्रतिमाह २॥) ढाई रुपया सब्जी और रोशनी के लिये दिये जाते हैं। लोहरदगा में एक बालिका छात्रावास भी है जहाँ १०० बालिकाएँ रह कर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

देहात के गरीब आदिम जातियों को चिकित्सा के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उनकी इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए मंडल की ओर से छोटानागपुर के विभिन्न हिस्सों में फोरो आश्रम, गम्हरिया, घट्टा, भुरकुण्डा, महुआ डांड़, कुचू, पिड़िया पोश, पिटरवार, खूंटपानी, लेटे, निवारण आश्रम, जाहेर और विशुनपुर नामक १३ स्थानों में १३ औषधि-वितरण-केन्द्र योग्य वैद्यों के द्वारा चलाये जा रहे हैं जहाँ प्रति माह चिकित्सा लाभ के लिये आने वाले रोगियों की संख्या औसतन २००० रहती है।

छोटानागपुर के देहातों में खास कर आदिम जातियों के बीच ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए गुमला, फोरी, निवारण आश्रम और सोन चिपी आश्रम में खादी का कार्य भी चलाया जाता है। इन स्थानों में गतवर्ष ६४१८॥ वर्ग गज खादी की उत्पत्ति हुई जिसका दाम ६६८४ ॥=)॥ हुए। इसमें से ६११०।-) की खादी बिक चुकी है।

मंडल के सभी कार्य सुचारु रूप से चलें, इस बात को ध्यान में रखते हुए छोटानागपुर के विभिन्न हिस्सों में योग्य, परिश्रमी एवं लगनशील कार्यकर्त्ता रखे गये हैं। अभी मंडल के ५ आजीवन सदस्य हैं जो अपने अपने क्षेत्र में आदिम जातियों के उत्थान के लिए होने वाले कार्यों में संलग्न हैं।

जनवरी ५१ से मंडल की ओर से 'ग्राम निर्माण' नामक मासिक पत्रिका भी निकल रही है जिसके द्वारा देहात के लोगों के बीच गाँधी-साहित्य पहुँचाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## 'ग्राम-निर्माण' के नियम:—

१ 'ग्राम-निर्माण' हर महीने के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
२ ग्राम निर्माण' में प्रकाशित लेखों का सारा उत्तरदायित्व लेखकों के ऊपर ही रहेगा।
३ 'ग्राम-निर्माण' में प्रकाशनार्थ उपयोगी एवं स्वस्थ रचनाएँ ही भेजी जायँ।
४ लेख, कविताएँ एवं कहानियाँ सम्पादक, ग्राम-निर्माण, पो० हिनू, राँची के पते से भेजें।
५ लेखक अपनी रचनाओं के साथ अपना तथा विषय से संबन्धित ब्लाक भेजेंगे तो उन्हें भी सहर्ष स्थान दिया जायगा।
६ रचनाओं को स्वीकृत, अस्वीकृत करने तथा घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।
७ रचनाओं को स्पष्ट अक्षरों में तथा पृष्ठ के एक ही ओर लिखकर भेजना चाहिये।
८ जो लेखक चाहें कि रचना अस्वीकृत होने पर वापस कर दी जाय उन्हें इसके लिये टिकट रचना के साथ ही भेजना चाहिये।
९ 'ग्राम-निर्माण' का ग्राहक किसी भी महीने से बना जा सकता है। ग्राहकों को अपना चन्दा मनिआर्डर द्वारा भेजना चाहिये। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।
१० कानूनी दिक्कत के कारण ऐसे समाचार 'देश-विदेश' वाले स्तंभ में नहीं छप सकेंगे जिनके साथ भेजने वाले का पूरा नाम और पता न रहेगा।

---

## लेखकों से:—

हमारे पास बहुत ऐसी रचनाएँ लोग भेज देते हैं, जिनकी भाषा अशुद्धियों से भरी होती है, विषय अस्पष्ट रहता है तथा आकार भी इतना बड़ा होता है कि उन्हें छापने में हम असमर्थ हो जाते हैं।

अतः नये लेखकों एवं कवियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी रचना भेजने के पहले लेख के विषय की स्पष्टता, उपयोगिता एवं भाषा की शुद्धि पर तो ध्यान दें ही साथही उन्हें यह भी ख्याल रहना चाहिये कि रचना का कलेवर भी बहुत बड़ा न हो और उन्हें 'ग्राम-निर्माण' में स्थान देने में हमें कठिनाई न हो।

कविताएँ 'ग्रामनिर्माण' के एक पृष्ठ से कम ही स्थान में आने लायक हों तो अच्छा हो। कहानियाँ और लेख भी अधिक से अधिक ४ पृष्ठ के ही होने चाहियें।

अनेक लोग अपनी रचनाओं के साथ फोटो भेज देते हैं जो छप नहीं पाता। अतः जो लोग अपनी रचनाओं के साथ अपना फोटो छपवाना चाहते हों, उन्हें अपने फोटो का ब्लाक बनाकर भेजना चाहिये। हाँ, फोटो के साथ १०) नगद भेज देने पर यहाँ भी ब्लाक बनाने की व्यवस्था कर दी जायगी।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिष्टर्ड न० पी० ७५१


## खाद्य संकट राष्ट्र की कमजोरी है

अधिक सागसब्जी उपजाकर इसे दूर करना आपका परम कर्त्तव्य और राष्ट्र की सेवा है। किन्तु अच्छी फसल के लिए अच्छे बीज अत्यन्त आवश्यक हैं।

चुटिया सीड स्टोर्स

इसीलिए खुला है ताकि आप सुविधा के साथ अच्छे और आवश्यक बीज पाकर अपनी तरक्की करें।

यदि आप उत्तम बीज और गाछी चाहते हैं तो हमारी दूकान से लें अथवा पार्सल से मंगावें।

**—चुटिया सीड स्टोर्स—**

राम चन्द्र जी के मन्दिर के पास

**चुटिया-मेन रोड, राँची।**

---

## विजयी भण्डार

को

स्टेशनरी के सभी प्रकार के सामान, पुस्तकें आदि चीजों के लिए याद रखें।

गुरुकु[illegible]

पता:—विजयी भण्डार

अपर बाजार, रांची।

---

याद रहे!

रांची में सुन्दर और सस्ती छपाई

## सिन्हा प्रेस

में

होती है।

पता.—सिन्हा प्रेस

पो० बक्स नः ६७, रांची।

---

दुनियां की बहार लीजिये।

## सुप्रसिद्ध निर्माताओं के रेडियो

( बिजली एवं बैटरी )

तथा

विद्युत सामग्रियों के लिए पधारें

## पिकचर कॉटेज, राँची

## निम्नतम मूल्य और गारन्टी भी

साथ ही

पत्र व्यवहार का पता:—

पोस्ट बक्स न० ११, राँची

---

क्या आप शिक्षक हैं?

यदि हां, तो एक मात्र शिक्षकों की पूँजी से निर्मित

## राँची जिला शिक्षक सहयोग भण्डार

को याद रखिए और

कृपया अधिक से अधिक इसके हिस्से खरीद कर विशेष लाभ उठाइये।

निवेदक —
व्यवस्थापक
जिला शिक्षक सहयोग भण्डार रांची

---

## कामदेववटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके [illegible] चमत्कार को देखें। वीर्य अर्से तक रोककर [illegible] में सच्चा आनन्द प्राप्त होगा। इसके ल[illegible] से वीर्यसंबंधी रोग जड़ से आराम होते हैं। मू० ३२ गोली ५) १०० का १२)। गुणहीन होने प[illegible]

विजय फार्मेसी

पो० बक्स न० ११६ पो० गया


---

सुदर्शन प्रेस, रांची द्वारा मुद्रित तथा आदिम जाति सेवा मण्डल द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

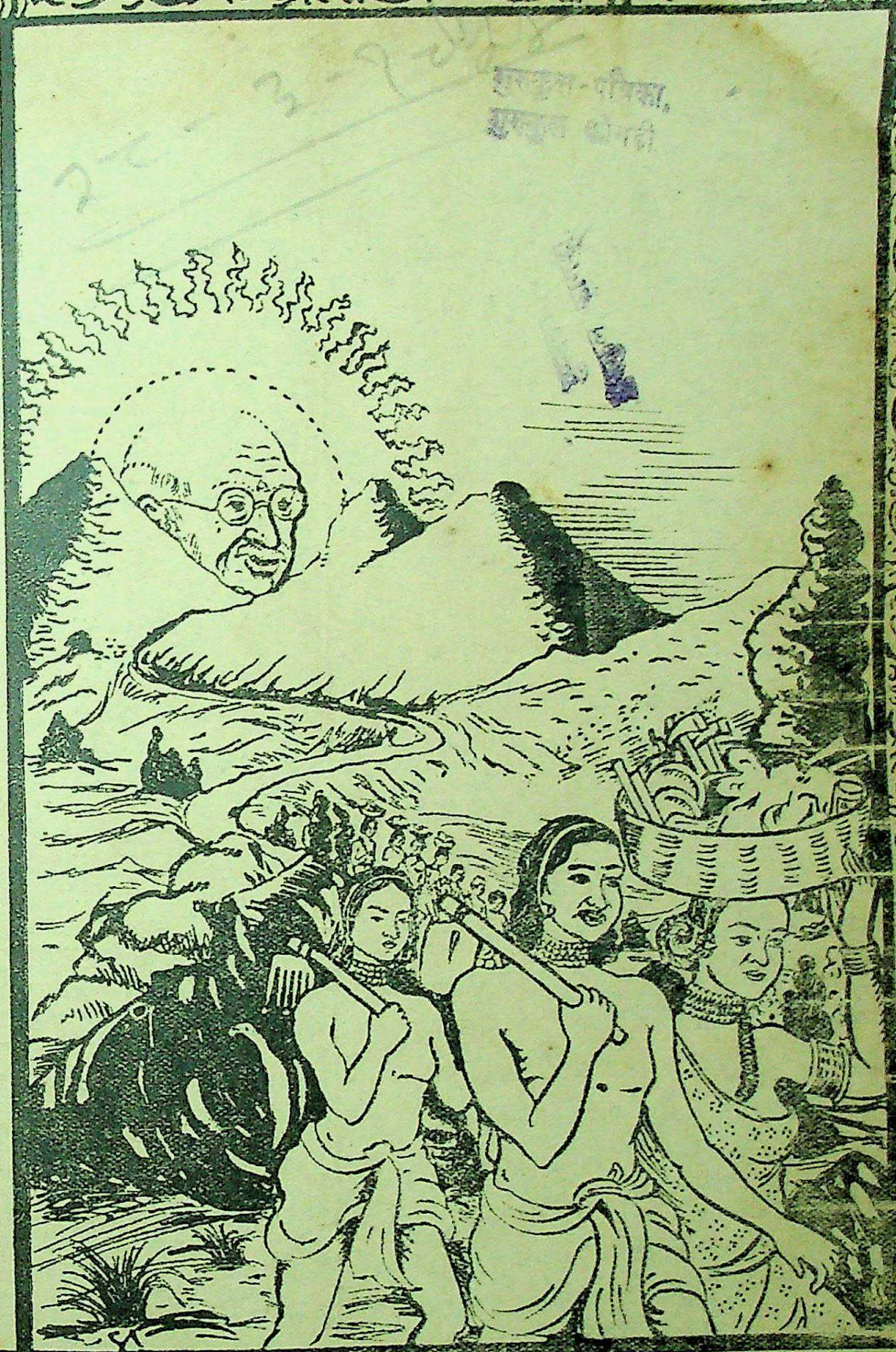

सम्पादक
रामचरित्र सिंह
स० सम्पादक
आदित्य मित्र, 'मंतालीं'

मार्च '५२
वर्ष—२ अंक—३
वार्षिक चन्दा— ६)
अर्द्ध वार्षिक—
एक प्रति—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िया, टिकाउ तथा सुन्दर सूटकेशों के लिये याद करें—

एम० ए० फौजी, बिहार ट्रंक फैक्टरी

हिन्दपीढ़ी, राँची

हमारे कारखाने में पुराने बक्सों, सूटकेशों आदि की मरम्मत बहुत खूबी के साथ होशियार कारीगरों द्वारा की जाती है। रंगाई का काम भी बहुत ही अच्छा होता है।

पुराने बक्सों को हम बिलकुल नया बना देते हैं।

एक बार परीक्षा कर देखें।

## इस अंक में पढ़िये:—

१ संम्पादकीय ... ... ... ... .... १
२ ग्रामलक्ष्मी की उपासना—आचार्य विनोवा भावे ... ... ... ३
३ हिंसा या विज्ञान—आचार्य विनोवा भावे ... ... ... ७
४ अपराधी जातियों की समस्या—श्री एस० एस० पाण्डेय ... ... ८
५ सर्वोदय-जगत्—श्री लक्ष्मीनारायण ... ... ... ११
६ आम—श्री कृष्ण चन्द्र शुक्ल ... ... ... ... १३
७ बहिष्कार आन्दोलन की सफलता कैसे हो ?—श्री मोतीलाल केजरीवाल ... ... १७
८ वटन योर कोट—श्याम कृष्ण ... ... ... ... १८
९ भोला प्रश्न ( कहानी )—श्री प्रताप साहित्यालंकार ... ... ... २२
१० पूंजीपति और साम्प्रदायिक दल राष्ट्र के दुश्मन—श्री राम चरित्र सिंह ... ... २४
११ मिट्टी किन-किन रोगों में लाभदायक है ?—श्री युगलकिशोर चौधरी ... ... २८
१२ कवि माघ की विधुरा पत्नी ( कविता )—श्री भवभूति मिश्र .... ... ३१
१३ मालिश—श्री पी० एच० शार्लटन ... ... ... ... ३३
१४ आप और आपका भविष्य - श्री भवभूति मिश्र .... ... ... ३६
१५ ग्राम-निर्माण ( कहानी )—श्री बैजनाथ सहाय ... ... ... .... ३८
१६ भोलवा मर ही जाता ( कहानी )—श्री हरिवंश महतो ... ... ... ४०
१७ पेरवा घाघ की यात्रा—श्री अरविन्द कुमार ठाकुर 'योगी'... ... .... ४१
१८ आर्तनाद (कविता)—श्री कुमार शर्मा 'कवि काहार' ... ... ... ४५
१९ भारत सरकार के वेलफेयर कमिश्नर का वक्तव्य ... ... ... ४६
२० गतिविधि... ... ... ... ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष २ * राँची, मार्च * अंक ३

## होलिकोत्सव

त्योहारों का मानव जीवन में बड़ा ही महत्व पूर्ण स्थान है। छोटे से बड़े तक सब के सब अपनी स्थिति के अनुसार त्योहार के दिन आनन्द मनाते हैं। लगातार और रोज-रोज काम करते करते काम में एक नीरसता सी आने लगती है। नीरसता के आधिक्य के कारण जीवन मरुभूमि सा बनने लगता है और मनुष्य हरियाली चाहता है। हमारे त्योहार ऐसे वक्त पर ओएसिस बनकर आते हैं और हमें एक नयी स्फूर्ति, नया उत्साह और उमंग दे कर चले जाते हैं। लेकिन मनोरंजन के अलावे भी त्योहारों का महत्व है।

होलिकोत्सव हमारे उन त्योहारों में एक प्रधान और भारतव्यापी त्योहार है। किसी भी देश के त्योहार किसी न किसी ऐतिहासिक परम्परा अथवा प्राकृतिक परिवर्त्तन पर आधारित होते हैं। होलिकोत्सव के पीछे दोनों प्रकार की बातें बतलायी जाती हैं। कुछ लोग कठोर जाड़े की समाप्ति और वसंत के आगमन पर खुशियाली के रूप में प्रचलित त्योहार मानते हैं। लेकिन अधिकांश लोग हिरण्य-कशिपु और नरसिंह भगवान के अवतार वाली कथा को ही इसका आधार मानते हैं।

गाँवों के रहने वाले त्योहारों के पीछे तथ्य क्या हैं, उससे हमें क्या प्रेरणा लेनी चाहिये, वह हम ले पाते हैं या नहीं, इन सब बातों पर ध्यान नहीं देते। लेकिन इस त्योहार की कथा की बारीकी पर सोचा जाय तो पता चलेगा कि यह त्योहार प्राचीन होने पर भी इस युग के अनुकूल प्रेरणा और प्रोत्साहन देने वाला है। लेकिन उसे हम समझें तब न?

नरसिंहावतार की कथा की वास्तविकता यह है कि वह उस युग की जनक्रान्ति का एक रूपक है। हमारे पुराणों में अनेक कथाएँ इसी प्रकार रूपकोक्ति में कही गयी हैं जिसे हम लोग स्वभावोक्ति में समझते हैं और इसी के कारण उसके तथ्य से दूर ही रह जाते हैं।

नरसिंहावतार की कथा की वास्तविकता यह है कि हिरण्यकशिपु सतयुग में दैत्य जाति का और विदेशी आक्रमणकारी था। उसने भारत के पश्चिमी भूभाग को जीतकर अपना राज्य स्थपित कर लिया था। भारतीय जनता दासता करने का अभ्यस्त न थी। चूंकि हिण्यकशिपु दैत्य जाति का था और विदेशी था इसलिए स्वाभाविक था कि वह जनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए क्रूरता का सहारा ले। उसके दमन के परिणामस्वरूप जनता में असंतोष उत्पन्न होने लगा। जनता को दबाने के लिए हिरण्यकशिपु और भी अधिक दमन करने लगा। उसका दमन इतना बढ़ गया कि उसका लड़का प्रह्लाद भी उसे बरदाश्त न कर सका। प्रह्लाद ने उसका प्रतिवाद किया। हिरण्यकशिपु उसे भी तरह तरह से सताने लगा। लेकिन जनता जनार्दन की शक्ति और सर्वव्यापकता में उसका ऐसा अटल विश्वास था कि कोई उसका कुछ बिगाड़ न सका। होलिका रूपी हिरण्यकशिपु की अत्याचारी शक्ति ने उसे जलाने का प्रयत्न किया तो वह स्वयं जलकर नष्ट हो गयी।

हिरण्यकशिपु जब सब उपाय करके हार गया तो उसकी अहमन्यता और भी भड़की। उसने स्वयं अपने हाथों से जनसमाज की उपस्थिति में प्रह्लाद को खतम कर देने का आयोजना किया ताकि जनता भी इसे देखकर डरने लगे। तदनुसार जनसमाज की उपस्थिति में प्रह्लाद से हिरण्यकशिपु ने पूछा कि तुम्हारा उपास्यदेव नारायण कहाँ है? प्रह्लाद ने उत्तर दिया—मेरा उपास्य देव सब जगह है। हिरण्यकशिपु ने जनसमाज की ओर संकेत करते हुए पूछा—क्या इस खंम्भे में भी तुम्हारा नारायण है? उत्तर मिला—हाँ। नारायण से प्रह्लाद का तात्पर्य था जनशक्ति से। प्रह्लाद के इस उत्तर पर वह आग बबूला हो उठा। उसने खम्भे पर पद प्रहार किया तथा क्रोधातिरेक में अस्त्र लिये हुए प्रह्लाद की ओर ज्योंही झपटा त्योंही बड़े जोर की गर्जना के साथ 'जनशक्ति' अपने भीषण रूप में प्रकट हुई और दैत्य राज का खात्मा कर डाला। जनशक्ति के भीषण रूप में प्रकट होने को ही नरसिंह भगवान का अवतार कहा गया। चूंकि वह जनक्रान्ति भारत में अत्याचारी सत्ता के विरुद्ध प्रथम जनक्रान्ति थी इसलिए यह स्वभाविक था कि वह पूर्व नियोजित और संगठित रूप में न हो। फलस्वरूप उस क्रान्ति से अनेक लोगों को कष्ट पहुंचा होगा। इसीलिए जनशक्ति के भीषण रूप की रूपकोक्ति के लिए नर में सिंह की कल्पना की गयी जो अधिक शक्ति के साथ ही पशुत्व का भी द्योतक है।

संभव है, हिरण्य कशिपु के किसी अस्त्र से नहीं मरने के वरदान का तात्पर्य यह हो कि असंतुष्ट प्रजा से अपनी सुरक्षा के लिए उसने ऐसी व्यवस्था कर रखी हो जिससे कोई कहीं पर किसी समय किसी अस्त्र से उसे मार न सके। पुराणों में वर्णित खंभा निर्जीव और निष्क्रिय समाज का प्रतीक है। खंभे पर पद प्रहार से तात्पर्य है दमन का विरोध करने वाले जन सेवक प्रह्लाद को सताकर जनता की भावनाओं पर आघात करना। समाज तो पहले से उससे चिढ़ा हुआ और क्षुब्ध था ही। इस आघात पर सारा का सारा समाज एक बार भड़क उठा और अत्याचारी शक्ति को समाप्त कर दिया।

हिरण्यकशिपु के नाश के रूप में सतयुग का अन्ध साम्राज्य पराजित हुआ था। नरसिंह से जनशक्ति के भीषण रूप का ही तात्पर्य है। पीड़ित मानव समाज की आह ही जड़ खंभे से चेतन के रूप में प्रकट हुई थी। शोषक और अत्याचारी की चिता की राख उड़ाकर जनता ने धुरखेल मनाया था। हिरण्यकशिपु की अत्याचारी शक्ति को जनता की क्रोधाग्नि में जलाकर होलिका दहन किया गया था। जनक्रान्ति के शहीदों का खून रंग और गुलाल में बिखर गया था।

अबतक हम लोग उस रूपकोक्ति को स्वभावोक्ति के अर्थ में समझते आ रहे हैं। कथा को भक्ति

[ आगे पृष्ठ ६ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ग्रामलक्ष्मी की उपासना

## आचार्य विनोबा भावे

हमारा यह देश बहुत बड़ा है। इस में छै लाख देहात हैं। हमारे देश में शहर बहुत थोड़े हैं। अगर औसत निकाला जाय, तो दस में से एक आदमी शहर में रहता है और नौ देहात में रहते है। छत्तीस करोड़ लोगों में से, ज्यादा-से-ज्यादा, चार करोड़ शहरों में रहते हैं। बत्तीस करोड़ देहात में रहते हैं। लेकिन इन बत्तीस करोड़ का ध्यान शहरों की तरफ लगा रहता है। पहले ऐसा नहीं था। देहात मुंहताज होकर शहरों का मुँह नहीं ताकते थे। लेकिन आज सारी स्थिति बदल गई है।

आज किसान के दो ईश्वर हो गये हैं। आज तक एक ही ईश्वर था। किसान आकाश की तरफ देखता था। पानी बरसाने वाले ईश्वर की तरफ देखता था। लेकिन आज चीजों के भाव ठहराने वाले देवता की तरफ भी देखना पड़ता है। इसी को आस्मानी-सुलतानी कहते हैं। आस्मान भी रक्षा करे और सुलतान भी, हिफाजत करे। परमात्मा खूब फसल दे और शहर भरपूर भाव दे। इस तरह इन देवताओं को—एक आकाश का और दूसरा अमेरिका का—किसान को पूजना पड़ता है। लेकिन ऐसे दो-दो भगवान काम नहीं आएँगे। गांधी कहते थे ऊपर वाले ईश्वर को बनाये रक्खो और इस दूसरे देवता को छोड़ो। एक ही ईश्वर बस है।

अब इस दूसरे देवता की, याने शहरिये भगवान की, भक्ति से छुटकारा पाने का उपाय मैं तुमलोगों को बतलाता हूँ। हमारे गांवों की सारी लक्ष्मी यहां से उठकर शहरों में चली जाती है। अपने पीहर से चल बसती है। ग्राम लक्ष्मी के पैर गांव में नहीं ठहरते। वह शहर की तरफ दौड़ती है। पहाड़ पर पानी भरपूर बरसता है; लेकिन वह वहां कब ठहरता है; चारों तरफ भाग निकलता है। पहाड़ बेचारा कोरा-का-कोरा, नंग-धड़ंग, गंजा-चूचा, खड़ा-का-खड़ा, रह जाता है। देहात की लक्ष्मी इस तरह चारों दिसाओं में भाग खड़ी होती है। शहरों की तरफ बेतहाश दौड़ती है। अगर हम उसे रोक सकें तो हमारे गाँव सुखी होंगे।

यह देहाती लक्ष्मी कौन-कौन से रास्तों से भागती है, सो देखो। उन रास्तों को बन्द कर दो; तब वह रुकी रहेगी। उसके भागने का पहला रास्ता बाजार है, दूसरा शादी-ब्याह, तीसरा साहूकार चौथा सरकार और पांचवां व्यसन। इन पांचों रास्तों को बन्द करना शुरु करें।

सबसे पहले ब्याह-शादी की बात लीजिए। तुम लोग ब्याह-शादी में कोई कम पैसा खर्च नहीं करते। उसके लिये कर्ज भी करते हो। लड़की बड़ी हो जाती है, अपनी ससुराल में जाकर गिरस्ती करने लगती है। लेकिन शादी के ऋण से उसके मां-बाप मुक्त नहीं होते। यह रास्ता कैसे मूँदा जाय, सो बताता हूं। तुम कहोगे, 'खर्च में कतर-ब्योंत करो। भोजन दो, समारोह की क्या जरूरत है?'—वगैरा वगैरा। यह ठीक नहीं। समारोह खूब करो। ठाट-बाट में कमी नहीं होना चाहिए। लेकिन मैं अपनी पद्धति से कम खर्च में पहले से भी ज्यादा ठाट-बाट तुम्हें देता हूं।

लड़के-लड़की की शादी मां-बाप ठीक करें। लेकिन वहां उनका काम खत्म हो जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शादी करना, समारोह करना, यह सारा काम गांव का होगा। मां-बाप शादी में एक पाई भी खर्च नहीं करेंगे। जो करेंगे उनको जुर्माना होगा। ऐसा कायदा गांव वालों को बना लेना चाहिए।

मान लीजिए मेरे यहां शादी है। गांव के हरेक आदमी को दो-दो, चार-चार आने—जो कुछ तय हुआ हो—मेरे पास लाकर देने चाहिए। मानो सब ने मिलकर मुझे वह भेंट दी। उस में से मैं सारे गांव का नेवता कर सकूंगा। वगैर पैसा इकट्ठा किये और वगैर कर्ज किये शादी हो जायगी। गांव में हरसाल बीस पच्चीस यो पचास शादियां होती होंगी। तो मुझे दो आने के हिसाब से, पचास दूने सौ आने, या मोटे तौर पर छः रुपये देने पड़ेंगे। हर एक जाति की शादियां की जायं, तो इससे भी कम खर्च लगेगा। मेरे यहां दस साल में शादी का मौका आया। मुझे हर साल दो-तीन रुपये के हिसाब से दस वर्षों में तीन रुपये देने पड़े, अब मेरे यहां शादी का मौका आया। मुझे कोई खर्च नहीं आयगा। मुझे लोग भेंट देंगे। सब गांव वाले जमा होंगे। बड़ा भारी समारोह होगा। और खर्च कितना आयगा? दस वर्षों में तीस रुपये मैंने दिये हैं, वही। याने मेरे यहां तीस रुपये की शादी हो गई और उसमें सारा गांव, सारी जाति शामिल हुई। सभी भोज में सम्मिलित हुए। लड़के-लड़की को कितनी खुशी होगी? दुलहे-दुलहीन को सब के आशीर्वाद मिलेंगे। सब के आशीर्वाद पाने से और बड़ी खुशकिस्मती कौन-सी हो सकती है? शादी में लोगों को क्यों बुलाया जाता है? इसीलिए कि सबकी सदिच्छा, सब के आशीर्वाद मिले। इन लड़के-लड़की की गिरस्ती के लिए सब अपनी शुभ-कामनाएँ और आशा व्यक्त करें। लड़के सिर्फ मां-बाप के नहीं होते। वे सारे समाज के होते है। लड़के कोई अच्छा काम करेंगे तो सारे गांव का भला होगा, बुरा काम करेंगे तो सारे गांव की बुराई होगी।

अगर कोई अपने पैसे से शादी करे, तो वह पाप मानो। गांव वाले उसे अपमान समझें। लड़के जितने अपने मां-बाप के हैं, उतने ही समाज के हैं। मां-बाप के मर जाने पर क्या वे घूर पर फेंक दिये जाते हैं? गांव उन्हें सम्हालता है, मदद करता है। शादी भी करेगा। आप इस रास्ते से जाकर देखिए। प्रयोग कीजिए। साहूकार का ऋण कम होता है या नहीं, देखिए। आपका कर्ज घटेगा। झगड़े कम होंगे। सहयोग और आत्मीयता बढ़ेगी।

दूसरा रास्ता बाजार का है। तुम देहाती लोग कपास बोते हो। लेकिन सारा-का-सारा बेच देते हो। फिर बुनाई के वक्त बिनौले शहर से मोल लाते हो। कपास यहां पैदा करते हो। उसे बाहर बेचकर बाहर से कपड़ा खरीद लाते हो। गन्ना यहां पैदा करते हो। उसे बेचकर शक्कर बाहर से लाते हो। गांव में मूंगफली, तिल्ली और अलसी होती है। लेकिन तेल शहर की तेल-मिल से लाते हो। जब इतना ही बाकी रह गया है कि यहां से अनाज भेज कर बंबई से मंगाओ। तुम्हें तो तेल भी बाहर से लाने पड़ते हैं। इस तरह सारी चीजें बाहर से लाओगे तो कैसे पार पाओगे?

बाजार में क्यों जाना पड़ता है? जिन चीजों जरूरत होती है, उन्हें भरसक गांव में ही बनाने का निश्चय करो। स्वराज्य माने स्वदेश का राज्य, अपने गांव का राज्य। घर जाने पर तुम लोग सोचो कि अपने गांव में क्या-क्या बना सकते हो। देखो, तुम्हें कौन-कौन सी चीजें चाहिए। तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खेती के लिए बढ़ियां बैल चाहिए। उन्हें मोल कहां तक लोगे ? तुम्हें बढ़ियां बैल यहीं गांव में पैदा करना चाहिए। गायों का अच्छी तरह पालन करो। एक दो बढ़िया सांड़ उनमें रखो। बाकी के सब को बधिया करो। इससे गायों की नस्ल सुधरेगी। अच्छे बैल मिलेंगे। बैलों के लिए बागडोर, नथनी वगैर चाहिए। गांव में सन, पटुवा वगैरा से यहीं बना लो। तुम्हें कपड़े की जरूरत है, उसे भी यहीं बनाना चाहिए। गांव में बुनकर न हो तो दो लड़कों को सिखा लाओ। हरएक को अपने घर में कातना चाहिए। उतना समय जरूर मिल जायगा। मूंगफली गांव में ही होती है। यहीं घानी शुरू करो, तो यहीं ताजा तेल मिलेगा। गन्ना गांव में होता है। उसका गुड़ बनाओ। शक्कर की बिल्कुल जरूरत नहीं है। गुड़ गरम होता है, लेकिन पानी में मिलाने से ठंडा हो जाता है। गुड़ में स्वास्थ्य के लिए पोषक द्रव्य है। गुड़ बनाओ। खोई जलाने के काम आयगी। गांव के चमार से ही जूते बनवाओ। इस तरह गांव में ही सारी चीजें बननी चाहिए। पुराने जमाने में हमारे गांव ऐसे स्वावलंबी थे। उन्हें सच्चा स्वराज्य प्राप्त था।

गांव का ही अनाज, गांव का ही कपड़ा, गांव का ही गुड़, गांव का ही तेल, गांव के ही जूते, गांव के ही डोर, गांव के ही बैल, गांव का ही घर का पिसा आटा—इस रवैये को अपनाओ। फिर देखो तुम्हारे गांव कैसे लहलहाते हैं ? तुम कहोगे वह महंगा पड़ेगा। यह केवल कल्पना है। मैं एक उदाहरण से समझाता हूँ। मान लो, तुम्हारे गांव में एक रंगरेज है, एक बुनकर है, एक तेली है, एक चमार है। आज चमार क्या करता है। वह कहता है, 'मैं तेली से तेल नहीं लूँगा; वह महंगा पड़ता है। तेली क्या कहता है ? 'गांव के चमार का बनाया हुआ जूता महंगा पड़ता है। मैं शहर में जूता खरीदूँगा।' बुनकर कहता है—'मैं गांव का सूत नहीं लूँगा। पुतलीघर का अच्छा होता है।' किसान कहता है—'मैं बुनकर का कपड़ा नहीं लूँगा। मिल का लूँगा। वह सस्ता होता है।' इस तरह आज हमने एक-दूसरे को मारने का धंधा शुरू किया है। एक-दूसरे को निबाह लेना धर्म है। उसे छोड़कर हम एक-दूसरे को मटियामेट कर रहे हैं।

लेकिन जरा मजा देखिए। तेली चार आने लेकर चमार से महंगा जूता खरीदता है। उसके जेब से आज चार आने गये। आगे चल कर चमार तेली से चार आने ज्यादा देकर महंगा तेल खरीदता है। याने उसके चार आने लौट आते हैं। अर्थात वह महंगा नहीं पड़ता। जहां पारस्परिक व्यवहार होता है वहां 'महंगा' जैसा कोई शब्द ही नहीं है। गये हुए पैसे दूसरे रास्ते से लौट आते हैं। मैं उसकी महंगी चीज खरीदता हूँ, वह मेरी महंगी चीज खरीदता है। हिसाब बराबर। इसमें क्या बिगड़ता है ? जुलाहे ने खादी बनाई और तेली ने वह खरीदी ली। तेली के लिए खादी महंगी है, जुलाहे के लिए तेल महँगा। बात एक ही है। तेल में जो पैसे गये वे खादी में वापस मिले और खादी में गये सो तेल में मिल गये। 'इस हाथ देना उस हाथ लेना'—इस तरह का भाईचारे का, सहयोग व्यवहार पहले होता था। लेकिन आज लोप हो गया है।

देहात में प्रेम होता है, भाईचारा होता है। देहात के लोग अगर एक-दूसरे की जरूरतों को ख्याल नहीं करेंगे तो वह देहात ही नहीं है। वह तो शहर के जैसा हो जायगा। शहर में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी को नहीं पूछता। सभी अपने-अपने मतलब के लिए वहां इकट्ठे होते हैं, जैसे गोबर का ढेर देख कर सैकड़ों कीड़े जमा होते हैं। उस सड़ने वाले गोबर में सैकड़ों कीड़े कुलबुलाते हैं। वे कीड़े वहां क्यों इकट्ठे हुए? किसी कीड़े से पूछो, 'यहां क्यों आया? तेरे कोई भाई-बहन यहां है?' वह कीड़ा कहेगा, कि मैं गोबर खाने के लिए यहां आया हूँ और गोबर खाने में चूर हूं। मुझे ज्यादा बोलने की फुरसत नहीं है. कलाकन्द, गुड़ आदिपर मक्खियां बैठती हैं सो क्या प्रेम के कारण? उसी तरह शहरों में मक्खियों के समान जो आदमी भिनभिनाते रहते हैं, चीटियों की नाई जिनका तांता लगा रहता है, वह क्या प्रेम के लिए? शहर में स्वार्थ और लोभ है। गांव प्रेम से बनता है। गांव में आग लग जाय, तो सब कोई अपना अपना काम छोड़ कर दौड़ आयेंगे। घर में कोई बैठा थोड़े ही रहेगा? लेकिन बंबई में क्या दशा होगी? सब कोई कहेंगे पानी का बम्बा जायगा, मुझे अपना काम है।' इसलिए एक कवि ने कहा है—गांवों को ईश्वर बनाता है और शहरों को मनुष्य।'

(क्रमशः)

[ गतांक पृष्ठ २ से आगे ]

गाथा के रूप में ही याद करते तथा होलिकोत्सव को केवल मनोरंजनात्मक त्योहार के रूप में ही मनाते चल रहे हैं। लेकिन आवश्यकता है कि लोग अब उसे सतयुग की जनक्रान्ति के स्मृति दिवस के रूप में भी समझें और उससे प्रेरणा लें।

महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा के मत से अमीर या सेठ लोग ही वर्त्तमान हिरण्यकशिपु हैं। हिरण्य का अर्थ होता है सोना और कशिपु का अर्थ शय्या। अतः सुनहली शय्या पर सोने वाले ही हिरण्यकशिपु हुए। भागवत ग्रन्थ में कशिपु तोशक या गद्दे के अर्थ में आया है। आज तो सुनहली शय्या पर सोने वाले और अपने आराम के लिए समाज को तरह तरह से सताने वाले अत्याचारी हिरण्यकशिपु पूंजीपतियों एवं सेठों के रूप में मौजूद हैं। ये वर्त्तमान हिरण्यकशिपु जबतक रहेंगे तबतक हमारे गाँवों की तरक्की नहीं हो सकेगी हमारा राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकेगा, फलस्वरूप जनता सुखी नहीं हो सकेगी। अतः होलिकोत्सव मनाने वाली जनता का कर्त्तव्य है कि समाज के ऊपर अत्याचार करने वाले वर्त्तमान मायावी हिरण्यकशिपुओं के मूलोच्छेन के लिए अपनी जड़ता से चेतन शक्ति को उत्पन्न कर नरसिंह भगवान के अवतार का श्रेय प्राप्त करे। और, यही सच्चा होलिकोत्सव होगा। लेकिन हम कहेंगे कि युगों पहले होनेवाली खून खराबी का अनुकरण जनता न करे। गाँधी जी की आधुनिक क्रान्ति के ढंग से ही आज के हिरण्यकशिपुओं का मूलोच्छेदन जनता करे। इसी में समाज और राष्ट्र का कल्याण है। होलिकोत्सव यही सन्देश देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिंसा या विज्ञान ?

## आचार्य विनोबा भावे

"अभी दुनियाके सामने एक ही मसला है और वह यह कि हिंसा और विज्ञान की जोड़ी को कैसे फोड़ा जाय ? पर अभी भी किसी-किसी को भय होता ही है कि दोनों एक साथ रखे जा सकते हैं। लोग डर रहे हैं कि अब महायुद्ध होगा। मैं कहता हूं, मुझे छोटी-छोटी लड़ाइयों का डर है परन्तु महायुद्ध हो तो मुझे दुःख नहीं। जितने महायुद्ध होंगे उतनी ही अहिंसा जल्दी आयगी। दो महा-युद्धों के अनुभव भी कम हो तो मुझे अभी सब्र है। और एक दो महायुद्ध लड़ लो। फिर या तो महा-युद्ध लड़ो या अहिंसा मंजूर करो ? यही समस्या सब के सामने रहेगी।"

हिंसा चाहिए या विज्ञान आप के सामने दो मसले हैं। उनमें से आप को चुनाव करना है। क्या आप हिंसा पसन्द करते हैं ? यदि दोनों साथ रखेंगे तो मानव का खात्मा अपने हाथ हो जाएगा। आप सोचें कि हिंसा भी चाहिए और विज्ञान भी। दोनों हाथ लड्डू लेंगे। लेकिन यह दोनों हाथ लड्डू नहीं है बल्कि दोनों हाथ जहर है। अगर आप चाहते हैं कि मनुष्यों की समस्याएं हल करने के लिए हिंसा का प्रयोग हो, हिंसा पर श्रद्धा हो, तो आप को कोई ऐसा रास्ता पैदा करना चाहिए कि विज्ञान की प्रगति रुके। यदि ऐसा हो तो शायद आप को थोड़ा-सा लाभ हो सकता है। लेकिन यदि आप चाहते हैं कि विज्ञान बढ़ना चाहिए तो आप को अहिंसा ही अपनानी होगी। कहते हैं कि प्रभु का जो राज स्वर्ग पर है, वह दुनियां पर आ गया बशर्ते कि अहिंसा और विज्ञान की शादी करें। यदि विज्ञान और हिंसा की शादी होती है तो उनसे जो सन्तान होगी वह त्रिपुरासुर सन्तान होगी। वह नाशकारी शादी होगी और अहिंसा और विज्ञान की शादी होगी तो वह तारक होगी, शांति-दायक होगी। भगवान यदि मानव-संहार ही चाहता होता तो वह हमारे सब के दिमाग बिगाड़ देता। अच्छे विचार न मुझे सूझते, न गांधीजीको सूझते। जैसे पतंगे टूट पड़ते हैं वैसे गांधीजी और सब हिंसा पर टूट पड़ते, पर ऐसा नहीं हुआ।

"जहां ऋषियों ने कहा था, अन्न पैदा करो, वहां अन्न पैदा नहीं होता। मैं मानता हूं कि अपने यहां अन्न की पैदाइश बढ़नी चाहिए। कोई भी किसी के भी घर में जाकर अपना हिस्सा मांग सके ऐसा होना चाहिए जैसे प्यासा किसी के भी घर में जाकर पानी मांग सकता है। प्लानिंग कमीशन ने हर एक आदमी पीछे १२ औंस अनाज माना है। मैंने उनसे कहा—यह बहुत कम है। कम से कम १६ औंस तो पड़ना ही चाहिए। जहां १२ औंस गिन के भी ३० लाख टन अनाज बाहर से मांगना पड़ता है, फिर १६ औंस के हिसाब से कितना मंगाना होगा ? १२ औंस की बात कहता हूं न १६ औंस की। मैं कहता हूं कि १ साल का अनाज हमारे यहां स्टाक हो। इसके लिए गुप्त सरस्वती को प्रकट करना होगा। जमीन में से पानी निकालना होगा कूएं खोदने होंगे। भूमि-हीनों को फौरन से फौरन जमीन और सरस्वती का उद्धार, ये ही दो रास्ते आज हमारे सामने हैं।" भारत ही एक देश ऐसा है, जहां अहिंसा की आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही है। हिन्दुस्तान ने जो आजादी

[ शेष पृष्ठ १० में ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपराधी जातियों की समस्या

श्री एस० एस० पाण्डेय

आदमी अपराधी पैदा नहीं होता। न कोई तमाम जाति अपराधी हो सकती है। यह समाज ही है जो आदमी को अपराधी—जरायमपेशा बनाता है। ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, मनुष्य ने समाज की रचना की और समाज ने जरायमपेशा जातियों को जन्म दिया। वैसे इस 'जाति' की आदि-कथा कहीं वर्णित नहीं है। लगता है यह लोग तभी से एक जाति मान लिये गए जब वर्ण और जाति व्यवस्था की नींव भारत में पड़ी। सभी अलग-अलग जातियाँ बना रहे थे। तब, छीना-झपटी करके जीवन बिताने वाले लोगों ने एक अपना संगठन उससे अलग किया हो, ऐसा माना जा सकता है। बाद में सामाजिक संस्कार और धार्मिकता ने घुलमिलकर इनकी दृष्टि में अपराध को न्यायोचित बना दिया हो यह बहुत संभव है। अपराधी जातियों की टोलियों ने अपनी पंचायतें कायम की हो यह भी बहुत मुमकिन है, क्योंकि इन सब की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक भित्ति एक ही रही होगी। भिन्न-भिन्न अपराधों और अपराध करने के तरीकों की पृष्ठभूमि में इनमें उप-जातियाँ बनी हों यह दूसरी बात है। संगठित होकर यह अपनी अपराध-वृत्ति को कुछ वैसी ही वैध वृत्ति मानने लग गए होंगे जैसे बढ़ई, लुहार आदि अपने-अपने काम को मानते हैं। तब यह मात्र छिटफुट साधारण या असाधारण अपराध करने वाले नहीं रहे होंगे जो निपट चरित्रहीन असत्यमय जीवन बिताते हैं। वह घरवासी बनकर रहते होंगे, उनमें अपनी सामाजिक संस्कृति होगी, धार्मिक भावनाएँ भी। यह परिस्थिति कठिन रही हो, यह बहुत संभव है क्योंकि एक ओर तो छिटफुट अपराध करने वालों के विपरीत यह एक तरह से संस्कृत थे, उनमें सामाजिक भावनाएँ थीं और वह बिलकुल हृदयहीन नहीं थे। दूसरी ओर उनकी परम्परागत भावनाएँ, उनकी सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याएँ उनको अपराध की ओर बरबस धकेल रही होंगी। आज भी यह स्थिति बहुत कुछ ज्यों-की-त्यों है। इसीलिए जरायमपेशा लोगों में सुधार-कार्य इक्के-दुक्के अपराध करने वालों के सुधार के प्रश्न से भिन्न और कठिन है।

अपराधी जातियों के विरुद्ध राज्य की ओर से अंग्रेजों ने पहले-पहल कानून बनाए। उनके लिए यह सुख और लाभप्रद बात थी। सन् १८७१ में एक्ट २७ पास किया गया। पास करने के समय एक्ट के पक्ष में बतलाया गया कि 'जाति हिन्दुस्तान कि खास अपनी चीज है। यहाँ पेशा परम्परा बनकर जातियों का निर्माण करती है। इस बात को ध्यान में रखने से अपराध पर अपने जीवन को अवलंबित करने वालों की स्थिति साफ प्रगट हो जाती है। यह लोग तो खुल कर कहते हैं कि वह सचमुच कानूनन अपराधी हैं, वह तो परम्परा से अपराध करते आ रहे हैं, वह ऐसा करते ही रहेंगे। उसमें भला सुधार की कहाँ गुंजाइश है, यह तो उनकी जाति है—उनका व्यापार! जब ऐसा है तो कहना ही पड़ता है कि अपराध को मानो यह अपना धर्म मानते हैं। फिर, जिनके पूर्वज अनादिकाल से अपराध का जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं, जो परम्परा के कारण अपराधी जीवन व्यतीत करने लिए वाध्य हैं और जिनकी सन्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इन्हीं, कारणों से आगे चलकर अपराध करती ही रहेंगी– ऐसे लोगों का तो ठगों की तरह मूलोच्छेद कर दिया जाना चाहिए।'

सन् १८९७ में एक्ट २ के द्वारा सन् १८७१ का एक्ट २७ संशोधित किया गया। कानून की धाराएं पहले से और भी सख्त बना दी गईं। इस बार कहा गया कि 'मानवता बुद्धि सम्मत मानवता नहीं रह जाती जब वह अपनी दया की भावनाएं अपराधियों के प्रति उंड़ेल कर उस लोगों की तकलीफों को भूल जाती है जिनके ऊपर अपराधी अत्याचार करता है।' सन् १९११ में एक्ट ३ के द्वारा १८९७ की धाराओं को और भी सख्त बनाकर जरायमपेशा लोगों के लिए सरकार में अपना-अपना नाम दर्ज करा लेना अनिवार्य कर दिया।

लेकिन कानून का शिकंजा जितना ही कड़ा किया गया अपराध की समस्या और भी जटिल होती चली गई। कानून का सहारा लेना शायद मर्ज की सही तसखीस नहीं थी। मर्ज अच्छा तो क्या हुआ और बढ़ता-बिगड़ता ही गया। आज तो सिर्फ उत्तर प्रदेश में चौदह लाख जरायमपेशा लोग मौजूद हैं। यह लोग गुलाम देश में विदेशी शासन की देन स्वरूप थे। लेकिन अब जमाना बदल गया। देशभक्तों द्वारा संचालित राष्ट्रीय सरकार का ध्यान अब पूरी तरह इस ओर जाना चाहिए। क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट संपूर्ण रूप से रद्द किया जाए। यह जरामपेशा लोगों के सुधार के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक है। यह संविधान की आकांक्षाओं के विपरीत है। इन लोगों के सामाजिक, शैक्षित और आर्थिक समस्याओं का हल अब तुरत ढूँढ़ निकालना है।

मोटा-मोटी ऐसा कहा जाता है कि जरायमपेशा लोग दो भागों में बँटे हुए हैं। एक वह जो घुमक्कड़ प्रकृति के हैं और प्रवास ही प्रवास में रहते हैं। दूसरे वह जो प्रायः बस गए हैं। घुमक्कड़ जमात के लोग इसलिए भी एक जगह नहीं रहते कि जरायमपेशा लोग कुछ जिलों के लिए जरायमपेशा हैं और कुछ जिलों के लिए नहीं। इस तरह यह कानून से डरते रहते हैं। इन तमाम लोगों को या तो भूमि देकर जहां-तहां बसा देना है या इन्हें गृह-उद्योगों में लगा देना है। यह काम प्रेमपूर्वक और सावधानी से किया जाना चाहिए। हर जिले के अधिकारी इन लोगों के लिए जमीन और घर बनाने का प्रबन्ध करें।

दूसरी कोटि के लोग वह हैं जो या तो सेट्लमेंटों, कॉलोनी, या पुलिस चौकियों के आस-पास पुलिस की कड़ी निगरानी में रखे गए हैं। इन लोगों में कुछ के पास जमीन भी है। लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है। यह जमीन के बहुत भूखे भी नहीं हैं। जीवन के इनके अनुभव बहुत खट्टे हैं। इनको या तो पुलिस वालों की मर्जी पर रहना रड़ता है, या उन पैसेवालों की मर्जी पर जो इनका उपयोग अपने स्वार्थों के लिए करते हैं। ऐसा करने से इन्कार करने पर यह तरह-तरह से सताये जाते हैं। यही खास कारण है कि यह जमीन या स्थिर जीविका से भागते फिरते हैं। इन लोगों के कल्याण-कार्य का भार पुलिस के हाथों में नहीं रहकर ग्राम-पंचायतों या सार्वजनिक संस्थाओं के जिम्मे होना चाहिए।

सेट्लमेंटों में आबादी बहुत घनी है। इनमें लगी जमीन या उद्योगों से आबादी के ५० प्रतिशत बालिग भी ईमानदारी से अपना जीवन नहीं बिता सकते। खास दिक्कत यह रही है कि यह सेट्लमेंट जो प्रायः जेल ही हैं—लोगों के निष्कासन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



माध्यम नहीं बन सके। लोग जमा ही होते गए। जो कुछ सुधरे भी, ईमानदार और समझदार भी हैं, वह भी बाहर जाकर बसने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि बाहर का समाज इनको अपने बीच उचित स्थान देने के लिए या इनके स्वागत के लिए बिलकुल तैयार नहीं है। इन लोगों में सुधार का काम रचनात्मक कार्यकर्ताओं का प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। इसका व्यापक क्षेत्र खाली पड़ा है। इनके प्रति समाज का दृष्टिकोण बदले, इनको लोग भाई-भाई की दृष्टि से देखें, पुलिस के हथकंडों से इनकी रक्षा की जाए—अब तो यह बहुत आवश्यक हो गया है।

उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की चर्चा हो रही है। देश में करोड़पतियों की कम नहीं है। केन्द्र और राज्यों में राष्ट्रीय सरकारें हैं। क्या यह संभव नहीं कि मौजूदा कल-कारखानों में या जो कल-कारखाने अब खोले जायँ उनमें इन लोगों को काम मिले? एक बहुत बड़ी संख्या में यह लोग आलस और बेकारी का जीवन बिता रहे हैं, क्या यह राष्ट्र की क्षति नहीं है

इन लोगों के बच्चों की खास मर्दुमशुमारी की जाए। इनके लिए हाई स्कूल की शिक्षा अनिवार्य हो। होनहार लड़के गुरुकुल और अन्य राष्ट्रीय विद्यालयों में भेजे जाएं। जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहें उनके लिए वैसा प्रबंध हो। शिक्षा उनकी विकृत प्रवृत्तियों को शान्त कर देगी और यह अच्छे नागरिक बन सकेंगे। पुलिस, मिलिटरी और अन्य दूसरी सभी नौकरियों में इनको लेना उचित है कि इनका उत्साह बढ़े। इससे समाज में इनके प्रति और इनमें समाज के प्रति जो ऊँच-नीच की भावना है वह मिटेगी।

भारत सरकार और राज्य की सरकारों ने तथाकथित जरायमपेशा जातियों की मुक्ति और उद्धार के संकल्प का ऐलान किया है। यह कितने ही कानूनी प्रतिबंधों से मुक्त कर दिये गए। उत्तर-प्रदेश में इन जातियों के सुधार के लिए काफी प्रयास हुआ है। लेकिन अभी तो मानो सब काम छूआ-पड़ा है।

अभी भी देश में कुछ ऐसे आदमी मिल सकते हैं जिनके विचार इन अपराधी जातियों के संबंध में वही हों जो अंग्रेजों के थे। वे इनको कानूनी शिकंजों में जकड़े रखने के पक्ष में हों, ऐसा भी हो सकता है। वे यह नहीं सोचते कि आखिर यह अपराधी जातियाँ हमारे ही समाज की देन हैं। इनके प्रति पूर्ण मानवता और सद्भाव बरता जाना चाहिए। इनके सुधार में सबको मिलकर योग देना चाहिए। इनकी समस्याओं की मनोवैज्ञानिक छान-बीन आवश्यक है। वह घृणा के पात्र बने ही रहेंगे अब ऐसा नहीं होगा। इनके लिए अलग कानून ही अब नहीं रहेंगे। समान कानून ही इन पर भी लागू हों। जन्म के कारण ही कोई सरकार किसी के मौलिक अधिकार नहीं छीन सकती। इस कलंक को अब हमें जल्द ही धो डालना है।

पृष्ठ ७ से आगे

की लड़ाई लड़ी है वह एक विशेष तरीके से लड़ी है। दुनियां का इतिहास लिखने वालों को लिखना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान ने जिस तरीके से आजादी प्राप्त की वह उसका अपना एक विशेष तरीका था। अगर हिन्दुस्तान में भी अनैतिक तरीके चले तो हिन्दुस्तान या तो गिरेगा या फिरसे दूसरे के हाथ में जायगा। ऐसा नहीं होगा तो यह होगा कि हिन्दुस्तान इतना भयंकर होगा कि तब इससे सारे राष्ट्र खतरा महसूस करेंगे। मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान तारक हो, मारक नहीं। हिन्दुस्तान आजाद रहे। अब आप के सामने रास्ता है कि हिंसाको चुनें या विज्ञान को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सर्वोदय-जगत्

श्री लक्ष्मीनारायण

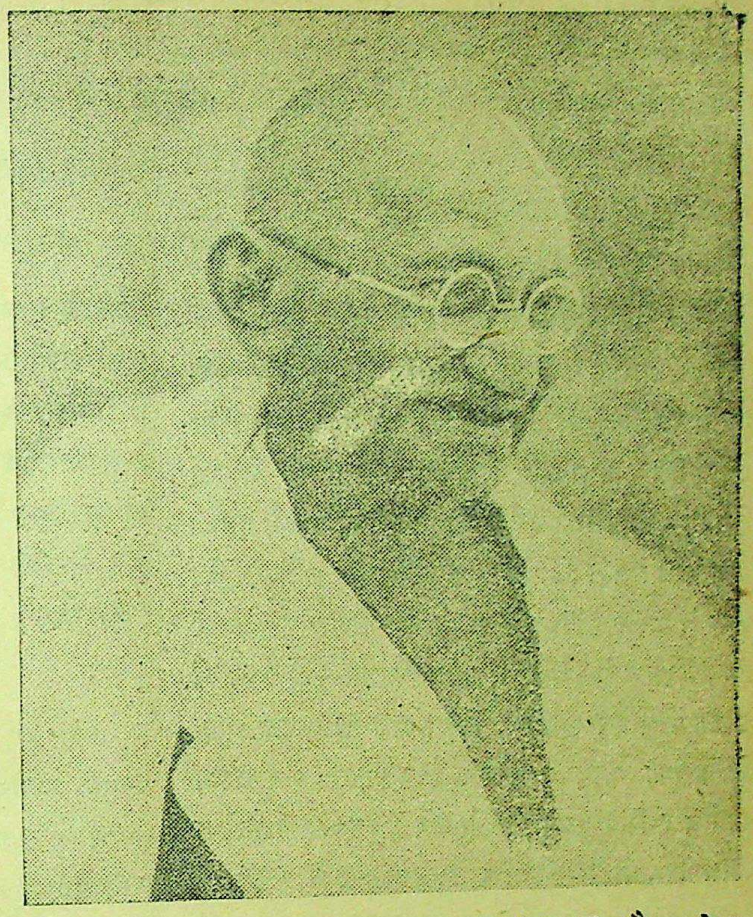

बापू [ सम्पादक—'सगडे प्रेस' के सौजन्य से ]

## बिहार में बहिष्कार-आंदोलन

बिहार-खादी-समिति के संचालक मण्डल ने अपने अनेक प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की सहमति से नीचेलिखा प्रस्ताव कुछ दिन पूर्व मंजूर किया है।

"चूंकि भोजन-वस्त्र में केन्द्रित उद्योगों से उत्पादित सामान पर अपने जीवन को निर्भर रखने से दिनानुदिन स्वावलंबी भावना और ग्रामोद्योग का नाश हो रहा है और इससे पराश्रित और शोषित होकर गांव की जनता बराबर बेकारी, आलस्य, दरिद्रता और परवशता के चंगुल में फंस रही है, इस कारण बिहार-खादी-समिति के संचालक मण्डली की राय में अब वह समय आ गया है जब कि: भोजन-वस्त्र की निस्बत जनता से मिलों द्वारा उत्पादित सामान का व्यवस्थित ढंग से बहिष्कार कराया जाय। इस दृष्टि से बिहार खादी-समिति के संचालक मंडली की ओर से निश्चय किया जाता है कि—

"(१) बिहार-खादी-समिति का कोई भी कार्यकर्त्ता मिल के किसी प्रकार के कपड़े खरीदने में या इस्तेमाल में हाथ न बंटावें और हरएक कार्यकर्त्ता अपने केन्द्रों के आस-पास की जनता को मिल के बने कपड़ों के बहिष्कार के लिए प्रेरित कर उन कपड़ों के बहिष्कार की और अपने कपड़े की निस्बत अपने पैरों पर खड़े होने, याने खादी द्वारा वस्त्रस्वावलंबन की प्रतिज्ञा करावें और उन्हें वस्त्र-स्वावलंबन में सहयोग दें।

"(२) भोजन-सामग्री में मिलों द्वारा तैयार चावल, आटा, चीनी, तेल और जमाया तेल याने वनस्पति तथा इन चीजों से तैयार सामान का व्यवहार बिहार-खादी-समिति के केन्द्रों पर कतई बन्द किया जाय और कोई भी कार्यकर्त्ता अपने केन्द्रों पर रहते हुए उपरोक्त सामग्री का व्यवहार न करे। ऐसे सामानों की जगह हमें-कुटा चावल, चक्की का आटा, गन्ना और ताड़-गुड़ तथा खांडसारी की चीनी (गुदामी चीनी) घानी तेल तथा विशुद्ध घी और इनसे बने सामानके इस्तेमाल का आग्रह बिहार-खादी-समिति के केन्द्रों पर रखा जाय। साथही जनता से भी उल्लिखित बहिष्कार और व्यवहार की प्रतिज्ञा करायी जाय।

"बिहार-खादी-समिति का संचालक-मंडल आम जनता, भारत-सरकार, बिहार-सरकार, म्युनिसिपैलिटियों, जिलाबोर्डों, स्थानीय बोर्डों तथा ग्रामपंचायतों से अनुरोध करता है कि वे उपर्युक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में बिहार खादी-समिति से सहयोग करें।

"सभी लोगों से निवेदन है कि उपर्युक्त कार्यक्रम में बिहार-खादी-समिति से वे सहयोग करें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आम

श्री कृष्ण चन्द्र शुक्ल, बी.एस.सी. (एग्री). आई.एच.डी.

असिस्टेंट हौर्टिकल्चरिस्ट, बिहार, सबौर

## इतिहास और प्रचार

इस प्रसिद्ध फल की जन्मभूमि भारतवर्ष ही है। पुराने संस्कृत लेखों में आम का वर्णन प्रायः पाया जाता है। चीन और पश्चिम के यात्रियों ने भी इसका वर्णन किया है। भारत वर्ष के बाहर, इसका प्रचार प्रायः १०० वर्ष के भीतर ही की बात है। शुरू में जो फल यहां से नमूने के तौर पर बाहर के देशों में भेजे गये, उन्हीं से वहां वालों ने इसके पौधे तैयार किये; किन्तु अब तो बहुत देशों में इसकी चाह है और वे अब अंटा और चश्मा से तैयार किये हुए पौधे लेने लगे हैं। इवाई, फ्लोरिडा मिश्र देश, पोर्टोरिको और फिलिपाइन्स में ऐसे पौधे भेजे गये हैं। फिलिपाइन्स में तो इस फल की खूब उन्नति हुई है तथा वहाँ भारत के प्रसिद्ध आमों में अनेकों पाये जाते हैं।

## प्रकार

गुणों के अनुसार आम को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) रसदारः—जो चूसकर खाये जाते हैं और जिनमें रेशे भी होते हैं।

(ब) खानेवालेः—इसका गुद्दा पकने पर दृढ़ रहता है और सरलता पूर्वक कटता है। इसमें रेशे नहीं होते।

(स) बीचवालेः—जो चूसकर और काटकर दोनों तरीकों से खाये जाते हैं।

(द) खट्टाः—जो अधिकतर चटनी और आचार के काम लाये जाते हैं।

अधिकतर लोग काटकर खाने वाले आम ही पसन्द करते हैं। अतएव हर बगीचे में ऐसे ही आम होना चाहिये जो काटकर कर खाये जा सकें साथ ही साथ फल मौसम भर मिलते रहें। इसलिये बगीचों के लिये ऐसी जाति के आम चुनना चाहिये जिनमें कुछ शीघ्र ही (मई-जून) पके, कुछ मध्य ऋतु (जुलाई) में पके, कुछ देर से (अगस्त) तथा कुछ अधिक देर से (सितम्बर) पकें।

## आम के प्रयोग

पके हुए फल के सिवा आम के चूर, पापड़, चटनी, अमावट, आम स्क्वैश, हलवा, आम-फूल (आम स्क्वैश तथा दूध) पूड़ी और मुरब्बा बनाकर खाये जाते हैं। बीजू आम चूस कर ही खाये जाते हैं। कहीं कहीं आम की गुठली के भीतरी हिस्से को सुखाकर आँटा बनाकर खाते हैं या इस गुठली के चूर्ण का भात बनाकर खाते हैं।

## बगीचे के लिये जगह का चुनाव

जगह के चुनाव में नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान देना चाहिये।

(१) जलवायु, (२) मिट्टी, (३) सिचाई की सुगमता (४) हाट की निकटता (५) निकट में ईंट के भट्ठे का न होना।

## जलवायु

इनमें तीन चीजें मुख्य हैं। गर्मी, सर्दी, वर्षा और नमी। कोई आम एक स्थान पर अच्छा होना पर भी दूसरे स्थान पर जलवायु के हेर फेर से साधारण हो जाता है। जैसे अलफजो आम; यह बम्बई की ओर बहुत ही अच्छा आम माना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाता है, परन्तु बिहार में उतना अच्छा नहीं होता। आम काफी उँचाई पर भी होता है परन्तु समतल भूमि ही इसके लिये अच्छी होती है। सर्दी, गर्मी के भेद से इसके पकने के समय में हेर फेर हो सकता है। जहाँ पाला अधिक या प्रायः पड़ता है वहां आम के पेड़ नहीं पनप सकते। जून और सितम्बर के बीच ५०" से १००" तक वर्षा होना आम की बगवानी के लिये उत्तम है। जहाँ वर्षा ऋतु में तथा सर्दी के दिनों में पानी अधिक होता है वहाँ आम के वृक्षों में मंजर की जगह शाखें निकलती हैं। आम के लिये आदर्श जलवायु वहीं का है जहाँ वर्षा अच्छी हो और वर्षा के बाद कुछ दिनों तक साफ रहे, नमी कम हो, पाला न पड़े और जहां ऊँचे ऊँचे पहाड़ न हों।

## मिट्टी

आम अनेकों प्रकार की मिट्टी में हो सकता है पर सबसे अच्छी मिट्टी दोमट होती है। दोमट मिट्टी में गहराई होती है जो आम के लिये अच्छी है क्योंकि इसकी जड़ें बहुत दूर तक जाती हैं। बलतर मिट्टी में आम पहले तो फैलता है परन्तु बाद में पेड़ कमजोर हो जाते हैं और उनकी आयु बहुत कम होती है। चिकनी मिट्टी में पानी खूब जमता है जो आम के लिये बहुत हानिकारक है, ऐसी मिट्टी में आम जल्द मर जाते हैं।

## सिंचाई की सुगमता

आम के पौधों में बचपन ही से पानी की जरुरत पड़ती है। पहले पाँच वर्षों तक पानी कम मात्रा में परन्तु अधिक बार देना पड़ता है। बाद में इसके पेड़ ज्यादा पानी खोजते हैं। पाला से अथवा रोगों से बचाने के लिये भी पानी की आवश्यकता होती है। इन सब कारणों से बाग लगाने के पहले सिंचाई का प्रबन्ध कर लेना बहुत जरूरी है।

## हाट की निकटता

आम के फल जल्द खराब हो जाते हैं अतएव यातायात की सुगमता नहीं होने से, दूर के बाजारों में भेजने से फल बहुत खराब हो जाते हैं और उनका मूल्य भी कम हो जाता है। अतएव बाग के निकट हाट होने से लाभ की सम्भावना अधिक रहती हैं।

## ईंटे के भट्ठे का न होना

जाँच से यह पाया गया है कि बगीचे के निकट ईंटे का भट्ठा होने से फलों में काले काले धब्बे पड़ जाते हैं। यह चाहे धूँए के प्रभाव से चाहे जमीन के गर्म हो जाने से होता हो परन्तु फलों के नीचे काले २ धब्बे अवश्य हो जाते हैं और फल सड़ने लगते हैं। अगर भट्ठा बाग के दक्षिण-पश्चिम के कोने पर हो तो यह बीमारी और भी भयानक रूप ले लेती है। छोटे २ पौधों में कोई प्रभाव नहीं होता पाया गया है। परन्तु फल लगना शुरु होते ही यह बीमारी शुरु हो जाती है।

## पौधों का रोपना

लगाने के लिये कलम खरीदने में किफायत नहीं करना चाहिये। बराबर किसी विश्वस्त नर्सरी अथवा सरकारी नर्सरी से पौधे लेना चाहिये। पौधों की जाति में ४५ प्रतिशत जल्द फलने वाले, २० प्रतिशत मध्य ऋतु वाले तथा ३५ प्रतिशत शेष ऋतु की जातियां होनी चाहिये। बरसात शुरु होने के कम से कम एक महीना पहले गड्ढे तैयार कर लेना चाहिये जिससे उनमें काफी धूप लग जाय। गड्ढे ३' गहरे और ३' व्यास के तथा ३० फीट की दूरी पर बनाना आवश्यक है। फिर उन गड्ढों में ८ सेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सड़ा हुआ गोबर, १½-२ सेर हड्डी का चूर, २ सेर नीमक की खल्ली तथा २-३ सेर लकड़ी की राख मिट्टी के साथ खूब मिलाकर भर देनीचाहिये। परन्तु ध्यान रहे कि भरने पर मिट्टी जमीन की सतह से ६ इंच ऊँची हो जिससे बरसात में पानी पड़ने पर मिट्टी बैठकर जमीन की सतह के नीचे न चली जाय नहीं तो पानी लगने से पेड़ मर जायेंगे। उसके बाद उन गड्ढों में पौधों को ठीक से रोप दीजिये।

## रोपने के बाद पौधों की देख रेख

रोपने के बाद पौधों की देख रेख में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। सर्दी के दिनों में उन्हें डमोला वगैरह से छा भी देना पड़ता है। पाला का भय हो तो शाम को उन्हें पटाना अथवा धूँवा देना चाहिये।

## बीच की जमीन का उपयोग

पाँच छः साल तक, जब तक पेड़ बड़े न हो जाय, पौधों की कतारों के बीच की जमीन में कुछ फसल उपजा सकते हैं। इस लिये यह लाभ होता है कि बीच में घास पात नहीं उगने पाते तथा बराबर जोत कोड़ करते रहने से आम के पौधों पर कीड़े मकोड़ों का धावा नहीं होने पाता। इस जमीन में आप शीघ्र होने वाले फल जैसे—पपीता, शरीफा मकोय, अमरूद आदि, साग-सब्जी, सनई, उरद, मँग, सेम, अरहर जैसे दलहन अन्न उपजा सकते हैं।

जब पेड़ काफी बड़े हो जायँ और उनकी डालें पूरे बगीचे में छाँह कर दें तो तब आप बीच की जमीन में अनानास पैदा कर सकते हैं। क्योंकि यह वैसी जगहों में अच्छा होता है जहाँ आधी धूप और आधी छांह हो। परन्तु अनानास के लिये आपको अलग से खाद देना पड़ेगा।

## सिंचाई

आम की सिंचाई की आवश्यकता का अनुमान मिट्टी, जड़ के फैलाव तथा वृक्षों की अवस्था से किया जा सकता है। छोटे पौधों को अधिक सिंचाई की जरूरत होती है। कलमी आमों की अपेक्षा बीजू आम के पेड़ कम पानी खोजते हैं। खासकर वैसे पेड़ जो नर्सरी में अथवा गमलों में उपजाये गये हों, अधिक पानी खोजते हैं।

कलमी आम के पौधों को रोपने के साथ ही पानी देना चाहिये। अगर धूप कड़ी हो अथवा गर्मी अधिक हो तो हर तीसरे दिन पटाना चाहिये। पौधे अगर बरसात में लगाये गये हों तो अगस्त से अक्टूबर तक पानी की आवश्कता नहीं होती। फिर नवम्बर से फरवरी तक हर १० रोज पर पानी चाहिये। ६ महीने के बाद हफ्ते में एक बार पटाने की जरूरत होती है। पाला से बचाने के लिये ६ दिनों के अन्तर पर और मार्च-अप्रेल में १५ दिनों के अन्तर पर पानी देना चाहिये। मई तथा जून में और अधिक पानी की जरुरत पड़ती है। इसलिये उस समय जमीन में कुछ ऐसी फसल लगा दीजिये जिससे जमीन जल्द न सूख जाय। ऐसी हालत में इन दो महीनों में हर हफ्ते पानी देना अच्छा होगा। यह तरीका चार साल तक जारी रखना चाहिये। चौथे साल के बाद पौधों को गर्मी के मौसम में पानी की जरूरत रहती है। गर्मी के दिनों में सुबह और जाड़े में शाम अथवा सुबह में पानी देना चाहिये। मँजर आने के बाद पेड़ों को पानी नहीं देना चाहिये क्योंकि मँजर, पानी देने से गिर जाता है। फल लगने के बाद पानी दिया जा सकता है और देना भी चाहिये। मँजर आने से फल तोड़ने तक २-३ बार सिंचाई होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## सिंचाई का तरीका

पेड़ों के चारो तरफ थल्ला बनाइये और इन थल्लों को दो कतारों के बीच बनी हुई पानी की नाली से मिला दीजिये। इससे लाभ यह होता है कि एक पेड़ की खाद दूसरे में तथा एक की बीमारी दूसरे में नहीं जाती साथ ही सब पेड़ों को समान मात्रा में पानी दिया जा सकता है। थल्ले का घेरा पेड़ के फैलाव पर निर्भर करता है। धड़ के समीप दो फीट जमीन छोड़कर डालों के फैलाव तक थल्ले का घेरा होना चाहिये क्योंकि खाद्य-पदार्थ लेने वाली जड़ें फैलाव के बीचो बीच तक होती हैं।

## खाद

रोपने के समय गड्ढों में देने की खाद की मात्रा ऊपर दी जा चुकी है। बड़े पेड़ों में खाद देने के लिये वृक्ष के चारों तरफ ६" खाई बना लेनी चाहिये। पेड़ की धड़ के पास खाद देना व्यर्थ है बल्कि धड़ से १-२ फीट हटकर खाद देना चाहिये। जैसे जैसे पेड़ का फैलाव बढ़ते जाय वैसे वैसे खाई का घेरा भी बढ़ाते जाना चाहिये।

## फूल और फल

यह तो सभी जानते हैं कि आम एक साल तो खूब फलता है दूसरे साल कम। इसके कई कारण हैं। साधारणतः यह डालों की छँटाई, उपयुक्त और समयानुकूल खाद, कीड़े और बीमारियों से बचाव आदि से रोका जा सकता है।

मंजर आना स्थान तथा आम की जाति पर निर्भर करता है। मद्रास में नवम्बर, बंगाल में जनवरी तथा बिहार एवं संयुक्त प्रान्त में प्रायःफरवरी में मंजर आता है। हर जाति के आमों की फूलने की तिथियों में भी अन्तर :होता है।

## फसल

साधारणतः आम का पेड़ चौथे साल से फलने लगता हैं। जैसे जैसे इसकी उमर बढ़ती जाती है वैसे वैसे फलों की संख्या भी बढ़ती जाती है। चौथे साल में केवल १०-१५ फल छठे साल में ८०-१०० और दसवें साल से प्रायः ४००-५०० फल हर पेड़ से मिलते हैं।

फलों को पूरा पकने के पहले ही तोड़ लेना चाहिये। तोड़ने के समय की मोटी पहचान यह है कि पके हुए फल पेड़ से स्वयं गिरने लगते हैं। फलों के रंग से तोड़ने के समय का अन्दाज लगाया जा सकता है। तोड़ने के समय ध्यान रखना चाहिये कि फलों को किसी तरह चोट न लगे नहीं तो फलों में दाग लग जाते हैं और उनकी कीमत कम हो जाती है। डालों को हिलाकर फलों को गिरना अच्छा नहीं। एक लम्बे बांस में जाल बांध कर फलों को तोड़ना चाहिये जिससे टूटे हुए फल उसी जाली में रहे। पेड़ों पर चढ़कर भी फलों को तोड़ा जा सकता है, परन्तु इस तरह समय अधिक लगता है और यह तरीका खतरनाक भी है। तोड़ने के बाद फलों को किसी ठंढी जगह में रखना चाहिये और फिर किसी सुरक्षित कोठरी में ४" मोटी तह के आम के पत्तों पर, पुवाल अथवा भूसे के भीतर रखने से फल समान भाव से और ५-६ दिनों में पक जाते हैं। आम की पत्तों के भीतर पकने में कुछ देर होती है।

बाहर चालान करने के लिये अभी तक टोकरियों में ही पैक करने की प्रथा है परन्तु इस तरह चोरी अधिक होती है। काठ के बक्सों में हवा आने जाने के लिये सूराख करके, भी आम के फल बाहर भेजे जा सकते हैं परन्तु इस तरीके से कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खर्च अधिक होता है।

प्रान्त के हर जिले में आम के क्षेत्रफल एवं फलकी पैदवार नीचे दी जाती है।

### बिहार प्रान्त में आम का क्षेत्रफल

| जिला | | एकड़ |
|---|---|---|
| पटना | ... | १२,४७३ |
| गया | ... | ६०० |
| शाहाबाद | ... | १,६०० |
| चम्पारन | ... | १०,५०० |
| सारन | ... | ८,००० |
| मुज्जफरपुर | ... | ५०,००० |
| दरभंगा | ... | ६०,००० |
| भागलपुर | ... | ४८,००० |
| मुंगेर | ... | १६,००० |
| पूर्णियाँ | ... | ५,००० |
| सन्थाल परगना | ... | १२० |
| पलामू | ... | २५० |
| हजारीबाग | ... | २०० |
| राँची | ... | २७४ |
| मानभूम | ... | ४०० |
| सिंहभूम | ... | ८०० |

कुल—२,१७, ५१७ एकड़

### फल की पैदवार

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तरी बिहार | ... | लगभग १६७२३४०० | अङ्क |
| दक्षिणी बिहार | ... | लगभग २६७८०००० | अङ्क |

---

हमारे सामने आज जो अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है वह यह है कि हमारी यह ऐतिहासिक नैतिक चेतना जो हमारे जन-जीवन की आजतक प्रधान संचालक रही है, वह आज की परिस्थितियों में हमारे लिये लाभदायक है या नहीं। इस बात से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे देश में इस बारे में दो विचार धाराएँ हैं। कुछ लोगों का विचार है, वर्त्तमान उद्योग प्रधान युग में उस नैतिक चेतना का कोई विशेष मूल्य नहीं, जो मनुष्य को अहिंसा और सेवा एवं त्याग का पाठ पढ़ाती हो। कहा जाता है कि वर्त्तमान प्रतियोगात्मक आर्थिक व्यवस्था में तो स्वार्थसाधना की तीव्रभावना, दूसरों को एक तरफ ठेलकर अपने को आगे बढ़ाने की अदम्य लालसा, इत्यादि इत्यादि गुणों की अत्यन्त आवश्यकता है। अभी कुछ दिनों पूर्व इसी प्रकार के आचरण को हमारे शासक लोग अधिक पसन्द करते थे। औद्योगिक युग की इस उद्दण्ड अहंभावना के मुकाबले में अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना के विनम्रता और विनय के आदर्श को हमें तौलना है और यह तै करना है कि हम अपनी उस ऐतिहासिक नैतिक चेतना को भारत के नवनिर्माण की प्रधान प्रेरक शक्ति बनाएँ अथवा वर्त्तमान के पाश्चात्य सभ्यता के उद्दण्ड अहमत्व को।

—डा० राजेन्द्र प्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बहिष्कार आन्दोलन की सफलता कैसे हो ?

श्री मोतीलाल केजरीवाल

हमारे सर्वोदयवादी नेताओं के ध्यान में अब यह बात आ गयी है कि भोजन और वस्त्र सरीखे पदार्थों को गृह-उद्योग के द्वारा उत्पादन तथा उसका उपभोग करने के लिए मिलों से तैयार चावल, तेल, आटा, दाल, चीनी आदि चीजों का बहिष्कार करना होगा। चरखा-संघ एवं उससे सम्बद्ध संस्थाओं ने इस ओर कदम उठाया भी है। कार्यकर्त्ता प्रतिज्ञा करने लग गये हैं कि वे मिलों से बनी चिजों का व्यवहार न करेंगे। इस आन्दोलन को व्यापक रूप देने के पहले इस बात की जरूरत भी है कि कार्यकर्त्ता अपने निजी जीवन में ग्राम-उद्योग से बनी चीजें ही व्यवहार में लाना शुरू कर दें। यह कर लेने के बाद ही इस आन्दोलन को बड़े पैमाने पर चलाया जाय।

## अंग्रेजी राज्य में ग्रामउद्योग

पर इतना बड़ा आक्रमण कभी नहीं हुआ था जितना कि आज कांग्रेसी राज्य में हो रहा है। सुदूर देहातों में भी छोटे-छोटे इंजिन के द्वारा चलाये जाने वाले "शेलर" "हौलर" और चक्कियां बैठती जा रही हैं। इनके बैठने से ढेंकियों और चक्कियों का गृहउद्योग खतरे में ही नहीं पड़ गया है बल्कि बन्द होता जा रहा है। जिन घरों में दो वर्ष पहले रोज चक्कियों से आटा पिसा जाता था वहां अब मिल की चक्की में आटा पिसा कर खाया जाता है जिस कारण पैसा और स्वास्थ्य दोनों नष्ट हो रहे हैं। देहात की घानियों को तो शहर की तेलकी मिलों ने पहले ही बन्द कर दिया है। जूता एवं चमड़े का अन्य सामान बनाकर जो हरिजन भाई अपना पेट पोसते थे, वे बाटा कम्पनियों की कृपा से बे-रोजगार हो गये। इनमें से अधिकतर तो पहले से ही भूमिहीन थे और अब रोजगार हीन हो गये। देहातों को बचाने के लिए इन मिलों को बन्द करना ही होगा और इसके लिए बहिष्कार आन्दोलन जरूरी है।

## बहिष्कार आन्दोलन की सफलता के लिए निम्नलिखित काम होना चाहिए—

(१) कार्यकर्त्ता इस बात की प्रतिज्ञा लें कि वे हाथ चक्की से पिसा हुआ आटा, ढेकी कुटा चावल, बैलघानी से निकला हुआ तेल, ग्रामउद्योग से बनी चीनी या गुड़ ही इस्तमाल करें।

(२) चरखा-संघ एवं बिहार खादी-समिति की शाखाएं अथवा ग्रामउद्योग को चलाने वाली संस्थाएं अथवा इस काम में रस लेनेवाले कार्यकर्त्ता तिल और सरसों का तेल, आटा, चीनी और चावल तैयार करवायें। ऐसा नहीं होना चाहिए कि इसका मूल्य बहुत ज्यादा पड़ जाय। हां, मूल्य में थोड़ी-सी अधिकता तो अवश्य ही होगी।

(३) गांवों में प्रदर्शनियां खोल-खोलकर मिलकी चीजों की बुराइयों तथा ग्रामउद्योग से बनी चीजों की अच्छाइयों को दिखाया जाय। इसके बारे में आंकड़े और हिसाब भी जनता के सामने रखकर यह समझाया जाय कि बिकने में कुछ अधिक दाम लगने पर भी ग्रामोद्योग से बनी चीजें ही सस्ती पड़ती है।

(४) कृपलानी जी, धीरेन्द्र मजूमदार जी, दादा धर्माधिकारी जी सरीखे नेताओं का अखिल भारतीय दौरा हो तथा अपने-अपने जिले में कार्यकर्त्तागण पैदल अथवा सवारियों पर घूम-घूम कर इस आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए काम करें।

यह सब हो लेने पर मिल से बनी चीजों की बिक्री रोकने के लिए शांतिमय निरोधन (पिकेटिंग) भी किया जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बटन योर कोट

## श्याम कृष्ण

आजकल के जमाने में अंग्रेजी जानना जरूरी है, बिना इसके काम नहीं चलता। जीवन के सभी क्षेत्रों में तो अंग्रेजी की जरूरत पड़ती है, चाहे सप्लाई आफिस से रासनकार्ड बनवाना हो या पोस्ट आफिस में मनीआर्डर लगाना हो। कपड़े के स्पेशल परमिट की दर्खास्त देनी हो या कहीं बाहर से आया हुआ तार पढ़ना हो, बिना अंग्रेजी की शरण गए कैसे काम चल सकता है?

फिर अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाने वाले पण्डितजी के लिये, भले ही वह हिंदी, संस्कृत में पंडितजी हों तो क्या! आखिर नोटिस भी तो सब अंग्रेजी में आती है। रजिस्टर में भी नाम अंग्रेजी में ही लिखे रहते हैं, बिना अंग्रेजी में काम कैसे चल सकता है और लड़के भी तो अक्सर अंग्रेजी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग कक्षा में कर देते हैं। अगर अंग्रेजी न जानने के कारण उनकी बात समझ में न आई तो उनके आगे बेवकूफ बनना पड़ता है, उन पर से रोब उठ जाता है। एक बार जान लेने पर कि पंडितजी अंग्रेजी नहीं जानते, वे और भी अंग्रेजी ही बोलते हैं। इस लिये पण्डितजी के लिए आवश्यक है कि वे अंग्रेजी जानें और समय-समय पर इस बात का प्रमाण लड़कों को देते रहें कि वे अंग्रेजी खूब अच्छी जानते हैं।

इसलिए, जब कभी दर्जे में कोई नोटिस आती है तो वे कभी किसी लड़के से नहीं पढ़वाते, खुद ही चश्मा उतारकर नोटिस में आँखे गड़ा लेते हैं और दस पन्द्रह मिनटों तक गड़ाये रहते हैं। पूरी नोटिस जोर से पढ़ने की हिम्मत तो उन्हें होती नहीं शायद कहीं कोई गलती न हो जाय और लड़के हंस पड़े। और अधिकांश शब्द नोटिस में ऐसे रहते ही हैं। जिनका न तो उन्हें माने मालूम रहता है न उच्चारण ही। अपने से ही पढ़कर उसका भावार्थ बड़ी गर्वीली मुद्रासे जरूर सुना देते हैं। जिस समय वे नोटिस में सिर गड़ाए उन काले टाइप किए हुए अक्षरों-के समुद्र से भावार्थ रूपी अमृत खींच निकालने में दत्तचित रहते हैं, उस समय उनके परिश्रम का ध्यान करके यदि कहीं किसी लड़के ने मदद करने का प्रस्ताव रखा—"पंड़ितजी दीजिए मैं पढ़ दूँ" तो बस कुछ न पूछिए, पंडितजी आग हो जायँगे—क्या तुम समझते हो, मैं अंग्रेजी पढ़ना जानता नहीं। बड़े भारी पढ़वैया के दुम बने हो। शर्म नहीं आती तुम्हें। आदि आदि "विष्णुसहस्र नाम का पाठ आरम्भ हो जायगा, जो बन्द होगा तभी जब घंटा बजकर उनके जपके समाप्त होने के समय की सूचना देगा।

यह दिखलाने के लिए कि वे अंग्रेजी जानते हैं, तबतक क्लास में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी आवश्यक है। इसीलिए कक्षामें आने पर जब सब लड़के किताबें खोल लेते हैं किसी एक लड़के की ओर इशारा करके वे यह कभी नहीं कहते कि पढ़ो। वे हमेशा यही कहते हैं,—रीड!

यदि बगल के दर्जे में कोई अध्यापक नहीं आये हैं और लड़के शोर कर रहे हैं, तो वे दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहेंगे। शट, यानी दरवाजा बन्द कर दो। लेकिन पूरा वाक्य अंग्रेजी में कभी नहीं बोलते। कोई गलती हो ही जाय। शट माने बन्द करना होता है और जब अंग्रेजी का शब्द मालूम है तो क्यों न उसी का प्रयोग किया जाय, लड़के भी जान जांय कि पण्डितजी बिलकुल अंग्रेजी से कोरे नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पण्डितजी अक्सर भाषण भी देते हैं। बोलते तो खैर हिंदी में ही हैं बाध्य होकर लेकिन अंग्रेजी के शब्द, जहाँ तक हो सकता, खूब खुलकर बीच-बीच में ले आते हैं। एक बार भाषण के बीच उन्होंने प्रिमियर शब्द का प्रयोग किया, किन्तु भ्रम-वश कहा उन्होंने प्रीमियम। दूसरे सहकारी अध्यापकों ने पण्डितजी की खिल्ली उड़ानी चाही लेकिन पण्डितजी बेतरह बिगड़ गए। मार पीट तक नौबत आ गई, किसी तरह बीच बिचाव किया गया। सचमुच यह पण्डितजी का खुला अपमान था, ये सब क्या समझते हैं! यही तो कि पण्डितजी अंग्रेजी नहीं जानते। भला यह अपमान कैसे बर्दाश्त किया जा सकता था? पंडितजी का बिगड़ना जरूरी था और फिर 'मेलाप्रापिज्मकी ऐसी गलती तो अंग्रेजी के बड़े बड़े विद्वान् तक कर बैठते हैं, पण्डितजी ने ही कर दी तो इसमें खिल्ली उड़ाने की क्या बात थी।

ऐसे पंडितजी का व्यक्तित्व विलक्षण होगा, इसमें सन्देह नहीं। पढ़ाई आप की जिस उच्चकोटि की होती है, उसका तो कहना ही क्या! किताब आँख के सामने आते ही जिह्वापर साक्षात सरस्वती आ बिराजती हैं, अर्थों और अर्थान्तरों का धारा प्रवाह आरम्भ हो जाता है। विद्यार्थियों की समझ में तो सारी बातें आ ही जाती हैं, भला ऐसा विद्या-चारीश गुरु द्वारा शिक्षा पाने पर भी किसी को असन्तोष रह जाय तो उसके लिये सिवा तुलसीदास की यह उद्धरण देने के और क्या कहा जा सकता है-"मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम।"

× × ×

उनकी कार्य दक्षता का अनुमान इसी से कर लिया जा सकता है कि अन्य अध्यापकों का जहाँ साल भर पढ़ाने पर भी कुछ कोर्स पिछड़ा ही रह जाता है और जिसके लिए उन्हें अतिरिक्त क्लास लेने पड़ते हैं, पंडित जी पूरी किताब बड़ी आसानी से दो बार दुहरा-तिहरा देते हैं और फिर भी साल के अन्त में दस पन्द्रह दिन खाली बच जाते हैं। इसी लिए कि वे कामचोर नहीं नित्य घंटा बजते ही समय से आते हैं और घंटा समाप्त होने पर ही क्लास छोड़ देते हैं।

जब दिन खाली बच जाते हैं तो उनमें क्या हो? लड़कों की परीक्षा ली जाती है। प्रश्न भी पंडित जी बड़ा डपट कर पूछते हैं। एक बार किसी साहसी लड़के ने जब यह कहा कि पंडित आप इतना डपट कर बोलते हैं तो आती हुई बात भी भूल जाती है तब पंडित जी बड़े बिगड़े और उसे बेंच पर खड़ा कर दिया।

प्रश्न भी वे ऐसे करते हैं, जो विद्यार्थियों की बुद्धि और उसके अध्ययन का बिलकुल ठीक-ठीक मान स्थिर कर दे। यदि तुलसीदास, जिनसे उन्हें विशेष प्रेम है तो उन्हें कुछ पूछना है तो किसी एक लड़के की ओर इशारा करके कहेंगे यू स्टैन्ड अप। एक्सप्लेन विथ रिफरेन्स टू कानटेक्स्क-"धन्य धन्य धुनि मंगल मूला।"

बस सारी कलई खुल जाती है। ऐसी चौपाई रामायण में जरा बहुत हेर फेर-के साथ न जाने कितने मंगल अवसरों पर आई है, अब जिसका अध्ययन होगा वही तो ठीक-ठीक रिफरेन्स बतला सकता है। अधिकतर कोई भी लड़का ठीक उत्तर नहीं दे पाता और पंडित जी अपनी सफलता पर थोड़ा और तनते हुए लड़कों के निकम्मेपन पर एक लेक्चर दे जाते हैं। कोई ऐसा प्रश्न ढूँढ निकालना, जिसका उत्तर कोई लड़का न दे सके पंडित जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी सफलता समझते हैं। यदि लड़कों ने ठीक उत्तर दे दिया तो उन्हें कभी आत्म सन्तोष नहीं होता है।

× × ×

अक्सर ऐसा होता है कि किसी लड़के से कोई प्रश्न पूछा गया और वह चुपचाप खड़ा हो गया इतने में पीछे से कुछ मुन्न सी आवाज होती है और लड़का जवाब दे देता है। पंडित जी आगे-पीछे तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हैं और पूछते हैं कि वायरलेस पहुंचेउलेस। (यह किसने वायरलेस पहुंचाया) यही पंडित जी की मातृ भाषा है और कभी मातृभाषा का भ्रम उन्हें अपनी भाषा में बोलने के लिए बाध्य करता है। जब जंगल का राजा बना दुम कटा सियार भी अपनी मातृ भाषा में बोलने का लोभ न संवरण कर सका तब फिर पंडित जी तो मनुष्य ही हैं और प्रगाढ़ विद्वान।

लेकिन न जाने क्यों पंडित जी से लोग नाराज रहते हैं। यहाँ तक कि कुछ लोग तो उन्हें इतना मनहूस समझते हैं कि उनका दर्शन होना तो महा अपशकुन समझते ही है, यदि किसी ने उनका नाम भी ले लिया तो किसी अनिष्ट का होना अनिवार्य समझ लेते हैं। पंडित जी भी यह बात जानते हैं कि उनके विषय में लोगों की ऐसी धारणा है यद्यपि स्वयं वे इस बात से बिबकुल सहमत नहीं। अक्सर बात चलने पर वे इस बात का चैलेन्ज देते है कि कोई भी मेरे विषय में प्रचलित इन प्रवादों को सिद्ध कर दे तो वह जो कहे हार जाऊँ। लेकिन आज-तक किसी ने यह चैलेन्ज स्वीकार नहीं किया। यद्यपि जो भी उनके संपर्क में आया उसे अनिवार्य रूप से इन प्रवादों के सत्य का अनुमान होकर ही रहा है।

पंडितजी कुछ होमिहोपैथिक डाक्टरी भी करते हैं और सुबह शाम निःशुल्क दवा बाँटते हैं। यहाँ भी आप अपनी मौलिक प्रतिभाका उपयोग करते नहीं चूकते। किसी रोगीको उसके रोगके निदानके अनुसार और उनके डाक्टरी विश्लेषणके अनुसार सल्फर टु हन्ड्रेड देना था। किन्तु दवा इत्तिफाकसे मौजूद न थी। आपने फौरन सल्फर थर्टीकी सात खुराक उसके मुँह में डाल दी। सात गुने तीस··· दो सौ दस, कोई बात नहीं दस ज्यादा हो गया तो क्या हज है!

क्या इस प्रकारकी मौलिक औषधि उद्भावना-ओंके लिए उनका विशेष सम्मान न होना चाहिए?

लेकिन लोगोंकी समझमें ये बातें आती ही नहीं। लोग उन्हें सम्मानकी दृष्टिसे देखते हैं, मुझे कहते हैं पण्डितजी, क्योंकि नाइन्थकी वार्षिक परीक्षाकी कापी मेरे पास रहती है। जहाँ टेन्थमें पहुँचे, मुझे कहने लगते हैं पंडित क्योंकि टेन्थकी कापी तो बोर्डमें चली जाती है और जब टेन्थ पास कर लेते हैं तब तो कहते हैं क्यों बे पंडितवा।

* * *

परीक्षाकी कापियां जांचनेका भी पंडितजीका बिलकुल निराला सिद्धान्त है, इतने उदार और मुक्त हस्त होकर आप नंबर लुटाते हैं, जिसकी समानता दानी हरिश्चन्द्र और दानी कर्ण भी क्या खा कर करेंगे। किस प्रश्नमें कुल कितने नंबर हैं इसका बयान रखनेकी आप कोई आवश्यकता नहीं समझते कोई नम्बरके गुलाम तो पंडितजी हैं नहीं, गुलाम अपने मनके हैं। जिस प्रश्नमें जितना मन आया उतने नंबर देते चले जाते हैं। अंतमें पूरी कापी जांच चुकने पर, जब नंबर जोड़ते हैं। तो जहाँ पूर्णाङ्क पचास है वहाँ प्राप्त अंकोंका जोड़ आता है छप्पन। लाचारी दर्ज दिए नम्बर काट कर उन्हें कुछ कम करते हैं और बड़े अफसोसके साथ जोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पचासके नीचे ले आते हैं। छियालिस सैंतालिसके करीब।

'ऐसो को उदार जग मांही।

* * *

एक और भी समस्या है, जिसका बड़ा ही सुगम समाधान पंडितजीने कर लिया है और जिसके लिए समस्त परीक्षक समाजको पंडितजीका कृतज्ञ ही होना चाहिए। अक्सर कापियां लौटाने के लिए एक तिथि निश्चित होती है। उस तिथि तक कापियां न लौटाने पर प्रतिदिनकी देरके हिसाबसे रोज जुर्माना होता है। ऐसा तो प्रायः हो जाता है कि तिथि बिलकुल समीप आ जाती है और कापियां बहुत-सी बिना जांची रह जाती है परीक्षक लोग जमीन आसमान एक करके रात-रात भर जागकर कापियां जाँचते हैं और ठीक समय पर वापिस करते हैं। किन्तु पण्डितजीने जिस विधिका अनुसंधान किया है उससे हजार पांच मिनिटमें जंचकर समाप्त हो जाती हैं।

पंडितजी कापियोंका थोक हाथमें लेकर खड़े हो जाते हैं और उसे आसमानमें उछाल देते हैं! कापियां फरफराती हुई ऊपर जाती हैं! फर्सपर गिरते ही उस लड़केका भाग्य निर्णय हो गया जिसकी कापी चित गिरी वह पास और जिसकी पट गिरी वह फेल।

यहाँ यह भी स्मरण दिला देना आवश्यक है कि नंबर पंडितजी हमेशा अंग्रेजीमें ही देते हैं और दस्त-खत भी अँग्रेजीमें करते हैं। हिन्दीमें कदापि नहीं।

हाँ पंडितजीकी अंग्रेजीकी बात तो भूल ही गई थी।

एकदिन पडितजी कक्षामें आए, कुछ प्रसन्न मुख, मुस्कुराते हुए। जानते थे कि आज एक ऐसा अस्त्र लेकर आया हूँ जिसका कोई जवाब लड़कों पास नहीं और मेरा रोब जमकर ही रहेगा। कुर्सी पर तन कर बैठ गए, लड़कोंसे किताबें खुलवाई। फिर कुछ सोचते हुए बोले—बहुत अंग्रेजीदां की दुम तुम लोग बनते हो। टेन्थ क्लासमें पढ़ते हो एक मामूली सा ट्रांसलेशन है, बतलाओ तो मैं जानूँ। कोटमें बटन लगाओ कि अंग्रेजी क्या होती है?

सवाल सचमुच टेढ़ा था। आखिर इसकी अंग्रेजी क्या हो सकती है। दो चार आगे बैठनेवाले लड़कोंने जिनमें मैं भी था हिम्मत की। किसी ने कहा— 'क्लोज योर बटन्स, 'फासेन योर बटन्स किसीने क्लोज योर कोट वाई बटन्स आदि आदि किन्तु पंडितजी सिर्फ सिरके झटकेसे सबके गलत होनेका निर्देश करते रहे। सबके उत्तर गलत आनेपर पंडितजीका चेहरा विजयके उल्लाससे खिल उठा। वे लड़कों के अज्ञानपर कुछ उपदेश देने ही वाले थे कि पिछली बैंचसे एक लड़केने कहा—'पंडितजी मैं बताऊँ?

'बताओ—पंडितजी ने डपटकर बोले। 'बटन योर कोट।

उत्तर ठीक था। पंडितजीका चेहरा उतर गया बिलकुल हतप्रभसे होते हुए बोले—हाँ यह ठीक है। कैसे मालूम हुआ तुमको?

सवेरे आफिसमें अंग्रेजीवाले मास्टर साहब जब आपको यह बतला रहे थे तो मैं भी वहीं खड़ा था।

पंडितजीके मुँहसे इतना ही निकल सका—ह्यो न तबै, थे न तभी।

दर्जा सारा ठहाकेसे गूंज उठा और पंडितजी! उनका टमाटरकी तरह फूलो हुआ चेहरा चुबुकर कुहाडा हो गया।

बर्बल नाउन और जीरंडका अंतर रटते रटते तबियत तंग आ गई किन्तु वह समझ में न आया लेकिन यह बात स्मृति पटलपर जिंदगी भरके लिए पत्थर की लीक हो गई कि कोट में बटन लगाओ को अंग्रेजी होती है बटन योर कोट। (तरंग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# भोला प्रश्न

श्री प्रताप 'साहित्यालंकार'

"हाँ, स्वराज्य के बाद क्या होगा ?"

"स्वराज्य के बाद सुराज्य होगा। अङ्गरेजी सरकार चली जायगी और हमलोग सरकारी तख्त पर बैठेंगे। कोई भी भूखा नहीं रहेगा। सभी को कपड़े मिलेंगे। दवा-दारू और पढ़ाने-लिखाने का अच्छा इन्तजाम रहेगा। सभी सुख से रहेंगे।" —प्रफुल्ल ने समझाया।

"तब हम लोग तुम्हारा साथ देंगे। तुम जो भी कहोगे उसे मानेंगे।" —जेठा मांझी ने भी कहा और अन्य लोगों ने भी सिर हिला समर्थन किया।

सिनरी जोला संथाल परगने के अन्धकारपूर्ण कोने में अवस्थित है — पहाड़ की लम्बी-लम्बी चोटियों से घिरा और जंगली पेड़ों से आच्छादित। वहां दिन में भी रात का भान होता। कहीं बाघ दहाड़ता तो कहीं भालू विचरता। इन्सान कहलाने वालों का वहां आवागमन प्रायः कम होता। वर्ष में इक्के-दुक्के शिकारी ही वहां शिकार को पहुंचते। वह संथालों की बस्ती थी।

तेरह अगस्त को वहां से बहुत बड़ा जुलूस प्रफुल्ल के नेतृत्व में निकला। पास के थाने को जुलूस ने घेर लिया। दरोगा ने प्रफुल्ल को कुछ बातें करने के लिए बुलाया और उसे कमरे में बन्द कर दिया। भीड़ में खलबली मच गयी। भीड़ आगे बढ़ी। दरोगा के रोकने पर भी नहीं रुकी। पुलिस के सशस्त्र सिपाहियों ने गोलियां चलाईं। भीड़ बौखला उठी। इधर से भी लोग ईंट-पत्थर तथा तीर चलाने लगे। लगभग दो घन्टे तक संघर्ष होता रहा। पुलिसवालों के कारतूस खतम हो गए। आखिर उन लोगों को हार कर कमरे में छुप जाना पड़ा। भीड़ ने केवाड़ को तोड़ प्रफुल्ल को निकाला और थाने में आग लगा दी।

पीछे प्रफुल्ल गिरफ्तार हो गया। फिर भी सिनरी जोला वालों की हिम्मत कम न हुई, क्योंकि उसका नेतृत्व करने को जेठा मांझी बाहर था।

एक जेठा मांझी को गिरफ्तार करने के लिए एक दर्जन सैनिक मोटर लारी पर आ रहे थे। इसकी खबर पहले ही उनलोगों को लग चुकी थी। गांव में प्रवेश करने के पहले एक भंयकर जंगल पार करना पड़ता था और राह बहुत संकीर्ण एवं बिहड़ थीं। मोड़ पर गांव वालों ने पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े जमा कर दिए थे। मोटर लारी इधर बढ़ी और उधर भी कुछ नवजवानों ने सड़क पर पत्थर जमाकर दिया। सड़क के किनारे-किनारे बहुत से नवजवान छुपे थे। मोटर मोड़ पर पहुंची और रुक गई। फिर क्या था ? जंगलों की आड़ से बाणों की वर्षा होने लगी। सैनिकों ने भी गोली चलाईं, मगर उससे संथाल-युवकों का साहस कम नहीं हुआ। वे लोग जी जान से भागे। मोटर तेजी से भागी जा रही थी। वह पत्थरों के ढेर से टकरा कर उलट गई और चूर-चूर हो गई। कुछ सैनिक मरे और कुछ अधमरे हो गए। जंगल से युवकों का एक जत्था निकला और बचे हुए अधमरे सैनिकों को अपने तीरों का निशाना बनाया।

यह खबर सुनते ही जिला सरकार आग बबूला हो उठी। जिला अफसर ने एक रात ससैन्य उस गांव को घेर लिया, घरों में आग लगा दी और लोगों को पकड़-पकड़ उस धधकती ज्वाला में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


फेंकवाना शुरु कर दिया। गाँव में हलचल मच गई और बूढ़े-बच्चे एवं औरतों के आर्त स्वर से चारों दिशाएं गूंज उठीं। बहुत से लोग जंगल की ओर भागे, मगर वहां भी सैनिक अपनी राइफलें संभाले तैयार थे। जेठा मांझी अपने चार-पांच साथियों के साथ पकड़ा गया। उन पर कुंदों की खूब मार पड़ी। वे लोग बेहोश हो गए। जिला अफसर ने उन लोगों को मोटर में लदवाया और शहर की ओर रवाना हो गया।

दो साथी सहित जेठा को फांसी की सजा मिली और अन्य तीनों को आजन्म करावास।

समय अपनी लिक पर बढ़ता रहा।

अंग्रेजीशाही के क्रूर दमन ने जनता की भड़कती आग को दबा दिया। फिर भी ब्रिटिश शासकों की बेकली कम नहीं हुई। आखिर एक दिन वे कांग्रेस के हाथ में शासन की बागडोर सौंप समुद्र-पार विदा हो गये।

आजादी की दूसरी साल गिरह मनाई जा चुकी थी। एक दिन प्रफुल्ल सिनरी जोला पहुंचा। वह राज्य के मंत्री का सभासचिव था। अब भी लोग अपने-अपने घर नहीं बना सके थे और छोटे-छोटे झोपड़ों में गुजर कर रहे थे। मवेशियों को बेच-बेच कर उन लोगों ने पुलिस तथा परगनैत की जेब गरम की थी तब कहीं उनलोगों की जान बख्शी गई। घर में एक दाना नहीं—टट में दो पैसे नहीं। फिर खेती किस तरह हो? सारी जमीन परती पड़ी थी। अन्न-वस्त्र का अभाव और ऊपर से मलेरिया का प्रकोप। गांव वीरान बना था। वहां का हालत देख प्रफुल्ल कांप उठा।

धीरे-धीरे प्रफुल्ल के पास नरकंकालों का मेला सा जुड़ गया। जेठा मांझी की पत्नी भी वहां पहुंची। उसकी गोद में एक दुबली-पतली लड़की थी। उस लड़की की गर्दन पर एक भयंकर घाव था जिससे सड़ांध की बदबू आरही थी। पीप सूख कर उसकी गर्दन के आसपास मोटी चादर-सा बन गया था। उसकी देह पर मक्खियों का झुंड पड़ रहा था। तेलहीन रूखे-सुखे उलझे बाल, धंसी आंखों में कीचड़ और चेहरे पर मुर्दनी। प्रफुल्ल की दृष्टि जेठा की पत्नी पर पड़ी। उसने उसे पास बुलाया। वह अपने मैले-कुचैले कपड़े में लिपटी आगे बढ़ी। प्रफुल्ल ने पूछा—"कैसे रहती हो बहन?"

"देखते ही हो।" जेठा की पत्नी ने कहा। वह कुछ देर तक चुप रही। फिर बोली—"लोग कहते हैं—तुमने जैसा कहा था वैसा ही हुआ, मगर सुराज्य कब होगा—जब रोटी, कपड़ा, दवा आदि के लिए हमें तरसना नहीं पड़ेगा?"

प्रफुल्ल सिर झुका कुछ सोचने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूंजीपति और साम्प्रदायिक दल राष्ट्र के दुश्मन

श्री रामचरित्र सिंह

हमारे देश का आम चुनाव समाप्त हो गया। उसके परिणाम भी निकल चुके हैं। इस चुनाव के अखाड़े में अनेक दलों ने इस बार अपनी शक्ति की आजमाइश कर ली। प्रजातंत्र में छोटे बड़े राजनीतिक दलों का रहना स्वाभाविक है और आवश्यक भी; किन्तु इस चुनाव में कुछ ऐसे दृश्य सामने आये हैं जो हमारी आखें खोल देने को काफी हैं। और वे हैं साम्प्रदायिक दलों एवं पूंजीपतियों के कारनामें।

सूक्ष्म दृष्टि से छानबीन करने पर राजनैतिक दलों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक समूह होगा प्रगतिशील दलों का और दूसरा होगा प्रतिक्रियावादी दलों का। दुर्बल से दुर्बल प्रगतिशील दल के विरोध से जहाँ हमारे राष्ट्र को थोड़ी बहुत प्रगति की आशा है वहाँ इन प्रतिक्रियावादी दलों से केवल खतरा ही खतरा है।

जब तक हमारा देश स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों से संघर्ष करता रहा, इन प्रगति विरोधी संगठनों एवं इसके नेताओं का प्रधान कार्य धर्म, संस्कृति एवं राजभक्ति की आड़में स्वातंत्र्ययुद्ध का विरोध करना तथा तरह तरह की अड़चनें पैदा करना ही था। स्वतंत्र हो चुकने के बाद भी ये हमारे देशको आगे बढ़ने देना नहीं चाहते। आज तो देश को आगे बढ़ने देने के बदले ढकेल कर पीछे ले जाने में ही ये अपनी सारी शक्ति लगा रहे हैं तथा प्रगतिशील तत्वों को निगल जाने को सुरसा की भांति मुँह बाये इधर उधर दौड़ लगा रहे हैं। राजनीति का एक साधारण विद्यार्थी भी आसानी से समझता है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दू महासभा, गणतंत्र परिषद, रामराज्य परिषद, जन संघ आदि अनेक दल उन्हीं प्रगति विरोधी-दल-समूह में हैं तथा एक ही दैत्य के भिन्न भिन्न रूप हैं। इसे आप यों भी समझ सकते हैं कि इन संगठनों के पीछे प्राचीन राजतंत्र के खंडहर राजा, महाराजा, बड़े बड़े जमीन्दार एवं चोरबाजारी करनेवाले सेठ साहूकार हैं जो नकाबपोश होकर भारतीयता, हिन्दुत्व, हिन्दू संस्कृति, भारतीय सभ्यता आदि बड़े २ शब्दों का जाल फेंककर भारतीय जनता को उसमें फांसने का कुत्सित षड़यंत्र कर रहे हैं। कहीं हिन्दू कोड बिल को लेकर तिल का ताड़ बनाया जा रहा है तो कहीं गोवध के प्रश्न को लेकर आकाश पाताल के कुलाबे एक किये जा रहे हैं। इसी प्रकार कहीं कुछ तो कहीं कुछ। और आश्चर्य की बात तो यह है कि लड़ाई के जमाने में गोवध से नफा उठाने वाले भी मौका देखकर कांग्रेस को बदनाम करने के लिए चौकड़ियाँ भर रहे हैं गौ की आड़ में।

वैदिक युग से लेकर इस युग के पहले तक की कथाओं को आप देख जायँ, दैत्यों की व्यक्तिगत हस्ती मिलेगी तथा उनका संगठन भी। किन्तु, अब दैत्यों ने सुविधा के लिए केवल संगठनों की ही खाल-ओढ़ रखी है। प्रजातंत्र में ये अपना कल्याण नहीं देखते, इसलिए ये हमेशा प्रजातंत्र के बिरुद्ध प्रचार करते हैं, उसका मखौल उड़ाते हैं तथा उसे असफल बनाने के लिए षड़यंत्र किया करते हैं। हिन्दू संस्कृति एवं हिन्दू संगठन की रक्षा की ओट में पूंजीवादी धरातल पर सम्प्रदायवादी तानाशाही की स्थापना ही इनका लक्ष्य है, ऐसा मालूम पड़ता है।

पिछले कुछ वर्षों में संघ एवं उसके अन्य साथी संगठनों ने—जो सबके सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं—जो कुछ किया और उसका जो परिणाम निकला उसे जब हम देखते हैं तो उनके तथाकथित पवित्र उद्देश्य तथा उनके कार्यकलापों में किसी प्रकार का मेल बैठता नजर नहीं आता है। इन प्रगति विरोधी संगठनों ने जातीय महानता तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के नाम पर जिस साम्प्रदायिक वैमनस्य, घृणा और विद्वेष का वातावरण पैदा किया और उसे जोरों से फैलाया कि महात्मा गांधी की हत्या उसीका परिणाम निकला। देश के दुर्भाग्य से ही ये अपना कल्याण समझते हैं। ऐसा मानकर उनके किये गये प्रयत्नों के फलस्वरूप लोगों के हृदय में प्रतिहिंसा, रक्तपिपासा, घृणा और अत्याचार का भयंकर ज्वालामुखी फूट पड़ा। उसका फल यह निकला कि अपने प्रकाश पुंज से विश्व को प्रकाशित करने वाले, आज के इस हाहाकार के युग में किंकर्त्तव्य विमूढ़ विश्व को अहिंसा धर्म का पाठ पढ़ाने वाले तथा प्रतिहिंसा की ज्वाला में झुलसते हुए मानव समाज को शान्ति का अमृत पिलाने वाले गाँधी की हत्या एक नराधम द्वारा हुई। भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति एवं प्रतीक गांधी को भारतीय राष्ट्र की विकृति एवं कुसंस्कृति ने गोलियों का उपहार दिया हिन्दुत्व एवं संस्कृति रक्षा के नाम पर

आप उस दुर्घटना पर गंभीरता पूर्वक-विचार करेंगे तो आप देखेंगे कि वह हत्यारा एक व्यक्ति नहीं, कुछ लोगों का एक गिरोह भी नहीं बल्कि एक देश व्यापी दूषित विचारधारा और षड़यन्त्र का प्रतीक था।

इन दलों की संस्कृति-रक्षा के नारे की तह में एक भीषण पूंजीवादी और राजनीतिक दुरभिसन्धि है। इस फासिस्टवादी गुण्डई से भरे राजनीतिक षड़यंत्र को संस्कृति एवं धर्म की चादर में लपेटकर गुप्त रखने तथा लोगों की आंखों में धूल झोंकने क कोशिश पहले से ही की जा रही है। किन्तु, गांधी जी की हत्या एवं उसके बाद भी देशके गण्यमान्य नेताओं को बार बार दी गयी जान मारने की धमकियों तथा षड़यंत्रों के भण्डारफोड़ ने राष्ट्र के इन नकाबपोश दुश्मनों को प्रकाश में ला छोड़ा और उन्हें निरावरण भी कर दिया ताकि उन्हें हम अच्छी तरह देख और पहचान सकें।

गत चुनाव में भी इन प्रतिक्रियावादी दलों ने जो कुछ किया उसके पीछे राष्ट्र के उन छद्मवेशी शत्रुओं के-कहा जाता है कि—करोड़ों रुपये और साधन थे जिन में अनेकों ने लड़ाई के जमाने में गो मांस सप्लाई करने का ठीका लेकर लाखों रुपये कमाये और उसी पैसे से फिर गोवध निषेध के आन्दोलनकारियों की सहायता भी की तथा कांग्रेस को बदनाम करने की पूरी कोशिश की, जिन्होंने संकट के जमाने में अपने देश के भूखे और नंगे लोगों की कुछ भी परवा न कर भारत से चो चोरी अन्न और कपड़ा पाकिस्तान भेजकर लाखों और करोड़ों रुपये कमाये तथा फिर पीछे हिन्दुत्व का नारा लगाते हुए पाकिस्तान पर आक्रमण न करने के कारण कांग्रेसी सरकार को हिन्दू जनता के बीच अप्रतिष्ठित करने की निरतोड़ कोशिश भी की, जिन्होंने सरकारी पदाधिकारियों को अपने पैसे से एक तरफ भ्रष्ट भी किया और दूसरी ओर उनकी भ्रष्टता का प्रचार भी किया कि कांग्रेसी राज में इतनी भ्रष्टता है जितनी पहले कभी न थी, जिन्होंने अपने लाभ के लिए कांग्रेसी मिनिस्टरों एवं कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओं की नैतिकता को खरीदने का नीचतापूर्ण ही प्रयत्न किया, जिनका मूलसिद्धान्त पैसा बाद है और जो पैसा के बल पर मौका आने पर कांग्रेसी, समाजवादी और साम्यवादी तक बन जाते हैं, इनकम टैक्स और सेलटैक्स भी जिनकी आमदनी का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जरिया है किन्तु फिर भी इन कानूनों के लिए जो सरकार को पानी पी पी कर कोसते भी हैं। ये एक ओर धर्म का गला घोंटते हैं और दूसरी ओर धर्म्म की ही दुहाई भी देते हैं ताकि लोग उनके वास्तविक रूप के बदले ऊपरी धार्मिक चादर को ही देख सकें।

ये प्रगति के शत्रु-दल ऊपर से तो शान्ति और न्यायपूर्ण तरीके अपनाने का ढोंग करते हैं लेकिन भीतर भीतर सभी प्रगति विरोधी तत्वों को एकत्र कर हमारे राष्ट्र की उन्नति के मार्ग को ही अवरुद्ध कर देने को छान पगहा तोड़ रहे हैं। आप जरा गहरा उतर कर देखेंगे तो पता चलेगा कि इस साम्प्रदायिक मोर्चे के पीछे हमारे राष्ट्र के शत्रुओं की बड़ी लम्बी कतार है। बृटिश साम्राज्यवाद के भारत स्थित एजेन्ट, प्रतिक्रियावादी राजेमहाराजे, बड़े बड़े जमींदार, पूंजीपति, सभी प्रकार के स्थिर स्वार्थ वाले, चोर बाजारी करके समाज का गला घोंटने वाले तुन्दिल सेठ साहूकार, पुरानी परम्परा के पोषक सरकारी कर्मचारी तथा महंत-पुजारी आदि अपना अपना सिक्का जमाये रखने के लिये संकृस्ति एवं धर्म्म की आड़ में मोर्चा कायम करने वाले देश की प्रगति के विरोधियों का पोषण करते हैं। और, ये विभिन्न रूपों में रंगबिरंग के झण्डों के सहारे प्रगति विरोधी आग भड़काते चलते हैं ताकि सभी प्रतिक्रियावादी शक्तियां एक बार 'हू हू' कर उठें और प्रगति शील तत्वों का खात्मा कर निश्चिंत हो जाय।

इस आम चुनाव में धन्नासेठ लोगों ने देश के भविष्य के साथ कैसा भयंकर नाटक खेलने का प्रयत्न किया, सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं। एक तरफ तो इन लोगों ने कांग्रेस के उम्मीदवारों को पैसे दिये कांग्रेस-भक्ति दिखलाने के लिए और दूसरी ओर कांग्रेस विरोधियों को पैसे दिये कांग्रेस को हराने के लिए। कहीं कहीं अपने में से भी एक दो को खड़ा कर दिया स्वतंत्र उम्मीदवार बनाकर ताकि कांग्रेस को मिलने वाले वोट बँट जायँ और कांग्रेस अवश्य हार जाय। अन्य साधारण लोगों को तो छोड़िये, देश के प्राण स्वरूप पण्डित जवाहर लाल नेहरू को हराने के लिये—कहा जाता है कि—सेठों ने दो करोड़ से अधिक रुपये खर्च किये ताकि नेहरू हार जायँ तो सरकार को उंगली के इशारे पर ये नचाते रहें। इन लोगों ने कांग्रेस को रुपये दिये, जन संघ को रुपये दिये, राम राज्य परिषद् को रुपये दिये, प्रजापार्टी को रुपये दिये, समाजवादी दल को रुपये दिये और सब से बड़ी चीज जो इन्हों ने दी वह यह है कि सब को धोखा दिया। और यह भी निश्चित है कि सरकार से लेकर देश के भविष्य का सोचने वाली सभी राजनीतिक पार्टियों तक को ये भारतीय यहूदी सदैव धोखा देते ही रहेंगे।

लेकिन हम देख रहे हैं कि इतना होने पर भी इन को रोकने के लिये कहीं से कुछ हो नहीं रहा है। न तो सरकार ही इस ओर ध्यान दे रही है और न अन्य प्रगतिशील संगठन वाले ही इस दिशा में कोई ठोस कदम उठा रहे हैं। सम्प्रदायवाद और प्रतिक्रियावाद को खुश करने की सरकार की जिस अन्धी नीति के फलस्वरूप गांधी जी की हत्या संभव हो सकी थी, वह आज भी ज्यों की त्यों अपनी राह चल रही है। फलस्वरूप देश के जिस दूषित वातावरण, जिस प्रतिक्रियावादी मनोवृति एवं सम्प्रदायवाद ने एक गोडसे को पैदा किया, उसके साथियों को तैयार किया था, वह हजारों और लाखों गोडसे को उत्पन्न करने का मनसूबा आज भी रखता ही है। यदि कांग्रेस वाले इस ओर ध्यान दिये होते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बहुत कुछ सफलता उन्हें मिलती चूंकि कांग्रेस ही देश की सब से अधिक शक्तिशाली संस्था है। किंतु कांग्रेस वाले को अपनी पिछली तपस्या के नोट भुनाने, आपस में लड़ने तथा कांग्रेस की प्रतिष्ठा को धूल में मिलाने जैसे 'शुभकार्यों' से फुर्सत ही नहीं मिल सकी और न अभी ही मिल रही है जिससे वे इस ओर ध्यान दे सकें।

देश को प्रगति के पथ पर ले चलने का मनसूबा रखने वाले सभी संगठनों को कम से कम इस विषय में एक मत होकर साम्प्रदायिकता एवं प्रतिगामिता के विष से पूरित सभी आस्तीन के सांप संगठनों को सार्वजनिक जीवन से दूर करके दम लेना है। लेकिन इन सभी आफतों की जड़ हैं देश के स्थिर स्वार्थ वाले पूंजीपति, जमींदार एवं सब से बढ़ कर हैं सेठसाहूकार लोग जो देश की हालत बदतर होने में ही अपना कल्याण समझते हैं और जिनकी माया बड़ी विचित्र है। नेहरु जी एवं राष्ट्र के अन्य प्रगतिशील कर्णधार यदि राष्ट्र को जल्द मजबूत और दुरुस्त बनाना चाहते हैं तो उन्हें देश के इन भयंकर दुश्मनों की ओर ध्यान देना चाहिये तथा प्रगति विरोधी कीटाणुओं के मूल स्रोत को ही खतम करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं किया गया तो ये लोग अपने पैसे के लिये राष्ट्र की क्या क्या दुर्गति करेंगे, कहना कठिन है। कुछ वर्षों के भीतर छोटी बड़ी अनेक घटनाएँ राष्ट्र के जीवन पर मँड़राने वाली भावी विपत्तियों की ओर आज से पहले ही संकेत कर चुकी हैं। और सब के पीछे ये ही लोग हैं।

पुराणों में दानवी माया प्रसिद्ध है। ये भिन्न भिन्न संगठन क्या हैं, भिन्न भिन्न रंग के बोतलों में एक ही शराब हैं। ये दानव और भी कितने रूपों में हमारे सामने आयेंगे, कहना मुश्किल है। अतः समाज के प्रत्येक जागरुक व्यक्ति एवं संस्था का यह कर्त्तव्य है कि स्वयं सचेत और मुस्तैद तो हो ही साथ ही जनता को भी वास्तविकता का ज्ञान करा दें ताकि वह राष्ट्र के इन नकाबपोश दुश्मनों को अच्छी तरह पहचान ले और धोखें में आने से बचे।

---

स्वतंत्र भारत के
प्रथम भारतीय प्रधान सेनापति
जेनेरल के० एम० करियप्पा

[ सम्पादक—'सण्डे प्रेस' के सौजन्य से ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मिट्टी किन-किन रोगों में लाभदायक है ?

श्री युगलकिशोर चौधरी

आज संसार में लाखों तरह की प्रकृति-विरुद्ध औषधियां प्रचलित हैं, जो भिन्न भिन्न रोगों की चिकित्सा में काम आ रही हैं। लोग बड़े चाव से उनका उपयोग करते हैं, परन्तु खेद है कि उन प्रकृति-विरुद्ध औषधियों से जनसाधारण को लाभ नहीं होता, उलटे बड़ा ही नुकसान हो रहा है। हम लोग ईश्वर और प्रकृति से अधिक बुद्धिमान बनने की चेष्टा कर रहे हैं। जिस प्रकार अपनी नाभी में बहुमूल्य सुगंधित कस्तूरी रखते हुए भी पथभ्रष्ट होकर मृग इधर-उधर भटकता है और परिणाम में दुःख भोगता है, उसी तरह आज भूले हुए मानव-समाज को दुःख हो रहा है। मिट्टी जैसी सुलभ, सस्ती, अचूक दवा पास होते हुए भी हम लोग दुर्लभ, महंगी और हानिकर औषधियों के पीछे दौड़ते हैं और परिणाम में अनेक कष्ट भोगते हैं। इस लेख में संक्षेप में मिट्टी के अद्भुत रोगनाशक प्रभाव और विधि का वर्णन किया जायगा जिसे पढ़कर गांवों के लोग आसानी से लाभ उठा सकते हैं।

## शिर पीड़ा

सभी प्रकार के सिर दर्द के लिए गीली चिकनी मिट्टी का लेप करना चाहिए। सुबह-शाम दो बार लगाते रहिये। सिर दद अवश्य ठीक हो जायगा। कठिन और दीर्घ शिर पीड़ा में उपवास भोजन सुधार, पेट की सफाई इत्यादि अन्य प्राकृतिक उपचार भी करना आवश्यक है। आधशीशी में भी मिट्टी का लेप होने से दूषित पदार्थ निकलकर आराम होता है।

## नेत्र पीड़ा

सभी प्रकार की आंख की रोगों में गीली चिकनी मिट्टी की पट्टी आंखों पर बांधिये। मिट्टी आंख में न जावे। इससे नेत्रों को बड़ा आराम मिलेगा। फूली, जाला आदि भी दूर होंगे, ज्योति बढ़ेगी।

## कर्ण रोग

कर्ण रोगों में भी गीली चिकनी मिट्टी को कान की जड़ में और ऊपर से भर देना चाहिए। अन्दर की पीड़ायें फुन्सी आदि और कान के जख्म आदि सभी में मिट्टी अत्यन्त गुणकारी सिद्ध होगी। कठिन मामलों में आहार भी स्वाभाविक होना जरूरी है।

## मसूड़े फूलना, जबड़े का दर्द

मसूड़े फूलना और जबड़े के दर्द में मिट्टी अन्य रोगों की तरह अद्भुत लाभ पहुंचाती है। मिट्टी से तुरन्त दर्द बन्द होगा, सूजन उतरेगी और आश्चर्यजनक लाभ होगा। जो पीड़ायें किसी भी उपाय से ठीक नहीं होती वह मिट्टी से सरलता से अच्छी हो जाती है। दांत के रोगों में गीली मिट्टी बाहर गाल पर पीड़ा के स्थान के ठीक ऊपर लगाई जावे।

## गले और कंठ की सूजन, पीड़ा

गले और कंठ की सूजन, पीड़ा आदि में गीली मिट्टी की पट्टी गले के चारों तरफ बांधनी चाहिए। दिन में कई बार उसे बदलना चाहिये। शीघ्र आराम होगा, लेकिन आहार केवल दूध का होना चाहिए, अन्यथा स्थायी लाभ न होगा।

## फेफड़े के रोग और दमा आदि

फेफड़े के रोग दमा आदि में अन्य स्वाभाविक उपचारों के साथ-साथ विधिपूर्वक बराबर सीने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मिट्टी की पट्टी बांधी जावे। इससे पीड़ायें दूर हो कर और कफ ढीला होकर बाहर गिरेगा और रोगी दुःख नहीं पावेगे।

## स्त्रियों की स्तन-पीड़ायें

प्रकृति-विरुद्ध आहार और बच्चों के स्तन काटने आदि कारणों से स्त्रियों के स्तन पक जाते हैं, फुंसियां हो जाती हैं, फिर उनमें घाव होकर मवाद आने लगता है। बेचारी भोली स्त्रियां अनेक प्रकार की पीड़ायें भोगती हैं। प्रकृति-विरुद्ध लेप मरहम, आपरेशन से सिवाय धन खर्च के कोई सच्चा लाभ नहीं होता। गीली चिकनी मिट्टी विधिपूर्वक लगानी चाहिए। दिन में दो बार पट्टी बदलिये, घाव को ठंडे पानी से धोइये। मिट्टी से पीड़ा दूर होगी, घाव भर जावेगा और शीघ्र सब प्रकार की स्तन-पीड़ायें दूर होंगी। स्वाभाविक आहार आवश्यक है।

## मलमूत्र बन्द होना, कब्ज आदि

कब्ज के रोग को दूर करने के लिए पूरे पेडू पर रोजाना गीली चिकनी मिट्ठी (पीली या काली या भूरी जैसे मिले) बांधनी चाहिए। पाचनशक्ति बढ़ेगी और खुलकर साफ दस्त होगा, टट्टी-पेशाव बन्द होने पर भी गीली मिट्टी पेडू पर बांधी जावे। अक्सर रोगी मरते-मरते बच गये हैं।

## पेट का फोड़ा, जलोदर

पेट का फोड़ा (Cancer of the Stomach) जैसे भयंकर रोगों में भी मिट्टी ने आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाया है। हाल ही में एक पेट के फोड़े वाला रोगी मिट्टी के प्रयोगों और स्वाभाविक आहार द्वारा मरने से बचा है। विधिपूर्वक मिट्टी के प्रयोगों से अनेक उदर रोग, पेट के फोड़े जलोदर आदि भी अवश्य आराम हो जाते हैं।

## प्रसव-पीड़ा, बच्चे का बाहर न आना

यदि बालक होते समय गर्भवती दुःख पावे और बच्चा बाहर न आवे तो विधिपूर्वक गीली मिट्टी पेट पर बांधी जावे। यदि बच्चा अन्दर मर भी गया हो तो भी मिट्टी की पट्टी में फौरन गोले की तरह बाहर आ जावेगा। स्त्री की जान बच जायगी। जीवित बच्चा तो मिट्टी की पट्टी से जल्दी बाहर आ जावेगा। क्या वैद्य, हकीम, डाक्टर इस सीधी स्वाभाविक चिकित्सा को पसन्द करेंगे?

## कोष-वृद्धि

स्वभाव-विरुद्ध जीवन से कब्ज आदि होने पर विजातीय द्रव्य के फोतों में आने से वे पानी से भर जाते हैं, रोगी कष्ट पाता है, आपरेशन रूपी भयंकर उपाय काम में लाना पड़ता है। विधिपूर्वक मिट्टी की पट्टी पेट पर और कोष पर रोजाना लगाने से शीघ्र यह रोग अच्छा हो जावेगा। इसमें भी स्वाभाविक आहार आदि अन्य उपचार अत्यन्त आवश्यक हैं।

## एक्जिमा आदि

व्यौची और दाद आदि दुखदायी रोग है। अक्सर रोगी उम्र भर दुख पाते हैं। अनेक लेप मरहम आदि व्यर्थ हो जाते हैं। वे ही व्यौची, दाद आदि अन्य स्वाभाविक आहार, प्राकृतिक स्नान आदि के साथ बराबर मिट्टी की पट्टी बांधने से ठीक हो जाते हैं। लेखक ने हाल ही में ३० साल के कठिन एक्जिमा की सफलतापूर्वक चिकित्सा की है, जिसे लोगों ने बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखा है।

## नासूर, रसोली

नासूर, रसोली आदि बड़े दुःसाध्य रोग हैं। वैद्य-हकीमों के पास तो शायद इसकी कोई चिकित्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही नहीं है। डक्टर लोग बार-बार आपरेशन करते हैं; पर बहुधा बेकार। रोगी भयंकर कष्ट उठाते हैं। अन्य स्वाभाविक उपचारों के साथ-साथ अथवा केवल मिट्टी की पट्टी से ही कठिन-से-कठिन नासूर, रसोली अच्छे हो जाते हैं। क्या ही अच्छा हो कि भारत में इस दैवी चिकित्सा से लोग लाभ उठाने लगें।

### फोड़े-फुन्सी, घाव आदि

कठिन से कठिन फोड़े-फुन्सी आदि अच्छा करने में तो मिट्टी सचमुच बड़ी ही प्रभावपूर्ण दवा है। बिना पीड़ा, बिना खर्च, बिना खतरे के बड़े बड़े घाव और फोड़े फुन्सी आदि शीघ्र अच्छे हो जायेंगे।

### बिच्छू, ततैया आदि के काटने में

सभी प्रकार के डंक में मिट्टी का लेप तुरन्त दर्द बन्द कर देगा और मिट्टी शीघ्र ज़हर चूस लेगी। रोता हुआ प्राणी हँसने लगेगा।

इसके सिवा सभी रोगों में मिट्टी आश्चर्यजनक प्रभाव दिखायेगी। जिस प्रदेश में जैसी मिट्टी मिले वैसी लगाई जावे, लेकिन उसे साफ होना चाहिए। मिट्टी में मिलाने के लिये पानी को गरम नहीं करना चाहिए। मिट्टी से कभी कोई हानि न होगी। सर्दी से डरने की जरूरत नहीं। मिट्टी को अच्छी तरह गाढ़ा सानकर उसकी आध ईंच से एक ईंच मोटी पट्टी लगाना चाहिए। ऊपर से गरम कपड़ा रख कर उसको हल्का बांध देना चाहिए। पट्टी तकलीफ के सारे स्थान को ढक लेवे। एक घन्टे के अन्दर या जैसे ही पट्टी गर्म हो जावे तो उसे अलग कर उस स्थान को भीगे कपड़े से पोंछ देना चाहिए। अगर पट्टी १०, १५ मिन्ट में गर्म हो गई हो तो तुरन्त दूसरी पट्टी बांध देनी चाहिए, नहीं तो जरूरत पड़ने पर ढाई घन्टे के बाद। साधारण हालतों में सुबह-शाम पट्टी देना काफी होगा। बहुत गर्मी के दिनों में ऊपर से गर्म कपड़ा देने की जरूरत नहीं है। खाने के भरसक दो घन्टे बाद पेडू पर मिट्टी की पट्टी देनी चाहिए।

मिट्टी बढ़िया साबुन भी है। सौन्दर्य प्राप्ति के लिये धूप में बैठकर सारे शरीर में मिट्टी लगाना चाहिए। फिर ठन्डे पानी से स्नान कर लेना चाहिए। चमड़ा नरम और सुन्दर बन जावेगा।

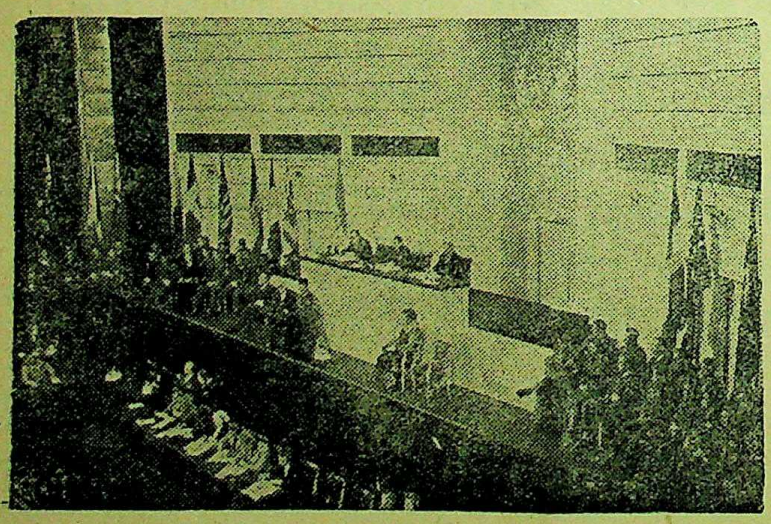

इन पचास युद्ध विशेषज्ञों को संयुक्त राष्ट्र संघ के पेरिस अधिवेशन में सम्मानित किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कवि माघ की विधुरा पत्नी

## श्री भवभूति मिश्र

रात हो गई !
बाहर चांद बिखेर रहा था चांदी-सोना !
भीतर घना तिमिर छाया था !
केवल एक जल रही बत्ती,
जिसका भी अब शेष स्नेह था !
स्तब्ध मूक था कोना कोना !
चमक रहे जी खोल गगन में,
चलते फिरते तारे,
यहां भूमि पर, नीरव घर में,
निर्निमेष खोये खोये से,
अश्रु सिक्त आंखों के तारे ।
तन में, मन में और प्राण में,
विधुर विधुरता भरी हुई है !
चिर संचित सुहाग की सेवा,
सिञ्चित आँखों के आंसू से
पिघल गई है !
मिट कर भी अब ताप दे रही !
अपर लोक में प्रियतम से मिलने की कटु अभिलाषा,
क्षीण क्षीण हो रही जगत में जीने की सब आशा
वह विधवा है ।
मुख विवर्ण पर ज्योतिर्मय है !
सस्त अलक, विक्षिप्त ! भेषभूषा- वह !
ध्यान-लीन,
सुख समासीन,
कुश के आसन पर !
एक वसन !
कवि प्रिया, विधुरता की रेखा सी !
सम्मुख महाकाव्य रक्खा है,
रेहल पर कपड़ों में लिपटा !
सुख की नींद सो रही जगती,
पर, चिन्ता से विकल कवि प्रिया !
सो न सकी है !
सो सकती है कौन अभागिन !
जिसकी निद्रा साथ ले गया
प्रिय तम बना प्रवासी,
अन्य लोक का ।
केवल एक जल रही बत्ती !
उस घर में भी घेप,
विभव के चिह्न बचे कुछ,
टूटे फूटे भाजन ।
सब मिट्टी के ।
ध्यान मगन कुछ सोच रही कविरानी—
(दीप्त भाल पर उगी आरही कुछ रेखाएँ—
चिन्ता आकुल, ये भावों की एक निशानी )
जीवन अभी समस्त पड़ा है,
अस्त-व्यस्त, बिखरा बिखरा सा,
टूटा, टूटा !
कौन कहेगा ?
एकाकी ही यों कब तक चलना ही होगा ?
चलते चलते टूट रहे हैं पांव,
मैं अपना ही भार बन गई !
भारी अन्तर,
बोझिल हैं स्वर,
तन भी मेरा भार हो रहा !
यहां अकेला जीवन भी जीवन है ?
सांस सांस अभिशाप बन गई !
नाथ ? तुम्हारा लोक दूर है ?
बता कहां है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आलोकित तव मूर्ति छिपाये निज अन्तर में,
खोज रही हूँ !
समझ रही हूँ —
विभव छिपाकर, संग संग,
दूर लक्ष्य का —
जैसे कोई राही जाता,
बीहड़ दुर्गम पथ में
जहां चोर बटमार फिर रहे !
घूम रही हूँ यहाँ अकेली,
दुःख से भरा अपार वारि निधि !
क्षीण क्षीण यह नौका,
कैसे पार लगेगी भगवन् ?
तुम्हीं बता दो !
अर्थ, काम से हीन हो चुकी,
धर्म एक अवलम्बन !
मुक्ति, दूर हो,
नहीं चाहिये !
श्रेय एक आलम्बन !
मैं विधुरा हूँ !
नाथ, तुम्हारे जीवन का यह प्रतिनिधि,
महाकाव्य है !
मेरी निधि है !
यही सहारा !
अपने अन्तर से इसे लगाकर घूम रही हूँ,
भाव-मूर्ति यह तेरी ।
अमर-रूप है ।
जीवन का विशाद प्रकाशन,
आत्मा की हैं अभिव्यक्ति सब भाव
भाव बंध रहे वे, भाषा में ।
भाव और भाषा से ऊपर महाकवे तुम !
अमर रूप हो !
भाव और भाषा में बंधकर,
महाकाव्य बन,
अभिव्यक्त हो मेरे शाश्वत नाथ !
कहां अभी तक छूटा तेरा साथ ?
मैं पगली हूँ !
सोच गई क्या ?
मेरा जीवन मेरे ऊपर भार ?
क्षमा करो हे नाथ !
( देखते तुम परलोक प्रवासी ! )
मैं कर्त्तव्य विमुख हूँ,
साँस साँस अभिशाप दे रही !
जग का उज्वल आलोक,
तुम्हारा महाकाव्य है ?
दिव्य दृष्टि तुम चीर जगत् के,
गूढ़ रहस्य भरे भावी को,
दे सकते आलोक चिरन्तन !
मुखर हो चुकी तेरी वाणी,
जग युग की वाणी से ऊपर !
जग-युग के सम्मिलित भाव,
प्रविष्ट हुए तेरे भावों में !
व्यापक तेरी वह भाव मूर्ति है !
वही सत्य है !
पर, वह तो मेरी साथ ?
कहाँ खोजती हूँ तुझको मैं ?
क्षमा करो हे नाथ !
यह मेरा पाथेय पंथ है, गन्तव्य स्थल !
दर्शन इसका करा ज़गत को,
पाप ताप सब हर सकती हूँ,
यही जगत की गंगा जमुना और सरस्वती और त्रिवेणी,!
इसका प्रवाह आप्रलय प्रवाहित,
मेरा है कर्त्तव्य,
इसी की रस-धारा में
दुःख ताप जगती का सभी डुबों दूँ !
कहाँ तिमिर है ?
भीतर-बाहर,
सभी जगह तो फैल रहा हैं शाश्वत वह आलोक !
कहाँ भार है जीवन ?
मेरा कुछ कर्त्तव्य शेष है !
मैं न मरूंगी
और न मरना ही चाहूँगी !
दूर हटो ऐ काल !"
यों बह विक्षुब्ध हुई कविरानी,
दीपक जलता,
विक्षुब्ध हो गया !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मालिश

श्री पी० एच० शार्लटन एल० पी० एम० ई०

फिलाडलफिया (यू० एस० ए०) का डाक्टर वेंजमिन ली मालिश की सुन्दर परिभाषा यों दर्शाते हैं—"चिकित्सार्थ जीवित मानवी शारीरिक तंतुओं को बाह्य शक्ति द्वारा कार्यशील करना ही मालिस है। "मालिश एक फ्रांसीसी शब्द से निकलता है, जिसका अर्थ "गूँदना" है और फिर यह एक ओर यूनानी शब्द से भी निकलता है। इस शब्द में समस्त विभिन्न गतियां सम्मिलित हैं जो मालिश की विधियों में प्रयोग की जाती है।

यदि मालिश उस व्यक्ति द्वारा कराई जाय जो चतुर नहीं हैं अथवा जिसका ज्ञान इस विद्या की ओर परिमित है तो लाभ की अपेक्षा हानि ही होती है। इसके दूसरी ओर जन साधारण मालिश की सुविधाओं की तरफ से सम्भवतः संदिग्ध है कारण कि वे उस सिद्धान्त से अपरिचित हैं जो शारीरिक चिकित्सा के इस विशेष अङ्ग के अधीन है।

प्रथम बात कार्यक्रम क्रियाविधि की रूपरेखा है जो आम तौर से प्रयोग की जाती है। विधि क्रिया कई प्रकार की और विभिन्न होती है परन्तु उनको सरलता से चार मुख्य श्रेणियों में रख सकते हैं:—अर्थात्,

१ एफ्लूरेज—जिसमें हाथ फेरने की हरकतें शामिल हैं।

२ पेट्रीसेज—जहां रोगी स्थान पर दबाव डाला जाता है। आटे को गूँदने जैसा कार्य।

३ रगड़, घिस्सा—सामान्य रूप में अंगूठों द्वारा प्रयोग होता है। इस साधन के द्वारा साधारण रूप में गहरे तंतुओं की चिकित्सा की जाती है। हाल ही में गहरे रगड़ की चिकित्सा का संयुक्त मांसपेशी स्नायु आदि के प्रति समर्थन किया गया है। यह यं कला तो नई है और इस लिये चतुर काम करने वाले की आवश्यक्ता रखती हैं कि इसके साधनों का पालन हो।

४ टेपोटीमेन्ट—इसमें ऐसी हरकत शामिल है जो थर्राने वाले प्रकार की होती है जैसे थपथपाने वाली, पटकने वाली तथा ताली वजाने वाली इत्यादि। इस आम विभाजन के अलावा कुछ अधिकार अधिकारी छूने की, संयुक्त हरकत और स्नायु दवाव को भी मालिश की श्रेणी में ही रखते हैं।

मालिश से शरीर कार्य भलीभांति चलता है। योग्य शरीरशास्त्र वेत्ताओं ने कई वर्षों तक कई प्रकार से खोज करने के पश्चात् यह प्रमाणित करदिया है कि यदि शास्त्रीय रूप से और सावधानी से देह की मालिश की जाय तो उससे शरीरकार्य सुचारू रूप से होता है।

मुट्ठियों से मारन की मालिश ऊपर और नीचे दोनों ओर हो सकती है अर्थात् जिस ओर रक्त बहता है उस ओर मलना या उसके विरुद्ध मलना। मुट्ठी से मारने से मांसपेशियां ढीली पड़ जाती हैं और केन्द्रीय नाड़ी मंडल को शान्ति मिलती है। यदि माथे से पीछे की ओर मुट्ठी मारा जाय और कान तक की नसों को मलें तो इससे सिर का दर्द जाता रहता है और नींद आ जाती है। ऐसी मालिश से पेशियों को आरम मिलता है।

किसी एक ही भाग को जोर से दबाने से अथवा इसी प्रकार का कोई अन्य प्रयत्न करने से अधिक प्रभाव होता है। मांसपेशियों को जोर से पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर दबाया जाता है। इस ढंग से उस भाग की शक्तियों को जिसका उपचार किया जाता है उभारने का प्रयत्न होता है, इससे उसभाग पर अधिक रक्त बह कर आता है और इससे वहाँ जो सूजन तथा रुकावट होती है वह दूर हो जाती है।

हथेली से मलने की क्रिया दो प्रकार से होती है एक तो ऊपरी ढंग से और दूसरी गहराई में और यह जैसी आवश्यक्ता होती है उसको ध्यान में रखकर की जाती है। गहरी मालिश उस समय की जाती है जब कि नर्म तन्तुओं को नीचे के कड़े विभागों पर दबाना पड़ता है अर्थात् जोड़ों के आस पास और चपटी हड्डियों के उपर। कुछ विद्वानों का यह विचार है कि गहरी मालिश की क्रिया ही अति उत्तम होती है और जब इसका योग्य रीति से योग्य विभाग पर प्रयोग किया जाता है तो रोग अति शीघ्र दूर हो जाता है। ऐसी मालिश उस स्थान पर भी बहुधा प्रयोग में लायी जाती है जहां छोटी २ ग्रंथियां होती हैं और उन्हें नर्म करना चिकित्सक का उद्देश्य होता है, ऐसी ग्रंथियां बहुधा मोटी मांस पेशियों में उत्पन्न हो जाती हैं।

थपथपाने की क्रिया में शीघ्रता से और जोर से उंगलियों या हथेली द्वारा मालिश की जाती है इस रीतिसे शरीर के भिन्न भिन्न भागों में उत्साह उत्पन्न किया जाता है जो प्रतिक्षिप्त क्रिया का परिणाम होता है। इस प्रकार की थरथरानेवाली क्रिया के लिये "थरथराहट उत्पन्न करने वाले यंत्र" भी मिलते हैं, जिनके द्वारा जो स्पंदन उत्पन्न होती है वह उसकी अपेक्षा अधिक अच्छी होती है जो हाथ की मालिश द्वारा होती है इस कारण से कि यंत्रद्वारा अतिसूक्ष्म और शीघ्र गति उत्पन्न होती है।

नसों को दबाने के लिये बहुत अनुभव की आवश्यकता होती है और इसको नसों की बनावट के ज्ञान को भी आवश्कता होती है, ताकि मालिश द्वार अच्छा परिणाम हो सके। दबाव की क्रिया गहरी, एक-सा या थरथराहट वाली हो सकती है और यह बड़ी बड़ी नसों पर ही उपयोग में लाई जाती है।

मालिश की जिन क्रियाओं की व्याख्या हमने ऊपर की है वे ऐसी हैं जो बहुधा उपयोग में लाई जाती हैं और यह एक साधारण प्रकार का वर्गीकरण है। इन क्रियाओं के कई अन्य प्रकार भी होते हैं। अतः यदि मालिश करनेवाला उपरोक्त क्रियाओं की अपेक्षा कोई भिन्न प्रकार प्रयोग में लाये तो आप को आश्चर्य्य नहीं करना चाहिये।

कुछ लोग कहते हैं कि मालिश की इन सब क्रियाओं से क्या लाभ होता है? इस चिकित्सा का प्रभाव देह पर क्या होता है? जिस विभाग की मालिश की जाती हैं वहाँ रक्त का संचार अधिक होता है और इसका परिणाम यह होता है कि वहां की मांस-पेशियां सुदृढ़ हो जाती है। गठिया और जोड़ों की सूजन के कई प्रकार के रोगों में तो इस से अति लाभ होती है।

बहुत प्रकार के रोग ऐसे होते हैं कि मालिश का प्रभाव उन्हें दूर करने में अति धीरे-धीरे होता है और एक दीर्घ समय तक मालिश की आवश्यकता होती है, अतः रोगी को घबराना न चाहिये और मालिश का प्रयोग सावधानी से जारी रखना चाहिये। यदि थोड़े दिन की मालिश से तुरन्त ही आप को कोइ परिवर्तन न दिखाई दे तो निराश न हो जाइये। यह न समझिये कि यह चिकित्सा व्यर्थ है। स्मरण रखिये की देह के ऐसे रोग हटाने के लिये वही शक्तियां उपयोग में आती हैं जो आपके शरीर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्दर होती हैं और जो रोग से लड़-भिड़ कर उसे मार-भगाने का प्रयत्न करती हैं, और इन शक्तियों को योग्य लड़ाकू बनाने के लिये बहुत दीर्घ काल की आवश्यकता हुआ करती है।

जिन रोगियों को नींद कम आती है और जिन के जोड़ों में दर्द होता रहता है या जो चीर फाड़की चिकत्सा से बचकर उठे होते हैं उनकी मालिश करने से उनमें शक्ति तथा उत्साह बढ़ता है।

प्रत्येक प्रकार के रोग को ये सब ढंग की मालिश उपयोग में नहीं लाई जा सकतीं। प्रत्येक रोग की अवस्था का विचार करके क्रियाओं को चुनना चाहिये। मालिश कितने दबाव से और कितन देरतक की जाए यह बात इस विचार पर आधारित होती हैं कि रोगी की अवस्था तथा सहन शक्ति कैसी है।

मालिश का यदि यथोचित रीति से प्रयोग किया जाय तो उससे अति ही थोड़ी पीड़ा होगी और कुछ व्यवहारों में तो पीड़ा होती ही नहीं। यह सोचना चाहिये कि मालिश से लाभ प्राप्त होने से पहिले आप की देह को ठोंकना, पीटना, नोचना और खींचना पड़ेगा। वैज्ञानिक रीति से मालिश से सही व्यवहार के चतुर प्रयोग द्वारा अच्छे नतीजे निकलते हैं। "त्वचा चमकाने वालों" की मियाद तो पूरी हो चुकी।

जल तथा विद्युतचिकित्सा-संयुक्त मालिश सचमुच में चिकित्सा का एक जबरदस्त साधन बन जाती है और उसके व्यवहार की सीमा भी अपरिमित है। मालिश का सेवन केवल मांसपेशी के ही रोगों में नहीं किया जाता किन्तु छाती तथा हृदय रोगों में भी लाभप्रद सिद्ध होता है। यदि मालिश का उचित प्रयोग किया जाय तो पाचन पद्धति में निश्चित सुधार हो जाता है और पुराने कब्ज की परिस्थिति में पेट की मालिश करने से उत्तम परिणाम निकलते हैं।

मालिश से एक लाभदायक प्रभाव तो यह होता है कि रक्तहीन परिस्थितियों में रक्त बनाने की कार्य-वाही बढ़जाती है। कार्यवश यथोचित भोजनाहार ही रक्तहीन परिस्थिति के उपचार में महत्वपूर्ण प्रमाणित हुआ है।

सारांश में यह कहना चाहिये कि मालिश से रक्त और वहां का परिभ्रमण, बढ़ाजाता है, और व्यर्थ पदार्थ का शोषण वह शीघ्र कर देता है। इस मांस पेशी और अस्थिबंधन में विकास पैदा होता है और आंतरिक अंगों जैसे यकृत, तिल्ली, आमाशय, अंतड़ियों, गुर्दे और शरीर की ग्रंथि पद्धति पर उत्तम प्रभाव पड़ता है।

मालिश "सर्व रोग नाशक" चिकित्सा नहीं है परन्तु वह अनेक विभिन्न परिस्थितियों में लाभदायक रूप में उपयोग की सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आप और आपका भविष्य

पं० भवभूति मिश्र ज्योतिषाचार्य

## वृषलग्न

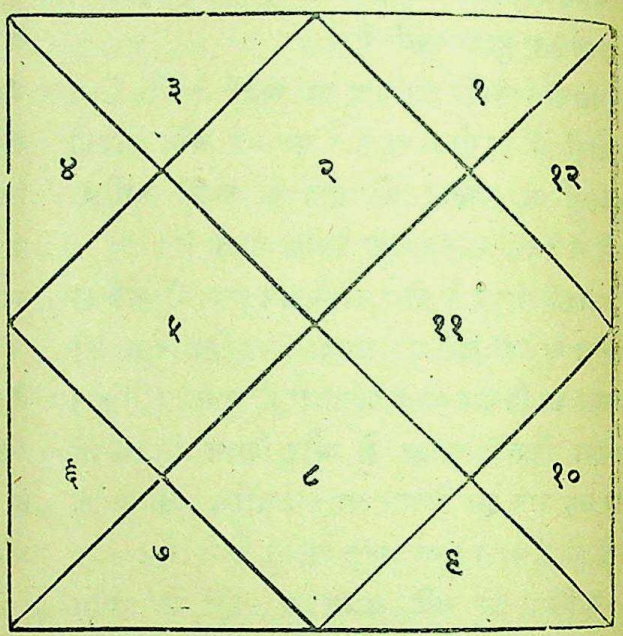


यदि आपका जन्म वृषलग्न में हुआ है तो नीचे लिखी बातों पर आपको अवश्य ध्यान देना चाहिये :—

आप जैसे व्यक्ति कल्पनाशील और मेधावी होते हैं। कल्पना का सुन्दर चित्र आपकी बुद्धि खींचता रहता है, नये नये रंग विरंगे चित्रों को बनाना और बिगाड़ना आपका काम है। विशेष बात तो यह है कि कल्पना द्वारा निर्मित स्वस्थ और सबल चित्र को साकार बनाने के लिये आप अपने प्राणों की भी बाजी लगा सकते हैं। कोई आदर्श, कोई लक्ष्य या कोई कार्य, जो आपकी कल्पना के द्वारा स्थिर और सुनिश्चित किया जा चुका है, उसके पीछे आप प्राणपण से लगे रह सकते हैं।

आप में सहनशीलता की मात्र अत्यधिक है। जिस सीमा पर पहुंच कर दूसरे लोग क्षुब्ध हो जाते हैं, उस सीमा पर भी आप शान्त और गंभीर रह सकते हैं। किसी भी कार्य में यदि आप लगा दिये जायँ, या लग जायँ, तो बिना आगे पीछे अगल बगल देखे ही काम को पूर्ण किये बिना हटना नहीं चाहेंगे। संघर्ष-क्षमता और सहिष्णुता ये दो प्रधानगुण आपमें हैं।

आप जैसे व्यक्ति थोड़ीसी असावधानी से विलासी, लम्पट, नशे बाज और चरित्र हीन हुए बिना नहीं रह सकते। परन्तु सावधान पद विन्यास से कलाकार, भावुक, एवं उच्चकोटि के उपासक भी बन सकते हैं। भीतर से वैराग्य और बाहर से भोग बाहर से वैराग्य और भीतर से भोगासक्ति ये दो परस्पर विरोधी भावनाएँ आपमें काम करती रहती हैं, अतः आप के चरित्र को समझ सकना दूसरों के लिये आसान नहीं रह जाता।

क्रोध आप का क्षणभंगुर है। क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः" वाली बात आपमें विशेष चरितार्थ होती है। आप किसी सार्वजनिक कार्य में स्थायी प्रभाव और सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। यदि आपकी कुण्डली में गुरु सबल है, जो कुछ अंश तक आप सफल हो सकते है। अन्यथा, आपके लिये इस दिशामें काफी कठिनाइयाँ हैं।

आपकी श्रीमती जी के विषय में आपसे कुछ कहूं, इसके पूर्व आपसे क्षमा प्राथी हूं।

आपकी श्रीमती जी का स्वभाव आपकी तरह नहीं है। वे असहन शीला है, उनमें विशेष महत्वा कांक्षिता है। उनमें उच्च भावनाएँ भी हैं। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आसमान में उड़ने की अपेक्षा धरती पर जाना ही अधिक पसन्द करती हैं। वे विशेष स्थिर बिचार की हैं। अतः आप से कभी कभी "टन टुन" हो जाने का अवसर भी उपस्थित हो जाता है। लेकिन आपके जीवन पर उनका प्रभाव अधिक रहता है, अतः घबड़ाइयेगा नहीं, तलाक देने का प्रसंग स्वप्न में भी आपको नहीं आयगा।

आप के सहायक और आपके मित्र उच्च-कुल उत्पन्न व्यक्ति, या ख्यातनामा व्यक्ति ही हो सकते हैं। अपने बल से जीवन में सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति, या संभ्रान्त व्यक्ति ही आपके मित्र वर्गों में या आपके सहायकों में हो सकते हैं। लेकिन, आप ही उनसे व्यवहार में कभी तो अधिक आगे बढ़ जाते हैं और कभी एकदम पीछे हाथ ही खींच लेते हैं। इस तरह आपकी त्रुटि ही मित्रों और सहायकों को आपसे अन्यमनस्क कर देती है। अतः मित्रों और सहायकों से आपकी क्षणिक उदासीनता ही आप के लिये अच्छी नहीं है।

आपकी सन्तानों में अधिक तर बुद्धिमान और लोक व्यवहार निपुण सन्तान ही हो सकती हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र और शनि, बुध और गुरु एवं, सूर्य और चन्द्रमा अच्छी स्थिति में रहें, तो सन्तानों की वृद्धि के साथ आपकी उन्नति सन्तानों की उन्नति के साथ ही आपकी उन्नति। सन्तानों के द्वारा प्रभाव वृद्धि नया अन्वेषण कर सकती है। आपका मन विशेषतः ऐष विषयों में लगेगा, जिसमें अधिक से अधिक गुप्त रहस्यों के उद्घाटन का कार्य हो। अतः विद्या में गणित, विज्ञान विषय दर्शन, आदि, आपके लिये प्रधान हैं।

हाँ एक बात बतला दूं, सन्तानों के साथ आपकी विशेष पटरी बैठ सकेगी!

प्रारंभ में उपद्रव और उसके बाद खर्च, भूमि यात्रा, एवं बड़े बड़े कष्ट आपके जीवन के साथ हैं। अतः यदि सचमुच ह्रास से बचना चाहते हैं, तो आपको शक्ति उपासना अवश्य करनी चाहिये।

स्थिर और चंचल दोनों प्रकार के धन आपको हो सकते हैं। अतः दोनों की ओर विशेष प्रयत्न अपेक्षित हैं।

अन्त में एक बात आप से कह दूं, अपनी कुण्डली को उठाकर देखिये। यदि बुध ६ में, गुरु ४ में यथा स्थान कोई ग्रह हो, तो आप अपने समाज में विशिष्ट व्यक्ति हो सहते हैं!

आय आपकी सुनिश्चित और विशेषतः बंधी हुई होगी। आप आकाश वृत्ति पर भी निर्भर करेंगे तो उसमें भी सुनिश्चित रहेगी। मोटी रकम आपको समय समय पर मिल सकती है। असीम आय के लिये आप प्रयत्न न करें, इसदिशा में भय है।

आपके कर्म और भाग्य ( Chances ) परिवर्त्तन शील हैं। परन्तु, आकस्मिक रूप से आपको काम भी मिल सकते हैं और अवसर भी उपस्थित हो सकते हैं। अतः अप्रत्याशित काम और अप्रत्याशित भाग्योदय आपके जीवन की प्रमुख विशेषताओं में हैं।

इस वर्ष ( सन् १९५२ ) की जुलाई से आपका कुछ विशेष भाग्योदय और कार्य परिवर्त्तन एवं आर्थिक उन्नति होने वाली है। इसलिये, अभी से विशेषतः तैयार रहें।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ग्राम-निर्माण

श्री बैजनाथ सहाय

दोपहर का समय था फिर भी आसमान बादलों से ढँका था और चारों ओर अँधियाली ही अँधियाला नजर आ रही थी। कुछ लड़के ऐसी सुहावनी बेला में किसी की बैठक में बैठ कर गप्पें लड़ा रहे थे। उनमें एक कवि भी था। साथियों में से किसी ने छेड़ा—"कवि जी, कितनी सुहावनी बेला है जरा प्रेम सम्बन्धी कोई कविता सुनाइए ना।" किसी ने झट आवृति की—नहीं तो, जरा प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम वर्णन ही सुना दीजिए।" पर तरुण कवि खामोश था। उसकी आँखें किसी शून्य वातावरण की ओर न जाने क्या ढूँढ़ रही थी। वह न मालूम क्या सोच रहा था एकाग्र हो कर पर चौंक उठा उनके इन सवालों को सुनकर। उसकी भौंहें तन गई और आँखें गंम्भीर हो उठी। वह कह उठा "गोपाल, आज प्रेमी और प्रेमिका के गीत गाने का दिन नहीं। आज तो हर के कण्ठों में देश की जागृति के गीत होना चाहिए। तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि इस बेला में तुम प्रेमी और प्रेमिका के सरस गीत सुनने को उतावले हो जब कि देश को अंगारों की आवश्कता है। आज देश तेरे लिए विकल है और तुम अपनी प्रेमिका के लिये। आज देश के युवकों की दशा ही अजीब हो उठी है सारा कमरा साथियों की हँसी से गूंज उठा। पर कवि ने ध्यान नहीं दिया, वह कहता गया—"देखो, आज हमारे ही भाई, किसान, कितने गरीब और दुखी हैं। वे कितने लाचार और बेवस हैं। उसी तरह हमारा देश, जोकि गावों मे ही बसा है कितना पिछड़ा और गरीब बना है। अगर तुम जैसे युवक इस ओर ध्यान न दें—इसकी गरीबी और अशिक्षा को दूर न करें तो फिर यह किस प्रकार उन्नत हो सकेगा।" कवि उत्तेजित हो उठा। साथी सभी खामोश हो उठे। पर चंचल गोपाल ने फिर छेड़ा—"हम उनकी अशिक्षा को दूर ही कैसे कर सकते हैं जब कि वे स्वयम् इसकी परवाह न करें?" कवि मुस्कुराया—"किसने उनको इस तरह रहने पर मजबूर किया है, जानते हो? अगर नहीं तो सुनो। उनको इस तरह रहने पर मजबूर करने वाले हम और तुम हैं न कि कोई दूसरा। हमारी यह नीति थी कि ये गरीब और अशिक्षित किसान इसी तरह बराबर बने रहें और हम उन पर शासन करते रहें और उन्नति के पथ पर अकेला ही बढ़ते जांय। हम स्थायी रहें। हमारी ही भावना ने उन्हें इतना नीचा रहने पर लाचार किया है। पर क्या वे उचित शिक्षा देने पर नहीं सुधर सकते? पर उन्हें सुधारने वालों को उन्हें सुधारने की लगन होनी चाहिए। अगर लगन रहे तो मुश्किल से मुश्किल काम को भी उपाय आसान करता है तो फिर इसकी क्या बिसात? यह मेरा दृढ़ विचार है।" साथियों पर बातें छा गई। वे सोचने लगे और कवि मौके को हाथ में देख कहता गया—अगर आज हम उन गरीब और दीन-हीन कृषकों को शिक्षा दें और उन्हें उन्नत बनाने की कोशिश करें और उसी तरह अपने गिरे हुए ग्रामों का निर्माण कर उनमें संगठन का महामन्त्र फूंके तो हमारे आज के पिछड़े ग्राम कल के आदर्श ग्राम बन जायेंगे और हमारा देश तत्काल उन्नत हो उठेगा।" साथियों के चेहरे पर आनन्द की एक रेखा खींच गई। गोपाल बोल उठा

[शेष पृष्ठ ४० में]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

नयी लेखनी:—

# भोलवा मर ही जाता

श्री हरिवंश महतो

हाँ, तो ये हैं जमींदारी साहेब। जमींदारी सौ-दो सौ गाँव की नहीं, साठ-सत्तर गाँव की है। परिवार सम्पन्न है। इनकी जमींदारी आज की नहीं है, कई पुश्तों से चली आ रही है। रोब-दाब तो इस तरह की है कि आदमी को कौन कहे भूत भी हाथ जोड़े खड़े रहते हैं।

घर की सजावट देख कर दिल खुश हो जाता है। जगह-जगह पर सुरैया, नर्गिस, रेहाना, मधुबाला आदि की तस्वीर, चेहरे पर लगे हुए स्नो-पाउडर तथा पोशाकों पर मले हुए इत्तर की सुगंधि से आप की तबीयत खुश हो जायेगी। खान-पान में दोनों शाम चपातियाँ बटेरों के सुरुवे, दो-चार तरकारियाँ तथा पंचमेर मिठाइयाँ अवश्य रहती हैं।

अब आप ही सोचें इतने बड़े आदमी किसी की परवाह कैसे और क्यों करें? अपने रैयत प्रजा तो से थर-थर काँपते ही हैं, बड़े-बड़े जमींदार तथा सिपाही दारोगा भी इनके इसारों पर नाचते रहते हैं। साल में दो-चार बकरे और हजार पाँस सौ नगद बड़े साहब की भेंट चढ़ा दिया बस, सब ठीक।

सन् १९४२ की बात है दो-चार काँग्रेसियों ने इस गांव में आकर इन गरीब बेचारों को काम करने जाने से रोक दिया। सुकरा इस गाँव का मुखिया था। उसने जमींदार साहब की क्रूरता की कहानी बतलाकर सभी लोगों को काम पर जाने का अनुरोध तो किया, पर काँग्रेसी युवकों ने जान देकर भी उन्हें बचाने तथा ऐसे दुराचारी से छुटकारा दिलाने का वचन दिया। दूसरे ही दिन एस० पी० साहब दो-चार सिपाहियों के साथ आये और उन काँग्रेसी नौजवानों को पकड़ जेल की हवा खाने को भेज दिया। अब इन बेचारों का सहारा टूट गया। सुकरा तड़के ड्योढ़ी पर हाजिर हुआ। मालिक लेटे-लेटे ही धुम्रपान कर रहे थे। सुकरा को देखते ही वे गरज उठे और एक ही स्वांस में हजारों गालियाँ बक गये। इतना ही नहीं ऊपर से डंडे भी पड़ने लगे। सुकरा चुप-चाप हाथ जोड़ खड़ा रहा, मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाल सका। अन्त में वह बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ा। घर की बहु-बेटियाँ आपस में काना-फूसी करने लगीं। अब क्या होगा, सुकरा मर गया। घर में पुलिस आयगी, घर के लोगों को अरेस्ट कर लेगी। मुकद्दमा, जेल, फाँसी और न जानें क्या क्या होगा। पर जमींदार साहब को इसकी थोड़े परवाह थी! एक क्या, दो-चार को मार देने पर वो उन्हें किसी बात की चिन्ता ही नहीं होती।

इधर सुकरा अपने घर पहुँचा दिया गया और कुछ ही दिनों के बाद मर गया। घर में उसकी औरत सोनियाँ के अलावे भोलवा, एक चार-साल का बच्चा था।

× × × ×

अब वह बूढ़ी हो गयी है। आँख से दिखाई नहीं देता और काम करने से बिल्कुल असमर्थ है। सिर्फ यही भोलवा सोनियाँ के जीवन का एक मात्र सहारा है, जो घर-घर खाक छानते फिरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पेरवा घाघ की यात्रा

श्री अरविन्द कुमार ठाकुर 'योगी'

हम बालचरों ने तै किया कि इसबार हम लोग 'पिकनिक' के लिए 'पेरवा घाघ' चलेंगे। पिकनिक के साथ ही घाघ देखने का भी मजा रहेगा। इस इलाके में घाघ झरना को कहते हैं।

पेरवा घाघ खूँटी सबडिविजन के तोरपा थाने में तपकारा से सीधे पूरब की ओर ६ मील पर है। इसके चारों ओर पहाड़ियां घेर कर पहरा दे रही हैं। पहले इस घाघ के निकट की गुफाओं में असंख्य कबूतरों का निवास था। इसी कारण इस घाघ नाम का नाम पेरवा घाघ (कबूतर झरना) पड़ा। अब तो कबूतरों की संख्या कम हो गयी है।

लोग कहते हैं कि घाघ का कुण्ड अथाह है। बड़ी बड़ी मछलियां तो उसमें हैं ही साथ ही एक बहुत बड़ा और भयंकर मगर भी है। इस के आस पास चारों तरफ आंबले का जंगल है।

हम लोग बालचर और शिक्षक मिलाकर कुल १०८ की संख्या में थे। खूँटी हाई स्कूल से चल कर करीब ४½ बजे हम लोग तपकारा पहुँचे। वहाँ के अपर प्राइमरी स्कूल में हम लोगों का डेरा पड़ा। उस दिन तपकारा बाजार (हाट) था। इस लिए हम लोगों ने 'कैम्प फायर' किया।

दूसरे दिन सवेरे जलपान कर पैदल ही घाघ की ओर चल पड़े। ६ मील की दूरी तै कर घाघ के निकट पहुँचे। हम लोगों ने घाघ में स्नान के बाद दिन का खाना वहीं बनाकर खाया। फिर घूमने निकले। वहाँ का प्राकृतिक दृश्य देखकर बड़ा ही आनन्द आया।

---

है और जो कुछ मिल जाता है उसी से अपनी मां के साथ अपनी क्षुधा भी शान्त करता है आज अगर थोड़ी देर के लिये आप यहाँ नहीं आते तो यह भी अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुका था। भोलवा कभी बेर लेने नहीं आता था बाबू। आज इसको काल ही यहाँ तक ले आया था। यह एक मुट्ठी भी बेर नहीं चुन पाया था कि जमींदार साहब का आदमी आया और धड़ाधड़ चार-छ डंडे जमा ही तो दिये। जिसके शरीर की सारी हड्डीयाँ एक ही नजर में गिन ली जा रही हैं उसके लिये तो दो-चार चपत जमा देना ही काफी था। यहाँ तो डंडों की मार पड़ी। आज आपने इसे बचाकर एक बहुत बड़ा उपकार किया। यह जीवन भर आप का ऋणी रहेगा।

यह कहते हुए उस बूढ़े का गला रूंध गया और आँखों से आँसू की धारा बह चली। मेरा हृदय भी काँप गया और आँखों से गवाह के रूप में चार बूँद टपक पड़े।

---

[ पृष्ठ ३६ से आगे ]

"सचमुच ही कवि, आज तक हम एक भ्रमपूर्ण दुनियां में विचर रहे थे, हमारे भाव और हमारी दुनिया ही अलग हो चुकी थी, पर तुमने हमारी आंखें खोल दी। सचमुच देश तभी उन्नत हो सकेगा जबकि देश के युवक ग्रामों के निर्माण में लग जांय।" सभी के चेहरे पर खुशी थी और सभी देश के भविष्य और ग्राम के निर्माण के बारे में सोच रहा था। अन्धेरा भी काफी हो चुका था और वर्षा बाहर बड़े जोरों से हो रही थी। पानी के गिरने की टप् टप् आवाज बड़े जोरों से सुनाई पड़ रही थी। वातावरण शान्त और स्थिर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्तनाद

श्री कुमार शर्मा 'कवि कहार'

असह्य हो रहा है प्रभो—
संकट अमिट महान् !
फिर भी नहीं उबारते,
कहला कर भगवान् !!

कहला कर भगवान्:—
उदधि से अरुझी नैया !
नहीं लगाते पार,
कहेगा कौन खेवैया !!

तुम्हीं बताओं नाथ!—
इस तरह ठोकर सहता !
जीऊँ ? अथवा मरूँ ? —
रहूँ या पथ में बहता ??

विपत्ति वायु चहुँ ओर से,
नैन कर रही बन्द !
शिथिल हो गया गात जब—
कर न सकूँगा द्वन्द

कर न सकूँगा द्वन्द,
मन्द बुधि ठगने वाली।
मिली भँवर के बीच,
कूल क्यों लगने वाली—

है यह टूटी तरणि,
झँकोंरा जिसने खाया ?
आर्त नाद सुना देव !—
कीजिये मुझ पर क्या !

बरना पाऊँगा न पथ,
तिमिर रहा है घेर
मोहन ! वंशी धर, कहाँ ?—
लगा रहे हो देर !!

लगा रहे हो देर,
विनय गजकी सुन धाये
जैसे दीनानाथ !
सभा में लाज बचाये !

द्रुपद सुता की दौर,
और गणिका की स्वामी !
सदन कसाई, गीध,
अनेकों कपटी कामी !

कर डाले करुणा निधे !—
जिस करुणा वश पार
उसकी ही मैं याचना,
करता हूँ करतार !!

करता हूँ करतार:—
धार टेढ़ी सरिता की !
पतित कुटिल मति मन्द,
दयामय, लगन चिता की,

लिये बढ़ रहा आज,
डगर में दास आपका !
पकड़ लीजिये बाँह,
फोड़ तम घड़ा पापका !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत सरकार के वेलफेयर कमिश्नर

# श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त जी का वक्तव्य

गत ४ मार्च को निवारण आश्रम में प्रेस प्रतिनिधियों के बीच दिया गया वक्तव्य :—

मैं छोटानागपुर डिवीजन के अपने भ्रमण के सिलसिले में छोटानागपुर के इस विशाल प्लेटो के पांचों जिलों, इसके अधिकांश सबडिवीजनों और कुछ थानों से होकर गुजरा। विधान के अनुसार इस प्लेटो का अधिकांश भाग परिगणित क्षेत्र में पड़ता है।

सबसे मार्के की बात मुझे यहां यह मिली कि पार्टी के आधार पर गत चुनाव में भोली-भाली परिगणित जातियों के बीच अलग प्रान्त का स्वप्न दिखाया गया। इस अलग प्रान्त में छोटानागपुर के पांच जिलों, संथाल परगना और संभवतः उड़ीसा तथा मध्य-प्रदेश के गांगपुर, जशपुर और सुरगुजा जिलों के शामिल किये जाने की बात का भी प्रचार किया गया था। पार्टियों के आधार पर हुए इस प्रकार के भ्रमोत्पादक प्रचार, झारखण्ड पार्टी की सफलता—जिसने छोटानागपुर की ६८ सीटों में २१ को जीत लिया—आदि से परिगणित जातियों को यह विश्वास दिलाया गया कि झारखण्ड हो गया। यही नहीं, उन लोगों ने यह भी समझ लिया कि वे स्वतंत्रतापूर्वक सुरक्षित जंगलों में प्रवेश कर सकते हैं और उन जंगलों के पेड़ इच्छा अनुसार काट सकते हैं। जंगल कानून भंग करने की घटनाओं की रिपोर्ट अदालतों में आ रही हैं और बहुत से लोग इस सिलसिले में गिरफ्तार भी हुए हैं। इस लिए मुझे यह भ्रम दूर करने की आवश्यकता पड़ी। मैं ने यह साफ-साफ बतला दिया कि भारत के संविधान के अनुसार, जाति या धर्म के आधार पर झारखण्ड प्रान्त बनने की कोई संभावना नहीं है।

दूसरी सब से आश्चर्यजनक बात यह है कि आप छोटानागपुर के किसी कोने में चले जांय, आप पायेंगे कि इसाई पादरियों ने परिगणित जातियों के बीच अगर गत १०० वर्षों से नहीं तो कम से कम ५० साल से आश्चर्यजनक कार्य अवश्य किया है। रोमन मिशन गत ५० साल से कार्य कर रहा है। इसने शिक्षा तथा चिकित्सा के लिए बड़ी-बड़ी संस्थाएं खड़ी कर रखी है। इनके द्वारा उन्होंने परिगणित जातियों के लिए बहुत कुछ किया है। इन संस्थाओं के द्वारा और विदेश से पर्याप्त धन प्राप्त कर इन पादरियों ने ३३ लाख में ३ लाख आदिम जातियों को ईसाई बनाया है। ईसाई पादरियों के इन प्रयत्नों के फलस्वरूप ईसाई धर्मानुयायी परिगणित जाति के लोग उनकी अपेक्षा—जो ईसाई नहीं हुए हैं—शिक्षा में बहुत आगे बढ़े हुए हैं और इसलिए हिन्दू आदिवासी बन्धुओं की अपेक्षा ईसाई हुए परिगणित जाति के लोगों की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी है। इसकी कल्पना भी करना कठिन है कि कोई सरकारी या गैरसरकारी संस्था, अपने त्याग के द्वारा—पादरियों ने जैसी बड़ी-बड़ी संस्थाएं खड़ी कर ली हैं—वैसी एक भी संस्था खड़ी कर सकेगी। आदिम जाति कल्याण की योजना स्वर्गीय पूज्य ठक्कर बापा ने बनायी थी और बिहार सरकार ने उसे स्वीकार कर लिया। गत ४ साल से यह योजना चल रही है। इसमें प्रगति भी अच्छी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैंने २२ आश्रम ढंग की पाठशालाओं में ११ को देखा और २५२ पाठशालाओं में ४ पाठशालाओं में भी गया। मैंने धान के गोलों का भी निरीक्षण किया। यह परिगणित जातियों की आर्थिक अवस्था का सुधार करने में बहुत सफल कदम हुआ है। मैंने कुछ छोटी-छोटी सिंचाई योजनाओं को भी देखा। मुझे इस बात का खेद है कि आदिम जाति सेवा मंडल और संथाल पहाड़िया सेवा मंडल को छोड़ कोई गैर-सरकारी संस्था परिगणित जातियों के उत्थान के लिए इस प्रकार निःस्वार्थ सेवा करने के लिए आगे नहीं आ रही है। इन संस्थाओं में आदिम जाति और इतर जाति के कार्यकर्त्ताओं की एक जमात है। आदिम जाति सेवा मंडल का काम बहुत कम खर्च में और सेवा भाव से चल रहा है। मैंने उनकी कुछ संस्थाओं को देखा जो अभी प्रयोगावस्था में चल रही है। यह संस्था स्वर्गीय ठक्कर बापा की योजना को कार्यान्वित कर रही है। इस योजना में सरकार ने अपने अनुभव के आधार पर जहां-तहां परिवर्तन भी किया है।

—:o:—

# गतिविधि

गत २७ फरवरी को भारत सरकार के वेलफेयर कमिश्नर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त जी ने आ० जा० सेवा मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी के साथ मण्डल की गुमला शाखा द्वारा संचालित विशुनपुर रा मि० स्कूल एवं फोरी स्कूल और आश्रम का निरीक्षण किया। विशुनपुर में करीब ढाई हजार आदिवासियों के साथ ही मण्डल के स्कूल के छात्रों एवं कार्यकत्तओं ने आपका स्वागत किया। घाघरा में भी देहात के लोगों ने आकर उनके आगमन पर बड़ा हर्ष प्रकट किया। फोरी पहुँचने पर करीब ३ हजार के जन समूह ने आपका स्वागत किया। सब जगह छात्रों ने स्वागत गान के अलावे अपने कार्यक्रम के द्वारा आपका मनोरंजन भी किया। शाखा संचालक ने गुमला क्षेत्र में होने वाले काय्यों का विवरण सुनाया। तीनों स्थानों में श्रीकान्त जी ने छात्र एवं छात्राओं में पुरस्कार वितरण किया। और वहां पर आपने लोगों को अपने भाषण में कहा कि भारत के संविधान को देखते हुए झारखण्ड अलग होना संभव नहीं दीखता। आप झारखण्ड पर ही क्यों सम्पूर्ण बिहार और भारत वर्ष पर दावा क्यों नहीं करते? उसके एक टुकड़े पर अपना अधिकार क्यों बताते हैं? सब आपका है और आप सब के हैं। ऐसा ही समझ कर कार्य्य करने में आपका कल्याण है।

वेलफेयर कमिश्नर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त जी ने छोटानागपुर के अपने दौरे के सिलसिले में डाल्टेन गंज जिले में आदिम जाति सेवा मण्डल की शाखाओं में दामोदर स्कूल और लातेहार के छात्रावास का निरीक्षण किया। दामोदर में अपने छात्रों को पुरस्कार देने के बाद आपने देहातों से आये हुए आदिम जाति के लोगों के साथ बातें की तथा अपने अपने लड़के को पढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहन दिया। वहाँ पर पारितोषिक प्राप्त छात्रों के साथ श्रीकान्त जी का फोटो भी लिया गया। उसके पश्चात् आप लातेहार पहुंचे। वहाँ पर श्री रामेश्वरी सरोज दास एम० एल० ए० के सभापतित्व में कार्यारंभ हुआ। उपस्थित लोगों में श्रीनारायण जी, श्री गिरिजा नंदन सिंह एम०एल०ए०, श्रीजेठन सिंह एम० पी०, श्री भुवनेश्वर प्रसाद सिंह, श्री रामधारी राम तथा आदिम जाति सेवा मंडल के कार्यकर्त्ता, शिक्षक एवं छात्र तथा गाँव वाले हजारों की संख्या में उपस्थित थे। छात्रावास के छात्रों ने एक नाटक खेल कर दिखलाया जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोगों को बड़ा ही रोचक लगा। उस नाटक में यह प्रदर्शित किया गया था कि एक किसान को उसके जमींदार के बराहिल ने खेत जोतने से रोका। किसान अधिकार के लिए अड़ गया। जमीन्दार ने उसे पिटवाया तथा दारोगा को घूस देकर उसको डकैती में फँसाने का प्रयत्न किया। गवाह ठीक नहीं गुजरा। किसान रिहा कर दिया गया। जनता पर लड़कों के इस नाटक का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। सभा में श्री गिरिजा नन्दन सिंह एम०एल०ए०, श्रीनारायण जी तथा अंत में श्रीकान्त जी के भाषण हुए जिन से उपस्थित लोग काफी प्रभावित हुए। सभा के प्रारंभ में ही आदिम जाति सेवा मण्डल की जिला शाखा के संचालक श्री धनुष प्रसाद सिंह जी ने अपने कार्यों की रिपोर्ट सुना दी थी।

श्री लक्ष्मी दास श्रीकान्त जी आदिमजाति सेवा मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी के साथ २६ फरवरी के सबेरे ६ बजे मण्डल द्वारा चालित श्री ठक्कर बापा छात्रावास, खूँटी पहुँचे। छात्रों ने बड़ी धूमधाम के साथ उनका स्वागत किया तथा मानपत्र दिया। छात्रों ने मानपत्र में बागवानी के लिए आवश्यक जमीन तथा लड़कों के रहने के लिए और मकान की मांग की। खूँटी के बाद कमिश्नर साहब आनिगड़ा आश्रम पहुँचे जहाँ पर छात्रों ने उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। मण्डल के स्कूल के छात्र, शिक्षक एवं कार्यकर्त्ताओं के अलावे देहातों से करीब ३ हजार ग्रामीण उनसे मिलने के लिए आये हुए थे। आगत लोगों में प्रायः सनातन आदिवासी मुण्डा लोग ही थे। सभा के लिए डाल और पत्तियों से सजा कर पंडाल बनाया गया था जो आदिवासी भाइयों की अपनी विशेषता मालूम पड़ती थी। सुप्रसिद्ध नेता एवं आदिम जाति सेवा मण्डल के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री भैयाराम मुण्डा ने खूँटी सब डिविजन में मण्डल की ओर से होने वाले कार्यों का रिपोर्ट पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात् मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी ने अपने भाषण में उपस्थित आदिवासी जनता से अनुरोध किया कि आप लोग अपने सच्चे सेवकों को पहचानें और उन्हें सहयोग प्रदान करें ताकि वे आप की अधिक से अधिक सेवा कर सकें। इसके बाद श्रीलक्ष्मीदास श्रीकान्त जी ने कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन देते हुए कहा कि आप लोग मन लगा कर काय्य करें। मुझसे जो भी सहायता संभव होगी, आप लोगों को अवश्य मिलेगी। आदिवासियों के नवजवान नेता श्री मुचिराय मुण्डा ने उनके भाषण का मुण्डारी अनुवाद करके लोगों को समझाया। छात्रों को पुरस्कार देने के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

आदिम जाति सेवा मण्डल की मानभूम शाखा का प्रधान कार्यालय लखनपुर में हैं और अभी श्री मदन मोहन महतो वहाँ का कार्य्य संभाल रहे हैं जो बड़े ही उत्साही कार्य्यकर्त्ता हैं। भारत सरकार के वेलफेयर कमिश्नर श्री लक्ष्मी दास श्रीकान्त के वहाँ पहुँचने पर मण्डलके स्कूलों के छात्रों एवं शिक्षकों ने धूमधाम के साथ स्वागत किया। श्रीकान्त जी ने उपस्थित आदिवासी एवं हरिजनों को उनके हित की बातें समझायीं। मानभूम जिला में मण्डल की ओर से अभी ११ लोअर और अपर स्कूल चलाये जा रहे हैं।

वेलफेयर कमिश्नर साहब के हजारीबाग और सिंहभूम जिला तथा सिमडेगा के दौरे की रिपोर्ट नहीं पहुच सकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल को पकाना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य २॥), तीन शीशी एक साथ लेने पर ६॥) बाल आधा पका हो तो ३॥), एक साथ ३ का ६) और कुल पका हो तो ५) व ३ का १२) बेफायदा साबित होने पर कीमत वापस।

महात्मा प्रदत्त

## श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके लेप से सफेदी के दाग को पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें –) का टिकट भेज कर शर्त लिखालें। मू० ३)

तेज दवा का मूल्य ५) रु०।

श्री हिन्द फार्मेसी (४१)

पो० जसीडीह (संथाल परगना)

## ग्राम-निर्माण

में

विज्ञापन देकर व्यापार में लाभ उठावें

## विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| कवर का चौथा पृष्ठ | १००) |
| कवर का तीसरा पृष्ठ | ७५) |
| कोड़ पत्र प्रारंभ से पूरा | ६०) |
| कोड़ पत्र अंत में पूरा पृष्ठ | ५०) |

भीतर लेख के साथ कालम का प्रति इंच ३॥)

वर्ष भर के लिए विज्ञापन देने वालों को सुविधा दी जायेगी।

—व्यवस्थापक

## पपुलर बुक डिपो मेन रोड, राँची।

हिन्दी अंग्रेजी, गुरुमुखी, उर्दू आदि भाषाओं की पुस्तकें, सनिहारी के सामान तथा चित्र बाँधने के अलावे हम आर्डर के माल भी सप्लाई करते हैं।


## सूचना—

जो लोग अपने स्वस्थ और सुन्दर बच्चों, किसी उत्सव एवं अन्य मनोरम दृश्यों का फोटो 'ग्राम-निर्माण' में प्रकाशित कराना चाहें, वे ब्लॉक भेज सकते हैं। फोटो और १०) रु० नगद आने पर यहाँ भी इन्तजाम कर दिया जायेगा।

लेखक या कवि उपर्युक्त रकम के साथ अपना फोटो भी भेज सकते हैं।

—— सम्पादक


## *मासिक धर्म रुकावट*

बन्द मासिक धर्म नारी संजीवनी दवा के सेवन से बिना किसी तकलीफ या खतरे के बन्द मासिक धर्म को सहज में खोल कर चालू कर देता है। इस औषधि के व्यवहार से कमर, पेड़ू, पेट का दर्द, सिर में चक्कर आना आदि को दूर होकर शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। यह गर्भवती को न दी जानी चाहिए क्योंकि गर्भ गिर जायगा। मू० ५)। अधिक महीने वाले रोगी के लिए "स्पेशल पावर" की दवा मंगानी चाहिए। किमत ८॥)।

किसी भी दवा को बेफायदा साबित करने पर मूल्य वापस।

* पुत्रदा (शर्तिया पुत्र उत्पन्न करने का दवा) *

साधारण स्त्रियों को "पुत्रदा" से सुपुत्र होवेगा ही, परन्तु जो बाँझ अथवा जिन्हें अरसे से रजस्वला होना बन्द हो गया हो उनको भी शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। हजारों ने 'पुत्रदा' सेवन कर पुत्र पाया है। आज तक किसी को भी हताश नहीं होना पड़ा। यदि आप को पुत्र की इच्छा हो तो एकबार अवश्य परीक्षा कर देखें मू० ५)।

हिन्द कल्याण औषधालय म० ४०६

पो० — जसीडीह (संथाल परगना)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




## खाद्य संकट राष्ट्र की कमजोरी है

अधिक सागसब्जी उपजाकर इसे दूर करना आपका परम कर्त्तव्य और राष्ट्र की सेवा है। किन्तु अच्छी फसल के लिए अच्छे बीज अत्यन्त आवश्यक हैं।

चुटिया सीड स्टोर्स

इसीलिए खुला है ताकि आप सुविधा के साथ अच्छे और आवश्यक बीज पाकर अपनी तरक्की करें। यदि आप उत्तम बीज और गाछी चाहते हैं तो हमारी दूकान से लें अथवा पार्सल से मंगावें।

**—चुटिया सीड स्टोर्स—**

राम चन्द्र जी के मन्दिर के पास

**चुटिया-मेन रोड, राँची।**

---

अच्छे खेलाड़ी ही अच्छा सामान चाहते हैं
खेल के सभी सामान के लिए आप

## शेली स्पोर्ट्स, राँची में पधारें

( रतन सिनेमा के सामने )

सस्ते दाम और अच्छी चीजों के द्वारा ग्राहकों को खुश करना हमारी विशेषता है।

---

## यदि आप नहीं जानते हैं

तो

## नोट कर लें

हमारे यहां हर किस्म के नक्शे, ग्लोब, चार्ट, एजुकेशनल चार्ट और स्कूली किताबें सस्ते दामों पर मिलती हैं।

आइडियल बुक स्टोर्स
मेन रोड, राँची।

---

दुनियाँ की बहार लीजिये।

## सुप्रसिद्ध निर्माताओं के रेडियो

( बिजली एवं बैटरी )

तथा

विद्युत सामग्रियों के लिए पधारें

## पिकचर कॉटेज, राँची

निम्नतम मूल्य और गारन्टी भी

साथ ही

पत्र व्यवहार का पता:—

पोस्ट बक्स नं० ११, राँची

---

क्या आप शिक्षक हैं ?

यदि हाँ, तो एक मात्र शिक्षकों की पूँजी से निर्मित

## राँची जिला शिक्षक सहयोग भण्डार

को याद रखिए, और

कृपया अधिक से अधिक इसके हिस्से खरीद कर विशेष लाभ उठाइये।

निवेदक —
व्यवस्थापक
जिला शिक्षक सहयोग भण्डार राँची

---

## कामदेववटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। वीर्य अर्से तक रोककर स्त्री सुख में सच्चा आनन्द प्राप्त होगा। इसके लगातर सेवन से वीर्यसंबंधी रोग जड़ से आराम होते हैं। मू० ३२ गोली ५) १०० का १२)। गुणहीन होने पर दाम वापस

विजय फार्मेसी (ग)
पो० बक्स नं० ११६ पो० गया


सुदर्शन प्रेस, राँची द्वारा मुद्रित तथा आदिम जाति सेवा मण्डल द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चाँदनी

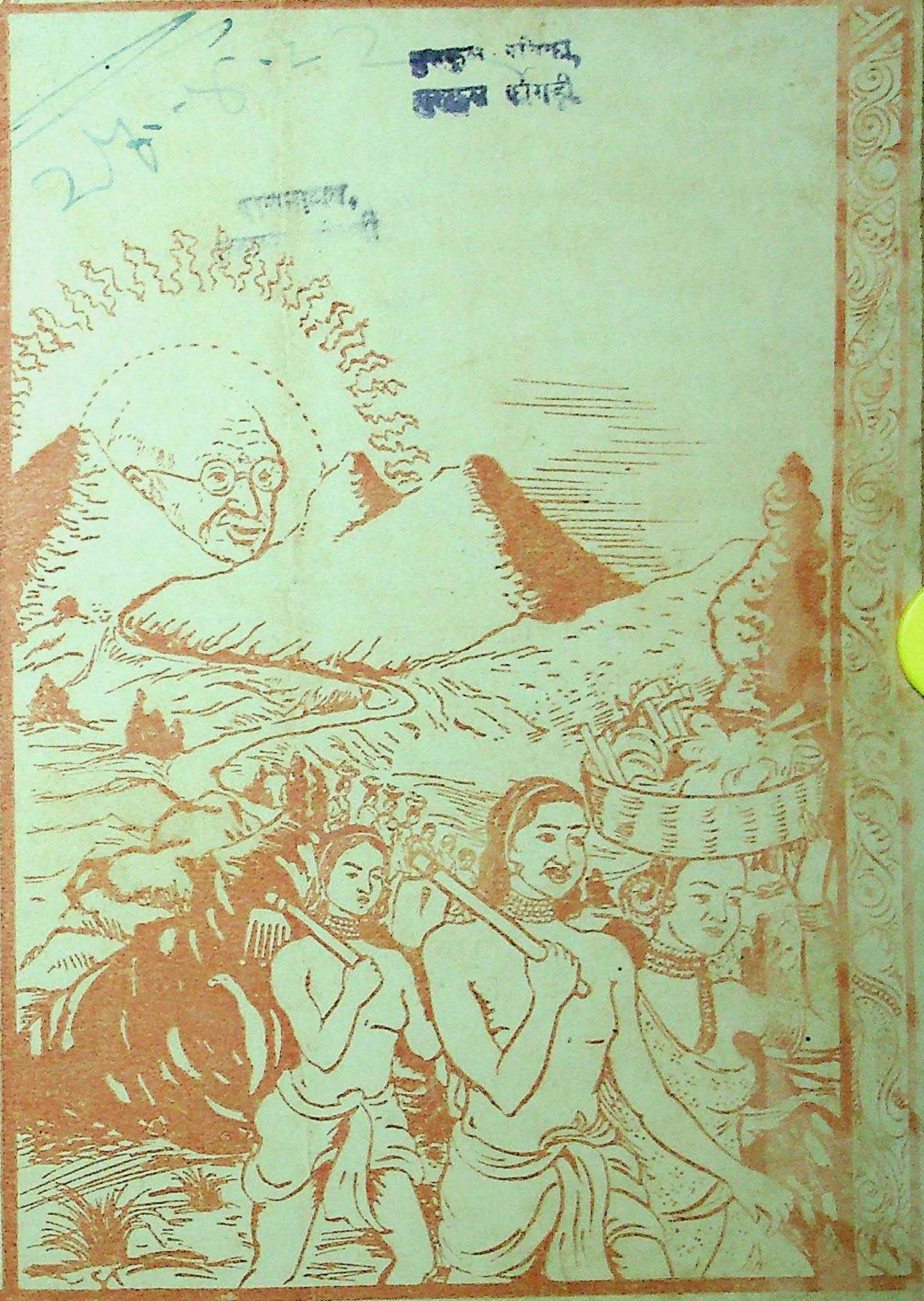

सम्पादक
रामचरित्र सिंह
स० सम्पादक
आदित्य मित्र, 'सेतारी'

अप्रील '५२
वर्ष—२ अंक—४
वार्षिक चन्दा ६)
अर्द्ध वार्षिक— ३)
एक प्रति ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ियाँ, टिकाउ तथा सुन्दर सूटकेशों के लिये याद करें—

**एम० ए० फैजो, बिहार ट्रंक फैक्टरी**

हिन्दपीढ़ी, राँची

हमारे कारखाने में पुराने बक्सों, सूटकेशों आदि की मरम्मत बहुत खूबी के साथ होशियार कारीगरों द्वारा की जाती है। रंगाई का काम भी बहुत ही अच्छा होता है।

पुराने बक्सों को हम बिलकुल नया बना देते हैं।

एक बार परीक्षा कर देखें।

## इस अंक में पढ़िये:—

१ सम्पादकीय ... ... ... १
२ सर्वोदय का अर्थ—श्री मगन भाई देसाई ... ... ... ४
३ भोजन वसन .....बहिष्कार—श्री लक्ष्मी नारायण ... ... ११
४ सर्वोदयी संस्था की आवश्यकता—श्री मोतीलाल केजरीवाल ... .... १६
५ बिहार में कोयले का उत्पादन—प्रो० रघुजी वर्मा ... ... १६
६ टिली (कहानी)—श्री राधाकृष्ण ... ... ... २१
७ ग्राम लक्ष्मी की उपासना—आचार्य विनोबा ... ... ... २६
८ बिहार प्राइवेट फौरेस्ट ऐक्ट श्री सच्चिदानन्द सिंह... .... ... ३०
९ नये चीन की नारी—श्री कातुं नीवा ... ... ... ३५
१० ग्रामों की शिक्षा—श्री विद्यानन्द वेदालंकार ... .... ... ३८
११ श्रम की प्रतिष्ठा .....—श्री रामनारायण राव .. .... ... ४१
१२ गीत (कविता)—श्री 'कवि कहार' ... ... ... ४३
१३ नयी लेखनी— ... ... ... ४५
१४ देश-विदेश .... ... ... ४७
१५ मण्डल की गतिविधि .... ...

## सूचना—

जो लोग अपने स्वस्थ और सुन्दर बच्चों, किसी उत्सव एवं अन्य मनोरम दृश्यों का फोटो 'ग्राम-निर्माण' में प्रकाशित कराना चाहें, वे ब्लॉक भेज सकते हैं। फोटो और १०) रु० नगद आने पर यहां भी इन्तजाम कर दिया जायेगा।

लेखक या कवि उपर्युक्त रकम के साथ अपना फोटो भी भेज सकते हैं। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष २ || * राँची, अप्रिल * || अंक ४

## सम्पादकीयः—

### गरीबों को साँस तो लेने दीजिये

अभी करीब तीन माह से चीजों के दाम में कमी आती जा रही है। सोने, चांदी का भाव गिर गया है। तेलहन, रूई, गुड़, लाह और महुए का भाव भी गिर रहा है। कपड़े में भी मन्दी आ रही है। अभी इस मन्दी का असर थोक बिक्री पर ही पड़ा है। खुदरा खरीददारों को इसका पूरा फायदा नहीं मिल पा रहा है। कलकत्ते, बम्बई के बड़े-बड़े व्यापारियों में हाहाकार मच गया है। कहते हैं, कलकत्ते और बम्बई के दर्जनों करोड़पति व्यापारियों का दिवाला हो गया है। इस लिये बड़े-बड़े व्यापारी घबड़ा उठे हैं और वे चाहते हैं कि सरकार कानून के द्वारा इसे रोके। इसके लिए व्यापारी लोग चिल्ल-पों भी मचाने लगे हैं। कुछ लोगों का तो कहना है कि इस मन्दी के कारण राष्ट्र की बड़ी हानि हुई है।

अब यह विचार करने का विषय है कि यह मन्दी आयी कैसे? क्या यह हानिकारक है? क्या इसे रोकना उचित होगा?

गत विश्वयुद्ध के समय दुनिया भर में चीजों का दाम बढ़ गया था। इधर कोरिया की लड़ाई के समय तो दाम और भी बढ़ा। इसका खास कारण यह था कि कोरिया की लड़ाई के बाद प्रत्येक देश में सरकार की ओर से भविष्य के लिये सामान खरीदकर इकट्ठा किया जाने लगा। अब चीजों की मांग खूब बढ़ी और मिट्टी भी सोना के भाव बिकने लगी। इधर चार पांच माह से कोरिया की लड़ाई में शिथिलता आ गई। इसी कारण राष्ट्रों में चीजों को एकत्र करने की मनोवृत्ति में भी ढिलाई आ गई है। अतः मन्दी आना स्वाभाविक है। बम्बई और कलकत्ते के बाजार में करोड़ों का पटुआ विदेश जाने के लिये तैयार था, व्यापारी करोड़ों बनाने के मनसूबे बांध रहे थे। एकाएक अमेरिका ने पटुआ लेना बन्द कर दिया, अब पटुआ में मन्दी आई, दाम गिरने लगा। इसी समय व्यापारियों पर एक और मार पड़ी। व्यापारी माल केवल अपने रुपये से ही नहीं खरीदते हैं। वे कुछ अपनी पूंजी लगाकर माल खरीदते हैं और इसे बैंक के गुदाम में जमाकर देते हैं और फिर उसके आधार पर बैंक से कर्ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर और माल भी खरीद लेते हैं। इस तरह एक लाख की पूंजी वाला व्यापार कम से कम तीन लाख का व्यापार करता है। ४ क के गुदाम में जो सामान जमा रहता है, उसे मौका पाकर बेचकर व्यापारी बैंक का कर्ज अदा कर देता है। बैंक का रुपया अदा करने का समय निश्चित रहता है। निश्चित समय पर सामान बेचकर बैंक का कर्ज अदा करना आवश्यक है। इस बार इसी प्रकार बैंक से कर्जा लेकर व्यापारियों ने करोड़ों रुपया पटुआ के व्यापार में लगाया था। कोरिया की लड़ाई में शिथिलता आने के कारण विदेशी व्यापारियों ने पटुआ खरीदना बंद कर दिया। पटुआ का दाम गिरने लगा। इसी समय बैंकों ने भी व्यापारियों से रुपया मांगना आरम्भ कर दिया। अब उन्हें पटुआ बेचने की फिक्र हुई। इस तरह दाम और भी गिरा।

रूई के साथ अजीब बात हुई। हिन्दुस्तान में लम्बे रेशे वाली रूई विदेश से आती है। लड़ाई के समय में रूई मिलना मुश्किल था। इसी कारण रूई का दाम खूब बढ़ गया था, अब विदेशी बाजारों में रूई खूब मिलने लगी। यहां तक कि अमेरिका से साल भर के खर्च के लिये हिन्दुस्तान में एक ही बार रूई एकत्र कर दी गई है। इस कारण रूई का भी बाजार गिर गया। अन्य सामानों की भी यही दशा हुई है। सारांश यह कि लड़ाई में शिथिलता आ जाने के कारण अब सरकार चीज खरीद नहीं रही है। अतः बाजार में मन्दी आई है और अगर दुनिया के किसी हिस्से में लड़ाई न छिड़ी तो यह मन्दी कायम रहेगी। इसे रोका नहीं जा सकता। सरकार का प्रयत्न भी विफल होगा। अतः व्यापारियों की यह मांग कि सरकार इसे रोके, व्यर्थ और अनुचित है। महंगी के जमाने में जिन व्यापारियों ने करोड़ों कमाया है, इस समय उन्हें थोड़ा घाटा उठाना पड़ेगा और उठाना चाहिये। इससे बचने का कोई रास्ता नहीं। गरीबों को इस से थोड़ा फायदा होगा। उन्हें सस्ती चीजें मिलेंगी। आज १० साल से गरीब तरस रहे हैं, इस समय उन्हें सांस लेने का मौका मिलेगा। स्वराज्य हो जाने के बाद भी गरीब जनता को सबसे बड़ी शिकायत महँगी की ही रही है। अतः इसे रोकने का प्रयत्न करना देश के साथ धोखा होगा।

## सस्ती ने पाकिस्तान में भी खलबली मचा दी

पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति पर भी वर्त्तमान मन्दी का बहुत बड़ा असर पड़ा है। पाकिस्तान का मुख्य व्यापार जूट, रूई और गेहूं का है। गेहूं इस साल पाकिस्तान में भी काफी पैदा नहीं हुआ, इस कारण गेहूं का व्यापार तो योंही बन्द हो गया है। रूई और जूट के व्यापार में बहुत बड़ी मन्दी आ गई है। इसका प्रभाव पाकिस्तान के सिक्के पर भी पड़ा है। मन्दी के पहले हिन्दुस्तान के सौ रुपये पाकिस्तान के १४४) रुपये के बराबर समझे जाते थे। पाकिस्तान की सरकार का यही नियम था। पर यह दाम अब घटने लगा है और घटते घटते अब इसकी ऐसी अवस्था हो गई है कि १००) पाकिस्तानी रुपये के बदले ९३) से ९५) तक ही भारतीय रुपये मिलते हैं। इससे पाकिस्तान में काफी खलबली मची हुई है। इस मन्दी से बचने का उपाय लोग सोच रहें हैं। पर, कोई सीधा रास्ता नजर आ नहीं रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत सरकार का बजट

मार्च महीना सरकारी कामों के लिये साल का अंत समझा जाता है। इस कारण इसी महीने में प्रत्येक सरकार अगले साल के लिए विधान सभाओं में अपना आय-व्यय का चिट्ठा (बजट) पेश करती है। इसी परम्परा के अनुसार इस बार भी मार्च महीने में सब जगह १९५२-५३ का अर्थात् ५२ के १ अप्रिल से ५३ के ३१ मार्च तक का अनुमानित, आय-व्यय का चिट्ठा पेश किया गया है। इँगलैण्ड, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान आदि सभी देशों में यह बजट पेश किया गया है। भारत सरकार का अनुमान है कि उसे ४ अरब २४ करोड़ ९८ लाख की आमदनी साल भर में होगी और ३ अरब ९१ करोड़ २५ लाख खर्च होंगे। गरज ३३ करोड़ ७३ लाख रुपये बच जायेंगे। भारत सरकार का अनुमान है कि १ अरब ९० करोड़ उसको आयात—निर्यात कर से, ८६ करोड़ की आमदनी आबकारी विभाग से, ६८ करोड़ इन्कमटैक्स से, ७ करोड़ ६५ लाख रुपये रेलवे से, शेष फुटकर मद से आय होगी। इस ४ अरब २४ करोड़ की आमदनी के खर्च का सब से बड़ा मद रक्षा विभाग है। १ अरब ९७ करोड़ रुपया इसी मद में खर्च होगा। शासन विभाग को चलाने में ५५ करोड़ ९८ लाख, प्रान्तों की सहायता में २० करोड़, शरणार्थियों पर १० करोड़, अकाल पीड़ित क्षेत्रों में १० करोड़ और ७ करोड़ ९५ लाख रुपया सरकारी अफसरों को पेन्शन देने में खर्च होगा। शेष भिन्न-भिन्न मदों में और रकम भी खर्च है। इस तरह भारत सरकार ३ अरब ९१ करोड़ खर्च करेगी और साल के अन्तम में ३३ करोड़ ७३ लाख रुपय। बचायगी। यह सब अभी केवल अनुमान है। इस मन्दी का क्या असर होगा, कहना मुश्किल है। अनुमान है कि मंदी के कारण इन्कमटैक्स, आयात-निर्यात कर और रेलवे से भारत सरकार की आमदनी अनुमान से बहुत कम होगी। इस कमी को किस प्रकार पूरा किया जायगा, इसको आज कहना कठिन है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के कलकत्ते का अधिवेशन अभी २१, २२ और २३ मार्च को कलकत्ते में बड़ी धूमधाम से अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी का अधिवेशन हुआ। सभापति श्री पं० जवाहर लाल नेहरू जी का शानदार जूलूस निकला और अनुमान है सारे देश से करीब ६० हजार लोग इस अधिवेशन में दर्शक के रूप में शामिल हुए थे। इस बैठक में देश भर की राजनीतिक परिस्थिति पर विचार विनिमय हुआ। सभी प्रान्तों के प्रमुख कांग्रेस नेता एकत्र थे। इन सब लोगों से सभापति पं० जवाहर लाल नेहरु को प्रान्तीय मंत्रिमण्डल के गठन के सम्बन्ध में वार्त्तालाप करने का मौका मिला। इसी में कांग्रेस के अगले कार्यक्रम के संम्बन्ध में भी निर्णय किया गया। यह निश्चय किया गया कि कांग्रेस के सदस्य अब ४ आने चन्दा देकर ही लोग बन सकेंगे। इधर तीन साल से कांग्रेस के सदस्य एक रुपया देकर बनते थे। निर्णय यह भी हुआ है कि प्रान्तीय और जिला कांग्रेस कमिटी की कार्य कारिणी का संगठन फिर से किया जायगा। कांग्रेस जनों को आदेश दिया गया है कि वे गांवों में घूमघूम कर राष्ट्र निर्माण का काम करें और उनलोगों का भी पूरा सहयोग लें जो कांग्रेस के पुराने कार्यकर्त्ता तो नहीं हैं पर इस बार के चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवारों को जिताने के लिये काफी सचेष्ट रहे हैं। और, चुनाव में पूरी तत्परता से काम किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ऐसा विचार है कि 'ग्राम निर्माण' के दफ्तर में छोटानागपुर के ऐसे कार्यकर्त्ताओं की सूची तैयार की जाय जो कांग्रेस के कार्यक्रम में विश्वास और दिलचस्पी रखते हैं। और, कांग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्र निर्माण का काम करना चाहते हैं। ऐसे लोगों से अपील है, वे 'ग्रामनिर्माण' के दफ्तर में अपना नाम, पूरा पता और अपना परिचय लिखकर भेज दें।

—००—

## गरीबों का अथवा जमीन्दारों का ?

काउंसिल के और काउंसिल आफ स्टेट का चुनाव अभी आरंभ हुआ है। इसमें इने गिने लोग ही वोट देते हैं। बिहार विधायिका सभा के सदस्यों को भी कांउंसिल आफ स्टेट के लिये और बिहार काउंसिल के लिये सदस्य चुनना है। अन्दाज है कि इनमें झारखण्ड पोर्टी तथा सोशलिस्ट पार्टी भी एक दो सदस्य चुन सकेगी। झारखण्ड पार्टी तथा सोशलिस्ट पार्टी वाले इसका दावा करते हैं कि वे गरीबों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन इस चुनाव में झारखण्ड पार्टी की ओर से सर कामेश्वर सिंह (महाराजाधिराज दरभंगा) खड़ा किये गये हैं और सोशलिस्ट पार्टी की ओर से श्री महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, जो मुजफ्फरपुर के बड़े जमींदार हैं। कहा जाता है कि कांग्रेस जमींदारों और पूंजीपतियों की संस्था है। अब लोग आँखें खोलकर देखें कि कांग्रेस ने जिस बड़े जमींदार सर कामेश्वर सिंह को हराया उसीको श्री जयपाल सिंह आदिवासियों का प्रतिनिधि बनाकर दिल्ली की सभा में भेज रहें है। अब पाठक सोचें कि ये दोनों वहां गरीबों का हित सोचेंगे अथवा जमींदारों का ?

## गरीब आदिवासी देखते ही रह गये

हमारे देश में चुनाव करीब करीब समाप्त हो गया। और, अब लोग इसकी समीक्षा कर रहे हैं कि इसके फल का किस के ऊपर क्या असर पड़ेगा। अभी हम छोटानागपुर पर इस का क्या असर होगा, इसी का विश्लेषण करेंगे। छोटानागपुर के राँची और सिंहभूम दो जिलों में आदिम जातियों की संख्या अधिक है। इन दो जिलों से झारखण्ड पार्टी को २१ सदस्य बिहार की विधायिका सभा में भेजने का मौका मिला है। इन दोनों जिलों में कुल २७ सदस्य निर्वाचित हुए हैं। केवल इन्हीं दो जिलों में झारखण्ड पार्टी की शानदार जीत हुई है, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन दो जिलों की विजय से ही श्री जयपाल सिंह जिस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहते हैं, वह बिलकुल निराधार है। श्री जयपाल सिंह और उनके हिमायतियों को यह याद रखना चाहिये कि केवल बातों के आडम्बर से दुनियां सदैव ठगी नहीं जा सकती। अगर दो जिलों में उनकी जीत हुई तो छोटानागपुर के अन्य तीन जिलों में उनकी जैसी करारी हार हुई है वैसी कांग्रेस की कहीं भी नहीं हुई। उन्हें याद रखना चाहिये की मानभूम, पलामू और हजारीबाग में झारखण्ड पार्टी को एक भी सीट नहीं मिल सका है। अगर सीटों के जीतने पर ही प्रान्तों का बँटवारा होना है तो झारखण्ड की मांग करना बिलकुल धांधली है। अतः श्री जयपाल सिंह का यह कहना कि छोटानागपुर में उनकी शानदार विजय हुई है, बिलकुल भ्रमात्मक है। उनकी विजय छोटानागपुर के पाँच जिलों में से केवल दो जिलों में ही हुई है। झूठी बातों का प्रचार करना श्री जयपाल सिंह की पुरानी आदत रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है और इसीके सहारे उन्हें दो जिलों में सफलता भी मिली है। और इसी सफलता के आधार पर वे आज अपनी धाक का ढोल सारे हिन्दुस्तान में पीटना चाहते हैं। पर, उन्हें समझना चाहिये कि दिल्ली और राँची के लोगों की समझ में फर्क है। वहाँ के लोग समझते हैं और उन्होंने देख लिया है कि श्री जयपाल सिंह गरीबों के हिमायती नहीं। वे दरभंगा महाराज जैसे धनियों के हाथ इन्हें बेच कर केवल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। अतः श्री जयपाल सिंह को स्मरण रखें कि दो जिलों की जीत का अर्थ कभी कोई पाँच जिलों (छोटानागपुर) की जीत न समझेगा।

दो जिलों की जीत को सारे छोटोनागपुर की जीत मान कर श्री जयपाल सिंह कुछ दिनों तक भ्रम में आ गये थे और वे समझते थे कि कांग्रेस अब भी उनकी सलाह से चलेगी तथा बिहार के मंत्रिमण्डल का गठन भी उनकी राय से होगा। उसी भ्रम में पड़कर उन्होंने अपने अनुयायियों से दरखास्त दिलायी कि मा० कृष्ण वल्लभ सहाय को नये मंत्रिमण्डल में स्थान न दिया जाय। प्रजातंत्र शासन पद्धति के इतिहास में यह एक ही घटना है। कभी विरोधी दल ने यह नहीं बतलाया कि बहुसंख्यक दलवाले किसको अपना नेता बनावें और किस पर शासन चलाने का भार दें। आज हिन्दुस्तान में कुछ कम्युनिस्ट लोग भी दिल्ली की सभा में जीत कर आगये हैं। ये बिलकुल अल्पसंख्यक हैं पर क्या पण्डित जवाहर लाल नेहरू इनकी राय से मंत्रिमण्डल बनायेंगे? क्या इंग्लैण्ड में चर्चिल ने एटली की राय से अपना कैबिनेट बनाया है? वहाँ तो बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक दल में थोड़ी संख्या का ही फर्क है। लेबर पार्टी से कंजरवेटिव पार्टी में कुल ३५ सदस्य अधिक हैं। तौ भी कभी एटली ने यह नहीं सोचा कि चर्चिल के मंत्रिमण्डल का कौन कौन सदस्य होगा, इसपर वह अपनी राय दे। पर, बिहार में तो कांग्रेस और झारखण्ड पार्टी में २०६ का फर्क है कांग्रेस दल की संख्या २४१ है और झारखण्ड पार्टी वालों की केवल ३२ ही। फिर भी श्री जयपाल सिंह ने यह कुचेष्टा की थी कि श्री कृष्णवल्लभ सहाय मंत्रिमण्डल में न आवें। उन्हें सफलता तो नहीं ही मिली उलटे राजनीति जानने वाले लोगों की समझ में भी आ गया कि श्री जयपाल सिंह ने राजनीतिक फूहड़पन किया।

श्री जयपाल सिंह कहा करते हैं कि आदिवासियों की उन्नति के लिये ही वे ये सभी दाव पेंच खेल रहे हैं। पर इसमें भी कोई वास्तविकता नहीं है आदिवासियों की तरह ही हरिजन भी पिछड़े हुए और अशिक्षित हैं। पर, आज उनमें से कुछ तो जवाहर लाल के मंत्रिमण्डल में शामिल और इस तरह पाँच वर्ष तक हरिजनों की सेवा में लगे रहेंगे। और प्राणपण से रचनात्मक कार्य द्वारा यह चेष्टा करेंगे कि हरिजनों का उत्थान हो। पर झारखण्ड पार्टी के प्रतिनिधियों का क्या दशा होगी? ये दिल्ली तथा पटने की सभा में बैठकर अन्य लोगों का काम देखेंगे और उसपर आलोचना करेंगे। पर, स्वयं तो ये कुछ कर सकेंगे नहीं, क्योंकि ये विरोधी दल के हैं। इस तरह आदिवासियों की जो उन्नति उसके लोगों के मंत्रिमण्डल में शामिल होने से होता, वह श्री जयपाल सिंह के गलत नेतृत्व के कारण न हो सकेगा। श्री जयपाल सिंह को तो इससे कोई घटी नहीं हुई। वे स्वयं तो अब दरभंगा महाराज के हवाई जहाज पर उड़ेंगे और श्री कामाख्यानारायण सिंह की मोटरों पर चकल्लस करेंगे। दिल्ली में महाराजधिराज के प्रासाद का द्वार भी इनके लिए खुल जायेगा। और इनको चाहिये ही क्या? पर गरीब आदिवासी तो जहाँ के तहाँ देखते ही रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## राँची जिले में कांग्रेस की हार क्यों ?

अभी चुनाव समाप्त हुए, दो माह से अधिक हुए। इस बीच इसके सम्बन्ध में काफी अनुसन्धान किया गया है कि इस जिले में काँग्रेस की हार क्यों हुई। पटने के विशेषज्ञों ने इण्डियन नेशन के कालम के कालम रंग दिया है और सभी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं चूंकि कि आदिवासियों ने कांग्रेस का साथ नहीं दिया, इसीलिए कांग्रेस की ऐसी करारी हार हुई। लोगों का ख्याल है कि सभी आदिवासी बिलकुल झारखण्डी हैं। वे सब-के-सब श्री जयपाल सिंह के अनुयायी हैं और बिहारियों को वे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। श्री जयपाल सिंह ने यही प्रचार किया और दरभंगा महाराज को काउन्सिल औफ स्टेट में भेजकर उन्होंने एक तरह से इण्डियननेशन अखबार पर अपना कब्जा जमा लिया है। इसी कारण आज इण्डियननेशन की भाषा में और श्री जयपाल सिंह की भाषा में कोई फर्क नहीं रह गया है। पर यह सच्चाई और वस्तुस्थिति के बिलकुल विपरीत है।

रांची जिले की आबादी में तीन प्रकार के लोग हैं। राँची जिले की आबादी करीब १६ लाख ७५ हजार है, जिनमें ११ लाख ७३ हजार आदिवासी हैं और शेष करीब ५ लाख बिहारी हैं जिनमें हिन्दू, मुसलमान और हरिजन सम्मिलित हैं। आदिवासियों में ३ लाख क्रिश्चियन हैं और शेष अपनी पुरानी संस्कृति को मानने वाले हिन्दू आदिवासी हैं। इनमें खड़िया लोगों को छोड़ कर प्रायः सभी क्रिश्चियनों ने झारखण्ड पार्टी का साथ दिया और इनमें वोट देने का वही जोश था जो मुस्लिमलीग के जमाने में मुसलमानों में होता था। क्रिश्चियनों ने पूरा संगठित होकर वोट दिया। वे शिक्षित और संगठित तो हैं ही साथ ही एक धार्मिक कट्टरता भी उनमें है। इन्होंने स्वयं तो वोट दिया ही और साथ में रहने वाले अन्य गरीबों लोगों को भी डरा धमकाकर वोट दिलवाया लोगों को हत्या करने और घर जलाने की धमकी दी गई। श्री बोनीफेस लकड़ा और उनके कार्यकर्त्ता तो कई बार जान बचा कर भागे। हिन्दू आदिवासियों ने कांग्रेस का साथ दिया। पर ये गरीब और अशिक्षित हैं। और उनमें क्रिश्चियनों की तरह संगठन भी नहीं है। अतः अधिकतर उनका स्त्रियाँ वोट दे नहीं आयीं। कुछ दबाव के कारण भी इनका वोट बँट गया। पर इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू आदिवासियों ने कांग्रेस का ही साथ दिया।

कांग्रेस की हार का मुख्य कारण आदिवासी नहीं, बिहारी ही हैं। बिहारियों ने—जिन्हें यहां 'सदान' कहा जाता है—कांग्रेस का बिलकुल साथ नहीं दिया और इसी कारण काँग्रेस की हार हुई। आजतक रांची जिले में कांग्रेस के स्तंभ हिन्दू आदिवासी, बिहारी और टानाभगत ही रहे हैं। पर इस बार के चुनाव में अधिकांश बिहारियों ने—सिल्ली क्षेत्र को छोड़ कर कांग्रेस की मुखालफत ठीक उसी तरह की जिस तरह श्री जयपाल सिंह पि के पिछलग्गुओं ने। इसका सबसे बड़ा कारण कांग्रेस की दलबन्दी है। रांची जिले में बिहारियों में प्रमुखता है यहां के जमीन्दारों की। वे ही उनके अगुआ समझे जाते हैं। और उनपर कारणवश श्री कामाख्या नारायण सिंह का जादू चल गया और अधिकांश बिहारियों ने श्री कामाख्या नारायण सिंह की जनता पार्टी का साथ दिया। चूंकि यह परिस्थिति ठीक चुनाव के समय में पैदा हुई इसलिये इसका मुकाबला नहीं किया जा सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सर्वोदय का अर्थ

ले०—श्री मगन भाई देसाई

२६ जनवरी हमारे राष्ट्र के पंचांग में एक महान दिन है। दिवाली या नये वर्ष की तरह इसे खुशी का दिन समझना चाहिये। आज दिन सन् १९३० में राष्ट्र ने शपथ ली थी कि हम देश को पूर्ण स्वतंत्र बनाकर ही चैन लेंगे। उस पूर्ण स्वराज को लाने के लिये हमने सत्याग्रह की लड़ाई चलाने का निश्चय किया और पूज्य गांधी जी के मार्गदर्शन में लड़ाई शुरु की। ईश्वर ने उसमें हमें सफलता प्रदान की और १५ अगस्त, १९४७ के दिन अंग्रेज हमारे देश की सत्ता प्रजा की प्रतिनिधि सरकार के हाथ में सौंपकर चले गये।

उसके बाद चार वर्षों का इतिहास ताजा है। हमारी विधानसभा ने देश का स्वतंत्र विधान बनाया और भारत के सार्वभौम गणराज्य की स्थापना हुई। २६ जनवरी १९५० को घोषणा होकर उसका आरम्भ हुआ। इस तरह २० वर्ष पहले राष्ट्र ने पूर्ण स्वतंत्रता की जो शपथ ली थी, पूरी हुई।

अब सवाल हमारे सामने यह है कि मिली हुई स्वतंत्रता का सदुपयोग किस तरह किया जाय, जिससे देश में सच्चे स्वराज्य की स्थापना हो? स्वतंत्रता एक साधन है; उसके जरिये हमें देश का हित साधना है। अब सबसे बड़ा सवाल हमारे सामने यही है कि इस ध्येय को पूरा करने के लिये क्या किया जाय? इस सवाल का जवाब है—सर्वोदय। यह जवाब हमें गाँधी जी ने दिया है। यह हमारे राष्ट्र का आदर्श है। अतः सर्वोदय का अर्थ क्या है, इस पर हम छकु विचार करें।

यह शब्द गांधी जी का बनाया हुआ है। १९वीं सदी में हो गये रस्किन नाम के एक प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान ने 'अन्टु दिस लास्ट' नामक एक पुस्तक लिखी है। उसका अनुवाद गांधी जी ने 'सर्वोदय' नाम से किया। रस्किन के जमाने में समाज का जो आदर्श था, उसे 'उपयोगितावाद' के नाम से पुकारा जाता था। वह वाद कहता था कि यथासंभव अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक भला किया जाय। यही व्यावहारिक आदर्श है। लेकिन रस्किन इस वाद को स्वीकार नहीं करता था। वह अपनी पुस्तक में कहता है कि सबका श्रेय होना चाहिये—सबका उदय होना चाहिये। जिस चीज को समझते हुए गांधी जी ने जो कहा है, वह खास तौर पर याद रखने जैसा है:—

"अहिंसा का पुजारी उपयोगितावाद के सिद्धान्त की पूजा नहीं कर सकता। वह तो सारी सृष्टि के श्रेय के लिये प्रयत्न करेगा और उस आदर्श को सत्य बनाने के प्रयत्न में मर मिटेगा। इस तरह दूसरे जीयें, इसके लिये खुद मरने में वह खुशी मानेगा। खुद मरकर वह दूसरे सब की सेवा करेगा और उसी में उसकी अपनी सेवा भी आजायगी। सबकी ऐसी सर्वोच्च सेवा में 'अधिक संख्या का भला' तो आ ही जाता है। और इस लिये बहुत बार ऐसे श्रेय वादी और उपयोगिता वादी दोनों अपने मार्ग में एक-दूसरे के कदम पर कदम रखकर चलते दिखाई देंगे। लेकिन ऐसा होते हुए भी एक समय तो ऐसा आवेगा ही जब कि उन्हें एक-दूसरे से जुदा होना होगा। संभव है, किसी समय उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध भी काम करना पड़े। उपयोगितावादी अगर अपने सिद्धान्त का दृढ़ता से पालन करे, तो वह अपने आपका भोग कभी नहीं चढ़ायेगा, नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चढ़ा सकता। इसके विपरीत, सबके श्रेय—कल्याण पर दृष्टि रखने वाला श्रेयवादी अपनी कुरबानी देने में भी पीछे नहीं हटेंगे।" (नवजीवन, १२-१२,-२६)

आज दुनिया के लोगों के सामने बड़ा दुःख कौन सा है? जैसा कि अभी हालके एक भाषण में राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र बाबू ने बताया है, जगत आज दो बातों से दुःखी है। एक, युद्ध; दूसरी तंगी और गरीबी। गरीब और लाचार लोग दुनियां में बहुत ज्यादा हैं, धनी और बलवान लोग थोड़े हैं। दुनिया के सारे देशों में इसी तरह लोगों के दो भाग हैं। छोटे-छोटे देश और पिछड़ी हुई जातियां अनेक हैं। बड़े देश और आगे बढ़ी हुई प्रजायें थोड़ी हैं। इस प्रकार की जो असमानता, विषमता है, उसे कैसे दूर किया जाय? कौन सा आदर्श सामने रखकर चला जाय? आज की दुनिया के सामने यही सबसे बड़ा सवाल है।

इसका जवाब कई तरह से दिया जाता है। उसके दो-तीन बड़े हिस्से हो जाते हैं। एक जवाब यह है कि गरीब लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत होना चाहिये और संगठित बनकर विरोधी लोगों से लड़ लेना चाहिये। क्योंकि इन दो वर्गों के बीच विग्रह का रास्ता अख्तियार करने के सिवा कोई चारा नहीं। बलवान लोग इसके बिना माननेवाले नहीं हैं। यह रास्ता वर्गविग्रह का या हिंसा का रास्ता हुआ।

इस तरह विचार करके समाज के धनी और बलवान वर्ग के लोग भी कहते हैं कि हमें संगठित होकर काम करना चहिये, वर्ना बहुमतवाले लोग हम पर चढ़ बैठेंगे और अंधाधुंधी फैलाकर देश को बरबाद कर देंगे। यह दृष्टिकोण भी अंत में तो वर्गों के बीच विग्रह की भावना पैदा करके ही काम करने वाला है, और समाज पर छोटे छोटे वर्गों की निरंकुश सत्ता कायम करने वाला बन सकता है।

इस तरह अगर दोनों वर्ग वैरभाव से एक-दूसरे के साथ लड़ने लगें, तो फिर उसमें अच्छा क्या और बुरा क्या, इसका भान नहीं रहता। और जिस रास्ते काम बने वही सच्चा, इस तरह साध्य और साधन के बीच कोई सम्बन्ध नहीं रहता। काम पूरा करने के लिये अच्छे-बुरे कैसे साधनों का प्रयोग किया जाता है। नतीजा यह होता है कि साध्य भी साधनों की तरह ही दूषित हो जाता है और प्रजा का दुःख मिटता नहीं। गांधी जी का सर्वोदय का आदर्श इससे भिन्न है। वह सत्य और अहिंसा के साधनों को पहला स्थान देता है। सर्वोदय का सिद्धान्त यह मानता है कि जिस हद तक सत्य और अहिंसा के साधन छोड़े जाते है, उसी हद तक साध्य दूर हो जाता है और बिगड़ता है। इसलिये वह वर्ग-विग्रह के रास्ते को गलत और त्याज्य मानता है। यह सही है कि समाज के अलग अलग वर्गों के बीच खींचातानी है। लेकिन उससे यह कैसे कहा जा सकता है कि वह अच्छी है और रहनी या रखी जानी चाहिये? यह सच है कि इस खींचातानी या संघर्ष को दूर करना चाहिये। लेकिन आपस की लड़ाई से वह दूर नहीं हो सकती। समाज में सर्वोदय धर्म की स्थापना करने से ही वह दूर की जा सकती है। यह धर्म नैतिक होने के साथ ही सामाजिक और आर्थिक भी है। सामाजिक दृष्टि से वह कहता है कि समाज में कोई ऊंचा-नीचा नहीं है; जो समाज जात-पांत, कुल, धन-दौलत, धन्धे वगैरह के कारण अपने वर्गों में ऊंच-नीच का भाव बढ़ता है, वह भूलता है। हमारे देश में श्रम अथवा मजदूरी या अंग श्रम को हलकी और नीची चीज माना गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली भी आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसी मान्यता पर चलती है। ऐसे कुछ धंधों को हम हमेशा हलके मानते रहे हैं, जो समाज के लिये अत्यन्त जरूरी हैं और उनके करने वालों को हम अछूत तक समझते रहे हैं। उनके इज्जत के साथ देवी-देवता के दर्शन करने में भी हमें एतराज होता है। यह भावना अगर दूर न हुई तो, आजादी आने का कोई अर्थ ही न रह जायगा। और यदि श्रम की महिमा हमारे राष्ट्र में न समझी गई, तो सदियों से घर की हुई बेकारी, आलस और कंगाली वगैरह जैसी बलायें दूर नहीं की जा सकतीं। सर्वोदय का सिद्धान्त सामाजिक क्षेत्र में हमसे इस प्रकार की क्रान्ति चाहता है। अब इसका आर्थिक पहलू देखें।

आर्थिक दृष्टि से यह सिद्धान्त कहता है कि ईमानदारी से कामधंधा करने वाले या मजदूरी करने वाले को जीवन-निर्वाह का जरूरी साधन मिलना चाहिये। समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे कोई किसी की मेहनत का अन्याय से नाजायज फायदा न उठा सके। समाज की आर्थिक व्यवस्था में एक-दूसरे के शोषण की गुंजाइश नहीं होनी चाहिये। आज दुनियां में सबसे बड़ा दुःख इस आर्थिक शोषण के जाल का ही है। इस जाल में से प्रजा के बहुत बड़े भाग को, जो गरीब है, निर्बल है, छुड़ाना चाहिये। सर्वोदय का सिद्धान्त कहता है कि

१ सबके भला में हमारा भला है।

२ वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक-सी होनी चाहिये, क्योंकि सबको आजीविका कमाने का एक-सा हक है।

३ सादा मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

ये शब्द मैंने गांधी जी की आत्मकथा में से यहां दिये हैं। यह बड़ी कठिन चीज है। इसे मानना मुश्किल है। फिर भी इसमें शक नहीं कि सच्ची चीज यही है। अलग-अलग काम धंधों से जो आय हो, इसमें ऊंच-नीच का क्या काम? उनकी आय में इतना बड़ा फर्क क्यों होना चाहिये? वकील और डाक्टर के एक घंटे के काम के ५०, १०० या इससे भी ज्यादा रुपये मिलें और मजदूर को एक घंटे के काम के लिये ४–६ आने ही क्यों मिलें? इस सवाल का सन्तोषजनक जवाब नहीं मिलता। इसके पीछे रहने वाले सामाजिक या आर्थिक विचारों में जब तक परिवर्तन न हो, तब तक इस स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। सर्वोदय का सिद्धान्त इन विचारों में फेरफार करना चाहता है। जिनको खूब मिलता है, जो वर्ग आज मालदार है या किसी न किसी कारण से दुनियादारी में सफल हो गये हैं, उनसे यह सिद्धान्त कहता है कि आपको जो आय होती है वह आपके भोग-विलास या ऐश-आराम के लिये नहीं है, वह आपके पास ट्रस्ट के रूप में है। समाज उसका लाभ उठा सके, यह देखना आपका धर्म है। दूसरी तरफ, जिन वर्गों को न्यायसंगत आवश्यक आमद भी नहीं होती, जो गरीब और पिछड़े हुये हैं, उनसे सर्वोदय का सिद्धान्त कहता है कि तुम्हारा श्रम भी एक बहुत बड़ी पूंजी है। इसके साथ यदि तुम अपने में समझदारी और स्वावलम्बन के गुण बढ़ाओ, तो तुम किसी तरह पीछे नहीं रह सकते। तुम्हारा कल्याण तुम्हारे ही हाथ में है। श्रम ही सृष्टि की कामधेनु है। समझदारी के साथ उसका उपयोग करोगे, तो सामने वाला तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

इस प्रकार सर्वोदय का सिद्धान्त समाज के दोनों दलों को कार्य-क्रम बताता है, धर्म बताता है, आदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देता है। धनवान, मालदार या बलवान वर्गों को उनकी जिम्मेदारी बताता । उनसे कहता है कि दान, दया और त्याग की भावना धारण करो और अपने को ऊंचे या भिन्न वर्गों का मानने का अभिमान छोड़ दो। गरीब या निर्बल वर्गों से यह सिद्धान्त कहता है कि तुम्हारा श्रम से तो सारी दुनिया जी रही है; उस श्रम के साथ ज्ञान और समझदारी के गुण जोड़ लो, तो तुम्हें कोई चूस नहीं सकेगा, तुम खुद अपना कल्याण कर सकोगे।

लेकिन यहां यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि इस तरह यदि लोग अपना-अपना धर्म पालें, अपनी जिम्मेदारी समझें, समझदारी बढ़ावें, तो फिर दूसरा चाहिये क्या? वैसा न हो. अथवा धीरे-धीरे हो तो क्या? स्वराज के आने से क्या उसमें फर्क नहीं पड़ना चाहिये? जनता की सरकारें यदि सर्वोदय की नीति अख्तियार करें, तो उन्हें कैसे चलना चाहिये? सर्वोदय का सिद्धान्त सरकारों से क्या कहता है?

यह सवाल आज बड़े महत्व का बन गया है। जब तक हमारे देश में विदेशी हुकूमत थी, तब तक यह सवाल इतना आगे नहीं आया था। अब इसका विचार किया जाना चाहिये। सर्वोदय का सिद्धान्त ऐसा कहता है कि सरकार प्रजा की प्रतिनिधि है, उसकी ट्रस्टी है। उसे किसी भी एक वर्ग की नहीं बनना चाहिये। सब दलों का, सब वर्गों का ख्याल रखकर काम करना चाहिये। और सब दलों का मतलब है जो वर्ग अत्यन्त पिछड़े हुए हैं, कमजोर हैं, उनका पहले ख्याल करना चाहिये। इसलिये इस सिद्धान्त को कुछ लोग 'अन्त्योदय' भी कहते हैं। एकसाथ सभी का पक्ष कैसे लिया जा सकता है? इसका रास्ता यह है कि जिसकी तरफ पहले ध्यान देने की जरूरत हो, उसका पहला ख्याल किया जाय। इसी लिये यह सिद्धान्त कहता है कि भारत की सरकार को गरीबों के कल्याण के लिये काम करना चाहिये। इसका मार्ग यह है कि जहां आर्थिक या सामाजिक ऊँच-नीचपन या कंगालियत के कारण प्रजा का शोषण होता हो, वहां सरकार को बीच में पड़कर कमजोरों के रक्षक की तरह अपनी ताकत का उपयोग करना चाहिये। किसी भी न्यायसंगत वस्तु का नाश न हो सके, उसी तरह किसी भी न्यायपूर्ण वस्तु की अवगणना नही होनी चाहिये। इस तरह यदि जनता की सरकार काम करे, तो ही वह वर्गविग्रह से या वर्गोदय से बच सकती है। ऐसी सरकार पूरी तरह लोकतंत्रात्मक होनी चाहिये। ऐसी सरकार दूसरे किसी देश पर बुरी नीयत नही रखेगी, उसपर अपना साम्राज्य जमाने की ताक में नहीं रहेगी। वह दुनिया के किसी भी देश के साथ वैमनस्य नहीं रखेगी, बल्कि अपने देश के न्यायपूर्ण कल्याण के लिये प्रयत्न करेंगी। दुनिया की सरकारें यदि इस ढंग से चले, तो ही दुनिया युद्ध से बच सकेगी और सब लोग सुख से रह सकगे। सर्वोदय का सिद्धान्त सब देशों, सब जातियों, सब वर्गों, सब मनुष्य के उदय का—उत्कर्ष का मार्ग है। उसकी जड़ में समानता और बन्धुता की भावना रही है, वह मानव-धर्म की बुनियाद पर रचा हुआ सिद्धान्त है। साध्य और साधन के बीच के ओतप्रोत सम्बन्ध को वह कभी भूलने नहीं देता। ऐसा करके वह मानव की मानवता को आगे बढ़ाता है और उसके बलपर सृष्टि के एक मानव-कुटुम्ब से हिलमिल कर रहने को कहता है। आज दुनिया में अनेक वाद चलते हैं। उनमें सर्वोदय का सिद्धान्त अपना

( शेष पृष्ठ २० में )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भोजन-वसन सम्बन्धी मिल उत्पादित सामान का बहिष्कार

ले०—श्री लक्ष्मी नारायण, मंत्री, बिहार खादी समिति

इधर कई महीनों से रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं में भोजन वसन सम्बन्धी मिल उत्पादित सामानके बहिष्कार की चर्चा चल रही है और कई जगह ऐसे मिल उत्पादित सामान के बहिष्कार का निश्चय भी हुआ है। बिहार खादी समिति की ओर से भी ऐसा निश्चय के पश्चात् यह स्पष्ट दीख पड़ता है कि खादी और ग्रामोद्योग को अगर भावी समाज संगठनात्मक कार्य्यक्रम बनाना है, अगर समाज में सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा दिन प्रति दिनके जीवन निर्वाह की अनिवार्य सामग्री के लिये पूँजीवाद पर निर्भर नहीं रहना है। पूँजीवाद व्यक्ति का हो या राज्य का हो, उस वादके चक्कर में रहने वाले अपनी पूँजीकी रक्षाको मानव जीवन से ऊँचा स्थान देते ही हैं। मानव संहारकी परवाही न कर दोनों प्रकार के पूँजीवदी अपनी भौति कसम्पत्ति की रक्षा करने में तल्लीन रहते हैं। जब पूँजीवादियों की ऐसी ही मनःस्थिति है तो फिर जनसमूह को जीवन निर्वाह की सामग्रियों के बारे में पूँजीवादियों के पंजे से छूटना आत्मरक्षा की दृष्टि से लाजमी है।

खादी और ग्रामोद्योगों के बारे में जनता में और रचनात्मक कार्य्यकर्त्ताओं में ऐसा विचार है कि उनका विकास ज्यों-ज्यों होता जायेगा त्यों-त्यों भोजन वसन के सामानों से पूँजीवादी सत्ता आप से आप हटेगी। परन्तु खादी और ग्रामोद्योगों के विकास में एक प्रकृतिजन्य मर्य्यादा है। वह यह कि मनुष्य को इन सामानों का उत्पादन, वितरण और उपयोग इस तरह करना कि जिसमें वे अपनी मनुष्यता को खो न बैठें, अर्थात् वे सत्य और प्रेम की नीति को खो न बैठें। खादी और ग्रामोद्योग का हिमायती मिहनत बचाने के ऐसे साधन न ढूंढ़ेगा जिससे किसी व्यक्ति या संस्था का धन बढ़े चाहे उससे जनता पर बरबस बेकारी लदती जाये। वह सोचता है कि जनता की इस तरह की बेकारी मानवताका अभिशाप है क्योंकि बेकारी शीघ्र ही बदकारी में बदल जाती है। अगर आदमी के सामने उपयोगी, सहयोग वर्द्धक और मानव सेवा के काम नहीं रहेंगे तो वह जब तक जियेगा, तब तक निरुपयोगी, दुरुपयोगी, झगड़े या अपने आधिपत्य बढ़ाने के काम करता रहेगा। इसलिये खादी और ग्रामोद्योगों के कार्य्यकर्ता इन कामों के साधनों का विकास इस तरह करते हैं जिसमें बेकारी भी घटे और निर्वाह के सामान उत्पादनकी सिफत और परिमाण में भी तरक्की हो। खाद और ग्रामोद्योग का सिद्धान्त स्वावलम्बन का सिद्धान्त है। अपने देश की बनी चीजें छल, प्रपंच अथवा बल प्रयोग से दूसरे देशों पर लादने का नहीं है। स्वावलम्बन में परस्परावलम्बन का सिद्धान्त भी निहित है। मानव समाज बिना प्रेम और सहयोग के टिक नहीं सकता। इस दृष्टि से मनुष्य स्वभावतः एक दूसरे को मदद करता है। इस पारस्परिक सहायता की भावना से मानवताकी आन्तरिक एकता कायम रहती है। इस एकता की जगह राजा प्रजा, मालिक नौकर, अफसर जनता, जात-पांत इत्यादि अनेक भागों में पूँजीवाद मानव समाज को विभक्त कर उसमें संघर्ष पैदा करता है। जब खादी और ग्रामोद्योग का उद्देश्य मानव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाज में प्रेम और सहयोग की भावनायें फैलाने का है और इन उद्योगोंके विकास में भी हमेशा मानवता की रक्षा का ध्यान रक्खा जाता है। और यह भी स्पष्ट है कि पूँजीवादी सिद्धान्त के अनुसार किसी भी कीमत पर चाहें वह नीति की कीमत पर हो, मानव जाति की मौलिक एकता को बिगाड़ने की कीमत पर हो, पूँजी की रक्षा और मुनाफे की वृद्धि ही सर्वोपरि दृष्टि है। तो यह स्पष्ट है कि खादी और ग्रामोद्योग के विकास मात्र से यह सम्भव नहीं है कि सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा कायम हो जाये। पूँजीवादी जिस दृढ़ता से मानव समाजको उसकी मानवता से गुमराह कर सर्वोदय समाज के विचारों को आंखों से ओझल करने की कोशिश कर रहे है उसी दृढ़ता से खादी और ग्रामोद्योग के हिमायतियों को मानवता का चित्र मानव समाज के सामने रखना है और सर्वोदय समाज के विचारों का डट कर प्रचार करना है। पूँजीवाद के चक्कर से मनुष्य छूट भी कैसे सकता है जबकि प्राण रक्षा के लिए भोजन और अपने सामाजिक जीवन की रक्षा के लिये वस्त्र की प्राप्ति पूँजीवाद पर आधारित कारखानों से ही होती है। इस चक्कर से छूटने के लिये मनुष्य को निश्चय करना पड़ेगा कि वह ऐसे कारखानों के उत्पादित भोजन और वस्त्र के सामान का उपयोग नहीं करेगा। जब वह ऐसा निश्चय करेगा तब ही उसे अपने श्रम की शक्ति का अन्दाजा लगेगा और वह सर्वोदय समाज के विचारों का हृदयंगम कर सकेगा।

अभी तो मिल उत्पादित खाना और कपड़े के बहिष्कार की शुरुआत है। अगर रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्त्ताओं द्वारा यह बहिष्कार कार्यक्रम दृढ़ता से बढ़ाया जाये तो जनता का ध्यान इस ओर तेजी से हो जाने वाला है। आज के नौजवान यह मान बैठे हैं कि मिल उद्योग के बिना मनुष्य के भोजन और कपड़े का काम पूरा नहीं हो सकता। इस भ्रम निवारण का काम शीघ्रता से हाथ में लेना है। रचनात्मक संस्थायें और रचनात्मक कार्यकर्त्ता मिल उद्योगों द्वारा उत्पादित जिन भोजन और वस्त्र के सामानों का बहिष्कार करेंगे उनकी जगह पर तुरत ही वे पूरे का पूरा खादी और ग्रामोद्योगों द्वारा उत्पादित सामानों को स्वीकार भी कर सकते है और ऐसा करते हुए ही वे आज के शिक्षित कहे जाने वाले नौजवानों का वहम दूर कर सकते हैं। बिहार खादी समिति ने मिल के बने कपड़े, आटा, चावल, तैल, चीनी और जमाये तेल के बहिष्कार का प्रचार करना शुरू किया है। जहां तक तन ढँकने का सवाल है वहां तक मिल बने कपड़े की जगह खादी ले सकती है, यह तो प्रायः सब रचनात्मक संस्थायें और कार्यकर्त्ता मानते हैं। पर मिल कपड़े के व्यापार जम जाने के कारण अनेक लोग समझते हैं कि खादी खूबसूरती, टिकाउपन, बड़े परिमाण में उत्पत्ति इत्यादि के बारे में मिल के कपड़ों का स्थान नहीं ले सकती, पर जहां मानव समाज में आधारभूत परिवर्तन करने की तीव्र आवश्यकता महसूस हो रही है वहां उपर्युक्त कमियों का आभास गौण प्रश्न है और सर्वोदय समाज के समर्थकों को उपर्युक्त कमी या मिल कपड़े के परित्याग और खादी के स्वीकार में बाधा नहीं पड़ सकती। आटे का काम घर-घर में हो सकता है। रचनात्मक संस्थायें और कार्यकर्त्ता अगर चक्की पर थोड़ा ध्यान दें तो उन्हें आसानीसे ताजा और शुद्ध आटा मिल सकता है। आज भी मिल कुटे चावल के मुकाबले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हाथ कुटे चावल का व्यवहार भारत देश में ज्यादा है पर इसे कम करने के लिये पूंजीवादी संस्थाओं और व्यक्तियों का प्रयत्न जोरों से चल रहा है। अगर मिल कुटे चावल के बहिष्कार का नारा बुलन्द किया जाये तो बिलकुल आसानी से पूंजीवादियों के प्रयास निष्फल हो जायेंगे। तेल घानियों के बारे में गांवों से गफलत के जमाने में पूंजीवादियों ने भौतिक शक्ति परिचालित घानियों का उत्तम संगठन बनाया है। लेकिन मिल के उत्पादित तेल के बारे में आम जनता जानती है कि पैसे के लोभ से लगभग सबके सब मिल उत्पादित तेल में सस्ते तिलहनों के तेलका संमिश्रण होता है और यह संमिश्रण स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकर है। इधर ग्रामोद्योग संघके प्रयत्न से तेल घानी में भी काफी विकास हुआ है। इसलिये तेल के बहिष्कार की समस्या का हल आसान ही है। मिल की चीनी के बारे में तो लोग समझते है कि अगर मिल की चीनी छोड़े तो बरबश गुड़ खाना होगा। नगर निवासी चाय पीने वाले खांड़सारी चीनी उद्योग का नाम भी नहीं जानते, पर लाखों मन खांड़सारी चीनी आज भी हरसाल उत्तर प्रदेश के कितने इलाकों में तैयार की जा रही है। विहार प्रदेशमें कई जगह वैसी चीनी बनती है। कीमत में कई जगह तो वह मिल की चीनी के नियंत्रित दरों से भी सस्ती है, कई जगह कुछ थोड़ा वेशी दाम देनेसे मिल जाती है। इसलिये मिल की चीनी का बहिष्कार गुड़, शक्कर, और खांड़सारी चीनी इस्तेमाल का आग्रह रखने से बहुत आसानीसे हो जा सकता है। जमाये तेल का दूषित और असत्य आधारित व्यापार का विकास तो पांच सात वर्ष के अन्दर ही हुआ है। स्वास्थ्य के लिये यह पदार्थ हानिकर है ही। ऐसी बात भी नहीं है कि उत्तम और विशुद्ध घी देशमें एकदम ही गायब हो गया। विहार प्रदेशमें देहातों में अभीके रुपये के मूल्यके हिसाबसे वह पहले से महंगा नहीं हैं। आज देहातों में साढ़े तीनसे चार रुपये सेरके भाव से वह बिकता है। इन दिनों शहर वासियोंको देहातों की खूबियों का पता ही नहीं चलता और लोग समझते हैं कि शुद्ध घी नहीं मिलता और जमाये दूषित तेलके बहिष्कार में बहुत कठिनाई है।

विहार खादी समिति द्वारा निश्चित बहिष्कार कार्यक्रम या मिल कपड़े, आटा, चावल, तेल चीनी, और जमाये तेलका बहिष्कार आसानीसे काममें लाया जा सकता है। और विहार खादी समितिके केन्द्रों पर ऐसा हो भी रहा है। ज्यों ज्यों इस बहिष्कार कार्यक्रमकी ओर रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्त्ताओंका ध्यान जावेगा त्यों त्यों आजके युगके अनेक भ्रमोंका निवारण होता जायेगा और खादी ग्रामोद्योगका उपयोग सर्वोदय समाजके निर्माणमें हो सकेगा। मिल उत्पादित भोजन के सामान का बहिष्कार करते हुए खादी और ग्रामोद्योग समाजमें क्रांति उपस्थित करने वाला कार्यक्रम हो सकेगा। अगर विकास मार्ग से ही इन कार्यक्रमोंका चलना है तो वे निरे उद्योग रहेंगे जो पूंजीवादी उद्योगोंके सामने क्षीणतर होते-होते लुप्त प्राय होजायेंगे। इसलिए मिल उत्पादित भोजन वसनके सामग्रीका बहिष्कार करना अनिवार्य है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सर्वोदयी संस्था की आवश्यकता

ले०—श्री मोतीलाल केजरीवाल

इस देश को राजनीतिक सत्ता मिल जाने के बाद यह देखा जाता है कि देशकी सब से अधिक अधिक बलशाली जमात कांग्रेस शक्तिहीन होती जा रही है। अनेक नयी नयी संस्थाएं बन गयी हैं। देशकी शक्ति बिखर गयी है। इस बुराई को रोकना है। नयी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये देश की बिखरी शक्ति को बटोरकर देश को बलशाली बनाने के लिए एक शक्तिशाली संस्था की जरूरत है। इस नयी संस्था में देश के सभी या अधिकांश दल विलोन हो जांय।

एक सर्वोदयवादी संस्था इस देश में प्रगट हो जाय तब निश्चय ही देश का भला होगा। मैं देखता हूं कि देश के सभी दल, थोड़ा या ज्यादा सर्वोदय की भाषा में ही बोलते हैं। कम्युनिस्टको खामखा हिंसा प्यारी नहीं है। अपना लक्ष्य यदि वह हिंसा के बिना पा सके तो वह हिंसा की जोखिम क्यों उठावेगा? उतावली में वह हिंसा की शरण जाता है। जयप्रकाश नारायण या कृपलानीजी ऐसे तो नहीं जो अपने नेतृत्व को बनाये रखने के लिए देश में फूट पैदा करें। सन्त विनोवाजी कहते हैं कि श्री जवाहरलाल, जयप्रकाश बाबू और कृपलानी जी-तीनों ही विनोवाजी के सर्वोदय आंदोलन का समर्थन करते हैं तथा उसमें दिलचस्पी लेते हैं। श्री जवाहरलाल जी ने तो ऐसा भी कहा है कि चारों तरफ जहां अन्धकार ही अन्धकार है वहां सर्वोदय ही एक प्रकाश के रूपमें नजर आ रहा है। मेरी समझ में कांग्रेस, समाजवादी दल, किसान मजदूर प्रजापार्टी और कम्युनिस्ट लोगों को अपना अपना दल समाप्त करके सर्वोदय संघ या लोकसेवक संघ नामक संस्था बनानी चाहिए। यदि कोई नेता किसी विशेष आग्रह दुराग्रह के कारण किसी दल विशेष को समाप्त करना चाहता है तब भी कोई हर्ज नहीं। देश के सर्वोदयवादी नेताओं को एक शक्तिशाली संस्था संगठित कर लेनी चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो ये कमजोर तथा छिन्नभिन्नाभिमुख जमातें अपने आप समाप्त हो जायंगे। देश में जो साम्प्रदायिकता को उभाड़ने वाली जमातें हैं वे तो सर्वोदयवाद के दैदीप्यमान तेज के सामने निश्चय ही झुलसने वाली हैं। अरे! सर्वोदयवाद तो विश्व बन्धुत्व का संदेश है। जहां यह है वहां हिन्दूपन, मुसलमानपन, ब्राह्मणवाद, अब्राह्मणवाद, बंगालीत्व, बिहारीत्व आदि दुर्भावनायें रह ही नहीं सकतीं।

सर्वोदय प्रचारार्थ या उसके कार्यों को मूर्तिमान करने के लिए एक संस्था संगठित की जाय, तो ऐसा विचार प्रकट करने पर संत विनोवाजी ने यह कहा है कि सर्वोदय तो एक सर्वव्यापी भावना है तथा सर्वव्यापी साकार नहीं हो सकता। वह निराकार ही रहेगा। विनोवा जी कहते हैं कि यद्यपि सर्वोदय समाज नामक कोई संस्था नहीं है और उसका संगठन भी नहीं किया जाता तथापि विशेष कार्यों के लिए अस्थाई संगठन बनाये जा सकते हैं। बिनोवा जी का कहना बिलकुल ठीक है। किन्तु है यह सिद्धान्त की बात। इसकी गंभीरता में हम को उतरना चाहिए। ईश्वर निराकार है। क्योंकि वह सर्वव्यापी है, किन्तु साधुओं की रक्षा और बुराई का निवारण करने के लिए उस ईश्वर को भी अपना निराकारत्व छोड़कर साकार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यक्त बनना पड़ता है। देशकी वर्त्तमान दुर्दशा तथा दलबन्दियों के दलदल से उसे हटाने के हेतु सर्वोदय संस्थाका प्रगट होना अब आवश्यक हो गया है। जितनी जल्दी अब यह हो जाय उतना ही अच्छा है।

हमारे कुछ नेता कांग्रेस की बुराइयां मिटाकर इसको फिरसे मजबूत करने की बातें कहा करते हैं। यदि यह हो सकता तो बहुत अच्छी बात थी। मेरे विचार में अब ऐसा सम्भव नहीं है। कांग्रेस की शुद्धिकी बातें वर्षों से होती आ रही हैं। सन् १९४८ के दिसम्बर में जयपुर कांग्रेस अधिवेशन ने नैतिक स्तर ऊपर उठाने की बातें बहुत जोरों से कही। उसके बाद सवा तीन वर्ष बीत गये। करोड़ों टन पानी गंगा में बहकर अनन्त समुद्र में समा गया। सूर्य भगवान तेरह सौ बार उदय हो कर अस्त हो गये। किन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की वाली कहावत चरितार्थ हुई। जयपुर कांग्रेस में बड़ों बड़ों के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने की बात को लेकर जहां श्री जवाहर लाल नेहरू जी उबल पड़े थे वहां उसके तीन वर्ष के बाद पटने में भाषण देते हुए उन बड़ों-बड़ों के कारनामों तथा पारस्परिक विवाद को लेकर उन्होंने बहुत दुःख प्रगट किया। और उन बड़ों-बड़ों के लिए भठियारे शब्द का प्रयोग कर दिया। यह साफ हो गया है कि इस बुराई को कांग्रेस से निकाला नहीं जा सकता। गांधी जी तक इसे निकालने में असमर्थ रहे और उन्होंने लिखकर यह इच्छा प्रगट की थी कि कांग्रेस को भंग करके उसके स्थान पर लोक सेवक संघ बना लिया जाय। देवाधिदेवा शिव की पत्नी श्री सती देवी ने जब यह समझा कि अपने उस शरीर से वह पवित्र नहीं रही तब उस साध्वी ने उस भौतिक शरीर का अन्त कर दिया और उसी ने फिर पार्वती के रूप में अपने को प्रगट किया। महा साध्वी सती शिवजी की पत्नी थीं और पार्वती भी पत्नी के रूप में ही उनके सामने आयीं। दोनों में कोई फर्क नहीं था। किन्तु पार्वती संस्कृत तथा शुद्ध हो चुकी थीं। इसी तरह कांग्रेस के इस भौतिक शरीर को बदल कर नये रूप में लाना ही अच्छा होगा। यह नया रूप जगत के लिए अधिक कल्याणप्रद होगा। साध्वी सती के स्थान पर पार्वती का जो रूप आया वह ब्रह्मवादिनी उमा का काम भी करता था और वही रूप अन्नपूर्णा भी सिद्ध हुआ। सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने भी जब विकार-वश होकर कुछ कुकर्म कर लिया तब उन्हों ने भी उस विकृत शरीर को छोड़ा। आज जरूरत है कि कांग्रेस भी अपने इस भौतिक रूप को छोड़ कर एक संस्कृत तथा शुद्ध रूप में हमारे सामने आवे।

जगद् गुरु आचार्य शंकर महान् प्रतिभाशाली तथा पुण्य श्लोक पुरुष थे। जगत की क्षण भंगुरता, ऐश्वर्य आदि भोग सामग्री में वैराग्य और रुपये पैसे तथा दौलत आदि को अनर्थ रूप बताने के लिए उन्होंने भारतवर्ष का कई बार पैदल भ्रमण किया। उन्होंने इन विचारों का प्रतिपादन करने के लिए भारत के चारों तरफ चरपीठस्थान स्थापित किया। अर्थ अनर्थ भावय नित्यं अर्थात् रुपये पैसे पतन का कारण है, ऐसा सोचते रहो, के प्रचार करने वाले के चारों पीठस्थान, करोड़ों की सम्पत्ति वाले बन गये हैं। हाथी की सवारी तथा सोने चांदी के हौदे में बैठ कर वहां के अधीश्वर वे सन्यासी जगत् गुरु कहलाते तथा राज्यसुख भोगते हैं। मैं पूछता हूं कि क्या इन संन्यासी के उपदेश जनता के हृदय में वैराग्य उत्पन्न करेंगे ?

( शेष आगे पृष्ठ २० में )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिहार में कोयले का उत्पादन

प्रो० रघुजी वर्मा, अध्यापक भू-गर्भ शास्त्र

आज का युग मशीन का युग है। कार्यशील रखने के लिये शक्ति की आवश्यकता होती है। यह शक्ति हमें कोयले, पेट्रोल, प्राकृतिक गैसों, लकड़ी, जलशक्ति, सौरशक्ति तथा अणुशक्ति से प्राप्त होती है। किन्तु, इन सबों में कोयला सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिये इसकी धाक सर्वत्र जमी हुई है। दुनिया की ७० प्रतिशत शक्ति कोयले द्वारा ही प्राप्त की जाती है। जलशक्ति का विकास भली-भांति हो जाने पर भी वह (जलशक्ति) कोयले का स्थान ग्रहण नहीं कर सकती है। व्यवसायी इन्धनों में पेट्रोल का स्थान सर्वोच्च है, क्योंकि आसानी से इसे पीपों आदि में बन्द कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है। इसी कारण आज मोटर-गाड़ियों, हवाई-जहाजों आदि में सिर्फ पेट्रोल का ही व्यवहार होता है। अमेरिका जो व्यवसाय में दुनिया के सभी देशों से बढ़ा-चढ़ा हुआ है, उनमें व्यवसायी शक्ति कोयले से ४७ प्रतिशत, पेट्रोल से ३३ प्रतिशत, प्राकृतिक गैसों से १५ प्रतिशत तथा जलशक्ति से ४ प्रतिशत प्राप्त की जाती है।

## बिहार में कोयले का उत्पादन

बिहार के कोयले के क्षेत्रों से ही भारत का ५० प्रतिशत कोयला प्राप्त होता है। सिर्फ झरिया क्षेत्र से ही कोयले के उत्पादन का ४० प्रतिशत निकलता है। इसी क्षेत्र से भारत का सबसे उत्तम श्रेणी ( Coking coal ) का कोयला निकाला जाता है। प्रायः कोयले का सारा उत्पादन देश के भीतर ही खप जाता है। भारत से कुछ कोयला लंका, पाकिस्तान, हाँगकाँग आदि देशों में भी भेजा जाता है। देश के भीतर कोयले की खपत का ब्योरा यों है :—

| | | |
|---|---|---|
| रेलगाड़ियों में | — | ३३⅓ प्रतिशत |
| लोहे तथा फौलाद की कम्पनियों में | | २५ प्रतिशत |
| कोइलवरियों में | — | ६ प्रतिशत |
| अन्य प्रकार के खर्चों में | — | २५⅔ प्रतिशत |

बिहार में करीब २० लाख टन कोयला तो हार्ड कोक ( Hard coke ) में परिणत करने में ही खप जाता है। बिहार के कोयले अधिकतर उत्तम श्रेणी के हैं जिन्हें कोक में परिणत किया जा सकता है जिसमें धातु शोधने के लिये उपयुक्त हों। इस काम के लिए मिलावट के द्वारा मध्यम श्रेणी का कोयला भी कुछ अंश तक उपयोग में लाया जा सकता है। न्यून श्रेणी के कोयले को नरम कोक ( Sofst coke ) में घरेलू कार्यों के लिए परिणत किया जाता हैं। इस प्रान्त में इस तरह का कोक करीब दस लाख टन बनाया जाता है। कोयले को कोक के रूप में परिणत करने की क्रियाओं से उत्पन्न उप-उत्पादनों ( By-Products ) को हर हालत में इकट्ठा कर लिया जाता है।

१९५२ ई० के कोल ग्रेडिंग ( coal grading ) बोर्ड के सिफारिश के आधार पर विदेशों में भेजे जानेवाले कोयले का ग्रेडिंग किया जाता है, क्योंकि कोयले की एक ही तह में पाये जानेवाले कोयले के गुण में अत्यधिक विभिन्नता पायी जाती है।

बिहार के सभी कोयलों के सीमों ( seams ) का जमाव गोंडवाना काल का है। कोयले के सीम प्रायः निचले गोंडवाना जमाव के बराकर तथा रानीगंज ( Barakar series and Raniganj series)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रेणियों के पत्थरों में ही सीमित हैं। इनकी तहों की मोटाई बीच में पड़ने वाले बैरेन मेजर्स (Barren measures) के साथ करीब ७०० फीट है। बराकर श्रेणियों में कुल १८ कोयले के सीम हैं, जिनकी मोटाई २०० फुट है। रानीगंज क्षेत्र के रानीगंज श्रेणी में ६६ कोयले की सीमे हैं। किन्तु ये सभी-सीम बिहार प्रान्त के बाहर हैं। इस क्षेत्र के कोयलों की कुल सीमों की मोटाई ४० फुट तक है, जो परतदार हैं।

## बिहार में कोयले के क्षेत्र

बिहार में कुल २१ कोयले के क्षेत्र हैं, जिनमें ५ राजमहल पहाड़ों के पश्चिमी छोर पर, ६ औरंगा और दामोदर नदी के कछारों के उत्तरी भाग में स्थित हैं। ये इक्कीस क्षेत्र निम्नलिखित जिलों के अन्तर्गत हैं:—

### मानभूम जिला

(१) रानीगंज, (२) झरिया, (३) चन्द्रपुर।

### हजारीबाग जिला

(४) बोकारो, (५) रामगढ़, (६) करणपुर उत्तरी, (७) करणपुर दक्षिणी, (८) चौपे, (९) इटखुरी (१०) गिरीडिह।

### पलामू जिला

(११) औरंगा, (१२) हुटार, (१३) डालटेदगंज।

### संथाल परगना

(१४) जयन्ती, (१५) शाहाजुरी, (१६) कुण्डित केराई, (१७) ब्राह्मणी आदि कोयले के क्षेत्र।

इन क्षेत्रों में रानीगंज तथा झरिया के क्षेत्र मुख्य हैं। इसलिये इन क्षेत्रों के बारे में कुछ अधिक बातें जानना आवश्यक प्रतीत होता है।

## झरिया क्षेत्र

यह क्षेत्र २३ मील लम्बा (पूर्व-पश्चिम में) और १० मील चौड़ा (उत्तर-दक्षिण में) है। इस क्षेत्र की जलज शिलाओं का क्षेत्रफल १७५ मील है। इस क्षेत्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा तालचिर (Talchir) शिलाओं में ढका हुआ है। बराकर श्रेणी की शिलाएं २१ वर्गमील में फैली हुई हैं। इस श्रेणी की शिलाओं में २० तहें हैं, जिन्हें नीचे से क्रमानुसार नम्बर दिये गये हैं अर्थात सबसे नीचे की अथवा सबसे पुरानी सीम, सीम नम्बर १ कहलाती है। इन तहों की तहवार मोटाई कुछ फुट लेकर २७ फुट तक है। कुल तहें मिलाकर ३०० फुट के लगभग मोटी होंगी। प्रत्येक कोयले की तह अपने ऊपर या नीचे वाली सीम से जलज शिलाओं की तहों द्वारा पृथक होती हैं। किन्तु कहीं-कहीं तो दो अथवा दो से अधिक सीमें भी एक साथ ही मिलती हैं। झरिया क्षेत्र की प्रायः सभी तहों के कोयलों से कोक बनाया जा सकता है; परन्तु कोक सिर्फ ६ नम्बर से १८ नम्बर की तहों के कोयलों से ही बनता है।

झरिया क्षेत्र के कोयले का कुल परिणाम ६,६०,००,००० टन है जिसका अधिकांश भाग उत्तम श्रेणी के कोयले की है जो धातु शोधन के कारखानों में व्यवहार किया जा सकता है।

## रानीगंज कोयले का क्षेत्र

क्षेत्रफल में यह सभी सेत्रों से बड़ा है। किन्तु उपज में इसका स्थान द्वितीय है। इसका क्षेत्रफल लगभग ६०० वर्गमील है। यद्यपि इस क्षेत्र में "बराकर और रानीगंज" दोनों श्रेणियों की शिलाओं के साथ कोयला पाया जाता है; परन्तु यहां पर 'रानीगंज' श्रेणी का ही कोयला अधिक है। रानीगंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रेणी में कोयले की कई अच्छी-अच्छी तहें हैं। 'बराकर' श्रेणी के कोयले में जल और वाष्पीय पदार्थों का अंश 'रानीगंज' श्रेणी के कोयले से कम और ठोस आवर्ण अधिक मात्रा से होता है। इस श्रेणी में उत्तम प्रकार के स्टीम कोयला तथा कोक ( Hard coking coal ) धातु शोधने के उपयुक्त मिलता है। 'रानीगंज' श्रेणी की तहों में कुछ ही तहों के कोयले को धातु शोधने योग्य कोक में परिणत किया जा सकता है। इनमें तिशारगढ़ सीम (१८ फुट मोटी) तथा सेन्टोरिया सीम (१० फुट मोटी) उत्तम कोयले के लिये प्रसिद्ध है। इस श्रेणी में प्रायः नरम कोक बनाने के उपर्युक्त ही कोयला पाया जाता है। इस श्रेणी के कुल कोयले के परिमाण का अनुमान २२,००,००,००,००० टन है जिसमें ४०,८०,००,००० टन कोयला कोक बनाने के योग्य है।

## भारत के कुल कोयले का अनुमान

सर सिरिलफौक्स द्वारा १९३४ में भारतवर्ष के कुल कोहले का लगाया गया अनुमान का ब्योरा यों है:—

| | टन। |
|---|---|
| (१) कुल कोयले का अनुमान | २,५६,५०,००,००,००० |
| (२) कोयले की उन तहों से जिनकी मोटाई कम से कम ४ फुट है, जिसमें राख अंश २० प्रतिशत तथा जो १,००० फुट जमीन के नीचे तक पायी जाती है। उससे निकलने वाले कुल कोयले का अनुमान — | १,०२,७०,००,००,००० |
| (३) उन सीमों से निकलने वाले कोयले का परिमाण जिनकी मोटाई ४ फुट से अधिक तथा जमीन सतह से ८,००० फुट तक नीचे की गहराई में हैं, जिनमें रख अंश १६ प्रतिशत ( जल अंश सहित ) है — | ४,६७,२०,००,००० |
| (४) उत्तम कोक बनाने वाले कोयले का परिमाण का अनुमान जो धातु शोधने के कारखानों के उपयुक्त होगा — | १,५०,००,००,००० |

ऊपर के आँकड़ों में जमीन से कोयला निकालते समय जितने कोयले की बर्बादी होती है उसका अनुमान नहीं लगाया गया है। आशा की जाती है कि ३० प्रतिशत यानी एक तिहाई भाग कोयला को खानों से बाहर निकालने में नष्ट हो जाता है। उत्तम कोक बनाने वाला कोयला ५० प्रतिशत से अधिक भूतल से बाहर नहीं निकाला जा सकता और अगर ४०,००,००० लाख टन कोयला प्रतिवर्ष निकाला जाय तो इस श्रेणी के कोयले की आयु २०० वर्ष की है। किन्तु इस प्रकार के कोयले फौलाद इत्यादि धातु शोधने के कारखानों के अतिरिक्त अन्य भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये व्यवहार किए जाते हैं। यदि इस तरह इस श्रेणी के कोयले का व्यवहार धातु शोधने के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिये जारी रहा तो सारे कोयले की खपत ३० साल में—खास करके झरिया क्षेत्र के कोक बनाने वाले कोयले का—हो जाने की सम्भावना है। देश के हित के लिए यह ( कोयले का खप जाना ) अति ही घातक सिद्ध होगा। यह अनुमान किया जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि इस देश में जितनी लोहे की खनिज हैं उन सबों को शोधने के लिए जितने कोक की आवश्यकता होगी उतने कोक के लिए भी यह कोयला प्रर्याप्त नहीं है। अतः भारत में धातु शोधक कोयले को संचित कर सावधानी से रखने की आवश्यकता प्रतीत होती है। भारत में कोयले उत्पन्न उप-उत्पादन ( By-products ) पर निर्धारित व्यवसायों को बढ़ाने का यत्न भरपूर करना चाहिए। बिहार में ऐसे व्यवसायों के लिये काफी अवसर है। इन व्यवसायों में बिहार को ही नहीं वरन् सारे भारत को बड़ा लाभ होगा। वह दिन दूर नहीं जब भारत बिहार के इन व्यवसायों से निजी आवश्यकताओं की ही केवल पूर्त्ति नहीं करेगा, बल्कि दूसरे देशों को देने में भी समर्थ हो सकेगा।

इससे साफ पता लगता है कि भारत के उत्तम कोयले के व्यय में तथा उसे खानों से बाहर निकालने में बहुत सावधानी रखी जाय वरना उपर्युक्त काल के पश्चात् भारत को अपने मुख्य उद्योग-धन्धों में कोयले के लिये बाहरी देशों पर निर्भर करना पड़ेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहार के कोयले का बहुत बड़ा जटिल प्रश्न है। यदि स्वाधीन भारत को उद्योग-धन्धों में बढ़कर विदेशों से पग से पग मिलाकर चलना है तो बिहार के कोयले के जटिल प्रश्नों को सुलझाना पड़ेगा। टेक्निकल विचार से मजदूर समस्याओं के अलावे कोयले के व्यवसाय में निम्नलिखित दो ही समस्याएँ हैं जिनको सुलझाना अतिआवश्यक है:—

(१) बिहार के कोयले से अधिक से अधिक लाभ उठाया जाय। ऐसा करने के लिए उन सभी साधनों तथा उपायों को कार्य में लाया जाय जिससे अधिक से अधिक मात्रा में कोयला खानों से बाहर निकाला जाय।

(२) हर वर्ग के कोयले का खर्च समुचित कार्यों के लिये हो। धातु शोधने के उपर्युक्त कोक बनाने वाले कोयले का खर्च अनुचित रूप से न हो।

पहली समस्या को सुलझाने में कोई खास कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यह एक साधारण-सी बात है कि अधिक से अधिक कोयला खानों से बाहर निकाला जाय। किन्तु यह खेद की बात है कि कुछ पिछले दिनों में कोइलवरी मालिकों का लक्ष्य व्यक्तिगत लाभ की ओर अधिक रहा है। इन्हें देश के हित और अहित का विचार न था। जिसका परिणाम हुआ कि लाखों-लाख टन कोयला सदैव के लिए बर्बाद कर दिया गया। ये लोग कोयले की टालों के अच्छे कोयले वाले भागों से ही कोयला खानों से बाहर निकालते थे। न्यून वर्ग के कोयले की सीमों को खानों से बाहर निकालने का सोचा भी न गया होगा। वैज्ञानिक ढंग से कोयला न निकालने के कारण खानों में आग लग जाया करती थी तथा बहुतेरे खान तो धंस भी जाया करती थी जिससे कोयले की अपरिमित क्षति हुआ करती थी।

प्रसन्नता की बात है कि सरकार का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित हो चुका है और सरकार भलि-भांति सामने आने वाली जटिल समस्याओं को समझ रही है। अतीत में हुई गलतियों को तो अब सुधारा जा नहीं सकता; किन्तु हर मनुष्य को खास कर सरकार को सतर्क रहना चाहिए जिसमें आज या भविष्य में इस प्रकार की गलतियां दुहराई न जांय। सतह के नीचे से कोयला निकालने के फलस्वरूप जो खोह बन जाते हैं उन्हें बालू या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी दूसरे अन्य पदार्थ से पंपों द्वारा भर देना चाहिए। पहले इस तरीके का पालन कोइलवरी मालिक खानों में होनेवालों खतरों से बचने के लिए ही बहुत सीमित मात्रा में करते थे। किन्तु अब इस तरीके का पालन अधिक से अधिक कोयला खानों से बाहर निकालने की दृष्टि से करना पड़ेगा।

हर वर्ग के कोयले का खर्च उचित ढंग से हो तथा धातु शोधने, उपयुक्त कोक बनाने वाले कोयले का खर्च उन कार्यों में न किया जाय जो कार्य एक मध्यम या न्यून वर्ग के कोयले से ही हो सके। यही दूसरी टेक्निकल समस्या है। करीब-करीब दो तिहाई धातु शोधने के उपयुक्त कोक बनाने वाले कोयले का खर्च अनुचित ढंग से होता है। यह एक समस्या है जिसको सुलझाना अत्यावश्यक है क्योंकि यदि कोकिंग कोयलों का खर्च मौजूदा परिमाण में होता रहा, ( जिसके खर्च की सम्भावना बढ़ने की है, ) तो इस प्रकार कोयले का भण्डार १०० वर्षों तक भी टिक न सकेगा। कुछ लोगों का कहना है कि उस समय तक अणु शक्ति का विकास बहुत बड़े पैमाने में हो जायगा जिससे कोयले की पूछ न होगी। किन्तु ऐसा सोचना संभवतः बुद्धिहीनता होगी। भारत-सरकार की ओर से धनबाद में बना हुआ फ्यूयेल रिसर्च इन्स्टीच्युट ( Fuel Research Institute ) इस दिशा में हमारी सहायता करेगी। इसका प्रधान कार्य होगा कि वह कोई उपाय निकाले जिससे बिहार का ही नहीं; बल्कि भारत में अन्य प्रान्तों के हर वर्ग के कोयले का समुचित कार्यों में व्यवहार किया जाय।

देश के हित में सब का हित है और देश के अहित में सब का अहित। अतः हर व्यक्ति को व्यक्तिगत लाभ करने के पहले देश के हित और अहित का विचार कर लेना चाहिए। इसी भावना को लेकर कार्य करने से देश समृद्धिशाली बन सकता है।

---

( पृष्ठ १५ से आगे )

आज तो देश के प्रायः सभी विचारक संस्थाओं को बदल देने की बात सोचते हैं। कांग्रेस ने कभी त्याग का उपदेश दिया था। किसी समय इसने गांधी की रहनुमाई मानकर कुर्बानियाँ की थी। किन्तु आज तो यह शंकराचार्य जी के मठों की तरह भोग वालों की संस्था बन गई। अब इसको बदल डालना होगा। अब तो लोक सेवा संघ या सर्वोदयसंघ के रूप में उसे प्रगट होना ही चाहिए।

---

( पृष्ठ १० से आगे )

अनोखा स्थान रखता है। उसका कारण यह है कि उसमें मनुष्य की मनुष्यता का अर्थात् उसके उत्तम गुणों का इनकार नहीं है, बल्कि वह कहता है कि उन्हीं गुणों के बल पर मानव-संसार का काम चलना चाहिये। इस सिद्धान्त को राजनैतिक क्षेत्र में व्यावहारिक रूप देने की जिम्मेदारी भारत ने अपने सिर ली है। क्योंकि हमने सर्वोदय को हिन्द स्वराज का आदर्श बनाने का निर्णय किया है। सर्वोदय के आज के प्रजासत्ताक दिन के मौके पर हम इस आदर्श को याद करें।

( हरिजन सेवक )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# टिली

## ले०—श्री राधाकृष्ण

जो लारी राँची से लोहरदगा तक जाती है, जान उसका ड्राईवर है। साल भर से वह यही काम कर रहा है। रिमझिम बरसात आयी। आकाश में मेघ खेलने लगे, पृथ्वी पर जल खेलने लगा। सारी दुनिया हरियाली से भर गई। नदी नाले, ताल-तलैया सब जल से चमकने लगे। फिर बरसात बीती। मेघ उड़ गए। आकाश निर्मल हो गया। खेतों में धान पके, कटे।

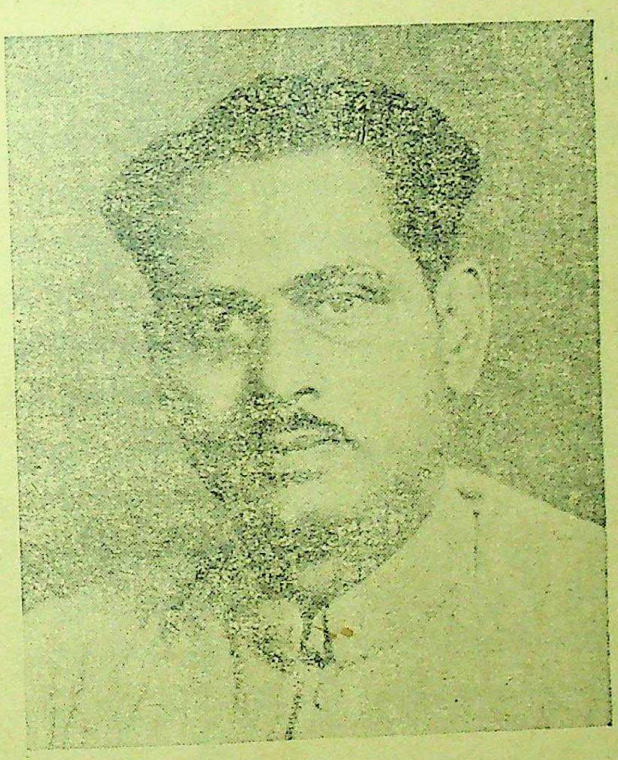

लेखक

माघ में आमों पर मंजरियां आईं। फागुन में खेतों का मर्मर सँगीत गूँज उठा। नये-नये पल्लव उगे। वसन्त का दक्षिण पवन आकर फूलों के सौरभ के बीच चंचल हो गया। और तब से जान अपनी लारी चलाता हुआ आया और चला गया। आज भी आता है और चला जाता है।

दृश्यावलियां आतीं हैं और छूट जाती हैं और ऋतुएँ आती हैं और बीत जाती हैं और जब उसके दिल पर एक हल्का सा बोझ, एक तनिक-बन्धन जान पड़ता है और उसकी आँखें तनिक चंचल होकर स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहती हैं, तो वह अपने पथ की ओर से आँखें चुराकर झांक लेता है। और फिर अपनी राह चला जाता है।

लेकिन फिर भी पथ के सारे दृश्य उसके देखे हुए हैं। अब उसे वहाँ कोई नवीनता नहीं मिलती। उसे मालूम है कि धान के इन खेतों के आगे नदी है और नदी के आगे पीले सरसों के खेत, और फिर नन्हीं फूस की झोपड़ियों वाला गाँव।

सभी गाँव के नाम उसे याद हैं। यह रातु है, यह मान्डर है, यह बिज्जूपाड़ा है, यह सोंस। और इस तरह के अगणित गाँव उसे मिलते हैं और सबको पार करता हुआ वह लोहरदगा तक चला जाता है। कहीं ग्रामीण स्त्रियाँ सिर के जूड़े में फूल खोंसे हुए आपस में मुसकराती, बातें करतीं, कुएँ पर पानी भरने जा रही हैं। कहीं पत्थर की शिला पर पड़े हुए छोटे-छोटे गड्ढे में धान कूट रहीं हैं। कोई सूप से भूसा उड़ा रही है, कोई चटाई ऊपर सूखने के लिए धान पसार रहीं हैं। कहीं हल चल रहे हैं, कहीं बुआई हो रही है, कहीं किसी झोपड़े के सम्मुख कुछ किसान हुक्का पीते हुए आपस में सुख-दुख की बातें कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रहे हैं। हाँ, जान की आंखों के सामने रोज ये दृश्य आते थे और ओझल हो जाते थे।

कड़ाक एक छोटा सा गाँव है। लारी गाँव की सीमा से होकर जाती है; किन्तु बस्ती सड़क से थोड़ी दूर हट कर है। लेकिन, जान देखता था कि एक सात आठ वर्ष की छोटी सी लड़की रोज खड़ी होकर चकित दृष्टि से लारी की ओर देखा करती थी। शायद सोचती हो कि यह भी क्या अजीब सी चीज है! न जाने कितनी दूर से यह लारी राशि-राशि धूल उड़ाती हुई आती है और क्षण भर के लिए आँखों के सामने खेल कर सर्र से चली जाती है। फिर कुछ धूल रह जाती है और जानेवाली लारी की ध्वनि। और फिर थोड़ी देर के बाद सब शन्त हो जाता है। धूल उड़ जाती है और लारी की ध्वनि निस्तब्धता में खो जाती है। सारा वातावरण पहले का सा हो जाता है ..... स्वच्छ, शान्त और निस्तब्ध!

बालिका की चकित और भोलीभाली आंखों में न जाने क्या छिपा हुए था कि जान उसकी ओर अवश्य देखता। उसके जूड़े में फूल खोंसा रहता था। वस्त्र अस्तव्यस्त, और चेहरे पर अबोधता छाई रहती थी।

जान की बड़ी इच्छा होती थी कि उसके सामने गाड़ी रोककर उसे लारी की सभी चीजें दिखला दे। उसे समझा दे कि यहाँ पेसेंजर बैठते हैं, यहाँ ड्राइवर बैठता है, यहां पेट्रोल दिया जाता है। यह माइल मीटर है, इसे थ्रीटल कहते हैं, और यह हेंडिल है। और, जब वह एक बार हार्न बजायेगा तो वह जरूर खिलखिलाकर हँस पड़ेगी। इसी तरह सोंचता हुआ वह तीन चार मील का रास्ता तय कर देता था। लेकिन न ऐसा कभी हुआ है और न वहाँ हुआ।

संयोग की बात। एक दिन ठीक वहीं पर जाकर लारी बिगड़ गई। पहले तो जान को मालूम हुआ कि पेट्रोल घट गया है। घबराया। टंकी को खोलकर देखा, तो वहाँ चार गैलन से भी अधिक तेल है। फिर डिस्ट्रिब्यूटर देखा वह भी ठीक। तब मालूम हुआ कि पाइप से पेट्रोल अच्छी तरह पास नहीं करता। जान पाइप खोलने लगा। इसी बीच वह लड़की भी वहां आ गई और एंजिन के समीप झुक कर कुतूहल भरी आँखों से देखने लगी। जान उसकी ओर देख कर मुसकिराया। उत्तर में वह मुसकिराई नहीं। उसकी आँखों में अपार आश्चर्य भर गया। जैसे वह बिलकुल समझ रही थी कि वह भयभीत हो या हंसे। पर, उसे साहस हो आया। वह एंजिन के बिल्कुल समीप होकर लारी के मडगार्ड से सट गई। जान ने पूछा——— "तुम्हारा नाम क्या है?"

अबकी उसके होठों पर हँसी की रेखा खिंच गई। वह हेडलाइट को दोनो हाथों से पकड़ कर बोली— ——"टिली।"

"तुम्हारा घर कहाँ है?"

वह बायां हाथ उठाकर तर्जनी से इंगित करते हुए बोली ——— "वहाँ। उस बस्ती में। लेकिन बाबा आज घर पर नहीं हैं। बाजार करने कुड़ू गए हैं।"

टिली जानती थी कि जो लोग उसके घर पर जाते हैं, उसके बाबा से ही मिलते हैं।

जान लारी बनाता रहा, टिली खड़ी खड़ी देखती रही। जब गाड़ी बन गई और जान स्टार्ट करने के लिये चढ़ने लगा तो टिली बोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उठी– "मुझे मोटर पर नहीं चढ़ाओगे ?"

जान मुसकिराया—"आओ, बैठ जाओ !"

वह खुशी-खुशी चढ़ कर बैठ गई। बोली—"तुम मुझे रोज मोटर पर चढ़ाया करना। जीनी को तुम नहीं जानते। वह मोटर पर कभी नहीं चढ़ी। तुमने मुझे आज मोटर पर चढ़ा दिया। सिद्धू को जब मैं भइया कहती हूं, तो वह मुझे मिठाई देता है। मैं तुम्हें भइया कहा करूंगी। तुम मुझे मोटर पर चढ़ाओगे न ?"

"हाँ !"

टिली प्रसन्नता में आपे से बाहर हुई जा रही थी। पूछा—"यह क्या है ?"

"यह बाजा है !"

"कैसा बजता है; जरा बताओ !"

जान ने बजा दिया।

टिली हँसने लगी—"इसे सुन कर सब रास्ते से भाग जाते हैं ? गाय-बैल सब ?"

"हाँ !"

"मेरी बकरी भी भाग जायगी ?"

"हां, वह भी भाग जायगी।"

"अच्छा मोटर वाले भइया; कल फिर मुझे मोटर पर चढ़ाओगे न ? मेरी मुर्गी ने अंडे दिये हैं। कल तुम्हें दूँगी। कल मुझे फिर चढ़ाना। अच्छा।"

जान ने उसे थोड़ी दूर ले जाकर लारी रोक दी। बोला—"अब उतरो।"

"कल फिर आओगे न ?"

"हाँ !"

टिली हँसती हुई उतरी और प्रसन्नता पूर्वक ताली बजाती हुई वहाँ से दौड़ती चली गई। दूसरा दिन आया। जान ने देखा टिली आँचल में अंडे लेकर उसकी राह देख रही है। जान लारी को रोक नहीं सका। ऐसा नियम नहीं था।

'मोटर वाले भइया !" - जान के कानों में आवाज आई। वह फिर कर देखने लगा। टिली आँचल के अंडे सम्भालती हुई पीछे-पीछे दौड़ती आ रही थी। उसका हृदय विदीर्ण होने लगा। उसने हाथ का इशारा किया, मत आओ। किन्तु टिली इसे समझ नहीं सकी। जान ने देखा कि वह नहीं रुकती। आखिर उसने लारी की गति बढ़ा दी; किन्तु उसे अभी भी मालूम हो रहा था कि पीछे-पीछे टिली दौड़ती हुई आ रही है और बारम्बार पुकार रही है — "मोटर वाले भइया ! मोटर वाले भइया !"

फिर दूसरा दिन आया। जान ने देखा कि टिली वहीं पर करंज के पेड़ के नीचे खड़ी होकर उसको देख रही है। आज उसके आँचल में मुर्गी के अंडे नहीं थे। चेहरे पर अभिमान का भाव था। वह उससे रूठी हुई थी।

गाड़ी की गति धीमी हो गई थी। टिली कुछ बोली नहीं। चुपचाप देखती रही किन्तु जब देखा कि आज भी लारी खड़ी नहीं होती, तो पीछे-पीछे दौड़ पड़ी।

"भइया !" ..... टिली के कंठस्वर में अपार वेदना थी। जान का हृदय विवशता की शृंखला में बंधा हुआ करुणा से भींग रहा था। उसने और भी सुना। वह कातर कंठसे कह रही थी—"मुझे मोटर,.....नहीं चढ़ाओगे ?....."

किन्तु जान ठहरा नहीं। आगे बढ़ता ही गया। गाड़ी की गति तीव्र हो गई।

जान आज भी उस रास्ते से जाता है। आज भी टिली खड़ी खड़ी होकर उसे देखती रहती है। वह अपने मोटर वाले भइया को आज भी पुकारती है; किन्तु जब जान लारी नहीं खड़ी करता तो वह उदास हो जाती है। थोड़ी देर तक वहीं खड़ी रहती है। खड़ी-खड़ी कुछ सोचती है, फिर घर चली जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ग्रामलक्ष्मी की उपासना

## आचार्य विनोबा भावे

( गतांक से आगे )

हमारे बाप-दादा गांवों में रहते थे। आज तो हर कोई शहर में जाता है। वहां क्या धरा है? पीले पत्थर और धूल है। यथार्थ लक्ष्मी देहात में है। पेड़ों में फल लगते हैं। खेतों में गेहूं होता है, गन्ना होता है। यही सच्ची लक्ष्मी है। यह सच्ची लक्ष्मी बेचकर सफेद या पीले पत्थर मत लो। तुम शहर जाकर वहां से सस्ती चीजें लाते हो। लेकिन सभी ऐसा करने लगें, तो देहात बीरान दिखाई देंगे। अगर देहातों को सुखी देखना है, तो शहर के बाजारों को छोड़ो। गांव की चीजें खरीदो। जो चीज गांव में बन ही न सकती हो वह अलबत्ते बाहर से लाओ। बाहर से लाने में भी, अगर वह दूसरे गांव में होती हो, तो वहां से लाओ। मान लो यहां चूड़ियां नहीं होतीं, तो सोनगीर से लाओ। यहां अच्छे लोटे नहीं बनते, तो सोनगीर से लो। यहां रंगरेज न हो, तो मालपुर से रंगाकर मंगाओ। मालपुर का रंगरेज तुम्हारे यहां से गुड़ लेकर जायगा; तुम उसके यहां से कपड़े रंगवाओ। तुम्हारे गांव में जो चीजें न बनती हों, उनके लिये दूसरे गांव खोजो। शहर में कोई चीज खरीदने जाओ तो पहले यह सवाल पूछो कि क्या यह चीज देहात में बनी है? हाथ की बनी हुई है? पहले उन चीजों को पसन्द करो। जहां तक हो सके, यन्त्रों से बना हुआ शहर का माल निषिद्ध मानो।

तुम्हारी ग्राम-पंचायतों को यह काम अपने जिम्मे लेने चाहिए। गांव के झगड़े-टण्टे करने का काम तो पंचायतों का है ही। लेकिन गांव से कौन-कौन-सी चीजें बाहर जाती हैं, कौन-कौन-सी चीजें बाहर से आती हैं, इनका ध्यान भी पंचायत को रखना चाहिए। नाका बनाकर फेहरिस्त बनाना चाहिए। बाद में, ये चीजें बाहर से क्यों आती हैं, इसकी जांच-पड़ताल करके उन्हें गांव में ही बनवाने की कोशिश करनी चाहिए। बुनकर नहीं है? दूसरे गांव के दो लड़के सीखने के लिये भेज देंगे। हर एक को यह संकल्प कर लेना चाहिए कि गांव की ही चीज खरीदूंगा। जो चीज मेरे गांव में न बनती हो, उसे वहीं बनवाने की कोशिश करूंगा। गांव के नेताओं को इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। 'कैसे होगा? क्या होगा?'—न कहो। उठो! काम शुरू कर दो। चट-से सब हो जायगा। फिर तुम भी चीजों के दाम ठहराओगे। तेली तेल किस भाव बेचे, चमार जूता कितने में बना दे, बुनकर की बुनाई क्या हो? —सब कुछ तुम तय करोगे। जब सभी एक दूसरे की चीजें खरीदने लगेंगे तो सब सस्ता-ही-सस्ता होगा। 'सस्ता' और 'महंगा' बात ही नहीं रहेंगे।

बतलाओ, तुम्हारे यहां क्या-क्या नहीं हो सकता? एक नमक नहीं हो सकता। ठीक, नमक लाओ बजार से। दो, मिट्टी का तेल। दरअसल तो मिट्टी के तेल की जरूरत नहीं होनी चाहिए। परन्तु उसके बिना काम ही न चलता हो तो खरीदो। तीसरी चीज, मसाले। मिर्च तो यहां होती ही है। दरअसल तो मिर्च भी बन्द कर देना चाहिए। मिर्च की शरीर को जरूरत नहीं। दियासलाई खरीदनी पड़ेगी। कुछ औजार खरीदने पड़ेंगे। दूसरा कोई चारा नहीं है। ये चीजें खरीदो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिट्टी का तेल धीरे-धीरे कम करो। उसके बदले अंडी का तेल काम में लाओ।

परन्तु इनके सिवा बाकी सारी चीजें गांव में ही बनाओ। खादी गांव में बनाना चाहिए। खादी के कपड़े के लिए सूत के बटन भी यहां बन सकते हैं। उन दूसरे बटनों की क्या जरूरत है? अगर छाती पर वे बटन न हों तो क्या प्राण छट-पटायेंगे? ऐसी बात तो नहीं है। तो फिर उन्हें फेंक दो। इस कंठी की क्या जरूरत है? उसके बिना चल नहीं सकता? ऐसी अनावश्यक चीजें गांव में लाओगे तो ये कंठियां पैरों की जंजीर की तरह जकड़ेंगी या फांसी की रस्सी की तरह गला घोट देगी। बाहर से ऐसी कंठियां लाकर अपने शरीर को मत सजाओ। भगवान श्रीकृष्ण कैसे सजता था? वह क्या बाहर से कंठियां लाता था? वृन्दावन में मोरों के जो पंख गिर जाते थे, उन्हीं से यह अपना शरीर सजाता था। पंख उखाड़ कर नहीं लाता था। वह मोर के पंख से सजता था। सो क्या सिड़ी हो गया था? क्या पागल हो गया था? 'मेरे गांव के मोर हैं, उनके पंखों से मैं अपने शरीर को सजाऊँ तो कोई हर्ज नहीं है। इसमें उन मोरों की भी पूजा है।' ऐसी भावना से वह मोरमुकुट लगाता था। और गले में क्या पहनता था? वनमाला। मेरी यमुना के तीर के फूल—वे सब को मिलते हैं। गरीबों को मिलते हैं, अमीर को मिलते हैं। वह स्वदेशी वनमाला देहात की वनमाला, गले में पहनता था। और बजाता क्या था? मुरली। देहात के बांस की अलगोजा। यही उसका वाद्य था।

हमारे एक मित्र जर्मनी गये थे। वह वहां का प्रसंग सुनाते थे। 'हम सब विद्यार्थी इकट्ठे हुए थे। फरांसीसी, जर्मन, अंग्रेज, जापानी, रूसी, सब एक साथ बैठे थे। सबने अपने-अपने देश के राष्ट्रीय वाद्य बजाकर दिखाये। फरांसीसियों ने वायोलिन बजाया, अंग्रेजों ने अपना वाद्य बजाया। मुझ से कहा गया, 'तुम हिन्दुस्तानी वाद्य सुनाओ।' मैं चुपचाप बैठा रहा। वे मुझसे पूछने लगे, 'तुम्हारा भारतीय वाद्य कौन-सा है?' मैं उन्हें बता नहीं सका।"

मैंने तुरन्त अपने उस मित्र से कहा, "अजी, हमारा राष्ट्रीय वाद्य बांसुरी है। लाखों गांवों में वह पाई जाती है। सीधी-साधी और मीठी। कृष्ण-भगवान ने उसे पुनीत किया है। एक बांस की नली ले ली, उसमें छेद बना लिये, बस वाद्य तैयार हो गया।"

ऐसा वाद्य श्रीकृष्ण बजाता था। वह गोकुल का स्वदेशी देहाती वाद्य था। अच्छा, श्रीकृष्ण खाता क्या था? बाहर की चीनी लाकर खाता था? वह अपने गोकुल की मक्खन मलाई खाता था। दूसरों को खाना सिखाता था। ग्वालिनें गोकुल की यह लक्ष्मी मथुरा को ले जाती थीं। परन्तु गांव की इस अन्नपूर्णा को कन्हैया बाहर नहीं जाने देता था। वह उसे लूट कर सबको बांट देता था। सारे गोकुल के बालक उसने हृष्टपुष्ट किये। जिन्होंने गोकुल पर चढ़ाई की, उनके दांत उसने अपने मित्रों की मदद से खट्टे किये। गोकुल में रह कर भी वह क्या करता था? गायें चराता था। उसने दावानल निगल लिया, याने क्या किया? देहातों को जलानेवाले लड़ाई-झगड़ों का खातमा किया। सब लड़कों को इकट्ठा किया। प्रेम बढ़ाया। इस तरह यह श्रीकृष्ण गोपालकृष्ण है। वह तुम्हारे गांव का आदर्श है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गोपालकृष्ण ने गांवों का वैभव बढ़ाया, गायों की सेवा की, गांवों पर प्रेम किया, गांवों में पशु-पक्षी, गांव की नदी, गांव का गोवर्धन पर्वत—इन सब पर उसने प्रेम किया। गांव ही उसका देवता था। आगे चलकर वह द्वारकाधीश बने। लेकिन फिर भी गोकुल में आते थे, फिर गाय चराते थे, गोबर में हाथ डालते थे, गोशाला बुहारते थे, वनमाला पहनते थे, बंसी बजाते थे, लड़कों के साथ, गोपग्वालों के साथ, खेलते थे। 'व्रजकिशोर' उनका प्यारा नाम था। 'गोपाल' उनका प्यारा नाम था। उन्होंने गोकुल में असीम आनन्द और सुख पैदा किया।

गोकुल का सुख असीम था। ऐसे गोकुल के अन्न के चार कणों के लिये देवता तरसते थे। प्रेम-मस्त गोपाल बाल जब भोजन करके दही और 'गोपाल' कलेवा खाकर यमुना के जल में हाथ धोने जाते थे, तब देवता मछली बनकर जुठे अन्नकण खाते थे। उनके स्वर्ग में वह प्रेम था क्या? उन देवताओं को पैसे की कमी नहीं थी। लेकिन उनके पास प्रेम नहीं था। हमारे शहर आपके स्वर्ग हैं न? अरे भाई, वहां प्रेम नहीं है। वहां भोग हैं, पैसे हैं परन्तु आनन्द नहीं है। अपने गांवों को गोकुल के समान बनाओ। तब वे नगरसेठ तुम्हारे गांव की नमक-रोटी के लिए लालायित होकर दौड़ते आयेंगे। हमें देहातों को हराभरा गोकुल बनाना है। स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्यसंपन्न, उद्योगशील, प्रेमल। ईख का कोल्हू चल रहा है, चरखा चल रहा है, धुनिया धुन रहा है, तेल का कोल्हू चूंचर्र बोल रहा है, कुएं पर मोट चल रही है, चमार जूता बना रहा है, गोपाल गायें चरा रहा है और बंशी बजा रहा है—ऐसा गांव बनने दो। अपनी गलती से हमने गांव को मरघट बनाया। आइए, अब फिर उसको गोकुल बनायें।

कागज एरंडोल का खरीदो। दंतमंजन राख का बनाओ। ब्रस दतौन के बनाओ। विदेशी कागज की झंडियां और पताकाएं हमें नहीं चाहिए। अपने गांव के पेड़ों के पल्लव—ग्राम पल्लव-लो। उनके तोरण और बंदनवार बनाओ। गांव के पेड़ों का अपमान क्यों करते हो? बाहर से चीजें लाकर बंदवार लगाओगे तो गांव के दरख्त रूठेंगे। वे समारोह में हाथ बंटाना चाहते हैं। उनके कोंपल लाओ। हमारे धार्मिक मंगल उत्सवों के लिए क्या कागज के तोरण विहित हैं? आम के शुभ पल्लव चाहिए और घड़ा चाहिए। कलश चाहिए। सो क्या टिनपाँटका होगा? वह पवित्र कलश मिट्टी का ही चाहिए। तुम्हारे गाँव का बनाया हुआ कुम्हार का चाहिए। देखो हमारे पूर्वजों ने गांव की चीजों की कैसी महिमा बढ़ाई है। उस दृष्टि को अपनाओ। सारा नूर पलट जायगा। जिधर देखोगे उधर दूसरी ही दुनिया दिखाई देने लगेगी। समृद्धि और आनन्द दिखाई देने लगेंगे।

हमने व्याह-शादी की बात का विचार किया। अब, पहले व्यसनों की बात लेता हूं। अपने वश की बातें पहले ले लें। बाद में सरकार और साहूकार की बात सोच लेंगे।

कोई दिन भर फू-फू बीड़ी फूंकते रहते हैं। कहते हैं, 'बीड़ियां तो घर की ही हैं। वे बाहर से नहीं आतीं'। अरे भाई, जहर अगर घर का हो तो क्या खा लोगे? घर का जहर खाकर पूरे सोलह आने स्वदेशी मृत्यु को स्वीकार करोगे? जहर चाहे घर का हो या बाहर का, त्याज्य ही है। उसी तरह सभी व्यसन बुरे हैं। उन सबको छोड़ना चाहिए। वे प्राण घातक है। शराब के बारे में कहोगे तो पहले महाराष्ट्र में शराब नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



महाराष्ट्र का पहला गवर्नर अलफिंस्टन साहब था। उसने महाराष्ट्र का इतिहास लिखा है। उसमें वह कहता है—"पेशवों के राज में शराब से आमदनी नहीं थी। लेकिन आज तो गांव-गांव में पियक्कड़ हैं, सरकार उलटे उन्हें सुभीता कर देती है। लेकिन सरकार सुविधा कर देती है इसलिए क्या हम शराब पीयें? हिन्दुस्तान में दो मुख्य धर्म हैं। हिन्दु-धर्म और इस्लाम। इन दोनों धर्म में शराब पीना महान् पाप माना गया है। इस्लाम में शराब हराम है। हिन्दु-धर्म में शराब की गिनती पंच महापातकों में होती हैं। शराब पीकर आखिर हम क्या साधते हैं? कुटुम्ब का, धन का और इन सबसे प्रिय धर्म का—सभी चीजों का नाश होता है।

बिड़ी और शराब के बाद तीसरा व्यसन है बात-बात में तकरार करना। कृष्ण ने झगड़ों के दावानल निगल लिये। तकरार मत करो। और अगर झगड़ा हो ही जाय तो गांव के चार भले आदमी बैठकर उसका तस्फिया करो। अदालतकी शरण न लो। अदालतें तुम्हारे गाँव में ही चाहिए। जिस प्रकार और चीजें गाँव की हों, उसी प्रकार न्याय भी गांव का ही हो। तुम्हारे खेतों में सब कुछ पैदा होता हैं। लेकिन न्याय तुम्हारे गांव में पैदा न होता हो तो कैसे काम चलेगा? गांव का धान्य, गांव का वस्त्र और गांव का ही न्याय हो। बाहर की कचहरी-अदालतें किस काम की? चीजों के लिए जिस तरह हम परावलम्बी नहीं होंगे, उसी तरह न्याय के लिए भी नहीं होंगे। प्रेम से रहो। दूसरे को थोड़ा-बहुत अधिक मिल जाय, तो भी वह गांव में ही रहेगा, लेकिन दूर चला जाने पर, न हमें मिलेगा, न तुम्हें मिलेगा, सारा भाड़ में जायगा। गांव में ही पंचों में परमेश्वर हैं। उसकी शरण लो।

भोजन वगैरह दीगर बातों की ऊहापोह यहां नहीं करता। जीवन निर्मल और विचारमय बनाओ। हरएक काम विवेक-विचार से करो।

चौथी बात साहूकार की है। तुम ही अपने घर कपास ओढ़कर बीज के लायक बिनौले संभालकर रख लोगे, घर में ही कपड़ा बना लोगे, मूंगफली, अलसी घर में रख कर गांव के कोल्हू से तेल निकलवा लोगे, अदालत-इजलास में जाना बंद कर दोगे, इसमें ही सारे झगड़े तय कर लोगे और मेरे बतलाये ढंग से व्याह-शादियां करोगे तो साहूकार की जरूरत बहुत कम पड़ेगी। कर्जदार फिर भी रहेंगे। लेकिन कर्जकी तादाद कम हो जायगी।

तुम्हारी कर्जदारी का सवाल स्वराज्य के बिना पूरी तरह हल नहीं होता। स्वराज्य में सबके हिसाब जांचे जायेंगे। जिस साहूकार को मूलधन बराबर ब्याज मिल चुका होगा, उसका कर्ज अदा हो ऐसा घोषित किया जायगा। जिस साहूकार का मूलधन भी न मिला हो, सूद के रूप में भी न मिला हो, उससे समझौता करेंगे। इसी तरह के उपाय से वह सवाल हल करना होगा। तबतक आजके बतलाये उपायों से काम लेना चाहिए और धीरे-धीरे साहूकार से दूर रहनेकी कोशिश करनी चाहिए। परंतु कर्ज चुकाने के फेरमें बाल-बच्चों की उपेक्षा न करो। बच्चों को दूध-घी दो। भरपूर भोजन दो। लड़के सारे समाज के हैं। मैं अपने साहूकार से कहूंगा, "मैं अपने बच्चों को थोड़ा दूध दूं? उन्हें दूध की जरूरत है।" बच्चे जितने मेरे हैं, उतने ही साहूकार के भी हैं। वे सारे देश के हैं। लड़कों को देने में तुम साहूकार को ही देते हो। इसलिए पहले भर पेट खाओ, बालबच्चों को खिलाओ घर की हाजतें पूरी होने पर कुछ बकाया रहे, तो जाकर दे दो। कर्ज तो देना ही है। खा-पी कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देना है। भोग-विलास के बाद नहीं। 'कुछ बचा तो ला दूँगा'—साहूकार से कह दो।

इस तरह चार बातें बतलाईं। गांवकी लक्ष्मी के बाहर जाने के चार दरवाजे बताये और उन्हें बंद करने के उपायों की दिशा भी बताई। अब पांचवीं बात सरकार है। यह सरकार कैसे बंद की जाय? तुम अपनी चीजें बनाने लगे, अपने गांव में बनाने लगे, तो सरकार अपने आप सीधी हो जायगी। सरकार यहां क्यों रहती है? विलायत का माल आसानी से तुम बेवकूफों के हाथ बिक सकता है, इसलिए। कल बुद्धिमान बनकर अगर अपने गांव स्वावलंबी बनाओगे, तो सरकार अपने-आप नरम हो जायगी। जिस चीज की जरूरत हो उसे गांव में ही बनाओ। जो इस गांव में न बन सके उसे दूसरे गांव से लाओ। शहर के कारखानों का बहिष्कार करो। विदेशी चीजों की तो बात ही कौन पूछता है? विदेशी और स्वदेशी कारखानों को तुम अपने गांव से जो खाद्य पहुंचाते हो, उसे बंद करो। आपस में एकता करो। लड़ना-झगड़ना छोड़ दो। अगर लड़ो भी तो गांव ही में फैसला कर लो। कचहरी-अदालत का मुंह न देखने का संकल्प करो। गांव की ही चीजें, गांव का ही न्याय। अगर ऐसा करोगे तो एक पंथ दो काज होंगे। दरिद्रता का कष्ट दूर होगा और सरकार अन्तर्धान हो जायगी। तुम इस तरह स्वावलंबी, निर्व्यसनी, उद्यमी और हिलमिलकर रहने वाला बनो; तब सरकार तुम्हारे हक दिये बिना रह ही नहीं सकती। तुम्हारी इतनी ताकत बढ़ने पर भी अगर सरकार तुम्हारे हक न देगी, तो फिर सत्याग्रह तो है ही। उस हालत में जो सत्याग्रह होगा, वह ऐसा पचास-साठ हजार का टुटपूंजिया सत्याग्रह नहीं होगा। उसमें तो पचास-साठ लाख लोग शरीक होंगे।

तुम लगान के रूप में दस हजार रुपया देते हो। लेकिन कपड़ों के लिए पचीस हजार देते हो। अब, मान लो कि यह सरकार यहाँ जल्दी नहीं टलती। उसका लगान कम नहीं होता। स्वराज्य मिलने पर कम करेंगे। लेकिन वह पराक्रम जब होगा तब होगा। फिर भी अगर कपड़ा गांव में ही बनाने का संकल्प कर लें, तो क्या होगा? हरएक को तीन सेर रूई की जरूरत होगी। हर कुटुम्ब में अगर पांच अदमी हों, तो पंद्रह सेर रुई हुई। बोने के लिए जितने बिनौलों की जरूरत हो, उतनी बढियां कपास खेत से बीनकर घरपर ही लोढ़ो। बढ़िया बिनौले मिलेंगे। जो रूई होगी उसमें से अपने परिवार के कपड़ों के लिए आवश्यकतानुसार रख लो और बाकी को बेच दो। फी आदमी पक्की तीन सेर रूई के दाम सवा रुपया होंगे। बत्तीस सौ आदमियों को चार-पांच हजार की रुई रखनी ही होगी। कपड़ा पच्चीस हजार का होगा। उसमें से पांच हजार घटा दीजिए, तो बीस हजार गांव में रहेंगे। सरकार लगान के दस हजार ले जायगी। लेकिन तुम बीस हजार बचाओगे। इसीलिए गांधी कहते हैं कि खादी ही स्वराज्य है। अकेली खादी की बदौलत बीस हजार रुपये गांव में रह गए। कल स्वराज्य मिल जाय तो क्या होगा? लगान आधा याने दश हजार का पाँच हजार हो जायगा। याने तुम्हारे पांच हजार रुपये बचेंगे। लेकिन खादी बरतने से बीस हजार बचेंगे। इसलिए वास्तविक स्वराज्य किस वस्तु में है यह जानें।

पहले दूसरे कई राज्य हुए तो भी देहात का यह वास्तविक स्वराज्य कभी नष्ट नहीं हुआ था।

[ शेष पृष्ठ ३१ में ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ अक्टूबर अंक से आगे ]

# बिहार प्राइवेट फौरेस्ट ऐक्ट

ले०—श्री सच्चिदानन्द सिंह
फौरेस्ट सेट्लमेण्ट अफसर, राँची

जिन गैरसरकारी वनों की विज्ञप्ति धारा ३० के अन्दर प्रकाशित हो जाती है उनका प्रबन्ध और नियंत्रण प्रादेशिक सरकार द्वारा होता है। प्रादेशिक सरकार तत्पश्चात् उन वनों के लिये फौरेस्ट अफसर नियुक्त करती है जिन्हें समुचित अधिकार भी मिलता है। वन के मालिकों को अपने उचित तथा आवश्यक काम के लिये यथासम्भव लकड़ी या अन्य वन-पदार्थों की प्राप्ति फौरेस्ट अफसर की आज्ञा से होती है। वनों से जो कुछ भी आमदनी होती है वह सरकार अपने पास जमा करती है। पीछे हिसाब करके तथा खर्च काट कर कुल मुनाफा या बची हुई रकम वनों के सम्बन्धित मालिकों को दे दी जाती है। इसके अतिरिक्त सरकार की ओर से उन्हें (मालिकों को) डेढ़ आने एकड़ सालाना की दर से गैरसरकारी सुरक्षित वनों के लिये भत्ता या मालगुजारी भी मिलती है।

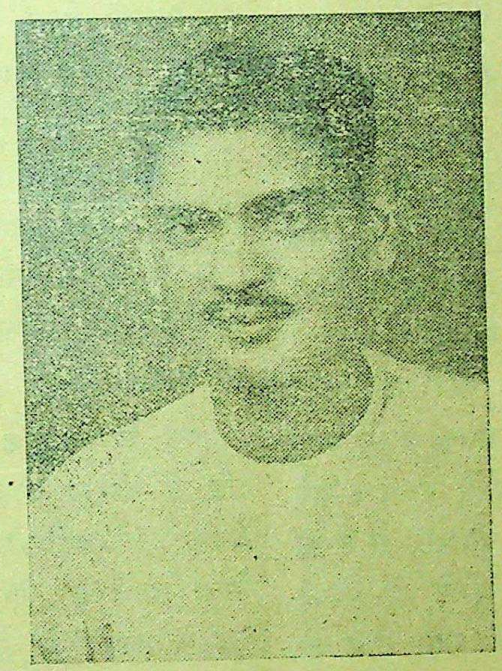

लेखक

वनों के सम्बन्धित मालिक अपने भत्ता या मालगुजारी और मुनाफे के लिये धारा ४२ के मुताबिक अपने पावना का दावा सम्बन्धित फौरेस्ट सेट्लमेन्ट अफसर के पास करते हैं। सेट्लमेन्ट अफसर ऐसे दावे की उचित जांच कर मालिकहक का सर्टिफिकेट या फैसला की कॉपी फौरेस्ट अफसर अर्थात् डिविजनल फौरेस्ट अफसर के पास भेज देते हैं जिसके आधार पर मालिकों को भत्ता या मालगुजारी और मुनाफे के पैसे मिलते हैं।

धारा ४२ के मुताबिक भत्ता या मुनाफा के लिये वन के मालिकों को अपने दावा की दरखास्त इसलिये देनी पड़ती है कि सरकार के पास ऐसा कोई भी कागजात या रेकर्ड्स नहीं हैं जिन से सही मालिकों का पता लग सके। सही कागजात या रेकर्ड्स नहीं मिलने के कई कारण भी हैं। प्रथम तो यह कि यहाँ के रेकर्ड्स ऑफ राइट्स अर्थात् मालिकों के हक सम्बन्धी कागजात सर्वे तथा सेट्लमेन्ट के समय में तैयार किये गये थे। उस समय दर्ज मालिकों में कितने तो गुजर गये और कई लोगों ने अपना मालिकी हक या अधिकार दूसरों के हाथ बेच लिया, फिर भी कागजात या रेकर्डस दुरुस्त न हुए और उन्हीं का नाम चला आता है यद्यपि उनकी जगह पर अब यथार्थ मालिक दूसरे हैं। दूसरे यह कि छोटानागपुर में रजिष्ट्रर 'डी' का रिवाज़ नहीं है जिससे मालिकों के नाम ठीक होते जाँय। हाँ, यहाँ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपने उच्च मालिकों के सिरिस्ते में दाखिल खारिज द्वारा नाम दुरुस्त किया जाता है, पर इस ओर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। अतः कागजात में गलत नोम जारी रहना स्वाभाविक है। ऐसी थिति में यदि रेकर्ड्स अर्थात् कागजात पर विश्वास करके दर्ज मालिकों को पैसे दिये जाँय तो अधिकतर गलत लोगों को पैसे मिल जायेंगे और अधिकारी व्यक्ति अपने पावना की प्राप्ति से वंचित रह जायेंगे। अतः सरकार की ओर से इस दिशा में उपरोक्त आदेश है जिससे यथासम्भव जायज़ मालिकों को ही पैसे मिलें।

सरकार बहुत उत्सुक है कि वन के मालिकों को भत्ता या मालगुजारी के पैसे शीघ्र मिल जाँय और डिविजनल फौरेस्ट अफसर तथा फौरेस्ट सेट्लमेन्ट अफसर ने अपने इलाके में इसके लिये काफी प्रयत्न भी किया पर काफी चेष्टा करने पर भी उम्मीद से कम ही दावे प्राप्त हुए। अधिकांश मालिकों ने अब तक दावा नहीं किया है। कुछ तो यह सोचते हैं कि वनकी मालगुजारी के थोड़े पैसे मिलेंगे, इतनी छोटी रकम के लिये कौन तरद्दुद करे? पर, मेरे विचार से उनका ऐसा सोचना हितकर नहीं। इससे दो फायदे तत्काल हो जाते हैं। एक तो नाम ठीक हो जाता है और दूसरे, पैसे मिलने से कई काम चल सकते हैं, मौके पर थोड़े पैसे भी बेमौके बड़ी रकम से ज्यादा सहायक होते हैं। अतः ऐसा सोचना व्यर्थ है। इसलिये वन के उन मालिकों को, जिन्होंने अब तक बन की मालगुजारी के लिये कभी दावा नहीं किया है, चाहिये कि शीघ्रातिशीघ्र वे अपने ऐसे दावा के लिये फौरेस्ट सेट्लमेन्ट अफसर के पास दरखास्त दें और सबूती कागजात दिखला कर फैसला करवालें जिससे उन्हें पैसे भी मिल जांय और अपने वन से लकड़ी सुपत प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

वनों के सुचारु प्रबन्ध के लिये वन-विभाग द्वारा प्रत्येक वन की कार्य-प्रणाली (Working plan) तैयार की जाती है तथा वैज्ञानिक कायदे से उसका निर्वाह किया जाता है। वन का प्रबन्ध वैज्ञानिक विषय है। जिस प्रकार वृक्ष लगाने के नियम हैं उसी प्रकार काटने के भी नियम हैं। कार्य-प्रणाली तैयार करने में वन की स्थिति पर भी ध्यान दिया जाता है। कटाई कूप के कायदे से की जाती है और उसमें हकदारों की सुविधा और आवश्यक मांग की यथासम्भव पूर्ति पर भी ध्यान दिया जाता है। वन के इस वैज्ञानिक नियम-पालन से उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है अन्यथा क्षति। वन का वैज्ञानिक प्रबन्ध इसलिये अनिवार्य है।

वन के वैज्ञानिक प्रबन्ध और नियंत्रण की दृष्टि से फौरेस्ट अफसर कई गाँव के भिन्न-भिन्न जमीन्दारों के वनों को सुविधा के लिये एक साथ मिला सकते हैं। ऐसे वनों में भी हकदारों को कूप के कायदे से लकड़ी मिलती है। यदि किसी वन वाले गाँव के कई टोले हैं जो एक दूसरे से काफी दूर हैं या ब्लौक के अन्दर कोई ऐसी बस्ती हो जहाँ वाले को कूप से लकड़ी लाने में असुविधा हो तो उनकी सुविधा के लिये दूरी पर विचार कर उचित प्रबन्ध किया जाता है।

गैरसरकारी वनों में वन-पदार्थों को किसी प्रकार की क्षति पहुँचाना कसूर समझा जाता है। नियम के विरुद्ध वन में वृक्ष काटने, पत्थर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कोड़ने, चूना या कोयला जलाने, अन्य वन-पदार्थों को वहाँ ले जाने, खेती के लिये वन काटकर जमीन साफ करने, वन में आग लगाने या पालतू जानवरों द्वारा वन-पदार्थों को क्षति पहुँचाने, इत्यादि कसूरों का धारा ४९ के मुताबिक फैसला किया जाता है तथा कसूर साबित हो जाने पर उचित दण्ड मिलता है।

गैरसरकारी सुरक्षित वनों के वृक्षों पर वन-विभाग द्वारा लगाये हुए चिन्ह या दाग को यदि कोई व्यक्ति जान-बूझ कर मिटा दे या हटा दे या सीमाबन्दी पर के खूँटों को हटा दे या नष्ट कर दे या उन पर लगाये हुए दाग या चिन्ह को मिटा दे तो ऐसा करने वाले अपराधी व्यक्ति को धारा ६२ के मुताबिक दण्ड मिलता है।

गैरसरकारी सुरक्षित वनों में नाजायज तरीके से यदि किसी प्रकार की लकड़ी काटी जाय या उनमें आग लग जाय तो उन्हें रोकना और शान्त करना प्रत्येक हकदार और वन-रक्षक या वन-विभाग के अन्य कर्मचारी का मुख्य कर्तव्य है। इसकी सूचना फौरेस्ट अफसर को भी देनी चाहिये।

वन में आग लगाना जुल्म है। उस में आग या तो महुआ चुनने के समय लापरवाही से लगती है या उसके अन्दर राह चलते समय बीड़ी सिगरेट पीकर बचे हुए हिस्से को फेंक देने से, या छोटी-छोटी झाड़ियों को घास अच्छी उपजाने के बहाने आग फूँकने से। वन में आग लगने पर उसे बुझाने के लिये यथा साध्य चेष्टा करना तथा उसमें सहयोग देना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। जानबूझ कर सहायता न करने वाले को धारा ७२ के मुताबिक दण्ड मिल सकता है। इस प्रकार की आग वनों में विशेष कर गर्मी के दिनों में लगती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उपर्युक्त बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

---

[ २८ पृष्ठ से आगे ]

इसीलिए हमें रोटियों के लाले नहीं पड़े। परन्तु इस राज्य में यह खादी का स्वराज्य, देहाती उद्योग-धंधों का स्वराज्य, नष्ट हो गया है। इसीलिए देहात वीरान और डरावने दिखाई देने लगे। इंगलैंड का मुख्य आधार कर या किसान नहीं हैं, बल्कि करोड़ों रुपयों का व्यापार है। लगान के रूप में उसे दस हजार ही मिलेंगे। लेकिन तुम्हें कपड़ा बेचकर वह बीस हजार ले जायगा। शक्कर, घासलेट वगैरा सैकड़ों ऐसी ही चीजें हैं। इसलिए वास्तविक स्वराज्य को पहचानो। हम सरकार को अपने पराक्रम से कब निकाल सकेंगे, सो देखा जायगा। परन्तु तबतक मेरे बतलाये उपायों से अपने गांव को स्वावलंबी, उद्यमी, प्रेममय बनाओ। इसी में सब कुछ है।'

'विनोबा के विचार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नये चीन की नारी

## ले०—श्री अ० कार्तुनीवा

पुराने चीन में मेहनतकश स्त्री अपने भाग्य पर आठ आठ आंसू बहाती थी। समस्त चीनी जनता की तरह चीनी स्त्री विदेशी साम्राज्यवादियों, चीनी पूँजीपतियों, सामंतों और सूदखोरों के शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार थी। इसके सिवा स्त्री जाति उन नगण्य अधिकारों से भी वंचित थी जो पुरुष जाति को प्राप्त थे। उसे जमीन खरीदने या बेचने का अधिकार नहीं था, एक ही किस्म के काम के लिए उसे पुरुष की तुलना में आधी मजूरी मिलती थी अपने पति को छोड़कर वह स्वयं खेत मजदूरी नहीं कर सकती थी, यहां तक कि अपने लिये पति भी नहीं चुन सकती थी। यह काम उसके माता पिता करते थे। बिलकुल छोटी उम्र से ही उसकी दासत्वपूर्ण जिन्दगी शुरू हो जाती है।

चीन की जनक्रांति ने अमरीकी सम्राज्यवादियों तथा क्युमिनतांगी प्रतिक्रियावादियों का तख्ता उलट के चीनी स्त्री की स्थिति में आमूल परिवर्त्तन कर दिया। नये चीनी के समाज में उसे समान अधिकार प्राप्त हो गया। २६ सितम्बर १६४६ को जनता की राजनीतिक सलाहकार परिषद् की पहली बैठक में पास हुए सामान्य कार्यक्रम के अनुसार:—

"चीनी जनता का जनतंत्र स्त्रियों की गुलाम बनने की सामंती व्यवस्था का खात्मा करता है। राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा समस्त सार्वजनिक क्षेत्रों में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार देता है। स्त्रियों और पुरुषों के लिए वैवाहिक स्वतंत्रता लागू की जा रही है।"

मुक्त चीनी नारी ने अपने देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक जीवन में बड़े उत्साह के साथ प्रवेश किया है। चीन की जनवादी देश की शक्ल में रूपांतरित करने तथा देश के पुनर्निर्माण एवं विकास में जबरदस्त ताकत बन गयी हैं।

हजारों चीनी स्त्रियां, जन सरकार के विभिन्न अंगों में भाग ले रही हैं। ३६ स्त्रियां मंत्री, उपमंत्री तथा मंत्रालय के बड़े बड़े विभागों के प्रधान के पद पर हैं। अकेले हुंये प्रांत में ६७०० से अधिक स्त्रियां कृषक संघ के प्रशासन विभाग में काम करती हैं। मध्य एवं दक्खिनी चीन में कृषक संघ के ३२ प्रतिशत अध्यक्ष तथा स्यांगों (कई गांवों को मिलाकर एक स्यांग होता है) के १२ प्रतिशत अध्यक्ष स्त्रियां हैं। केन्द्रीय जनसरकार की डिपुटी चेयरमैन राष्ट्रों के बीच शांति एवं सद्भावना बढ़ाने के लिए" अंतरराष्ट्रीय स्तालिन पुरस्कार प्राप्त करने वाली सुंग लिंग, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की सदस्या तथा चीन के जनवादी महिला संघ की अध्यक्षा त्साईचांग तथा प्रतिभा सम्पन्न लेखिका दिंग लिंग के नाम चीन से बाहर दूर दूर तक विख्यात हैं। आज इनके नाम शांति, जनवाद एवं स्त्रियों की समानता के लिए होने वाले संघर्ष के प्रतीक बन गये हैं।

चीन की जन सरकार ने स्त्रियां को उद्योग धंधे सीखने के अत्यंत व्यापक रूप में अवसर प्रदान किये हैं। फलतः चीनी स्त्रियां उद्योग और कृषि में महत्वपूर्ण भाग ले रही हैं। कपड़े के उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों में ७० प्रतिशत स्त्रियां हैं। दो साल पहले चीन में सिर्फ एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



महिला रेलवे इंजिन ड्राइवर थी। आज देश की बहुत सी रेलवेलाइनों में महिला ड्राइवर हैं। ट्रैक्टर चलाने का आंदोलन सबसे पहिले ल्यांगत्सुन नाम की चीनी महिला ने चलाया था जो इस समय हिलुंगक्यांग प्रांत की राजनीतिक सलाहकार परिषद की सदस्या है। इस समय बहुत-सी चीनी स्त्रियां ट्रैक्टर चलाना सीख गयी हैं और सीख रही हैं।

कानून के अनुसार चीनी स्त्रियों को एक ही किस्म के काम के लिए समान वेतन मिलता है।

चीन की जनसरकार स्त्रियों की शिक्षा की ओर बहुत अधिक ध्यान देती है। सारे देश में वयस्कों के लिए अध्ययन केन्द्रों के जाल बिछ गये हैं ..... शहरों में सायंकालीन स्कूल तथा ग्रामों में शीतकालीन स्कूल खुल गए हैं जहां स्त्रियां अवकाश के समय लिखना पढ़ना सीखती हैं। उच्च शिक्षणालयों के द्वार स्त्रियों के लिए खुल गए हैं। उदाहरण के लिए स्यान के उत्तर पश्चिमी विश्वविद्यालय के १५०० विद्यार्थियों में २० प्रतिशत छात्राएं हैं। पेकिंग के जन विश्वविद्यालय के २०० छात्रों में ५२० स्त्रियां हैं।

घरों में स्त्रियों के काम हलका करने के उद्देश्य से बच्चों के लिए नर्सरियों तथा बालोद्यान का निर्माण करने के लिए केन्द्रीय जनसरकार ने खासी रकम मंजूर की है। अकेले पूर्वी चीन के औद्योगिक कारखानों में बच्चों के लिए २००० नर्सरियां और बालोद्यान हैं। गांवों में भी नर्सरियां बालोद्यान खोले जा रहे हैं। अब वे दिन लद गये जब औरतें अपने बच्चों की बंकुची बांधकर काम करने जाती थीं और सारे दिन बच्चे को अपने पास रखती थीं।

स्त्रियों के स्वास्थ्य सुधार की ओर भी केन्द्रीय सरकार बहुत ध्यान देती है। समस्त प्रांतों और शहरों में स्त्रियों के लिए विशेष अस्पताल, डाक्टरी सलाह लेने के केन्द्र तथा प्रसूतिशालाएं बनी हैं।

चीन की स्त्रियों को अपनी समानता, स्वतंत्रता एवं शांति अपनी जान के समान प्यारी है क्योंकि इन चीजों की चीनी लोगों ने देशी प्रतिक्रियावादियों तथा विदेशी साम्राज्यवादियों के खिलाफ लम्बे अर्से तक संघर्ष करके हासिल किया है। वे जनक्रांति की उपलब्धियों की रक्षा के लिए चट्टान के सदृश दृढ़ हैं तथा कलकारखानों और खेतों में निःस्वार्थ श्रम के द्वारा अपनी मातृभूमि को और भी शक्तिशाली बना रही हैं।


सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह दिमागी ताकत और आंखों की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य २॥), तीन शीशी एक साथ लेने पर ६॥) बाल आधा पका हो तो ३॥), एक साथ ३ का ६) और कुल पका हो तो ५) व ३ का १२) बेफायदा साबित होने पर कीमत वापस।

महात्मा प्रदत्त

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो! औरों की भांति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके लेप से सफेदी के दाग को पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -) का टिकट भेज कर शर्त लिखालें। मू० ३)

तेज दवा का मूल्य ५) रु०।

श्री हिन्द फार्मेसी (४१)

पो० जसीडीह (संथाल परगना)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ग्रामों की शिक्षा

ले०—श्री विद्यानन्द वेदालंकार

आज महंगी और भूखमरी के कारण अधिक अन्न उपजाओ का एक आन्दोलन खड़ा है। उसके लिये हमारी सरकार बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाती जा रही है। किन्तु भूख अन्न से मिटेगी, न कि योजना से। योजनानुसार १९५३ तक अन्नाभाव समाप्त हो जाना चाहिए। किन्तु असफलता का दोष किसके सर मढ़ा जाय —यह प्रश्न उठ खड़ा होता है। मैं किसी व्यक्ति को दोषी बनाने की जगह शिक्षा को दोष देता हूँ। क्योंकि जिसे अधिक अन्न पैदा करने को कहा जा रहा है, वह ऐसा करने में असमर्थ है। इसके दो क्षेत्र हैं, ग्रामीणों को कृषि अथवा अन्य ग्राम उद्योगों की न तो शिक्षा दी गई, न माता पिता से प्राप्त होने वाली परम्परागत शिक्षा को ही रहने दिया गया। यह तो हुई गांव के शिक्षितों की बात जो इस प्रकार की आवश्यक योजनाओं की उपयोगिता को समझते हैं, लेकिन हाथ, पांव से काम करने की रुचि और क्षमता दोनों ही खो बैठते हैं। तो फिर दूसरे ग्रामीण कृषकों से यह कैसे उम्मीद की जाय कि वे वैज्ञानिक तरीके से अधिक अन्न उपजाकर हमारी योजना को सफल बनायेंगे।

प्राचीन जमाने से पारसमणि की एक सुन्दर कथा चली आ रही है जिसके स्पर्श से कहा जाता है कि लोहा सोना बन जाता है। वह पारसमणि वास्तव में शिक्षित व्यक्तियों का कर्म है, जो लकड़ी, लोहा आदि को सोने के समान बहुमूल्य बनाकर कर रख देता है। यह योग्यता आज के शिक्षितों में नहीं पैदा होती कि वह समाजोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करे। आज की शिक्षा केवल नौकरी के लायक आदमी तैयार करने का साधन है। नौकरी न मिलने पर बेकारी फैलती है। आज समाजोपयोगी वस्तुओं के अभाव का कारण यह असहाय, परावलम्बी बनाने वाली शिक्षा ही है।

पहले ग्रामों में आबादी कम थी। खेत की पैदावार कम थी। परन्तु आबादी बढ़ने से जरूरत बढ़ गई और फलतः अन्न जरूरत से कम होने लगा। तब कपड़ा आदि कैसे प्राप्त किया जाय, यह प्रश्न पैदा होता गया। इस प्रश्न पर ध्यान देकर उपाय यह निकाला गया कि चारागाहों को जोतना शुरू कर दिया जाय—चारागाह जोतने लगे। परन्तु प्राकृतिक प्रतिक्रिया का भी इसके कारण आरम्भ हो गया। वह है पशुओं की ह्रासोन्मुख स्थिति। वे कमजोर होने लगे। खाद भी कम, दूध भी कम, काम भी कम, उसके ये तीन परिणाम हुए। इस जिले में कितने ग्राम तो ऐसे हैं जहां एक सेर दूध भी नहीं मिल सकता। इस जिले में चारागाह जोतने के बदले वन काट लिये गये। अतः खेतों में १० मन की जगह ६ मन उपज हो गई। अन्न छोटा और कम पैदा होने लगा और जनसंख्या बढ़ती ही गई। पर्याप्त पौष्टिक खाद्य के अभाव के फलस्वरूप लोगों के शारीरिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ा।

कुछ वर्ष पहले जापानी बौने थे, परन्तु आर्थिक विकास के फलस्वरूप आज वे ६ फीट लम्बे और बलिष्ठ हैं। मारवाड़ी सेठों के बच्चों को भी देखिये। अतः वर्त्तमान समस्या का इलाज निम्न होगा :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(१) कपड़े आदि के लिये ग्रामीणों के पास मूल्य के रूप में अन्न देने की क्षमता नहीं रही। अतः प्रत्येक ग्राम को कपड़े आदि के लिये स्वावलम्बी बनाना होगा। अन्यथा सभी प्रकार से ह्रास और अन्न कष्ट की वृद्धि होती जायेगी।

(२) पं० नेहरू का कहना ठीक है कि हमारी कठिनाई हमें कोमल और सुस्त नहीं रहने देगी। परन्तु जो रोटी बनाना जानता ही नहीं—उसे हजारों मन गेहूँ और आटा रहते हुए भी भूखों मरना ही पड़ेगा। गांव की लकड़ी ईंधन होती है और स्कूल एवं घरों के लिये सेज-कुरसी हम खरीदकर मंगाते हैं। ग्राम का लोहा जंग खा जाय किन्तु विदेश से या टाटा से चीज बिना आये हमारा काम नहीं चल सकता। इस परावलम्बी जीवन से ग्रामों को मुक्त करना होगा। इन चीजों को खरीदने के लिये जब लोगों के पास अन्न नहीं बचता है तब जीवनोपयोगी धन्धों की शिक्षा देने में देरी करना अकाल को निमन्त्रण देना है।

(३) भूखमरी तरकारी उपजाने से या अमेरिका से अन्न मंगाने से ही नहीं मिटेगी। बीमार पड़ने पर दवा दी जाती है, उपवास कराते हैं। वैसे ही जब तक कपड़ों, कागज आदि सभी के लिये प्रत्येक सबडिविजन स्वावलम्बी नही बन जाता तब तक भूखमरी मिट नहीं सकती है। इसके लिये तत्सम्बन्धी शिक्षा ही एक मात्र आधार है।

(४) स्वास्थ्य की समस्या भी ग्रामों के सामने है। अस्पताल बीमार पड़े की दवा करते हैं। वे बीमार पड़ने से नहीं बचाते। बीमार पड़ने से बचाने का उपाय स्वास्थ्य संबन्धी शिक्षा है।

(५) चोर बाजारी और घूसखोरी:—गांव वाले वस्तुएँ जब तक बनियों से खरीदने को लाचार हैं तब तक चोरबाजारी बन्द नहीं हो सकती। वह ५० वर्ष पूर्व की थी और आज भी हैं। यदि वस्तुएँ राष्ट्रीय सरकार के कारखानों और दूकानों से मिलने लगे तो भी घूसखोरी बन्द नहीं हो सकती। इन दोनों से बचने के लिये ग्रामों को स्वावलम्बी बनाना आवश्यक है।

(६) चर्खा या यान्त्रिक विकास:—यह कहा जा सकता है कि अपना सोना देकर ग्रामीण यन्त्र खरीद लें लेकिन हम अपना सोना वापस कर देने के लिये विदेशों को क्या दे सकेंगे? क्या आवश्यकतानुसार यन्त्र प्राप्त भी हो सकेंगे? क्या उनको चलाने, सिखाने का प्रश्न न उठ खड़ा होगा? फिर उपाय क्या है? हम तो समझते हैं कि अपनी स्थिति और क्षमता के अनुकूल ग्रामोद्योगों को अपनाया और प्रोत्साहन दिया जाय और धीरे-धीरे इन्हीं का विकास किया जाये। अतः आर्थिक विकास की योजना के लिये लोगों को शिक्षा देना ग्रामोन्नति के लिये परमावश्यक है।

(७) सरकारी विशेषज्ञों के भरोसे ग्रामोद्योग और कृषि की उन्नति नहीं की जा सकती। लोगों में इस ओर प्रवृत्ति भी जगे, इसके लिये यत्नशील होना चाहिये।

ग्रामोद्योग की शिक्षा के लिये इस योजना को बुनियादी शिक्षा के नाम से चालू किया गया है। परन्तु बुनियादी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी केवल नौकरी के लिये ही होते हैं, ऐसा प्रतीत होने लगा है। हमें अपने जिले के स्कूल संचालन में ग्रामों का दिली सहयोग प्राप्त करने की क्षमता होनी चाहिये। जिसके बिना स्कूल जिस भूमि में पनप रहे हैं, वे उसके योग्य हैं कि नहीं यह जानने का भी अवसर नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रम को प्रतिष्ठा करना अमेरिकी जीवन का मुख्य अंग है

ले०—श्री रामनारायण राव

कहां तो जमशेदपुर की मजदूरों की बस्ती और कहां न्यूयार्क नगर की जगमगाती हुई गगनचुम्बी अट्टालिकायें! जून १९४९ में एक रात को मैं "रिवरसाइड ड्राइव" नामक सड़क पर स्थित इन्टरनेशनल हाउस की छत पर खड़ा-खड़ा नीचे गाड़ियों का आना जाना देख रहा था। मेरा १२ वर्ष का पुराना स्वप्न सच्चा सिद्ध हो गया था।

'नई दुनिया' के बारे में मैंने सुना और पढ़ा तो बहुत अधिक था पर उससे मेरा यह पहला ही परिचय था। यह तो केवल उन दो व्यस्त वर्षों की शुरूआत थी जिनमें मैंने इस विस्तृत सम्पन्न देश के एक तट से दूसरे तट तक का भ्रमण किया।

मेरे अध्ययन-भ्रमण के अन्तर्गत दो यूनिवर्सिटियों में शिक्षा प्राप्त करना, शिकागो के एक ढलाई-कारखाने में मजदूर के रुप में काम करना, अमेरिकी परिवारों मेंजाकर रहना और क्लबों तथा गोष्ठियों में अतिथि-वक्ता के रूप में भाषण देना शामिल था।

अमेरिका में मेरा एक मिनट भी ऐसा नहीं बीता जब मुझे कुछ काम न हो और मेरा जी ऊबा हो। जब दो वर्ष बाद इलिनौय यूनिवर्सिटी से श्रम और मजदूर-मालिक सम्बन्धों के बिषय में एम० एससी० की उपाधि प्राप्त करके मैं भारत वापस लौटा तो मेरा चित्त उदास था क्योंकि मुझे उस महान् देश के प्रति स्नेह हो गया था।

मेरा जन्म १९१५ में जमशेदपुर में हुआ और अपने जीवन के अगले ३४ वर्षों में मैं उस नगर के विकास के निकट सम्पर्क में रहा, जो बाद में "भारत का पिटसबर्ग" कहलाया।

कालेज से स्नातक होने के बाद मैंने इस्पात-कारखाने में काम शुरू किया और १२ वर्षों के भीतर फोरमैन के पद तक पहुंच गया। इस अवधि में मैंने जो रुपया कमाया उससे मैंने अमेरिका जा कर नये अनुभव और उच्च शिक्षा प्राप्त करने का निश्चय किया। अमेरिका को किन-किन चीजों ने सम्पन्ने और शक्तिशाली बनाया है, इस विषय में मेरी धारणा है कि स्वतंत्र और स्थिरतापूर्ण वातावरण में कठोर श्रम और बुद्धिमतापूर्वक किये गये कार्यों को ही इनका अधिक तम श्रेय है। इसी कारण मेरी कहानी अमेरिकी श्रमिकों और राष्ट्र के जीवन में उनकी स्थिति से ही सम्बन्ध रखती है।

## मनुष्यता का व्यवहार

भारत, पश्चिम देशों के मार्ग पर चलते हुए औद्योगीकरण की चेष्टा कर रहा है। टेक्नोलोजी और वैज्ञानिक प्रगति ने हमें आकृष्ट किया है। किन्तु अभाग्य वश एक चीज की अपेक्षा की जाती है और वह है औद्योगिक कारखानों में मनुष्यता के व्यवहार का मूल्य। अभी हमारे देशवासियों ने ये तत्व नहीं समझे हैं कि उचित व्यवहार से मानव की प्रतिष्ठा और गौरव को प्रोत्साहन मिलता है तथा उद्योगों में मजदूर केवल शारीरिक श्रम से ही सहायता नहीं करते, उनकी अन्य प्रकार भी उपयोगिता होती है।

अमेरिका में, मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि वहां कोई उद्योग-कम्पनी केवल एक ऐसी संस्था मात्र नहीं होती जिसका लक्ष्य आर्थिक लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कमाना हो बल्कि वह तो एक ऐसी मानव संस्था होती है जहां हर एक व्यक्ति की आशा-आकांक्षाओं को मूर्त्त रूप पाने के अवसर मिलते हैं। वहां लोगोंने यह जान लिया है कि कल-कारखानों सम्बन्धी टैकिनकल कुशलता और मानव-समाज सम्बन्धी व्यवहार-कुशलता दो भिन्न वस्तुएं हैं, अतः मशीनों तथा मनुष्यों के प्रति आचरण भी भिन्न ही होना चाहिये।

अमेरिकी उद्योगों में मालिक-मजदूरों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में जो चीजें सफल सिद्ध हुई हैं वे निम्नलिखित हैं:—

(१) मशीनों के सम्बन्ध में मानव का उचित स्थान। हरएक स्थिति में मनुष्य को ही अधिक महत्व दिया जाता है।

(२) कर्मचारियों का चुनाव सावधानी से उनकी योग्यता के आधार पर किया जाता है ताकि वे कारखाने के सामूहिक जीवन में खप सकें और सहयोग पूर्वक काम कर सकें।

(३) किसी भी कार्पोरेशन में न्यूनतम वेतन पाने वाले मजदूर का उतना ही ख्याल किया जाता है जितना की कार्पोरेशन के उपाध्यक्ष का।

(४) हर एक महत्वपूर्ण समस्या पर फोरमैन और यूनियन के प्रतिनिधियों की सलाह ली जाती है। परामर्शदाता के रूप में श्रम संगठनों का योग प्राप्त करके उनलोगों ने संगठन की रचनात्मक क्षमता का अधिकतम लाभ उठाया है। मालिक-मजदूर और मजदूर-संगठन हिल मिल कर समस्याओं का सामना करते हैं।

(५) अमेरिकी उद्योगों में केवल यही आवश्यक नहीं समझा जाता कि मजदूर कुशल और दक्ष हो तथा उत्पादन में वृद्धि करें, अपितु यह चेष्टा भी की जाती है कि मजदूर अपने काम से खुश हो और उसे पसन्द करे। मालिक और श्रम संगठन दोनों ही अधिकतम उत्पादन तथा मजदूरों की अधिकतम सुख-सुविधाओं का ख्याल रखते हैं।

मैं जिस बात से अत्यधिक प्रभावित हुआ हूं वह मनुष्यों की यही संगठन-व्यवस्था थी जिससे कि ये कारखाने का काम बिना किसी निगरानी के दक्षता पूर्वक चलाने में सफल होते हैं।

मेरी राय में, स्वतंत्र व्यवसाय-पद्धति का केवल यही दायित्व नहीं है कि वे इसप्रकार निर्माण-कार्य करें जिससे उत्पादन और मजदूरी में उन्हें लाभ हो, उनका काम यह भी है कि जो लोग माल तैयार करते हैं उनकी सुख-सुविधाओं पर अधिकतम ध्यान दिया जायें। जीवन में पहली बार मैंने यह अनुभव किया कि काम में भी आनन्द आता है।

इन मधुर सम्बन्धों की स्थापना का श्रेय मुख्यतः श्रम-संगठनों को है। मेरा विश्वास है कि यदि संसार में कहीं भी मजदूरों को अपने श्रम का उचित लाभ उठाना है तो वहां शक्तिशाली श्रम-संगठनों का होना आवश्यक है।

अमेरिका में श्रम-संगठनों का काम है उन मानवी आदर्शों की रक्षा करना जो श्रमिकों की भोजन, वस्त्र, मनोरंजन और सामाजिक स्थिति सम्बन्धी आवश्यकतायें पूरी करें। अमेरिकी श्रमिकों के वेतन संसार में सबसे ऊंचे हैं। इसका कारण प्रधानतः यही है कि प्राकृतिक साधनस्रोत पूंजी और संचालन-योग्यता से सम्पन्न इस देश में श्रमिकों की संख्या हमेशा कम रही है। अमेरिकी मजदूर इसीलिए अधिक कमाता है क्योंकि अपने मालिक के लिये उसका मूल्य बहुत अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गीत

रचयिता:—श्री कुमार शर्मा 'कवि कहार'

पागल ! अपने को कहता हूँ ।
लेखनी अधर से थिरकाती,
जब अपने शब्दों का समूह !
उज्वल वक्षस्थल पर अथवा—
बन जाता है, जब वाक्य व्यूह !!
मनमें या मृदुल तरंगों के,
वश, हो मैं गाता रहता हूँ !
पागल ! अपने को कहता हूँ !!
'कवि' की कल्पना लिये—
कोई, करने लगता नूतन विचार !
या कभी अद्भुतावस्था से,
कुछ बज उठता है, हृदय तार !
सुख ही में तब हो कर विभोर !—
ठोकर वसुधा की सहता हूँ !
पागल ! अपने को कहता हूँ !!

दुःख के घिर आते हैं दृग में,
जब निपट निठुर काले बादल
हंसती है देख किन्तु, दुनियाँ—
वह निर्मल उष्ण व्यथा का जल !
जब-जब, आशायें सभी त्याग,
बेकल प्रवाह में बहता हूँ !
पागल ! अपने को कहता हूँ !!
स्मृति मधुकरी, मनोहर मृदु—
आ, अस्तु सुनाती नये गीत !
मुझको जब नाना रूप दिखा,
पहना देती है, हार गीत !
कुछ खिन्न ! तथा कुछ हो प्रसन्न !—
पाठक ! सच्चा पथ गहता हूँ !
पागल ! अपने को कहता हूँ !!

---

शेष पृष्ठ ४१ से आगे

इस प्रयत्न में थे कि कांग्रेस में आपसी संघर्ष बढ़े और हम लोग तालियां पीटें। लेकिन आखिरी वक्त में मा० श्री कृष्ण सिंह एवं मा० श्री अनुग्रह नारायण सिंह में समझौता हो गया। गत १५ मार्च को आचार्य बद्रीनाथ वर्मा के प्रस्ताव पर मा० श्री कृष्ण सिंह नेता और मा० श्री अनुग्रह नारायण सिंह उपनेता चुन लिये गये। उक्त अवसर पर दोनों के भाषण बड़े ही मार्मिक शब्दों में हुए जिसमें उनलोगों ने आपस के सहयोग द्वारा कांग्रेस को मजबूत बनाने की बात कही।

## परीक्षा तिथि बढ़ी

हिन्दी विद्यापीठ, देवघर की आगामी परीक्षाएँ ता० १३ मई से प्रारंभ होने वाली थीं, पर कुछ केन्द्रों के आग्रह पर उस तिथि में परिवर्त्तन करना पड़ रहा है। अतः १३ मई के बजाय अब विभिन्न परीक्षाएँ २० मई से प्रारंभ होंगीं।

बुद्धिनाथझा 'कैरव'
रजिस्ट्रार

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नई लेखनी

## लक्ष्य कहां था, किधर चले तुम, यह अपनी मंजिल से पूछो

ले०—श्री सुरेन्द्र नाथ बोयपाई [ रूंगटा हाई स्कूल, चाईबासा ]

आज के छात्र ही हमारे भावी राष्ट्र निर्माता हैं। कल उन्हीं के हाथों में राष्ट्र के शासन की बागडोर आने वाली है। उसके लिए हम छात्रों को बहुत बड़ी तैयार करनी है। बहुत बड़ा अध्यवसाय करना होगा और सतत कठिनाइयों से लड़कर जीवन में आगे बढ़ना होगा।

लेकिन आज बात ठीक इसके विपरीत है। जिधर नजर दौड़ाइये, उधर छात्रों में आप चकल्लस बाजी ही अधिक पायेंगे। आज के छात्रों से पूछ कर देख लीजिये, तो आप को पता चलेगा कि अधिकांश छात्रों के जीवन की कोई निश्चित दिशा ही नहीं है। उनका उद्देश्य अनिश्चित है। उनके जीवन में निश्चतता आवे कहां से? दृढ़ता उनके मिले कहां से?

छात्र जीवन मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन की नींव है। यदि इसमें कमजोरी रही तो सम्पूर्ण जीवन ही दुर्बलताओं से भरा होगा। आज के विद्यार्थी कोर्स की पुस्तकों की कविताओं को याद नहीं रख पाते, क्लास की पुस्तकों और कोर्स की कहानियों को स्मरण नहीं कर पाते, कि तु फिल्मी गाने उन्हें दर्जनों याद हैं और दर्जनों फिल्मों के कथानक भी। इतिहास के अनेक प्रमुख पात्रों के सम्बन्ध में आप प्रश्न करके देख लीजिये। वे कहेंगे, मास्टर साहब ने हमे ठीक से समझाया ही नहीं। लेकिन सुरैया, मधुबाला, कक्कू और रेहाना के सम्बन्ध में बिना किसी के सिखाये वे अपने मास्टर साहब से भी अधिक जानते हैं। इस प्रकार हम तपस्या करके जीवन के निर्माण के समय सिनेमा की तितलियों और बाजार की रंगीनियों के पीछे अपनी शक्ति व्यर्थ नष्ट करके अपने जीवन को विनाश के पथ पर ले जा रहे हैं। रात दिन जब और जहां देखिये वहां दो चार छात्र मिलकर फिल्मी गाने गा रहे हैं। फिल्मी सितारों की आलोचना कर रहे हैं। पुस्तकों के पन्ने सामने खुले हैं लेकिन उनके मानस पटल पर मधुबाला के 'आयेगा आयेगा, आने वाला आयेगा' तथा सुरैया की स्वर लहरी के साथ कक्कू और रेहाना के छूम छननन.....का दृश्य उपस्थित रहता है।

हम एक छात्र के नाते अपने छात्र भाइयों को सावधान करते हैं कि अभी भी समय है, चेत जाइये और जीवन को तपस्या की ओर लगाइये, कठिनाइयों से लड़ने में लगाइये, पढ़िये लिखिये तथा जीवन में आगे बढ़िये। इसके लिए दृढ़ निश्चय कीजिये कि:—

अपनी ओढ़नी पर बिजलियों का गोट मैं लगाऊँगा।
पीस के दुख तकलीफों को काजल मैं बनाऊँगा।
कठिन कठिनाइयों के साथ अपनी बाजी मैं लगाऊँगा।

और, मैं अन्त में यही कहूँगा कि आप का लक्ष्य क्या था और आप कहां जा रहे हैं? इसे अपनी मंजिल से ही पूछ कर देख लीजिये। वही बतलायेगा कि आप अपने लक्ष्य से कितनी दूर हटते जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश--विदेश

## कलकत्ते में अ० भा० कां० की बैठक

गत २२ मार्च को ३ बजे से अखिल भा० कां० कमिटी की बैठक कलकत्ते में हुई। सदस्यों के अलावे लगभग ६० हजार दर्शक भी थे। नेताओं के लिए बहुत बड़ा मंच बना हुआ था और सभापति के लिए उसी मंच पर और भी ऊँचा स्थान। अ० भा० कां० क० के सदस्यों के लिए उसके नीचे सामने दाईं और बांयी ओर कुर्सियां थीं। दर्शकों के लिए जमीन पर ही बैठने का इन्तजाम था। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के लिए उसी घेरे के भीतर अलग पंडाल बनाया गया था।

सुबह ८ बजे झण्डोत्तोलन करते समय सभापति पं० जवाहर लाल नेहरू ने अपने भाषण में--देश की एकता तथा झण्डे की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा—'यूनियन जैक जब इंगलैण्ड पर फहराता है तो मुझे अच्छा लगता है और जब हमारे देश ( कलेजे ) पर फहराता था तो हमारी गुलामी का प्रतीक था। अतः उसे हटाना पड़ा। हमारा अशोकचक्र वाला झण्डा है जिसका आदर सब को करना चाहिए चाहे वह किसी भी राजनतिक संस्था में क्यों न हो। हिन्दुस्तान के कुछ लोग विदेशी झण्डा के चिन्ह को अपना झण्डा बताते हैं। लेकिन यह तो उनकी दिमागी गुलामी का ही द्योतक है।

३ बजे बैठक के समय भी पण्डित जी का भाषण काफी शानदार और प्रभावशाली रहा। उन्होंने कहा—"कुछ लोग चिल्लाते हैं। पर चिल्लाने का किसी पर असर नहीं होता है। सिर्फ कान तक अवाज आती है कि वह चिल्ला रहा है।"

सबसे पहले श्री बी० जी० खेर ने प्रस्ताव पेश किया। और, प्रस्ताव पेश करने की भूमिका में कांग्रेस की विजय पर हिसाब लगाते हुए सम्मेलन के सामने रखा कि किस प्रान्त में कितने प्रतिशत कांग्रेस की विजय हुई है। जब उन्होंने बतलाया कि उत्तर प्रदेश में ६१ प्रतिशत विजय हुई है तो तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल गूँज गया। सिर्फ एक प्रस्ताव पास होकर उस दिन सभा स्थगित हुई।

२३ मार्च को सुबह ८ बजे से बैठक शुरू हुई और १ बजे तक चलती रही और पुनः ३ बजे के उपरान्त सभा बैठी और ५॥ बजे तक चलती रही।

कांग्रेस के विधान में भी संशोधन किया गया। १) रुपये की जगह पर चार आने पैसे प्राइमरी सदस्य का निश्चित किया गया। चुनाव के समय बहुत से नये-लोग कांग्रेस के सम्पर्क में आये हैं। अतः यह निश्चय किया गया है कि उन लोगों को सदस्य बना कर १९५२ में फिर से थाना, जिला, प्रान्त तथा अ० भा० कां० क० का संगठन किया जाय। नेताओं के ठहराने के लिए खास खास लोगों के घरों में इन्तजाम किया गया था।

प्रबन्ध साधारणतया अच्छा था। टिकट १०), २५), तथा ५०) रुपये तक था।

--श्री रामदास साहु,

## भारत में क्रान्तिकारी आविष्कार

पूना के प्रयोग—शाला में कुछ हिन्दुस्तानी वैज्ञानिक प्रयोग कर रहे हैं कि किस तरह कोयले और लकड़ी का खर्च कम किया जाय और सूर्य की राशनी से रसोई पकायी जाय। ५०) रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमत का एक रसोई बनाने का कुकर तैयार किया गया है। इसी प्रकार के कुकर में भोजन तैयार कर पण्डित जवाहर लाल नेहरु को खिलाया भी गया है। कहा जाता है कि इस प्रकार के कुकर बनाने का ख्याल सब से पहले राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के दिमाग में ही आया। जेल में उन्होंने इस पर कुछ प्रयत्न भी किया था और उस समय जो कुकर उन्होंने बनाया था उसे पूना के प्रयोग—शाला में रखा गया है। अगर यह प्रयोग सफल हुआ तो हमारी एक बहुत बड़ी आर्थिक समस्या हल हो जायेगी। आज जिस तरह कोयले और लकड़ी की बर्बादी हो रही है। उससे ऐसा भय लगता है कि ३-४ सौ वर्षों बाद हम लोगों के पास लकड़ी और कोयले की अत्यन्त कमी हो जायेगी।

## रांची में खेल-कूद प्रदर्शन

गत १६ मार्च गुरखा मिलटरी मैदान (डोरण्डा, रांची) में समस्त छोटानागपुर के पुलिस विभाग का एक खेल-कूद प्रदर्शन हुआ। इसमें गुरखा पुलिस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

## मेहतरों के लिए सरकारी सहायता

म्युनिसिपैलिटियों में काम करने वाले मेहतरों के निवास स्थान की तकलीफ को दूर करने के लिए बिहोर म्युनिसिपैल्टी को ३८५००) रु०, सीतामढ़ी म्युनिसिपैल्टी को २७५००) रु०, मधुबनी म्युनिसिपैल्टी को २७५००) रु०, जमालपुर म्युनिसिपैल्टी को १६५००) ससराम म्युनिसिपैल्टी को १६५००) और फारबिस गंज म्युनिसिपैल्टी को ११०००) रु० बिहार सरकार के कल्याण विभाग ने सहायता के रूप में दिया है जिससे मेहतरों के लिये मकान की व्यवस्था की जायगी।

## बिहार का कोयला

मालूम हुआ है कि बिहार में १९५० साल में १ करोड़ ७० लाख टन और १९५१ साल में १ करोड़ ८० लाख टन कोयला खानों से निकाला गया। भारत में सब से अधिक कोयला बिहार में ही मिलता है।

## अतुल कारखाना

१७ मार्च को परनेरा में भारत के सब से बड़े रंग के कारखाने का उद्घाटन पं० जवाहर लाल नेहरु ने किया। इस कारखाने में रंग एवं विभिन्न प्रकार की औषधियों के निर्माण का कार्य बड़े पैमाने पर होगा। इसके निर्माण में लगभग २ करोड़ रु० लगे हैं। इसका नाम 'अतुल कारखाना' रखा गया है। इसमें प्रतिवर्ष ४० लाख पौण्ड एसिड रंग और १० लाख पौण्ड सलफाड्स तैयार होंगे।

## बिहार विधान सभा

बिहार विधान सभा ने अगले ३ महीने के खर्च के लिए बिहार सरकार की १३ करोड़ ३५ लाख १५ हजार रु० की मांग को स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त स्कूल परीक्षा बोर्ड बिल, छोआ कन्ट्रोल बिल आदि मंजूर हुए।

## राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी ने अपनी ओर से राष्ट्रपति के पद लिए वर्त्तमान राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को और उपराष्ट्रपति पद के लिए प्रसिद्ध दार्शनिक डा० राधा कृष्णन को अपना उम्मीदवार बनाने का निश्चय किया है।

## कांग्रेस विरोधी निराश हुए

बिहार विधायिका सभा में कांग्रेस पार्टी के नये नेता के चुनाव को लेकर वातावरण एक दम गर्म हो गया था। प्रान्त के कांग्रेस विरोधी लोग

[ शेष पृष्ठ ३८ के नीचे ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मण्डल की गतिविधि

गत २४ मर्च को निवारण आश्रम में आदिम जाति सेवा मण्डल की सबकमिटी की आवश्यक बैठक श्री नारायण जी के सभापतित्व में हुई। बैठक में पं० योगेन्द्रनाथ तिवारी, श्री भैयाराम मुण्डा, कुमरी मणिका बरला, रामदास साहू, श्री धनुष प्रसाद सिंह, श्री मदनमोहन मिश्र, श्री छेदी साहू, श्री प्यारा केरकेटा, श्री जगत मणि महतो, श्री मदन मोहन महतो, श्री जनक ठाकुर एवं श्री रामचरित्र सिंह उपस्थित थे। बैठक में सर्व सम्मति से निम्नलिखित निर्णय किये गये।

सब कमिटी के सदस्य २५ मार्च ५२ से तथा अन्य सभी कार्यकर्त्ता १ अप्रिल ५२ से अनिवार्य कताई का कार्य प्रारंभ करेंगे।

आगामी २० मई से मण्डल के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को पन्द्रह दिनों के लिए ट्रेनिंग लेनी होगी। व्यय के लिए प्रत्येक कार्यकर्त्ता ५) रु० जमा करेंगे। शेष खर्च संस्था की ओर से दिया जायगा।

बापा स्मारक कोष के सम्बन्ध में विचार कर तै किया गया कि प्रत्येक स्कूल को केन्द्र मानकर वहाँ कम से कम ५० आदमियों से चार चार आने अवश्य एकत्र किये जायँ।

यदि कार्यकर्त्ता अथवा उसकी सन्तान का विवाह हो तो निमंत्रण देने पर प्रत्येक कार्यकर्त्ता उसे १) रु० दे यदि कम से कम ५ वर्ष कार्य करके कोई कार्यकर्त्ता मर जाय तो उसकी विधवा को प्रत्येक कार्यकर्त्ता ५) रु० की सहायता दें।

मण्डल के सभी कार्यकर्त्ता 'ग्राम-निर्माण' के ग्राहक बन जायँ।

## कार्यकर्त्ता शिक्षण शिविर

गत २४ मार्च को निवारण आश्रम में आदिम जाति सेवा मण्डल के की सबकमिटी की आवश्यक बैठक में सर्वसम्मति से यह तै किया गया कि मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं को २० मई से ५ जून तक शिक्षण शिविर में रख कर ट्रेनिंग दी जाय। सिमडेगा, कोरी, राँची कालेज छात्रावास, खूँटी, चाईबासा, लातेहार, पिटरवार, गोला और लखनपुर छात्रावास में २० मई से शिक्षण शिविर आरंभ होगा। मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं को आदेश दिया गया है कि वे १९ मई की सन्ध्या समय ही अपने अपने निकटवर्त्ती छात्रावास में उपस्थित हो जायँ। शिविर के १५ दिनों के भोजनादि खर्च के लिये प्रत्येक कार्यकर्त्ता को ५) रुपये देने होंगे। शेष खर्च संस्था की ओर से दिया जायेगा। मण्डल के कार्य में प्रगति लाने के लिए तथा कार्यकर्त्ताओं की योग्यता बढ़ाने के लिए ही यह आवश्यक समझा गया है। मण्डल ने निर्णय किया है कि आगे से वे ही कार्यकर्त्ता मण्डल के कार्यकर्त्ता समझे जायँ जो शिविर में १५ दिनों तक शिविर में रह कर शिक्षण प्राप्त कर लेंगे।

## सिमडेगा में भारतीय वेलफेयर कमिश्नर

विगत २४ फरवरी गुरुवार को अखिल भारतीय आदिम जाति सेवक संघ के मंत्री एवं भारत सरकार के आदिम जातियों तथा हरिजनों के कमिश्नर श्रीयुत् लक्ष्मीदास श्रीकान्त जी का शुभागमन सिमडेगा सबडिविजन में हुआ था। उनके स्वागत में सिमडेगा तथा कोलेबिरा में आम सभा तथा मंडल के प्राइमरी पाठशालाओं के विद्यार्थियों के पारितोषिक वितरण का आयोजन किया गया।

श्री माधव श्रीहरि अणे छात्रावास के मृत्तिका-भित्ति आवेष्टित स्वच्छ एवं हरे भरे पपीते, अमरूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तथा नीबू के पौधों के छींटों से सुसज्जित आहाते में ही पण्डाल का आयोजन हुआ था। आम्र-तोरण रंगीन कागज एवं नेताओं के चित्रों से सुसज्जित पंडाल बड़ा सुन्दर दीख पड़ता था। प्रायः ४०० बालक तथा बालिकाएं सूदूर देहात से अपने शिक्षकों के साथ पैदल चल कर आये थे। मंडल के कार्य-कर्त्ताओं के अतिरिक्त खड़िया महासभा, गोड़ महासभा, बिंझिया महासभा, खंडैत पाईक जाति तथा कवर जाति के प्रतिनिधि भी श्रीकान्त जी के स्वागतार्थ उपस्थित थे। सभा के आरंभ में श्री रमापति शास्त्री ने पूज्य बापू की तस्वीर की आरती उतारी। तदनंतर स्वागत गान के साथ हाई कूल के बच्चों ने उन्हें माला पहनाई। मंडल के कार्यकर्त्ता श्री मदन मोहन मिश्र ने अबतक मंडल द्वारा संचालित रचनात्मक तथा सामाजिक कार्यों की ओर संकेत करते हुए उनका हार्दिक अभिनंदन किया। विभिन्न जातीय संगठनों ने मान-पत्र के साथ पुष्पहार प्रदान किये।

सर्वप्रथम आदिम जाति सेवा मंडल के मंत्री श्री नारायण जी ने कहा कि भारत सरकार निष्पक्ष रूप से आदिवासियों की सेवा करना चाहती है। इसके पीछे किसी प्रकार का राजनैतिक इरादा नहीं है। झारखंड पार्टी वाले यह गलत प्रचार करते हैं कि सरकार आदिवासियों की भलाई 'वोट' लेने के लिए कर रही है। आप जानते हैं कि इस सबडिविजन में 'वोट' में कांग्रेस हार गई है। लेकिन फिर भी कांग्रेस सरकार आपकी भलाई करने के इरादे को नहीं छोड़ना चाहती। अतएव, भारत सरकार ने अपने सब से बड़े अफसर को आपलोगों की स्थिति को अपनी आँखों देखने के लिए भेजा है। सच्चे सेवा-भाव का यह जीता जागता प्रमाण नहीं तो और क्या है?

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच श्री लक्ष्मी दास श्री कान्त ने कहा कि भारत के उन हिन्दुओं को मैं हिन्दू नहीं समझता जो पहाड़ों और डूंगरों में निवास करने वाले इन लाखों लाख आदिवासियों की सेवा करने के बजाय उनके रक्त का शोषण कर धन की अपार राशि एकत्र कर रखी है; तथा जगत के भय से पार पाने की आशा लिए बनारस और प्रयाग में पितृ पिण्ड में रुपये पानी की तरह बहाते है। अरे मूर्खो! यदि सचमुच धर्म का परिचय प्राप्त करना चाहते हो तथा पुण्य कमाना चाहते हो तो इन डूंगरों में बसे प्यारे वनवासियों की सेवा कर और उन्हें पादरियों के चंगुल से बचाओ।" पादरियों के विषय में उन्होंने कहा—"निःसंदेह ये पादरी यूरोप अमेरिकन सरमायादारों के एजेन्ट हैं तथा करोड़ों की संपत्ति लेकर आदिवासियों को विधर्मी बना रहे हैं। ये पादरी इतने अमीर हैं कि ये भारत सरकार की उपेक्षा आसानी से कर लेते हैं और मेरे उन पत्रों का उत्तर तक नहीं देते जिनमें यह पूछता हूं कि प्रति वर्ष किन किन कारणों से कितने व्यक्ति इसाई हुए। निःसंदेह बाईबुल या धर्म पढ़ा कर ये उन्हें इसाई नहीं बनाते क्योंकि धर्म बड़ा गहन विषय है और भोले भाले तथा निरक्षर आदिवासी उसे समझे बिना ही गरीबी और परिस्थियों से विवश होकर इन पादरियों के चंगुल में पड़ जाते हैं जो उन्हें सिपरमिंट की टिकिया खिला खिला कर पितृ धर्म से विमुख करते हैं। अंत में उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि भारत सरकार आदिवासियों की सेवा में कोई कोर कसर उठा नहीं रखेगी और हमारे वे भाई और बहन जो आज भटक गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं, धीरे धीरे हमारे बीच आ जायंगे।"

श्री गंगाविशुन जी ने श्रीकान्त जी का ध्यान सदान जाति की गिरी हुई दशा की ओर दिलाया। तदनंतर पारितोषिक बांटे गये। स्थानीय हाई स्कूल तथा बुनियादी स्कूल के छात्रों ने प्रशंसनीय सांस्कृतिक प्रदर्शन किये।

श्रीकान्त जी उसी दिन दो बजे कोलेबिरा पहुंचे। वहां उनका स्वागत कांग्रेस के सभापति तथा श्री करलुस केरकेटा के अतिरिक्त रौतिया तथा भोक्ता लोगों ने दिल खोल कर किया। प्रायः २०० विद्यार्थी और शिक्षक भी उपस्थित थे। श्री नारायण जी ने विगत चुनाव में अवसरवादियों के ताण्डव की की ओर संकेत करते हुए जनता के मानपत्रों में व्यक्त मांगों का उत्तर इन शब्दों में दिया "जिस प्रकार दही के जमने के लिये दूध के नहीं हिलने और स्थिर रहने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी भी जाति या समाज की उन्नति के लिये स्थिरता एवं दृढ़ता की आवश्यकता होती है। वक्त आने पर गद्दार लोग हमारी एकता को हिला देते हैं और हम उनकी भोली भोली बातों में आजाते हैं। हमारी अवनति का प्रधान कारण यही है। अगर हम इस बात पर ध्यान देकर चलें तो हमारी उन्नति अवश्य होगी।"

श्रीयुत् श्रीकान्त जी ने यहां भी अपने तथा भारत सरकार के पूर्ण सहयोग का आश्वासन लोगों को दिया। तदनंतर पारितोषिक वितरण हुआ।

दोनों स्थानों में ५००) रु० मूल्य के पारितोषिक छात्रों को दिये गये श्रीकान्त जी के स्वागत में दूर दूर से लोग बाजा गाजा लेकर अतीव हर्ष के साथ आये थे।

---

# अधिकारी ध्यान दें

सेवा में —

संपादक जी,

"ग्राम निर्माण", रांची

महाशय,

गुमला में अभी से ही खाने वालों को चावल प्राप्त करने में दिक्कत होने लगी है। दाम भी बढ़ता जा रहा है। २५) पचीस रुपये मन से कम में तो चावल मिलता ही नहीं है। इससे भी अधिक मंहगा खरीदना पड़ता है। मध्यम वर्गीय तथा श्रमिक लोगों का कष्ट बढ़ रहा है। अगर अभी से इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो आगे चल कर स्थिति के भयंकर होने का भय है। मैं आप के प्रतिष्ठित पत्र के द्वारा अधिकारियों का ध्यान इस ओर खींचना चाहता हूँ। क्या इसे छाप कर आप हमें कृतार्थ करेंगे?

आप का,

छेदी साहु

गुमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ग्राम-निर्माण

में

विज्ञापन देकर व्यापार में लाभ उठावें

## विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| कवर का चौथा पृष्ठ | १००) |
| कवर का तीसरा पृष्ठ | ७५) |
| क्रोड़ पत्र प्रारंभ में पूरा | ६०) |
| क्रोड़ पत्र अंत में पूरा पृष्ठ | ५०) |

भीतर लेख के साथ कालम का प्रति इंच ३॥)

वर्ष भर के लिए विज्ञापन देने वालों को सुविधा दी जायेगी।

—व्यवस्थापक

## *मासिक धर्म रुकावट*

नारी संजीवनी दवा के सेवन से बिना किसी तकलीफ या खतरे के बन्द मासिकधर्म को सहज में खोल कर चालू कर देता है। इस औषधि के व्यवहार से कमर, पेडू, पेट का दर्द, सिर में चक्कर आना आदि दूर होकर शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। यह गर्भवती को न दी जानी चाहिए क्योंकि गर्भ गिर जायगा। मू० ५)। अधिक महीने वाले रोगी के लिए "स्पेशल पावर" की दवा मंगानी चाहिए। किमत ८॥)।

किसी भी दवा को बेफायदा साबित करने पर मूल्य वापस।

* पुत्रदा (शर्तिया पुत्र उत्पन्न करने की दवा) *

साधारण स्त्रियों को "पुत्रदा" से सुपुत्र होवेगा ही, परन्तु जो बाँझ अथवा जिन्हें अरसे से रजस्वला होना बन्द हो गया हो उनको भी शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। हजारों ने 'पुत्रदा' सेवन कर पुत्र पाया है। आज तक किसी को भी हताश नहीं होना पड़ा। यदि आप को पुत्र की इच्छा हो तो एकबार अवश्य परीक्षा कर देखें मू० ५)।

हिन्द कल्याण औषधालय म० ४०६
पो० — जसीडीह (संथाल परगना)


# श्री जयपाल सिंह के नाम खुली चिट्ठी

राँची जिला में गैर ईसाई आदिवासी की जनसंख्या ६ लाख है और ईसाई आदिवासियों की संख्या सिर्फ २,७५००० है।

राँची से खड़े एक आदिवासी उम्मीदवार को हराने में गैर-ईसाई आदिवासियों का प्रमुख हाथ रहा था। हाल के चुनाव में झारखंड पार्टी की जीत का एकमात्र कारण भी यही है। झारखण्ड पार्टी पूर्णरूप से ईसाई आदिवासियों के हाथ में है। चुनाव के वक्त गैर-ईसाई आदिवासी इस धोखेबाजी से बिलकुल अनभिज्ञ थे। लेकिन अब वे अच्छी तरह समझ गये हैं कि झारखण्ड पार्टी ने उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया। उपरोक्त कारण से गैर-ईसाई आदिवासी में असन्तोष की लहर दौड़ रही है और निःसंदेह इसकी प्रतिक्रिया भी होगी। राँची जिला के गैर ईसाई आदिवासी के साथ आपने जो चाल खेली है उससे वे पूरी तरह वाकिफ हो चुके हैं।

क्या मैं जान सकता हूँ कि राँची जिला में चुनाव के वक्त ईसाई आदिवासियों में से १२ उम्मीदवार और गैर-ईसाई आदिवासियों में से सिर्फ २ ही उम्मीदवार क्यों खड़े किये गये?

—ठेबले उराँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




## खाद्य संकट राष्ट्र को कमजोरी है

अधिक सागसब्जी उपजाकर इसे दूर करना आपका परम कर्त्तव्य और राष्ट्र की सेवा है। किन्तु अच्छी फसल के लिए अच्छे बीज अत्यन्त आवश्यक हैं।

चुटिया सीड स्टोर्स

इसीलिए खुला है ताकि आप सुविधा के साथ अच्छे और आवश्यक बीज पाकर अपनी तरक्की करें।

यदि आप उत्तम बीज और गाछी चाहते हैं तो हमारी दूकान से लें अथवा पार्सल से मंगावें।

**—चुटिया सीड स्टोर्स—**

राम चन्द्र जी के मन्दिर के पास

**चुटिया-मेन रोड, राँची।**

---

अच्छे खेलाड़ी ही अच्छा सामान चाहते हैं

खेल के सभी सामान के लिए आप

## शेली स्पोर्ट्स, राँची में पधारें

( रतन सिनेमा के सामने )

सस्ते दाम और अच्छी चीजों के द्वारा ग्राहकों को खुश करना हमारी विशेषता है।

---

## यदि आप नहीं जानते हैं

तो

## नोट कर लें

हमारे यहाँ हर किस्म के नक्शे, ग्लोब, चार्ट, एजुकेशनल चार्ट और स्कूली किताबें सस्ते दामों पर मिलती हैं।

आइडियल बुक स्टोर्स

मेन रोड, राँची।

---

दुनियाँ की बहारें लीजिये।

## सुप्रसिद्ध निर्माताओं के रेडियो

( बिजली एवं बैटरी )

तथा

विद्युत सामग्रियों के लिए पधारें

## पिक्चर कॉटेज, राँची

निम्नतम मूल्य और गारन्टी भी

साथ ही

पत्र व्यवहार का पता:—

पोस्ट बक्स न० ११, राँची

---

क्या आप शिक्षक हैं ?

यदि हाँ, तो एक मात्र शिक्षकों की पूँजी से निर्मित

## राँची जिला शिक्षक सहयोग भण्डार

को याद रखिए, और कृपया अधिक से अधिक इसके हिस्से खरीदकर विशेष लाभ उठाइये।

निवेदक—

व्यवस्थापक

जिला शिक्षक सहयोग भण्डार राँची

---

**पपुलर बुक डिपो** मेन रोड, राँची।

हिन्दी अंग्रेजी, गुरुमुखी, उर्दू आदि भाषाओं की पुस्तकें, मनिहारी के सामान तथा चित्र बांधने के अलावे हम आर्डर के माल भी सप्लाई करते हैं।


सुदर्शन प्रेस, राँची द्वारा मुद्रित तथा आदिम जाति सेवा मण्डल द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14-6-42

# जुलाई १९५२

6२
३१२

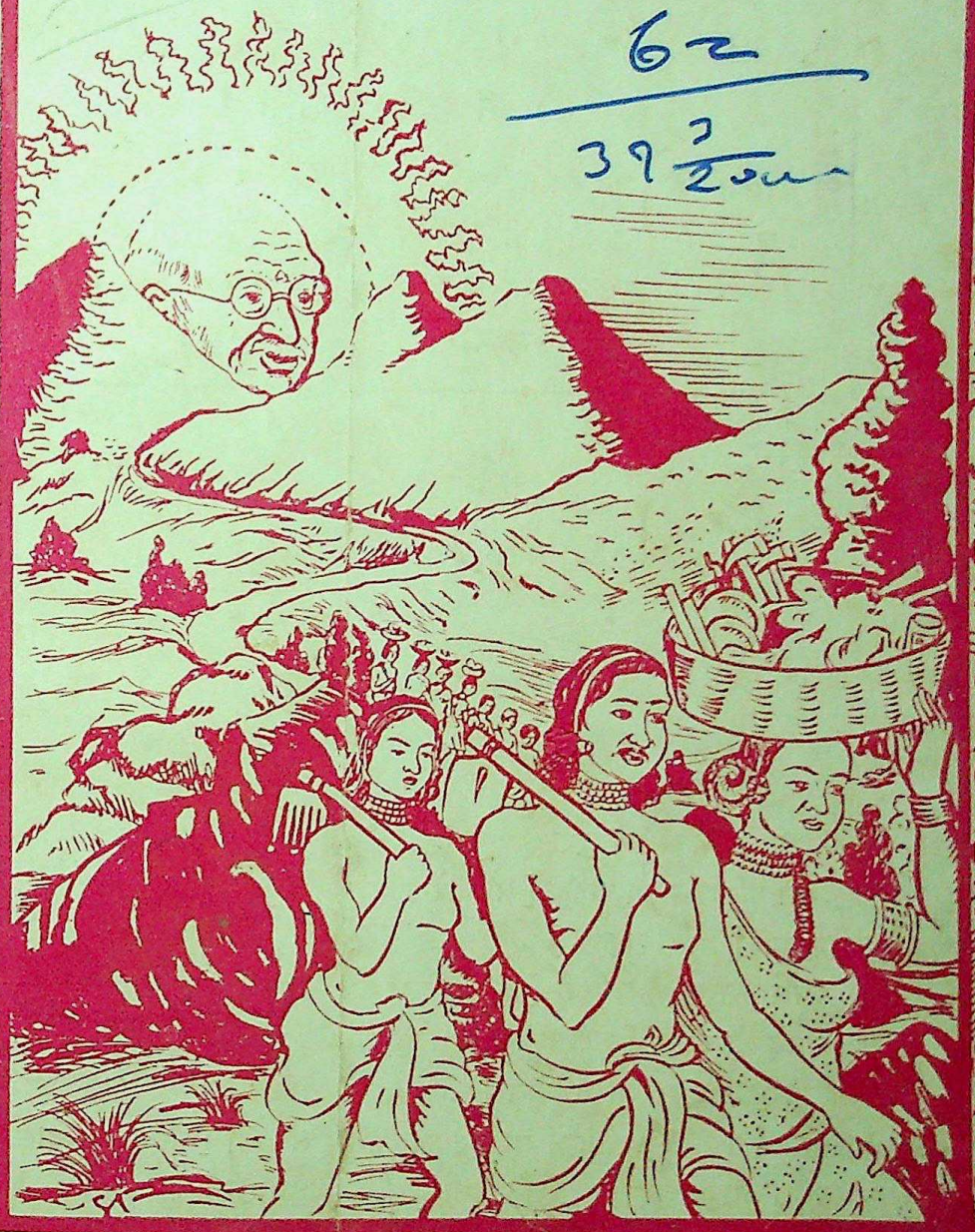

सम्पादक
राम चरित्र सिंह

स० सम्पादक
आदित्य मित्र, 'संताली'

वार्षिक चन्दा ... ६)
अर्द्ध वार्षिक ... ३)
एक प्रति ... ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ियाँ ★ टिकाऊ ★ सुन्दर सूटकेशों के लिये याद करें—

एम० ए० फैजी, बिहार ट्रंक फैक्टरी

हिन्दपीढी, रांची

हमारे कारखाने में पुराने बक्सों, सूटकेशों आदि की मरम्मत बहुत खूबी के साथ होशियार कारीगारों द्वारा की जाती है। रंगाई का काम भी बहुत अच्छा होता है।
पुराने बक्सों को हम बिलकुल नया बना देते हैं।
एक बार परीक्षा कर देखें।

# विषय-सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | बिहार में शिक्षा की दुर्दशा | ... | १ |
| २ | मिल बहिष्कार का प्रस्ताव [ श्री धीरेन्द्र मजूमदार ] | ... | ५ |
| ३ | कहानी [ श्री राधाकृष्ण ] | ... | ८ |
| ४ | हमारी शिक्षा की समस्या [ श्री जगदीश त्रिगुणायत ] | ... | १७ |
| ५ | चमड़े का उद्योग [ श्री अखौरी नारायण शेखर सिन्हा ] | ... | २२ |
| ६ | अमर शहीद बिरसा भगवान [ श्री राम चरित्र सिंह ] | ... | २५ |
| ७ | ग्रामोद्योग को बढ़ावा देना सरकार का परम कर्त्तव्य है [ श्री दामोदरदास मुंदड़ा ] | | ३१ |
| ८ | छोटानागपुर अलग नहीं हो सकता [ माननीय श्री कृष्ण वल्लभ सहाय ] | | ३३ |
| ९ | नये पथ पर [ श्री रामकृष्ण प्रसाद "उन्मन" ] | ... | ३६ |
| १० | नयी लेखनी क्रिकेट [ श्री अश्विनी कुमार सिन्हा ] | ... | ४० |
| ११ | देश-विदेश | ... | ४१ |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत

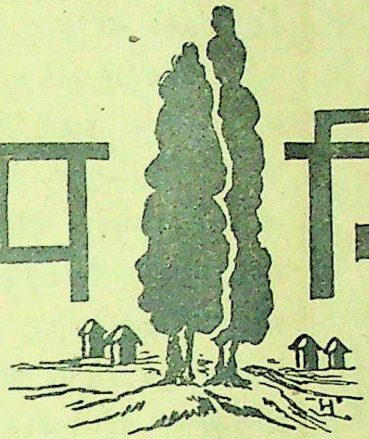

# ग्राम निर्माण

वर्ष २ | रांची, जुलाई | अंक ७

## ★ बिहार में शिक्षा की दुर्दशा ★

हमारे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि हमारे शिक्षा मंत्री आजीवन शिक्षक रहे हैं और एक उच्चकोटि के शिक्षक रहते हुए भी गरीबी से उन्हें ऐसा भयंकर मुकाबला करना पड़ा है जिसका शानी कम मिलेगा। फिर भी प्रान्त में सरकार की शिक्षा नीति से लोगों में बहुत असन्तोष फैला हुआ है और चारों ओर शिक्षा विभाग की कटु आलोचना ही आलोचना सुनने में आती है। लोगों को कालेज की शिक्षा से असन्तोष है, माध्यमिक शिक्षा से असन्तोष है और प्राइमरी शिक्षा की तो लोग धज्जियां ही उड़ाते हैं। शिक्षकों को अपने वेतन से असन्तोष है, बच्चों को पढ़ाई से असन्तोष है तथा अभिभावक सारी शिक्षा पद्धति से तबाह और बरबाद हो रहे हैं। एक तरफ जहाँ स्कूल काफी बढ़ते जा रहे हैं दूसरी तरफ वहाँ क्लास में पढ़ाई बिल्कुल नहीं होती। इस कारण घर पर स्कूल फी से तिगुना-चौगुना पैसा देकर लोगों को शिक्षक रखना पड़ता है। पुस्तक खरीदना तो बड़े-बड़े सेठों के लिए दिक्कत की बात होती है। फिर मध्यम वर्ग के लोगों का क्या पूछना? जिस प्रकार लड़की की शादी में शुभ अवसर होते हुए भी लोग तिलक और दहेज से घबड़ाते हैं ठीक उसी प्रकार आज बच्चों के पास करने पर नयी पुस्तकें खरीदने से उन्हें घबड़ाहट होती है। सबसे मुश्किल तो यह है कि न समय पर पुस्तकों के नाम मिलते हैं और यदि नाम मिला भी तो दूकान में पुस्तकें नदारद! इस प्रकार चारों ओर गड़बड़ी ही गड़बड़ी नजर आती है। इन सभी दिक्कतों को दूर करने का एकमात्र उपाय बेसिक शिक्षा-पद्धति को समझा जाता है। पर, आज उसकी भी कड़ी आलोचना हो रही है। मालूम होता है, इस पर लोगों का विश्वास ही नहीं। इस तरह सारे बिहार प्रान्त में इस समय शिक्षा की बड़ी बुरी हालत है और इसका बहुत बुरा असर हमारे बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर पड़ रहा है जिसका जिक्र प्रामाणिक रूप से पबलिक सर्विस कमीशन ने अपने हाल के प्रकाशित रिपोर्ट में किया है। अब हमें देखना है कि वास्तविकता क्या है ?

आलोचकों की ओर से शिक्षा-विभाग के खिलाफ निम्नलिखित बातें खास तरह से कही जाती हैं। सर्व प्रथम तो यह बात पेश की जाती है कि शिक्षकों का वेतन अत्यन्त कम है। इस कारण शिक्षक अपने काम में दिल नहीं लगाते हैं। दूसरी बात कही जाती है कि शिक्षा के सम्बन्ध में सरकार की नीति स्पष्ट नहीं है। यह समझ में नहीं आता कि सरकार किस प्रकार की शिक्षा चाहती है ? एक ओर तो वह बेसिक स्कूल खोलती है। दूसरी ओर वह जिला स्कूलों को चलाती है। तीसरी ओर उन पुराने ढंग के स्कूलों को भी प्रोत्साहन दिया जाता है जिन्हें बृटिश राज में किरानी पैदा करने के लिए खोला गया था और जहाँ शिक्षकों को इतने पैसे भी नहीं मिलते जिससे वे अपना भरण-पोषण कर सकें। तीसरी बात यह कही जाती है कि सरकार कोर्स में जो परिवर्त्तन करने जा रही है वह भी बालकों की शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक है। और बच्चे इस नये सरकारी ऐलान के अनुसार बरबाद होकर ही रहेंगे। इस बार के विधान सभा तथा विधान परिषद की बैठकों में सदस्यों ने सरकार की कटु आलोचना की। मा० आचार्य बदरी नाथ वर्मा ने उत्तर देते हुए आलोचकों के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तो दिया और उन्होंने यह दिखलाने की भी चेष्टा की कि आलोचकों की बातों में कोई सार नहीं। सरकार की नीति स्पष्ट, सही और विद्यार्थियों के हित में है। पर, उनके उत्तर से लोगों को सन्तोष न हो सका। अब हम अपनी दृष्टि से देखें कि वास्तविकता क्या है ? इसमें सन्देह नहीं कि शिक्षकों का ध्यान आज बच्चों की उन्नति पर नहीं है और यह भी मानने योग्य नहीं है कि वेतन की कमी के कारण ही शिक्षक ऐसा करते हैं। क्योंकि जिला-स्कूलों में अन्य स्कूलों के शिक्षकों की अपेक्षा वेतन अधिक है। फिर भी जिला स्कूलों में भी बच्चों पर शिक्षकों का कोई विशेष ध्यान नहीं हैं। इसी प्रकार स्टेट सबसिडाइज्ड स्कूलों में शिक्षकों का वेतन अपेक्षाकृत अच्छा है। यहाँ भी बच्चों की वही दुर्दशा है। इसमें सन्देह नहीं कि जिला स्कूलों का परीक्षा फल अच्छा होता है। पर इसके कारण वहाँ के शिक्षक नहीं, इसके कारण तो अभिभावक हैं। जिला स्कूलों में अधिकतर ऐसे ही लोगों के लड़के पढ़ते हैं जो अपने सारे खर्च को काटकर भी बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं। जिला स्कूलों का उत्तम परीक्षा फल अभिभावकों की इसी मनोवृत्ति का फल है। इस कारण यह कहना कि शिक्षक कम वेतन के कारण ही काम में ढिलाई करते हैं, यह युक्ति संगत नहीं। बात यह है कि स्वराज्य के बाद स्कूल खोलने में भी लोगों ने स्वराज्य हासिल कर लिया है। जगह-जगह पर स्कूल खोल दिये हैं। न शिक्षकों की परवा की गयी, न विद्यार्थियों की और न पुस्तकों की ही। जैसे-तैसे स्कूल खुल गये। शिक्षकों की मांग बढ़ गयी। ट्रेण्ड को कौन पूछे, अट्रेण्ड शिक्षक भी नहीं मिलने लगे। फिर भी स्कूल तो चलना ही है। इस कारण कहीं-कहीं तो केवल मैट्रिक पास व्यक्ति प्रस्तावित हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक का कार्य करते हैं। प्रजातंत्र का युग है। पाठशालाओं की सार्वजनिक मांग है। पाठशालाएँ खोलनी ही चाहिये। इस कारण शिक्षाविभाग के सारे नियमों को ताख पर रख कर पाठशालाएँ खोल दी गयी हैं। अब शिक्षकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की माँग बढ़ गयी है। अब परिस्थिति ऐसी हो गयी है कि बात-बात पर शिक्षक एक स्कूल को छोड़कर दूसरे स्कूल में चल देते हैं। शिक्षकों की ढिलाई का सबसे बड़ा कारण यही है।

माध्यमिक पाठशालाओं के शिक्षकों की ओर से दलील दी जाती है कि सारी गड़बड़ियों का कारण शिक्षकों के वेतन में कमी ही है। सरकार की ओर से जवाब दिया जाता है कि प्राइवेट स्कूलों की जिम्मेवारी सरकार कैसे लेगी? पाठशालाएँ स्वतंत्र रूप से खोल दी गयी हैं। स्थानीय उत्साही लोगों ने उन्हें खोला है और वे ही लोग उन्हें चलाते भी हैं। सरकार इन संचालकों को आर्थिक सहायता देती है। शिक्षकों को वे जितना अधिक चाहें वेतन दे सकते हैं। अधिक से अधिक वेतन देने में उन्हें कोई बाधा नहीं देता। इसलिये शिक्षकों को अपने संचालकों से भिड़ना चाहिये न कि सरकार से। शिक्षकों के वेतन की जिम्मेवारी सरकार के ऊपर हो और स्कूलों के संचालन की जिम्मेवारी स्थानीय लोगों पर हो यह बात चल नहीं सकती। अगर वेतन की जिम्मेवारी सरकार के ऊपर रहेगी तो बहाली और संचालन की जिम्मेवारी भी सरकार की ही होगी। बिहार सरकार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह खर्च की सारी जिम्मेवारी अपने से ले ले। फलस्वरूप विचित्र विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है। और इस परिस्थिति से निकलना भी निकट भविष्य में असंभव सा प्रतीत होता है। फिर भी हमें हताश होना नहीं है और समाज में हमें ऐसी व्यवस्था करनी ही होगी जिससे हमारा शिक्षक समुदाय सन्तुष्ट होकर अपना कार्य करे। हमारे ख्याल में इसका एक ही निपटारा हो सकता है और वह यह है कि हिन्दुस्तान में विदेशों की तरह शिक्षा-संस्थाएँ बच्चों की पढ़ाई और उनकी उन्नति की पूरी जिम्मेवारी ले लें। बच्चों की पढ़ाई स्कूलों में इस प्रकार हो कि घर पर फिर उनको पढ़ाई के बोझ से ही दबने को बाध्य न किया जाय। आठ-दस घण्टे बच्चे स्कूल में रहें। वहीं वे स्वाध्याय करें। शिक्षक इसमें उनकी सहायता करें। वहीं वे खेलें, कूदें और फिर वहीं उनकी श्रेणी में पढ़ाई हो। इस तरह दिन का सारा काम खतम करके बच्चे घर लौटें। अगर इस प्रकार की जिम्मेवारी बच्चों के शिक्षक ले लें तो अभिभावकों को आज से दुगुना शुल्क देने में तनिक भी कठिनाई न होगी। कुछ थोड़े से लोगों पर इसका बोझ अधिक अवश्य पड़ेगा किन्तु अधिकांश अभिभावक शिक्षा के लिये आज से शुल्क का दुगुना-तिगुना पैसा देकर बच्चों को पढ़ाते ही हैं। शिक्षकों के सहयोग और कठिनाई के कारण अगर यह परिस्थिति दूर हो गयी तो दुगुना पैसा देना अभिभावकों को अखरेगा नहीं और इसी पैसे से तथा थोड़ा और सरकारी सहायता बढ़ाकर शिक्षकों का वेतन तो दुगुना किया ही जा सकता है। इससे शिक्षकों में सन्तोष भी फैलेगा तथा यदि वे अच्छी तरह काम करेंगे तो लोगों का स्टैण्डर्ड भी बढ़ेगा। वर्त्तमान परिस्थिति में कोई दूसरा रास्ता नजर नहीं आता।

अब बेसिक-शिक्षा तथा पुरानी पद्धति की पाठशालाओं की स्थापना के सम्बन्ध में हम विचार करेंगे। यहाँ सरकार की नीति बेसिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने की है, यह स्पष्ट है। पर पुरानी पद्धति की पाठशालाएँ भी धरल्ले से खुलती जा रही हैं और सरकारी प्रोत्साहन भी उन्हें मिलता जा रहा है, यह बात ठीक-ठीक समझ में नहीं आती। अगर बेसिक शिक्षा ही मान्य है तो फिर पुरानी पद्धति की पाठशालाओं को नये सिरे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खोलने की गुंजाइश कहाँ? इस तरह की नयी पाठशालाएं खुलनी ही नहीं चाहिये। यदि कोई खोले भी तो उनको सरकारी मान्यता नहीं मिलनी चाहिये। कोशिश यह होनी चाहिये कि पुरानी पाठशालाएँ बेसिक शालाओं में परिवर्तित कर दी जायँ। जिला स्कूल तो बिलकुल सरकारी स्कूल हैं। उनको बेसिक शालाओं में परिवर्तित करने में सरकार को क्या कठिनाई होगी, यह समझ में नहीं आता। अब तो काफी ट्रेण्ड शिक्षक भी हो गये हैं। इस लिए सरकार का ध्यान इस ओर शीघ्र जाना चाहिये। और, जिला स्कूलों को बेसिक स्कूलों में परिवर्तित करने का प्रयास शीघ्र जारी हो जाना चाहिये। जिला स्कूलों के शिक्षक यदि इस काम के लायक न हों तो उन्हें या तो सरकार किसी दफ्तर में काम दे दे या जो उम्र के कारण इस कार्य के लायक भी न हों, उन्हें पेन्शन दे दे।

अब जरा हम पाठ्यक्रम के संबन्ध में बिचार करें। सरकार ने एक नई नीति की घोषणा की है। इसके अनुसार प्रत्येक छात्र को नौ प्रश्नपत्रों की परीक्षा में शामील होना अनिवार्य होगा। इनमें ६ प्रश्नपत्र तो उन विषयों के होंगे जो अनिवार्य हैं और ३ प्रश्नपत्र उन विषयों के होंगे जिनके चुनने में लड़कों को स्वाधीनता है। विषयों के आठ समूह बनाये गये हैं इनमें किसी एक को विद्यार्थियों को चुनना है और इसी एक समूह से ३ प्रश्नपत्र रहेंगे जिनमें परीक्षा देनी होगी।

अब हम चार अनिवार्य विषयों को देखें। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, नागरिक शास्त्र और साधारण विज्ञान का ज्ञान है। अब यहाँ पर यह अजीब सी बात नजर आती है कि लड़का नागरिक शास्त्र तो जानेगा लेकिन अपने देश का इतिहास नहीं। पता नहीं, किस शिक्षाशास्त्री के मस्तिष्क की यह उपज है? नागरिक-शास्त्र को जानने की इच्छा रखने वाला छात्र अगर इतिहास-भूगोल नहीं जानेगा तो वह नागरिक शास्त्र कैसे जान सकता है और जानकर वह करेगा भी क्या? प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अपने देश का इतिहास और भूगोल जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। इसका ज्ञान अवश्य होना चाहिये। शिक्षक इतिहास भूगोल के ज्ञान के साथ बच्चों को नागरिक शास्त्र का भी ज्ञान दिलावें। बच्चों के इसी ज्ञान से शिक्षा-विभाग को सन्तोष करना चाहिये। इसलिये नागरिक शास्त्र का प्रश्नपत्र न रखकर प्रश्नपत्र तो इतिहास और भूगोल का होना चाहिये। और उसी में एक-दो प्रश्न नागरिक-शास्त्र के रहने चाहिये।

इसी प्रकार विज्ञान के ज्ञान का सम्बन्ध हिसाब से है। हिसाब जाने बिना विज्ञान का ज्ञान लड़कों का ठीक हो नहीं सकता। हिसाब तो प्राथमिक चीज है। विज्ञान के सिद्धान्त हिसाब के ही सिद्धान्तों पर अवलंबित हैं। हिसाब जाने बिना विज्ञान का विद्यार्थी एक पग भी आगे बढ़ नहीं सकता। इस कारण हिसाब तो अनिवार्य विषय होना चाहिये और उसी के साथ-साथ साधारण विज्ञान की भी पढ़ाई होनी चाहिये। इस तरह आधुनिक भारतीय साहित्य, अंग्रेजी, इतिहास भूगोल और हिसाब की पढ़ाई अनिवार्य रूप से होनी चाहिये। और नागरिक शास्त्र और विज्ञान की पढ़ाई उनके साथ-साथ चलनी चाहिये। इसकी पढ़ाई के बाद जो आठ समूह रखे गये हैं उनमें से किसी एक को लेना उचित ही है लेकिन उनमें ३ प्रश्नपत्र न होकर दो ही होने चाहिये और समूह 'ए' में से इतिहास और भूगोल को उठा देना

( शेष पृष्ठ ७ में )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ★ मिल बहिष्कार का प्रस्ताव ★

—श्री धीरेन्द्र मजूमदार
[ अध्यक्ष, अखिल भारतीय चरखा संघ, सेवाग्राम ]

इस बार सर्वोदय सम्मेलन कई दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा। सम्मेलन के प्रति जनता का इतना अधिक आकर्षण इससे पहले नहीं रहा है। सम्मेलन में सभी दल और सभी श्रेणी के लोग आये और चर्चा में हिस्सा लिया यह भी एक महत्त्व की बात रही। सर्व सेवासंघ ने भी विशेष रूप से प्रस्ताव द्वारा देश की जनता को निश्चित दिशा में क्रांतिकारी कदम उठाने के लिए आवाहन किया है। भूमिदान की यज्ञ की आवश्यकता के में कोई शंका नहीं रह गयी। लेकिन संघ ने सम्बन्ध अपने प्रस्ताव द्वारा कम-से-कम अन्न और वस्त्र के लिए मिल की बनी चीजों का बहिष्कार भूमिदान यज्ञके साथ जो जोड़ दिया गया है वह महत्त्वपूर्ण है। इस सिलसिले में संघ के प्रस्ताव का निम्नलिखित हिस्सा उद्धृत करना जरूरी है—"सर्वोदय समाज के निर्माण की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि जीवन के हर क्षेत्र में आर्थिक समानता की ओर गति हो और सब को पूरा काम मिले। हमारा विश्वास है कि यह विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के द्वारा ही हो सकता हैं। इस लिए सारे देश में विकेन्द्रित उद्योगों अर्थात् ग्रामोद्योगों का व्यापक प्रसार हो इस दृष्टि से एक बुनियादी आरम्भ के तौर पर अन्न एवं वस्त्र के स्वावलंबन में बाधक होने वाले केन्द्रित उद्योगों का बहिष्कार किया जाय।

लोग पूछते हैं—इसे भूमिदान यज्ञ के साथ जोड़ा क्यों गया। वस्तुतः भूमिदान यज्ञ अलग से कोई विशिष्ट कार्यक्रम नहीं है। यह वर्तमान दूषित समाज-व्यवस्था के बदले में एक नयी समाज रचना की दिशा में एक और बुनियादी कदम है। ऐसे समाज की बुनियाद आर्थिक समानता है जिसका ढांचा लोकतंत्र का है। सर्वोदय के विचार से यह बात भी सध सकेगी जब आर्थिक उत्पादन का सिलसिला पूंजी पर आधारित न होकर श्रम पर आधारित हो और जैसा कि प्रस्ताव में कहा गया है ऐसी रचना विकेन्द्रित तथा स्वावलम्बी अर्थ व्यवस्था द्वारा ही हो सकती है।

आर्थिक उत्पादन के लिए दो ही क्षेत्र हैं—भूमि और उद्योग। आर्थिक विकेन्द्रीकरण का मतलब दोनों क्षेत्र के विकेन्द्रीकरण से है। अतः भूमिदान यज्ञ तथा ग्रामोद्योग आन्दोलन एक दूसरे से अभिन्न हैं और एक के बिना दूसरे की सफलता सम्भव नहीं है।

अब प्रश्न यह होता है कि इस आन्दोलन का स्वरूप तथा मर्यादाएँ क्या हैं और इसकी क्रमशः प्रगति के लिये क्या-क्या योजनाएँ होंगी? वस्तुतः अन्न और वस्त्र के बारे में केन्द्रीय उद्योग के बहिष्कार का स्वरूप स्पष्ट और सीधा है। खाने की चीजों में मिल के चावल, आटा, दाल, चीनी, तेल आदि आवश्यक चीजों का बहिष्कार किया जाय और उसके बदले में ग्रामोद्योग की चीजों का ही इस्तेमाल किया जाय तथा वस्त्र के मामले में मिल के कपड़े या मिल के बने सूत के कपड़े का पूर्ण बहिष्कार किया जाय और उसके बदले में चरखा संघ से प्रमाणित या स्वावलम्बी खादी ही इस्तेमाल की जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेकिन जब कभी ऐसा आन्दोलन शुरू किया जाता है तो कुछ लोग बहुत बारीक सवाल उठाते हैं। कभी-कभी मुख्य वस्तु को अलग करके गौण वस्तु पर बहस छिड़ जाती है। १९२१ में जब विदेशी माल के बहिष्कार की बात चली थी तो प्रायः लोग पूछते थे—"बापू जी, बिलायती घड़ी क्यों इस्तेमाल करते हो?" इसलिये इस आन्दोलन की भी कुछ व्यावहारिक मर्यादाएँ समझ लेनी चाहिये। शुरू-शुरू में हमें मिल के चावल, आटा, चीनी, दाल, तेल आदि मुख्य चीजों पर ही बहिष्कार की सीमा बांध देनी चाहिये। स्वाद और गंध के लिये जो मसाला और सुगन्धि का इस्तेमाल होता है उन्हें अभी बहिष्कार के अन्तर्गत न लेना ही व्यावहारिक होगा। कुछ लोग जरूर कहेंगे—मसाला, सुगंधि, सिलाई का धागा आदि भी तो हाथ से बन सकता है। उनसे मेरा नम्र निवेदन यह है कि जो लोग इन सब चीजों को बहिष्कार की सीमा के अन्तर्गत रख सकते हैं तो वे उसके अनुसार संकल्प जरूर करें। उससे आन्दोलन को विशेष रूप से बल मिलेगा। लेकिन एक जन-आन्दोलन के लिए एक गौण तथा थोड़ी-सी सामग्री की व्यवस्था की कठिनाई के कारण मुख्य तथा बुनियादी सामग्रियों के बहिष्कार में मन्द गति आना वांछनीय नहीं है। अतः जो भाई-बहन इस बहिष्कार आन्दोलन को चलावें वे उपर्युक्त व्यावहारिक मर्यादा को समझ लें।

दूसरा सवाल यह है कि इस आन्दोलन का संगठन और प्रगति किस तरह की जाय। स्पष्ट बात है कि इस आंदोलन में वेग तभी आ सकेगा जब कि जो भाई-बहन केन्द्रवादी आर्थिक व्यवस्था के बदले में विकेन्द्रित तथा स्वावलम्बी आर्थिक व्यवस्था कायम हो ऐसा चाहते हैं वे खुद वेगवान् हों अर्थात् वे व्यक्तिगत रूप से खुद अपने इस्तेमाल की चीजों में, अपने परिवार के इस्तेमाल में तथा अगर वे संस्था के लोग हैं तो अपनी संस्था के इस्तेमाल में बहिष्कार का संकल्प लें और जहां कहीं जायँ अपने आप तो उस संकल्प का पालन करें ही। इसके उपरांत अपनी मित्र-मंडली इस आंदोलन में शामिल हो, इसके लिये आग्रह रखें। इतना करना इस आंदोलन की सफलता के लिये न्यूनतम कदम है।

अतएव अगर सर्वसेवा संघ के प्रस्ताव को कार्यान्वित करना हो तो पहला कदम यह होगा कि देश की जितनी संस्थाएँ हैं और जो विकेन्द्रित स्वावलंबी आर्थिक व्यवस्था को मानते हों वे सब फौरन अपनी संस्थाओं में खाना और कपड़े के मामले में मिल के बहिष्कार का संकल्प करके उसका प्रारम्भ करें। इसका दूसरा कदम यह होगा कि संस्था के हरेक सेवक सर्वोदय समाज के सेवक तथा देश के जितने भाई-बहन सर्वोदय समाज तथा सर्व सेवा संघ के ग्रामोद्योगी सिद्धांत से सहमत हैं वे अपने व्यक्तिगत इस्तेमाल में बहिष्कार का संकल्प करें तथा यथाशक्ति अपने परिवार में इस बात के अमल का प्रयत्न करें।

उपर्युक्त कार्यक्रम चलाने के साथ-साथ संस्थाओं तथा सेवकों को चाहिये कि वे बहिष्कार आंदोलन का आम प्रचार करें। देहातों में इसके लिये आम सभा, चर्चा-मंडली आदि का संगठन करें इस संगठन के सिलसिले में कोशिश करें कि गांव भर के लोग सलाह कर गांव से मिल के माल का बहिष्कार का संकल्प करें तथा सरकार से उन चीजों पर रोक लगाने की मांग करें।

कुछ साथी यह कहते हैं कि मिलमें बने माल की होली जलाने, दूकानों पर पिकेटिंग करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आदि का कार्यक्रम हमें फौरन हाथ में लेना चाहिये। यह कार्यक्रम सत्याग्रह का कार्यक्रम है। आवश्यकता पड़ने पर हमें सत्याग्रह जरूर करना पड़ेगा लेकिन सत्याग्रह का प्रयोग अन्तिम प्रोग्राम होता है। जब देश के काफी लोग अपने जीवन में बहिष्कार का संकल्प कर दूसरों से कहने का हक हासिल कर लेते हैं, देश भर में अनुकूल वातावरण पैदा कर लेते हैं तथा जनमत के दबाव से सरकार द्वारा मिल की चीजों पर रोक लगवाने में असफल हो जाते हैं तभी सत्याग्रह का मौका आता है। अतएव हमारी आज की मानसिक और व्यावहारिक परिस्थिति में फिलहाल सत्याग्रह का कोई सवाल नहीं उठता।

आज तो हमारी स्थिति यह है कि हम रचनात्मक कार्यकर्त्ता भी आपसी चर्चा तथा सम्मेलन के प्रस्ताव में सरकार की शिकायत तो करते हैं कि यह ग्रामोद्योग के प्रोत्साहन की बात तो करती है लेकिन उसे संरक्षण नहीं देती। लेकिन हम अपने घर में और अपनी संचालित संस्था में मिल उद्योग पर रोक लगा कर ग्रामोद्योग को संरक्षण नहीं देते हैं बल्कि हम भी उन्हें प्रोत्साहन मात्र ही देते हैं और यह भी कहते हैं कि हमें प्रोत्साहन नहीं चाहिये, संरक्षण चाहिए। जितनी दूर का क्षेत्र हमारे अधिकार में है उतने क्षेत्र में जब हम खुद संरक्षण नहीं देते हैं तो जिस हद तक सरकार का अधिकार है उस हद तक उससे संरक्षण की मांग हम कैसे कर सकते हैं? वस्तुतः हम जबतक अपने अन्दरकी इस विरोधी स्थिति को ठीक नहीं कर लेते तब तक शायद सत्याग्रह की बात सोचना भी हमारे लिये उचित नहीं होगा।

मैं जानता हूँ कुछ जबान काफी अधीर हैं लेकिन उन्हें अपनी मर्यादा का तो खयाल करना होगा।

मैं ने ऊपर जो कदम बताये हैं अगर उतना काम देश के तमाम सर्वोदय विचार के लोग फौरन शुरू कर दें तो मुझे विश्वास है कि आज के लोक-युग में शायद सत्याग्रह की नौबत ही न आवे। अगर आवे भी तो पीछे नहीं हटना है। बहिष्कार आंदोलन के इस पहलू को भी हरेक साथी ध्यान में रखें। मुझे आशा है कि देश भर के सर्वोदय समाज के सेवक पूर्ण गति से इस आंदोलन में लग जायँगे। अगर किसी भाई-बहन को कुछ कठिनाई या शंका हो तो सर्वसेवा संघ से या मुझ से पूछ सकते हैं।

---

( शेषांक पृष्ठ ४ का )

चाहिए। इस तरह विद्यार्थियों के लिए आधुनिक भारतीय साहित्य के दो प्रश्न पत्र, अंग्रेजी के दो, इतिहास के एक, भूगोल के एक, हिसाब के एक और मनोनीत आठ समूहों में से किसी एक समूह के दो पत्र। इस प्रकार का बँटवारा वैज्ञानिक होगा और लाभ भी। सरकार ने अभी जिस पाठ्यक्रम की घोषणा की है वह बिलकुल अवैज्ञानिक है और बच्चों के मस्तिष्क को उलझन में डालने वाली है। मेरा विश्वास है, सरकार उपर्युक्त सुझावों को काम में लायगी तो आज शिक्षा में जो अव्यवस्था और प्रान्त की जनता में जो अशान्ति फैली हुई है, उसका वह मुकबला वह कर सकती है। साथ ही शिक्षा में सफल क्रान्ति करने का गौरव भी उसे प्राप्त होगा। ना०

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कहानी

लेखक [श्री राधाकृष्ण]

## ★ एक लाख सन्तानबे हजार आठ सौ अट्ठासी ★

यह मिथिला है। देखिये गाँव के किनारे से कोसी नदी बहती जाती है। सामने वह बूढ़ा पीपल है। पीपल के नीचे पक्का घाट है। पुराने जमाने के किसी जमीन्दार ने इस घाट को बनवाया था। अब के जमीन्दार तो मुकदमा लड़ते हैं, मैनेजर और रंडी रखते हैं, शराब पीते हैं, और बंगला बनवाते हैं। घाट-बाट बनवाने के फेर में नहीं पड़ते, सो घाट की ईंटें दरक गयी हैं। पलस्तर छूट गया है, टूटी सीढ़ियों में काई जमी है। यह घाट हमारे काम का नहीं। वहाँ तो बस स्त्रियाँ नहाती हैं। हम बाल-गोपाल घाट की बगल से नदी में उतरते हैं। वहीं गाय और भैंसों को धोते हैं, छपाछप खूब स्नान करते हैं और सर्र-सर्र पानी में तैरते हैं। उस पीपल पर, कहते हैं, भूत है। भूत भी ऐसा कि ब्रह्म पिशाच! गाँव वाले कहते हैं कि रात को वह घाट पर बैठा रहता है। अगर कोई उधर से जा निकला तो उसे मार डालता है। हमलोग रात में कभी उधर गये ही नहीं। जाने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी। पता नहीं, ब्रह्म पिशाच की बात कहाँ तक सच है!

बस्ती हमारी बड़ी है। यहाँ ताड़ के पेड़ हैं। पासी अपने पैर में फंदा लगाकर उसके ऊपर तक चला जाता है और लबनी में भरकर ताड़ियाँ उतार लाता है। खजूर के पेड़ हैं और रसीले आम के भी पेड़ हैं। हमारे यहाँ के आम को आप लोग दरभंगिया आम कहते हैं। आम समूची मिथिला में होता है; लेकिन आपलोग हमारे आम और महाराजाधिराज को सिर्फ दरभंगा का ही बतलाते हैं। दरभंगा तो सिर्फ एक शहर है। वहाँ कचहरी है, महाराजाधिराज का किला है। उस शहर में डिपटी और वकील लोग रहते हैं और मुकदमा हुआ करता है। हमारे गाँव से बहुत से लोग सत्तू-पाटली बाँध कर बगल में कागजों का बस्ता लेकर मुकदमा लड़ने के लिए दरभंगा में जाया करते हैं। दरभंगा यहाँ से दूर है। हमारे यहाँ जिस तरह सूरज का उजाला होता है, वहाँ रात में उसी तरह बिजली जगमग करती है। वहाँ आग और पानी से चलनेवाली रेलगाड़ी भी है, मोटरों को लोग एक दुर्गन्धित तेल से चलाते हैं। लेकिन उन बातों की विशेष जानकारी मैं आपको नहीं दे सकूँगा, क्योंकि एक तो मैं लड़का हूँ, दूसरे मैं कभी दरभंगा गया ही नहीं।

मैं आपको अपनी बस्ती की पूरी जानकारी भी नहीं दे सकता। यह बहुत बड़ी बस्ती है और मेरा खयाल है कि यहाँ सात कोड़ी से भी अधिक घर होंगे। इसी गाँव में भूखन साहू रहते हैं। उनकी यहाँ की औरतें रंगीन साड़ी पहनती हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आँखों में सुरमा आँजती हैं और सोने-चांदी के आभूषण पहनकर झमाझम चलती हैं। उन्हीं की लड़की की शादी में हमने पहले-पहल हाथी देखा था। गांव में सूदन झा, लखन झा, बिरजू झा आदि बड़े-बड़े पण्डित हैं। ये लोग छानकर पानी पीते हैं और रोज रोहू मछली छोड़ कर दूसरी मछली बिल्कुल नहीं खाते। टेमन साव, टेसा साव, सकूर मियाँ आदि यहाँ बड़े-बड़े महाजन हैं। इनके यहाँ आदमी को पाँच कोड़ी तक कर्ज मिल सकता है। मास्टर इसी गाँव के रहनेवाले हैं, जिनकी विद्या का तो कहना ही क्या। वे अंग्रेजी भी जानते हैं और किताबों को शुरू से आखिर तक पढ़ जाते हैं। सुचित झा इसी गाँव के नेता हैं, जो कहते थे कि हमको स्वराज्य लेना ही होगा। वे बड़े अच्छे आदमी थे और बहुत सी बातें बतलाया करते थे। हर हफ्ता उनके पास एक अखबार आता था। उसमें बनस्पति की और स्वराज्य की अच्छाई के बारे में बहुत-सी बातें लिखी रहती थीं। प्रति सप्ताह उसमें दाद की दवा और डोंगरे के बालामृत का वृत्तान्त छपता था। काका सुचित झा उसे आदि से अन्त तक पढ़ते थे और पूछने पर कुछ हमलोगों को भी बतला देते थे। उन्हीं दिनों की बात है कि सुचित झा इस गाँव में एक बहुत बड़े नेता को बुला लाये थे। आनेवाले उस नेता की मूँछे घुटी हुई थीं, भारी-भरकम शरीर था। वे चश्मा लगाकर गेंदा फूल की माला पहने हुए थे। उस दिन आम की बगिया में दरी बिछायी गयी थी और बड़ा समारोह हुआ। हम सभी लड़के इस घटना से बहुत प्रसन्न थे। और ऊँची आवाज में 'जय-जय' चिल्लाते थे। उस नेता ने बहुत बड़ा भाषण दिया। वह युद्ध का विरोध करते और हर-एक आदमी को चर्खा चलाने का उपदेश देते थे। मगर काका सुचित झा को छोड़ गाँव में दूसरा कोई चर्खा चलाने वाला नजर नहीं आया। लोग कहते थे इसमें मजदूरी कम है। अगर दूसरा कोई काम करता है तो दो पैसा ज्यादा मिल जाता है। यह सब बहुत दिनों की बात है। अब तो हमारे नेता सुचित झा भी जेल में बन्द हैं। पुत्र-शोक में उनकी माँ ने दम तोड़ दिया। मरने के बाद घर में कफन के लिए कौड़ी भी नहीं थी। केले के पत्ते से ढाप कर उनकी लाश उठायी गयी। सुचित काका की स्त्री आज कल पिसाई करती है और पैबन्द लगी साड़ी पहनती है। उसने बताशा बेचने का भी काम किया था। लेकिन चीनी के अभाव

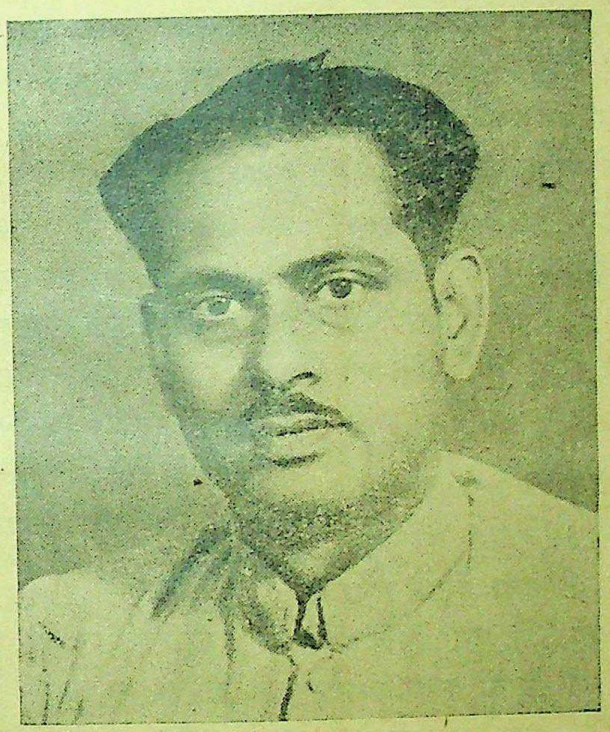

श्री राधाकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में वह काम बन्द कर देना पड़ा। पिसाई के अलावा वह गुड़िया बनाती है और गाँव की लड़कियों के हाथ धेले-पैसे में बेचा करती है। सब जानते हैं कि सुनैना काकी बड़ी मुसीबत में है। लेकिन कोई उसकी मदद नहीं करता। टेमन साव और टेसा साव के पास बहुत पैसे हैं, लेकिन वे उसे कर्ज भी नहीं देते। अगर सुचित काका किसी भाँति स्वराज्य ले लें तो उससे इन्हीं अमीरों का ज्यादा लाभ होगा। मगर ये लोग हैं; जो सुनैना काकी की कोई मदद नहीं करते। हम तो छोटे-छोटे लोग हैं। हमलोग क्या कर सकते हैं। हमारी सुनैना काकी बेचारी एक शाम खाती है, दूसरे शाम उपवास रह जाती है। पूछते हैं तो कहती है बेटा, रात के समय मुझे भूख नहीं लगती। क्या जाने, उसे भूख नहीं लगती। मुझे तो रात को भी ऐसी भूख लगती है कि क्या पायें और खा जायँ।

उसी सुनैना काकी की बगल में मेरा घर है। जाति के हम लोग सुनार हैं। बाबूजी का गहना गढ़ने में नाम है। कँगन, बिछिया, हँसुलि, हार आदि वे बड़ा बढ़ियाँ बनाते हैं। मगर गाँव में गहना गढ़वाने का शौक नहीं है तो क्या किया जाय? थोड़ी बहुत खेती है, उसीसे गुजारा है। गाय का दूध है, भैंस की छांछ है, गुड़ की मिठाई है। गाँव में हमलोग खाते-पीते अच्छे हैं। छम्मी मेरी छोटी बहन है। कभी-कभी वह जिद मचा देती है कि हम घी की मिठाई खायेंगे। लेकिन मेरा तो दावा है कि घी की मिठाई दरभंगा छोड़कर और कहीं बन नहीं सकती। छम्मी छोटी है। उसे अक्ल कहाँ?

सुचित काका का जाना था जेल में कि गाँव में काया पलट हो गयी। हम हैरान थे कि क्या हो गया। गुड़ की भेली जो हम लोग पैसे में दो लेते थे, वह अब तीन पैसे में सिर्फ एक मिलने लगी। भुखन साहु ने अपनी दुकान बन्द कर ली। अब न वे हल्दी देते थे, न धनिया ही बेचते थे, सीधे कह देते थे कि है ही नहीं। लेकिन मैं जानता हूँ कि सारी चीजें उनके यहाँ थीं। खुद मेरे बाबूजी उनके यहाँ जाते थे और चिरौरी करके किराशन तेल ले आते थे। कहते थे कि बारह आने बोतल लगता है। लगता होगा। अम्मा के लिये एक ही साड़ी बारह रुपयों में आयी थी। इसके लिये बाबूजी को सवा मन चावल बिक्री करना पड़ा था। फिर हमारे लिये धोती चाहिये। छम्मी मचलती थी कि वह तो लाल साड़ी लेगी। एक लालटेन खरीदने की भी सख्त जरूरत थी। इसके लिये हमारे तमाम गेहूँ बिक गये। चावल का एक दाना भी नहीं रहा, पुआल के बिना गाय भूखी रहने लगी। सिर्फ कपड़ा-लत्ता और लालटेन खरीदने के पीछे ही हम लोगों की लेई-पूँजी साफ हो गयी। पिताजी उदास रहने लगे कि अब क्या होगा?

पिताजी चिंता से दुबले होने लगे, कि एक दिन दोपहर के समय वे बुरी तरह काँपने और हाँफने लगे। उन्हें बड़े जोर का बुखार आया था कि रात भर वे मुँह फाड़कर पड़े रहे। बार-बार पानी मांगते थे और अर्र-बर्र बोलते थे। सबका मिजाज बदहवास हो गया। रात भर बाबूजी बुखार में पड़े रहे, अर्र-बर्र बोलते रहे। जब चुप रहते थे उस समय मुँह फाड़े रहते थे। रात भर के बाद दूसरे दिन जैसे ही सूरज निकला कि बाबूजी के शरीर से पसीना छूटने लगा। सारा, शरीर पसीने से सराबोर हो गया। बुखार छूट गया, सिर्फ कमजोरी बाकी बची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सबका खयाल था कि अब बुखार से पिंड छूटा; लेकिन दूसरे दिन फिर शाम को बाबूजी के साथ वही तमाशा हुआ। उसी तरह शरीर दल-दलाने गला। बुरी तरह काँपने लगे, रजाई दी गयी, कंबल दिया गया। मेरा, छम्मी का, अम्मा का, सबका ओढ़ना-बिछौना उनके शरीर पर लाद दिया गया। लेकिन कँपकँपी ऐसी थी, जो नहीं छूटती थी। उसके बाद भयानक बुखार आया और पिताजी ने आँख बन्द करके अपना मुँह फाड़ दिया। हमने तो समझा कि बाबूजी मर ही गये। सुचित काका की अम्मा मरी थी तो इसी भाँति आंखें बन्द थीं और मुँह खुला था। इस बात से मुझे बहुत ही डर मालूम हुआ। अम्मा से अपना सन्देह प्रकट किया तो वह मुझ पर चाँटा मार बैठी। रोता-सिसकता मैं सो गया। फिर सवेरे उठकर देखता हूँ कि बाबूजी के पसीना छूट रहा है और बुखार उतर रहा है।

अम्मा के गहने बिक गये, बर्त्तन बन्धक रख दिये गये। कुछ दिन के बाद एक दाढ़ीवाला आदमी आया और हमारी तमाम गायों को खूंटे से खोल ले गया। हम रोने लगे, ढेला लेकर मारने के लिये दौड़े। पिता जी ने डाँट दिया, बोले हमारी गायें इन्होंने खरीद दी हैं।

मैंने रोते हुए कहा—यह तो कसाई है। हमारी गायों को काट देगा। तब बाबू जी ने मुझे इतने जोर से डाँटा कि मैं सहम उठा। शायद यह सची बात कहना मुझसे कसूर हो गया था। यह मेरा कैसा अपराध था! अपनी सूनी गोशाला के कोने में बैठकर मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा।

माँ खाना खिलाने को आयी तो मैंने साफ जबाब दे दिया—जब तक मेरी गायें नहीं आयेंगी, तब तक मैं खाना नहीं खाऊँगा। मगर मेरी टेक निभी नहीं।

बाबू जी का वही हाल था। रोज बुखार आता और सवेरे छूट जाता। दुबले-पतले कंकाल सरीखे दिखलाई देते थे। सारा शरीर काला पड़ गया था। आँखें भयानक हो गयी थीं।

बाबू जी की बीमारी में एक नयी दूसरी बात सुनने में आयी। उन्हें एक दवा मिलती नहीं थी। उस दवा का नाम है कुनैन। पता नहीं यह कैसी अचंभे वाली दवा है। बाबू जी ने तमाम सुराग लगाया। हर जगह छान मारा; लेकिन उन्हें वह दवा मिली ही नहीं। पहले मैंने सुना था कि लोगों को साँप की मणि नहीं मिलती। दूसरे मैंने सुना था कि सोने के पहाड़ को खोदकर भी नहीं पा सकता। तीसरे मैंने यही देखा कि हजार कोशिश के बाद भी कुनैन नाम की चीज नहीं मिल सकती।

मगर थोड़ा-सा खटका बना ही रहा। एक दिन मैंने सुनैना काकी से कहा—ऐसा तो हो नहीं सकता कि कुनैन नहीं होगा। दुनियाँ में कहीं-न-कहीं बहुत-सा कुनैन होगा।

सुनैना चाची ने धीरे से हँस दिया।

मैं ने कहा—दरभंगा में जो बड़ा-सा सरकारी अस्पताल है, जहाँ से लोग पढ़-पढ़कर डाक्टर बनते हैं, क्या वहाँ भी कुनैन नहीं होगा?

मैं ने कहा—हमारे महाराजाधिराज के यहाँ तो जरूर होगा। अगर उनके यहाँ नहीं हो, तो जो उनके राज-राजेश्वर हैं, उनके यहाँ तो जरूर होनी चाहिये। चाची, वे लोग कुनैन क्यों नहीं बाँटते?

चाची बोली—लड़ाई है बेटा, उसी कारण कुनैन नहीं मिलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बात मेरी समझ में नहीं आयी। मैंने कहा—जब लड़ाई ही करनी थी तो थोड़ा कुनैन अपने साथ जरूर रख लेना चाहिये था। ऐसी लड़ाई क्या काम की कि पास मारने की सब चीजें हैं और जिलाने की कोई चीज नहीं। अगर इस गाँव में हर किसी को बुखार हो जाय, तो सरकार का ही तो नुकसान होगा। हमलोग भी सरकार के ही आदमी हैं न चाची? पिछले महीने में राम रतन फौज में भरती होकर चला गया। हम भी बड़े होंगे तो हम भी भरती होंगे। मगर हमें बुखार लग जाय तब तो हमसे भला क्या लड़ाई होगी?

चाची ने कहा—जो सब से बली है वही सरकार है। सरकार जिसको जो चाहे सो कर कर सकती है। अगर सरकार कुनैन नहीं रखती तो तुम उसके लिये कुछ भी नहीं कह सकते।

मैं ने कहा—क्यों नहीं कहूँगा; बेशक कहूँगा।

चाची ने झुंझलाकर कहा—तो तुम्हें भी जेल जाना पड़ेगा—समझ लो!

मेरा दिल दहल गया। जेल—सुनते हैं कि वहाँ से आदमी निकल ही नहीं सकता। सुनते हैं कि एक जिला है भागलपुर; सो वहाँ की जेल में सरकार ने गोली चला दी। भगवान जाने, जेल में हमारे सुचित काका कैसे होंगे। जेल का नाम सुनते ही मेरा मुँह सूख गया।

फिर भी विश्वास नहीं होता था। बोला—सिर्फ जरा-सी बात कहने के लिये सरकार जेल नहीं देगी।

चाची ने कहा—तुम्हारे काका ने क्या किया था? उन्होंने सिर्फ गाँधी जी की जय कही और उन्हें जेल में डाल दिया गया। बोलो, इसके सिवा उन्होंने और क्या किया था?

बात सही थी। मेरा कलेजा धड़कने लगा। कहीं सरकार को मेरी बात मालूम न हो जाय।

चाची ने समझाया—बेटा, ऐसी बात नहीं कहते!

ठीक है, मुझे समझना चाहिये था। अब कभी नहीं कहूँगा।

गांव में केवल हमारे बाबूजी ही बीमार नहीं थे। रामधन का भी यही हाल था। शिवटहल महीनों से इसी बीमारी को भुगत रहा था। जानकी तो इसी बीमारी में मर गया।

और दिन आ रहे थे और दिन जा रहे थे।

घर की हालत क्या बतलावें! बाबूजी ने अनाज इसी भरोसे बेच दिया था कि सस्ती होगी तो खरीद लेंगे, मगर सस्ती कहाँ तक होगी कि रुपये में सवा सेर का चावल बिकने लगा। अगहन का महीना आया; लेकिन मेरे घर में धान बिल्कुल ही नहीं आया। पूछने पर अम्मा ने बतलाया अबकी धान भूखन साहु ले जायेंगे।

क्यों?—मैंने पूछा।

क्योंकि तुम्हारे बाबूजी ने दवा कराने के लिए उनसे रुपये लिये हैं। अम्मा बोली।

मैंने क्रोध से कहा—वे अपने रुपये लेंगे कि हमारा धान भी ले लेंगे।

अम्मा बोली—वे अपना रुपया भी लेंगे और हमारा धान भी लेंगे। खेत उनके हाथ में जरपेशगी दी गयी है।

तब हम खायेंगे क्या?

अम्मा रोने लगी—बेटा, तुम्हारे बाबूजी अच्छे हो जायेंगे तो फिर सब हो जायगा। अभी दुःख के दिन हैं। सब्र करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शाम को मैं सुनैना काकी के पास गया। उनसे पूछने लगा—चाची सत्र करने का क्या फल होता है?

चाची बोली—बेटा सत्र का फल बहुत मीठा होता है।

तब मैंने खयाल किया कि मुझे सत्र ही करना चाहिये। अपने लिये नहीं तो बाबूजी के लिये तो मुझे जरूर सत्र करना चाहिये।

इधर घर में मुझे छूछा भात मिलने लगा। दूसरे शाम वह भी नदारद हो गया। मैं अम्मा की गोद में दुबककर सो जाता था। मुझे मालूम था कि सत्र का फल मीठा होता है। मेरी छोटी बहन छम्मी नासमझ थी। वही भूख-भूख रटती थी। आप परेशान होती थी और अम्मा को भी परेशान कर देती थी। छम्मी नहीं जानती कि सत्र का फल क्या मिलता है।

खाने के लिये छूछा भात हो गया। माड़ में थोड़ी-सी हल्दी मिला देने से वह दाल का मजा देती थी। तरकारी के नाम पर जरा-सी चटनी हो जाय तो वही बहुत है।

ऐसे इस तरह के दिन भी आने लगे और जाने लगे।

कि, लो, अब अम्मा का भी वही हाल हो गया सबेरे के पहर उनके शरीर में कँपकँपी होने लगती। दिन भर बुखार में पड़ी रहती।

दिन में बाबूजी रसोई बनाते थे और रात को अम्मा बाबूजी के पैर दबाती थी।

सिर्फ कुनैन के बिना? सुनते हैं कुनैन जापानियों के हाथ में हैं। मैं पूछता हूँ सिर्फ कुनैन के लिये जापानियों को नेस्तनाबूद क्यों नहीं किया जाता। सबसे पहले कुनैन मिलना चाहिये। पहले कुनैन की लड़ाई हो। फिर बाकी लड़ाई पीछे होती रहेगी। रात के समय मैं सोचा करता था, मैं जापानियों से जूझने जा रहा हूँ। मेरे पीछे बहुत बड़ी सेना है। तमाम जापानी मारे जाते हैं। अब पृथ्वी पर एक भी जापानी नहीं, अब कुनैन निर्बंध है। मैं पुकारता—आओ, कुनैन ले जाओ। सभी दौड़ते हैं। कितने लोग हैं, क्या मैं इन्हें कभी गिन भी सकता हूँ?·····अम्मा मेरी बलैया लेती है; पिताजी मुझे आशीर्वाद देते हैं। मगर भूखन साहु को मैं कभी कुनैन नहीं दे सकता। वह हमारा सारा धान उठाकर ले गया।·····

गर्मी के दिन किसी-किसी भाँती बीत गये। अब बरसात आयी है। मूसलाधार वृष्टि हो रही है। रात का समय। बाबूजी बुखार में पड़े हैं, अम्मा की तबीयत अच्छी है। तमाम घर में अन्धेरा छाया हुआ है। अब तो न किरासन का तेल है और न उसे खरीदने के लिये पैसे हैं।

आजकल तो मैं ही घर में कमाने वाला हूँ। दिन समय लड़कों के साथ कोसी में मछलियाँ मारता हूँ। शाम होते ही किसी की फुलवारी में घुसकर कुछ फल और सब्जी का जोगाड़ करता हूँ। इसी से घर चलता है। उस दिन भूखन साहु के यहां एक बैल गाड़ी खड़ी थी। उसमें चावल के बोरे लदे थे। अपने साथियों के साथ मिलकर हमलोगों ने एक पूरा बोरा ही उड़ा लिया। गाड़ीवानों को खबर भी नहीं हुई। इसमें मुझे तेरह सेर चावल का लाभ हुआ था। छम्मी भी समझदार हो गयी है उसने भी अब सत्र करना सीख लिया है। अब वह लाल साड़ी पहनने के लिये जिद नहीं मचाती। फटा-पुराना चिथड़ा लपेटकर इधर-उधर जलावन के लिये सूखी लकड़ियां खोजती है। माँ को दिन भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुखार लगता है, बाबूजी उठने बैठने से लाचार हो गये हैं। छम्मी खुद बनाती है। उसे बनाना भी नहीं आता। सब्जी में वह नमक भी नहीं डालती। पूछता हूँ तो कह देती है कि घर में है ही नहीं तो मैं क्या करूँ? अब उस नासमझ को कौन समझावे? भूखन साहु के यहाँ बोरा-का-बोरा नमक पड़ा रहता है। जरा नजर इधर-उधर हुई कि एक मुट्ठी गायब कर दिया? कौन देखता है। इतने ही से कम चल जाता। बिना नमक के भोजन बड़ा बेस्वाद मालूम होता है।

रात का समय है। घर में अन्धेरा छाया हुआ है। बाबूजी बुखार में बेहोश हैं, छम्मी सो रही है। अम्मा और मैं जग रहा हूँ। आज मेरी तबियत सुस्त है। आज मुझे जमींदार के भण्डारियों ने मारा है। हमलोग रहर और सरसों चुरा रहे थे कि साला बिसेसर किधर से आ गया। और लड़के तो फुर्र हो गए, केवल मैं ही पकड़ लिया गया। इसके बाद उसने छड़ी से, घूसे से, थप्पड़ से मेरी खूब मरम्मत की। तीन बार थूककर चटवाया तब जान छोड़ी। उस समय तो उसने जान छोड़ दी। लेकिन अभी मालूम होता है जैसे जान जरूर चली जायगी। सारा शरीर घाव की तरह दर्द कर रहा है। डर से कराहता भी नहीं हूँ कि अम्मा सुनेगी तो पूछेगी। अम्मा से कहने की यह बात नहीं है, कहा भी नहीं। अगर बाबूजी से कह दूँ तो बिसेसर के छक्के छुड़ा दें। अब वे अच्छे हो जायँ। बीमारी की हालत में यह बात सुनेंगे तो रोने लगेंगे।

तमाम सन्नाटा है। मालूम होता है जैसे सारा गाँव मर गया। बरसात का पानी बरस रहा है। झमाझम उसी की आवाज है। उसी समय एक आवाज सुनता हूँ—छम्मी की माँ!

अम्मा चिहुँक उठती है, मैं डर जाता हूँ। मालूम होता है जैसे कोई औरत चिल्ला रही है और काँप रही है। मैंने धीरे से कहा—चुड़ैल?

अम्मा ने मुझे अपनी छाती से चिपका लिया।

छम्मी की अम्मा! —फिर आवाज सुनाई पड़ी। मालूम हुआ जैसे सुनैना काकी की आवाज है।

माँ उठकर बाहर गयी। थोड़ी देर के बाद वापस आकर बोली—उन्हें हैजा हो गया है! कय और दस्त हो रहे हैं। तू चुप सो जा, मैं उनकी सेवा को जा रही हूँ।

सबेरे तक सुनैना काकी की मृत्यु हो गयी थी और मेरी अम्मा को कय होने लगे थे। अनजान में ही दस्त निकल जाता था। जब मैंने उन्हें देखा तब उनकी पिंडलियां ऐंठ रही थीं, बार-बार तेज हिचकी आती थी। शरीर काँप उठता था। मुझे देखकर उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

मैंने समझाया—ठहरो अम्मा, घबराओ नहीं, मैं लोगों को बुलाये लाता हूँ।

और मैं दौड़ा हुआ बाहर निकला।

जगेसर के यहाँ गया। उसने बतलाया मुझे खेत में जाना है। सीताराम के तीन बच्चे इसी बीमारी में पड़े हुए थे। रामधन की माँ ने इसी बीमारी से दम तोड़ दिया था। मालूम हुआ कि तमाम गाँव में हैजा फैल गया है। घर-घर में लोग बीमार हैं और मर रहे हैं। सामने सारा गाँव था। लेकिन हमारे लिये कहीं कोई नहीं था। सब को अपनी-अपनी पड़ी थी। कोई भी आने को तैयार नहीं हुआ।

आखिर मेरा मित्र रामनाथ काम में आया। वह मुझ से उम्र में बड़ा है। सात महीना दरभंगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में रह आया है। वह बहुत सी बातें जानता है और बड़ा हिम्मतवाला आदमी है। उसने दो-चार दोस्तों को और जमा किया। सबके साथ जिस समय हम घर पहुँचे उस समय देखा कि माँ की दोनों आँखें खुली हैं, एकटक। सारा शरीर ऐंठ गया है। बदबू के मारे नाक नहीं दी जाती। वे बरामदे में पड़ी हुई थीं। और उनके सारे शरीर पर मक्खियां भिनभिना रही थीं।

रामनाथ ने कहा—यह तो मर गयी!

मैं चौंक उठा!

छम्मी बोली—अभी थोड़ी देर पहले तो पानी मांगती थी। नहीं, मरी नहीं है। सुनैना काकी भी तो इसी तरह पड़ी हुई है।

रामनाथ ने कहा—अरे नहीं पगली, यह मर गयी। अब इन्हें ले चलना होगा।

रामनाथ ने एक चारपाई पर सुनैना काकी और अम्मा को सुला दिया। हम चारों-पाँचो उन्हें ले चले। बाबू जी में तो इतनी शक्ति भी नहीं थी कि वे बिस्तर से उठ सकते। राह में रामनाथ बहुत ही आश्चर्यजनक बात कह रहा था—मरने पर आदमी की लाश भारी हो जाती है, जब तक आदमी जिन्दा रहता है तब तक हल्का रहता है।

इसी तरह की बातें करते हुए हमलोग श्मशान में पहुँचे। रामनाथ के साथ रहकर हमलोग निश्चिंत थे। वह हमलोगों का अगुवा था।

श्मशान में पहुँच कर हम लोगों ने देखा, कुछ चिताएँ जली हुई हैं, कुछ बुझी हुई हैं, वहाँ हमने वैसा साव को देखा। उनकी लड़की मर गयी थी। सूदन झा, लखन झा, बिरजू झा आदि सभी बड़े-बड़े पंडित उनके साथ मशान में आये थे। दो-तीन और लाशें थीं। ऊपर चील मंडरा रहे थे। तमाम चिरायंध गंध फैली हुई थी। हमलोग बैठ गये और बिचार करने लगे कि अब क्या हो? इसी समय हमने रघु चमार को देखा। वह खुद ही हमलोगों के पास आया और कहने लगा—महामारी के दिनों में लाश नदी में बहा दी जाती है। ऐसे समय लकड़ी कहाँ-कहाँ खोजते फिरेंगे? अपनी औरत को मैं खुद लेता आया था और बहाकर वापस जा रहा हूँ। तुम लोग भी यही करो।

यह सीख देने के बाद वह ठहरा नहीं। अपने घर की ओर वापस चला गया। उसे अपनी मौसी और बच्चों की खबर लेनी थी। रामनाथ ने मुझसे कहा—तुम भी ऐसा ही करो। सब की राय जँच गयी।

पहले सुनैना काकी की लाश बहाई गयी। मैंने उनकी डूबती हुई लाश को देखकर कहा—जाओ काकी, दुनिया में तुमने कष्ट किया है, लेकिन भगवान के दरबार में तुम्हें सुख मिलेगा। माँ की लाश डुबाते समय तो मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। बहुत ही ढाढ़स के साथ मैंने आश्वासन दिया—तुम सुख से जाओ, मेरी कोई चिंता नहीं करना। अब से बाबू जी की देखरेख मैं ही करूंगा। छम्मी को सुख से रखूँगा। वह बड़ी होगी तो उसकी शादी कर दूँगा। तुम हमलोगों की जरा भी चिंता नहीं करना। ·····और इसके बाद मैं बिलख-बिलखकर बहुत ही रोने लगा।

घर लौटने में मुझसे देर हो गयी थी। राह में मेरे मित्र रामनाथ के साथ अलग हो गये थे। अकेले घर में लौटा। मुझे देखते ही पिता जी ने चिल्ला कर कहा—तू कहाँ चला गया था? देखता नहीं, मुझे कय और दस्त हो रहे हैं। ला, पानी ला; थोड़ी-सी चावल की माड़ दे दे। श्री राम वैद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को बुला ला।

मैं व्यस्त होकर फिर रामनाथ के यहाँ दौड़ा।

रात के समय में रामनाथ और छम्मी बाबू जी की लाश लेकर श्मशान जा रहे थे। घर में मुर्दा नहीं रखना चाहिये। रामनाथ का कहना था कि इससे बीमारी और दुर्गंध फैलती है। बाबू जी की लाश अम्मा की भाँति भारी नहीं थी, फिर भी छम्मी कहती थी—बड़ा भारी है, मुझसे चला नहीं जाता।

श्मशान में पहुँचते ही छम्मी ने कय किया और काँपने लगी। उसने बतलाया कि घर पर ही मुझे तीन-चार दस्त हो चुके थे; लेकिन मैंने डर से किसी को नहीं बतलाया।

रामनाथ ने पूछा—किसका डर रे, पगली ?

मरने का !—छम्मी ने कहा। काकी, बाबू जी और अम्मा को मरते देखकर मुझे बहुत डर लगता था। थोड़ा पानी दो।.....

रामनाथ उसके लिये पानी लेता आया। मुझसे बोला—सुनता है रे, इस छम्मी को भी हैजा हो गया।

तब ?—मैंने पूछा।

चलो, किसी पेड़ के नीचे बैठ जाँय। अगर किसी तरह इसे घर में ले भी जायेंगे, तो मरने के बाद फिर लाना पड़ेगा। इससे अच्छा है कि उस बरगद के नीचे बैठ जाँय। अभी पानी भी नहीं है। आसमान में चाँद निकल आया है। तू जाकर एक लोटा ले आ।

रामनाथ की बात ठीक थी। घर भी श्मशान से कम नहीं था। जो आराम घर में था वही आराम इस बरगद के नीचे भी दिखाई देता था। बाबूजी की लाश को रखकर छम्मी को लिये हुए बरगद के नीचे चले गये। फिर मैं लोटा लाने के लिये दौड़ गया।

लोटा लेकर जब वापस आया तो मालूम हुआ कि छम्मी के दस्त कम हो गये हैं; लेकिन प्यास बहुत है। पानी पीती है और कय कर देती है। कहती थी, शरीर में बहुत जलन है और वह बड़ी तेजी से चिल्ला उठती थी। दाँत किटकिटाती थी और हमलोग कुछ कहते थे तो सुनती ही नहीं थी।

फिर वह सुस्त हो गयी। सिर्फ कराहती थी और किसी बात का कोई जबाब नहीं देती थी।

मैंने रामनाथ से पूछा—यह ऐसा क्यों करती है ? बोलती क्यों नहीं ?

रामनाथ ने इस बात का कोई जबाब न देकर कहा—राम-राम कहो।

और वह उच्च स्वर में राम-राम पुकारने लगा।

मैंने घबराकर पूछा—रामनाथ सच बतलाओ, यह क्या हुआ ?

रामनाथ ने कहा—यह मर रही है।

छम्मी भी मर रही है ? माँ मर गयी, बाप मर गये, सुनैना चाची भी मर गयीं और अब छम्मी मर रही है; अब मैं कैसे रहूँगा ? मैं रोने लगा। रोते-रोते पुकारा—छम्मी ?

कोई उत्तर नहीं।

छम्मी ?

फिर भी कोई उत्तर नहीं। हाय, अब किसके साथ रहूँगा ? किसके लिये मछली मारने जाऊँगा और किसके लिये अमरूद चुराकर लाऊँगा ? छम्मी बोलती क्यों नहीं ? मैंने बिलखते हुए कहा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दुनिया में जिसका राज्य है वह हमारी नहीं सुनता; लेकिन स्वर्ग में तो भगवान का राज्य है, वे सबकी सुनते हैं। उनसे तू हमारे बारे में कहना। छम्मी, तू उनसे हमारे दुःखों के बारे में जरूर कहना।

क्या छम्मी ने भगवान से हमारे बारेमें कुछ कहा होगा? कुछ कहा होगा तो भगवान ने भी अभी तक.....जाने दो, मैं अपना किस्सा खत्म करता हूँ।

[ प्रस्तुत कहानी 'एक लाख सत्तानबे हजार आठ सौ अट्ठासी' बिहार के अकाल और महामारी के समय की बात को लेकर लिखी गयी थी। उस समय बिहार-सरकार के सलाहकार मिस्टर गौड बोले थे। उन्होंने एक वक्तव्य दिया था कि १९४४ ई० में बिहार की महामारी के समय एक लाख सत्तानबे हजार आठ सौ अट्ठासी आदमी मरे हैं। यही उस कहानी का शीर्षक है। यों मरे तो ज्यादा ही होंगे, पर जो लोग मरे वे किन परिस्थितियों को भोगते हुए मरे थे? —लेखक]

—

# हमारी शिक्षा की समस्या

[ श्री जगदीश त्रिगुणायत ]

आचार्य विनोबा ने एक बार कहा था कि देश का शिक्षित और अशिक्षित समुदाय राहु और केतु के समान दो टुकड़ों में बँट गया है। शिक्षित वर्ग के पास यदि सिर है तो हाथ पैर नहीं और अशिक्षित वर्ग के पास हाथ पैर हैं तो सिर नहीं। महात्मा गाँधी के उस महान आध्यात्मिक उत्तराधिकारी का यह निष्कर्ष अनेक राजनेताओं, राजनीतिज्ञों, विद्वानों और अर्थशास्त्रियों के निष्कर्षों से अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि सारी दुनियाँ की भाँति हमारे देश भी जन समुदाय भी शोषक और शोषित, धनी और गरीब, जमींदार और किसान तथा पूंजीपति और मजदूर के विभिन्न वर्गों में बँटा हुआ है। किन्तु, शिक्षित और अशिक्षित वर्ग के बीच इस गहरी खाई का निर्माण भारत में अंग्रेजी राज्य का ऐसा भयंकर अभिशाप है जिसका उदाहरण संसार में और कहीं मिलना मुश्किल है, तथा आचार्य विनोबा के उस छोटे से सूत्र में अंग्रेजी राज्य की सबसे भीषण विडम्बना हाहाकार कर रही है।

अंग्रेजों ने अपनी सैनिक-शक्ति के बल पर इस देश पर अपना राजनैतिक अधिकार जमाया, अपने उद्योग-धंधों के विकाश के द्वारा राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था पर अपना कब्जा किया किन्तु अपनी विजय-वैजयन्ती को जिस महत्वपूर्ण स्थान पर गाड़ा, वह भारतियों का दिल और दिमाग ही था। सचमुच यदि अंग्रेजों ने भारतियों के हृदय से अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना को मिटा कर उसमें अंग्रेजी राज्य के प्रति राज-भक्ति और वफादारी की भावना नहीं भरी होती तो हम यहाँ चाहे लड़ते झगड़ते या जो कुछ करते किन्तु अंग्रेजों का राज्य तो इतने दिन कायम नहीं ही रहा होता।

उन्हें अपनी शासन-व्यवस्था को चलाने के लिये ऐसे आदमियों की आवश्यकता थी जो देश को अपार जनता और शासकों के बीच कड़ी बना सकें। जो अपने महाप्रभुओं के आदर्श के आज्ञाकारी वाहन बनें, और समाज की हरी-भरी खेती को दिन-दहाड़े खुल कर चरा करें। इनको जनता की नजरों में आकर्षक दिखाने के लिये भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाज-सेवा ( Indian Civil Service ) और प्रान्तीय समाज सेवा (P. C. S.) की खाल ओढ़ाई गई। सिविल सर्विस की पालिस से चमकने वाले जड़, चेतनाहीन और निर्जीव पुर्जे जनता के खून के तेल से काफी चले और अंग्रेजी राज्य की मशीनरी को उन्होंने काफी चलाया। हमारे देश की शिक्षा-पद्धति जान-बूझकर पूरी योजना के साथ ऐसी ही बनाई गई थी, इसलिये उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे देश का वह शिक्षित-वर्ग भी जिसका शासन से कोई सम्बन्ध नहीं था, जनता से दूर ही होता गया। क्योंकि उसी शिक्षा-पद्धति का दूध पीकर उसके भी संस्कार बने थे।

इस पृष्ठ-भूमि में जब हमें देश का पुनर्निर्माण करना है तो सबसे पहले उसके दिल और दिमाग का निर्माण करना चाहिये। हमें आशंका है कि आजादी के युद्ध की सफलता कहीं धोखे में न डाल दे! युद्ध और निर्माण की प्रक्रियाओं में एक मौलिक अन्तर है, आजादी के लिये तो मनुष्य के मन में एक प्रकृत-भावना है और उसके लिये मनुष्य को केवल उत्तेजित कर देना काफी है। उसमें योग देने के लिये हम अपने अन्तर के देवताओं के साथ दानवों की भी सेना बना सकते थे किन्तु राष्ट्र-निर्माण इन्हीं संस्कारों से नहीं हो सकता। इसलिये यदि वास्तव में देश का पुनर्निर्माण करना है तो सबसे पहले मनुष्य का निर्माण होना चाहिये।

हमें व्याधि के उपलक्षणों की चिकित्सा न करके सबसे पहले वास्तविक व्याधि का ही उपचार करना चाहिये। नहीं तो यदि हम विकाश और पुनर्निर्माण की हजारों योजनायें उन्हीं लोगों के भरोसे चलाते रहे, जिनका इन योजनाओं की अन्तरभूत भावनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं; तो नौकरशाही जो गुलामी के युग में शासन व्यवस्था और जनता के बीच की सीढ़ी बनी थी, इस आजादी में सरकार और जनता के बीच खाई बन जायगी। जिन्होंने जनता की किस्मत की डोरी को उस समय शासन के चरणों में बांधा था वे ही आज सरकार और जनता के सम्बन्ध-सूत्र को तोड़ देंगे। गुलामी और आजादी के युग की यह नैतिक प्रतिकूलता इस नवजात राष्ट्र के लिये अभिशाप बन जायगी।

अस्तु हमें अपने आप को धोखा देने से बचने के लिये राष्ट्रनिर्माण की इस मूलभूत समस्या के महत्त्व को स्वीकार करना चाहिये। हमें डर है कि हमारी सरकारें इसको इतना महत्त्व नहीं देती और यह मान बैठी है कि शिक्षा-व्यवस्था के रूप-रंग में थोड़ा सा ऊपरी सुधार भर कर देने से काम चल जायगा।

यह सच है कि मनुष्य निर्माण के कार्य में और उसका संस्कार बदलने में मिट्टी, पानी और लोहाकी योजनाओं की अपेक्षा अधिक समय लगेगा। किन्तु यह समझ में आनेवाली बात नहीं है कि जो अधिक महत्त्वपूर्ण काम हो और जिसमें अधिक समय लगता हो उसे सबसे पीछे आरम्भ किया जाय उसपर सबसे कम ध्यान दिया जाय और धीरे-धीरे चलाया जाय जब कि बाकी सारी दूसरी बातों की सफलता उसी पर और एकमात्र उसी पर निर्भर है। आज बापू होते तो सबसे पहले यही करते, जिन्होंने आजादी की लड़ाई के युग में भी सबसे अधिक इसी काम को महत्व दिया कि मनुष्य मनुष्य कैसे बने। वह आत्मा और उसकी सँस्कृति का मूल्य सब कुछ खोकर भी कैसे समझें? वही बापू, राष्ट्र की आत्मा को पथ-भ्रष्ट देखकर और देश को इस मानसिक व्याधि में पड़ा जान कर और कोई बात कैसे सोचते? किन्तु हर बात में उनका नाम लेनेवाले और सब कुछ उन्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के नाम पर करनेवाले उनके अनुयायी नौकरशाही के पथ पर बड़ी शान से चलने वाली योजना की हवा गाड़ियों पर बैठ शिक्षा-व्यवस्था की उपेक्षित झोपड़ी में राष्ट्र की बीमार और तड़पती हुई आत्मा की ओर तिरछी नजरों से देख भर लेते हैं। यदि सचमुच शासन को उसकी चिन्ता हो तो देश के सबसे अच्छे व्यक्तियों की शिक्षा-विभाग में ही आवश्यकता है। उन्हें वहाँ जाने का प्रोत्साहन मिलता, शिक्षक के व्यक्तित्व और उसकी मर्यादा का नया मूल्य निर्धारित किया जाता। किन्तु सबको अनुभव है कि जहाँ पहले लोग मिलते भी थे वहाँ आज शिक्षक बनकर कोई भी आना ही नहीं चाहता। आते भी हैं तो वही लोग जो अपने भाग्य की परीक्षा में हार कर शिक्षक के कार्य को दुर्भाग्य समझकर स्वीकार करते हैं। आज की सामाजिक-व्यवस्था प्राणों के देश को छोड़कर काया की उपासना की ओर कितनी तेजी से भागी जा रही है। स्वराज्य की लड़ाई में शानदार-विजय प्राप्त करनेवाली देश की आत्मा में पराजय, पलायन, उदासीनता और उत्साहहीनता की इस वृत्ति का विकाश देश की बदकिस्मती का नंगा रूप है।

[ श्री जगदीश त्रिगुणायत ]

हमारी शिक्षा की समस्या जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही गंभीर भी है। इस बात की आवश्यकता है कि हम सामाजिक—जीवन के नये मूल्य निर्धारित करें। हमें पिछली और वर्त्तमान मान्यताओं तथा अभिरुचियों को बदलने की और वर्त्तमान धारा को मोड़ देने की आवश्यकता है। आखिर सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का अर्थ क्या है? जिस प्रकार आज की सारी योजनायें गाँधीवाद के आधार पर बन रही हैं उसी प्रकार हम अपनी सभी अभिरुचियों को सामाजिक चेतना कह दिया करते हैं। तो क्या शहरों के लाखों हजारों लोगों का एक जगह घर बना कर रहना, एक स्कूल में अपने बच्चों को भेजना, किसी उत्सव में या नेता के आगमन पर एक ही मैदान में भीड़ लगा देना, एक हाल में सिनेमा देखना, एक होटल में चाय पीना, कभी क्लब में, कभी टेनिस में और कभी क्लब में मिल लिया करना सामाजिक चेतना है? वह मन की वासना हो सकती है, इन्द्रियों की लोलुपता हो सकती हैं, माया का प्रलोभन हो सकता है किन्तु सामाजिक चेतना इतनी सस्ती चीज नहीं है। जहाँ समाज के प्राणों में पीड़ा-दर्द है, उसके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दर्द पैदा होना सच्ची सामाजिक चेतना है। एक देहात का बच्चा जब पढ़ना आरम्भ करता है तब उसकी बुद्धि अविकसित होती है और उसकी चेतना संकीर्ण परिधि में रहती है, इसलिये उसकी शिक्षा का सच्चा अर्थ यही है कि उसकी उस चेतना का विकास हो जिससे अपने घर से, गाँव से और वहाँ के समाज से उसका प्रेम बढ़े। अपने बन्धुओं के प्रति उसके मन में ममता, प्रेम और सहानुभूति का विकास हो। उसके हाथ पैरों में सक्रियता और कर्मठता आवे तथा उसकी आत्मा के स्नेह पूर्ण प्रदीप में ज्योति के समान प्रज्वलित हो उठे। जो उसे और उसके बन्धुओं को विश्वात्मा तक और फिर परमात्मा तक जाने की राह दिखावे। सच्ची सामाजिक चेतना यही है। यह नहीं कि वह निरीह बालक अपने घर स्वाभाविक ममता और अपने भाइयों के अपनापन के नन्हें से अंकुर को स्कूल के बाजार में बाजारू अभिरुचियों के मूल्य पर बेंच दे। वे मायावी प्रलोभन उसके प्यारे घर को छुड़ाकर उसे शहरों में ढकेल ले जायें।

आज की शिक्षा सारी सभ्यता को शहरी जीवन की ओर दौड़ाये लिये जा रही है। ममता-मयी प्रकृति को पीछे छोड़ हम मादकतामयी विकृति की ओर आगे जा रहे हैं। हाँफती मानवता अपनी खोई हुई आत्मा को दौड़-दौड़ कर कभी चिमनियों के धुएँ में, कभी सड़कों की हलचल में, कभी होटलों की लकदक में और कभी पार्कों के कोला-हल में ढूँढ़ रही है। किन्तु उसे नहीं पाती। उस प्यासी हुई हिरणी को यह रेत की माया लहराते हुए जल के समान जान पड़ती है।

शिक्षा की सार्थकता तभी है जब हम प्राकृतिक जीवन से सादगी से और ईमान से सम्बन्ध जोड़ें और कर्म को गौरव और अभिमान की बात समझें सेवा और त्याग के प्रति हमारे मन में अनुरक्ति पैदा हो। और, देश की सबसे बड़ी संख्या जिन गाँवों में रहती है, उनके जीवन के प्रति हमारे मन में आकर्षण पैदा हो। निश्चय ही बापू द्वारा चालायी गयी 'बेसिक शिक्षा पद्धति' इन उद्देश्यों को पूरा करने वाली है। किन्तु हमें 'बेसिक' की केन्द्रीय भावनाओं को समझना होगा। किसी खास 'मेथड' या पद्धति से जितना सम्बन्ध है उससे अधिक मनोवृत्ति और भारत से सम्बन्ध है। इसलिये मनोवृत्ति के निर्माण के लिये बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। जैसे :—"ईश्वर ने कहा कि प्रकाश हो और लो हो गया।" उसी तरह अधिकारियों ने कहा सभी हाई, मिडिल, यू० पी० और एल० पी० स्कूलों 'में' बेसिक हो और फिर समझ लिया कि हो गया। 'बेसिक' को ऐसी ही जादू की छड़ी से होने वाली चीज समझने के कारण ट्रेनिंग स्कूल से अधिकांश लोग केवल कुछ तकली, चर्खा और खुरपी-कुदाल का झमेला लेकर निकलते हैं। यह सब चीजें बोझ के समान उन पर लदी होती हैं। और बेसिक की भावना और और कल्पना बहुधा अधिकांश लोगों के गले नहीं उतरती।

यही कारण है कि मिडिल और हाई स्कूलों में यह योजना एक गोरख-धंधा बनी हुई है। न शिक्षक हैं, न सामान हैं और न साधन हैं। शिक्षा विभाग को बड़ी सतर्कता के साथ इसका साधन जुटाने तथा इसके प्रति उत्साह भरने की आवश्यकता है।

दूसरी ओर 'बेसिक शिक्षा पद्धति' में स्वाव-लम्बन और अनिवार्य उत्पादन को महत्त्व दिया जाता है। यह ठीक है कि जब काम होगा तब उत्पादन भी होना चाहिये और होगा ही। किन्तु, हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि इस प्रयोग का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रधान उद्देश शिक्षा है, उत्पादन नहीं। स्वावलम्बन पूर्ण शिक्षा का प्रतिफल हो सकता है लेकिन वही उद्देश्य नहीं हो सकता, और विशेष कर इस प्रयोग की अवधि में जब कि इस शिक्षा पद्धति का अपनी सारी भावनाओं और कल्पनाओं के साथ आने में देरी है। यदि हम स्वावलम्बन या निश्चित उत्पादन पर जोर देंगे तब उस उद्देश्य की हत्या हो जायगी। क्योंकि किसी स्कूल के लड़कों से कुछ निश्चित प्रमाण में आलू और बादाम पैदा करा लेना उतना कठिन काम नहीं। किन्तु, काम के प्रति उत्साह, सम्मान की भावना और अभिरुचि पैदा कर सकना कठिन काम है।

हमें एक दूसरे खतरे से भी सावधान होना है। योजना बनाने वाले इतने महत्वपूर्ण कार्य के के लिये बिना साधन जुटाये और बिना पूरी सतर्कता दिखाये जिस तरह इसके मूलभूत उद्देश्यों को धोखा देंगे उसी तरह इसका प्रयोग करने वाले और बरतने वाले भी आँकड़ेबाजी के जरिये और रिपोर्ट लिखकर धोखा देंगे। यदि ऊपर वालों ने इसके महत्त्व को नहीं समझा तो नीचे वालों को इस नहीं समझने की प्रवृत्ति को और भी अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। तो क्या आज अधिकांश दूसरे विभागों में जैसे कागज पर लाखों वृक्ष लगते हैं और लाल फीतों के अन्दर दुनियाँ भर का डेवलपमेंट होता है, उसी तरह शिक्षा विभाग की गाड़ी भी उसी राह चलेगी ?

आज हमारी सरकारों को, शिक्षा विभाग को, अधिकारियों को, शिक्षकों को और प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को, राष्ट्र की इस वेदना को समझना चाहिये, यदि हमने इसे समझा तो दूसरों को भी समझा सकेंगे और देश की अन्तरात्मा की इस कातर पुकार को अपने उन शासकों को भी सुना सकेंगे जिनकी ओर से दुर्भाग्यवश उन्होंने अपने कान बन्द कर रखे हैं।

# श्वेतकुष्ठ की वनौषधि

★

**श्वेतकुष्ठ की आश्चर्यजनक महौषधि श्वेतकुष्ठ या सफेद दाग किसी कारण से हो गया हो इसे सिर्फ तीन दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। यदि आप अनेकों दवाइयों से निराश हो चुके हों तो एक बार और परीक्षा करें।**

मूल्य ५) पाँच रुपया लगाने की दवा का।
मूल्य ५) पाँच रुपया खाने की दवा का।

पता :—
विजय लेबोरेटरीज (ग० त०)
पो० झींकपानी (सिंहभूम)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ★ चमड़े का उद्योग ★

ले०—श्री अखौरी नारायण शेखर सिन्हा

चमड़े का उद्योग कहने से उन सभी उद्योगों का बोध होता है जो मृत पशु के शरीर से खाल उतार कर उनसे तैयार चमड़े या चमड़ों से बने जूता, चप्पल इत्यादि उपयोगी सामान ग्राहकों के हाथ बेंच देने तक के अन्तर्गत हैं। ये धन्धे जितने बड़े पैमाने पर देश भर में फैले हुए हैं उतना ही आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भी हैं क्योंकि चमड़ा हमारे देश में डालर उपार्जन करने वाले निर्यातों में से है। दूसरी महत्वपूर्ण बात चर्म्मोद्योग के सम्बन्ध में है कि देश में प्रतिवर्ष पायी जाने वाली खालों (कच्चे चमड़े) की संख्या सारी दुनिया में पाई जाने वाली खालों का एक पांचवां हिस्सा है यद्यपि सारी दुनिया के एक तिहाई पशु हिन्दुस्तान में दी गई हैं। तीसरी महत्वपूर्ण बात है कि १९३१ की जनसंख्या के अनुसार किसी भी अन्य देश के मुकाबले चमड़ा सम्बन्धी पेशे में लगे हुए लोगों की संख्या सबसे ज्यादा थी। उस समय मोचियों (चमारों) की संख्या १६४४५४८७ थी जो अब और भी बढ़ गई होगी। इनके अलावे मुसलमान लोग बहुत बड़ी संख्या में इस पेशे में लगे हुए हैं सो अलग। हिन्दुओं में सवर्ण लोगों ने शुरू से ही इन धन्धों को जघन्य समझ कर अपने को इन से अलग रखा पर अब कुछ शिक्षित नौजवान इन महत्वपूर्ण उद्योगों की ओर आकर्षित होने लगे हैं।

यों तो चमड़े का उद्योग हमारे देश में काफी संगठित हैं पर जो रूप इसके संगठन का आज हमारे यहाँ है उससे न तो पूरे रूप से देश को फायदा है और न करोड़ों की संख्या में इनमें लगे हुए पेशेवर जनता को ही। चर्मोद्योग की शुरूआत होती है मृत पशुओं के शरीर से खाल उतारने से। यहाँ चमड़ा और खाल का भेद जान लेना अत्यावश्यक है। किसी भी मृत पशु के शरीर से जो चीज उतारते हैं उन्हें खाल कहते हैं और चमड़े खालों को उस बदली हुई हालत में कहते हैं जब वे सड़ती-गलती नहीं और जब उनपर पानी, धूप और हवा का बहुत कम असर होता है। हिन्दुस्तान में साधारणतः प्रतिवर्ष निम्न लिखित संख्या में खालें पायी जाती हैं जिनका मूल्य लगभग १८॥ करोड़ रुपये होते हैं :—

गाय बैल इत्यादि की खालें लगभग—९९१५५०० कीमत १० करोड़ रुपये ८) प्रति खाल के दर से।

भैंस की खालें लगभग —२५७४२ कीमत ४.२ करोड़ रुपये १६) रु० प्रति खाल।

घोड़े ऊँट बगैरह की खालें लगभग—२४१२०० कीमत २४ करोड़ १० रु० प्रति खाल के हिसाब से।

बछड़ों की छोटी खालें लगभग—३७५८४०० कीमत ५५ लाख रु० के लगभग।

भैंस के बच्चों की खालें १४९९००० कीमत लगभग ५५ लाख रु०।

भेड़ों की छोटी खाले—१४०९१२०० कीमत लगभग एक करोड़ ४१ लाख रु०।

बकरियों की छोटी खालें—१८५२०८०० कीमत लगभग ३ करोड़ ७० लाख रु०।

कुल कीमत लगभग १८॥ लाख रु०।

इनके अलावे निम्न लिखित उपयोगी चीजें मृत पशुओं के शरीर से प्राप्त की जा सकती हैं —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हड्डी—लगभग ३२० लाख टन कीमत लगभग तीन करोड़ २८ लाख रुपये।

मांस उपयोगी खाद के रूप में – ३.२४ लाख टन कीमत ३ करोड़ २८ लाख रुपये के लगभग।

चर्बी—(साबुन इत्यादि कई उद्योगों के लिए उपयोगी, लगभग ६५५१५० मन, कीमत लगभग ३ करोड़ रुपये।

दांत, खूर, सींग इत्यादि कीमत लगभग—५५ लाख रुपये।

कुल कीमत लगभग १० करोड़ रुपये

उपरोक्त चीजें जिन मृत पशुओं के शरीरों में पायी जा सकती हैं उनमें स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए तथा कत्ल किए हुए दोनों तरह के पशु शामिल हैं। पर अपने देश में स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए पशुओं की संख्या लगभग ८५ प्रतिशत हैं और बाकी १५ शहरों के कसाईखानों में कत्ल होने वालों की। मृत पशुओं से पूरी कीमत की चीजें जिनके आंकड़े ऊपर दिये गए हैं प्राप्त नहीं की जाती है। खालों को छोड़ कर बाकी चीजों में थोड़े अंश में हड्डियों का निर्यात होता है या उनकी खाद बनायी जाती है। बाकी सभी चीजें मांस, चर्बी, तांत वगैरह तो करीब-करीब बरबाद ही हो जाती है यहाँ तक हड्डी का भी ८०% बरबाद जाता है क्योंकि पशुओं के शरीर पर खाल उतार कर देहाती में लोग मृत पशु के बाकी शरीर को यों ही छोड़ देते हैं। इससे गन्दगी तो फैलती ही है सथ ही बहुत सी बहुमूल्य चीजें बरबाद हो जाती—हड्डी, मांस, चर्बी, तांत वगैरह की सालाना इस बरबादी का हिसाब लेखक ने टैनिंग कमीसन को दिया था। जो लगभग ८ करोड़ रुपये के बराबर में था। इन आठ करोड़ रुपये की चीजों को बरबादी से बचा लेने पर यह एक राष्ट्रीय सम्पत्ति होगी जिससे लाखों गरीब हरिजनों के उजड़ते हुए घर समृद्धिशाली होकर फिर से बस पायेंगे। हर एक सौ गांव पर सहकारी रूप में एक मृत पशुशाला कायम करने की योजना राष्ट्रीय निर्माण समिति के पास है। इन मृत पशुशालाओं में सुधरे ढंग से खालों को निकाल कर उनका संरक्षण किया जायगा ताकि दो तीन महीने के अन्दर चर्मालय में पहुँचने तक वे सड़े गले नहीं। इसके अलावे मृत पशुशाला हड्डी, मांस वगैरह से खाद बनायी जायगी। पुट्ठे से तांत, चर्बी इकट्ठा कर वैज्ञानिक पद्धति से सफाई कर उसे साबुन वगैरह के लिए उपयोगी बनाया जायगा। लगभग १५०००) रुपये लगाकर बिहार सरकार की ओर से एक ऐसी मृत पशुशाला कासिर, जिला रांची में चलाई कर दी है।

खालों का उतारना संरक्षण तथा हड्डी, मांस इत्यादि का खाद बनाने के बाद नम्बर आता है चमड़ा पकाई के उद्योग का। लोगों का ख्याल है कि अच्छे चमड़े बड़े-बड़े कल-कारखानों में ही तैयार किए जा सकते हैं पर यह बात गलत है। छाल-पकाई के तरीके से तैयार होनेवाले चमड़े बिना बड़ी-बड़ी मशीनों की सहायता के दिहातों में स्थित छोटे कारखानों में तैयार किए जा सकते हैं। सोल, लाइनिंग, जिन साज, सूटकेश इत्यादि दुनिया में बरते जाने वाले सारे चमड़ों का दो तिहाई हिस्सा इसी तरीके से तैयार किया जाता है। सिर्फ क्रोम, ग्लेसकिड, बिली काफ इत्यादि थोड़े से चमड़े बिना बड़ी मशीनों के सहारे व्यावसायिक ढंग पर नहीं तैयार किए जा सकते हैं। पर मौजूदा संगठन जो चर्मोद्योग का है उससे चमड़ा पकाई के उद्योग कलकत्ता, मद्रास, कानपुर, आगरा, बम्बई, हैदराबाद इत्यादि थोड़े से बड़े शहरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही केन्द्रित हैं। इसका नतीजा यह है कि खाल से चमड़ा बनाने में नफा जो होता वह पूंजीपतियों की ही जेब में चला जाता है। साथ-साथ बहुत सी खालें दिहातों से निकाल कर बड़े-बड़े शहरों में पहुँचाये जाने तक गन्दगी तो फैलाती ही रहती हैं और आवागमन में सड़ भी जाती हैं। राष्ट्रीय योजना निर्माण समिति के सामने इस तरह की एक योजना जिनसे साधारण तौर पर व्यावसायिक ढंग से चलने वाले छोटे-छोटे चर्मालय देश भर में स्थापित किए जायँ। बिहार में भी सरकारी तत्वावधान में इस तरह का एक चर्मालय गुमला, जि० राँची में चल रहा है और चार और स्थापित करने की बात है।

चमड़ा तैयार हो जाने के बाद जूता, चप्पल, मनिबैग वगैरह इस्तेमाल की जरूरी चीजों को तैयार करने के उद्योग आते हैं! ये उद्योग विशुद्ध गृहोद्योग के रूप में चलाये जा सकते हैं। हिन्दुस्तान भर में जूतों, चप्पल, सूटकेश तरह तरह के चमड़े के अन्य उपयोगी सामान बनाने की हस्तकला बहुत विकसित है और यदि उचित ढंग से संगठन किया जाय तो सारे संसार के बाजारों के लिए हमलोग एक से एक सुन्दर चमड़े की बनी चीजें दे सकते हैं। बड़े दुखः की बात है कि उचित संगठन के अभाव में यह हस्तकला हमारे देश में दिनोंदिन मरती जा रही है और इसमें लगे कुशल कारीगर इस धन्धे को छोड़कर जीने के लिये दूसरे रोजगार अपनाते जा रहे हैं। प्रतिद्वन्दिता भी उन्हें पूंजीवादी ढंग पर संगठित बहुत बड़े मशीन वाले कारखाने के बने जूतों से करनी पड़ रही हैं। वहाँ मशीनों के सहारे एक कारीगर के आठ घंटे की मजदूरी से तैयार होने वाले औसतन १० जोड़े जूते और कहाँ एक हस्त कारीगर के १०, वा १२ घंटे के घोर परिश्रम के फलस्वरूप तैयार १ जोड़ा जूता। और तारीफ यह कि ग्राहक से दोनों का दाम बाजार में आज बराबर ही मिल रहा है यद्यपि हाथ वाला जूता ज्यादा सुन्दर और टिकाऊ होता है, गृहोद्योग के सच्चे विकास के लिये तथा लोगों की रोजी कमाने का रास्ता निकालने के लिये हमारी सरकार को उचित है कि वह जूते बनाने वाले बड़ी बड़ी मशीन वाले कारखानों को बन्द कर दे।

बिहार सरकार ने अब तक लगभग ३,९०,१६३) रुपयों की चर्मोद्योग सम्बन्धी योयनाएँ मंजूर की हैं और शुरू होने वाली है। पर जो ढंग अब तक उनका रहा है उनसे पेशेवर कारीगरों को या गरीब लोगों को विशेष फायदा होने की संभावना नहीं है। उद्योग मंत्री के सामने सारे गृह तथा लघुउद्योगों को ठोस रूप में पूर्ण संगठित करने का प्रश्न बिचारार्थ पड़ा हुआ है। चर्मोद्योगों को छोटे-छोटे सहकारी कारखानों रूप में व्यवस्थित ढंग से चलाने का प्रश्न भी उन्हीं के साथ जुड़ा हुआ है। यदि सरकार ने उचित संरक्षण और प्रोत्साहन लघु तथा गृहोद्योगों के रूप में चर्मोद्योगों को दिया तो यह एक बहुत बड़ा संस्था में हरिजनों तथा मध्यम वर्ग के बेकार शिक्षित लोगों की आर्थिक कठिनाई दूर करने में बहुत दूर तक सफल होगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिसने आधी शताब्दी पूर्व बृटिश सत्ता के साथ ही पूंजीपतियों और जमीन्दारों के विरुद्ध आवाज बुलन्द की थी

# ★ अमर शहीद बिरसा भगवान ★

( ले० श्री राम चरित्र सिंह )

भारतीय स्वतंत्रता के भस्मावशेष पर बृटिश सत्ता अपने को सजधज चुकी थी। दासता से मुक्ति के लिए भारतीयों का सशस्त्र विद्रोह दबाया जा चुका था। किन्तु लोगों के हृदय के भीतर भस्माव मुण्ठित अंगार की तरह विद्रोह की भावना थी ही। ऊपर से शान्ति दीखतीं थी परन्तु भीतर-भीतर एक अकुलाहट की भावना काम कर रही थी। सन् '५७ के बाद राजनीतिक दृष्टि से तो लोगों को दबाया ही जा रहा था साथ ही सांस्कृतिक दृष्टि से भी भारतीयों को दुर्बल बनाने की साजिश चल रही थी। देश के अन्य भागों की भांति ही छोटा नागपुर में भी सन् '५७ के विद्रोही नेताओं का खात्मा करके उनके सहयोगियों पर दमन की चक्की चलायी गयी। लोगों की जमीन्दारियां छीन ली गईं तथा अन्य प्रकार की सम्पत्ति जब्त करके लोगों की स्वातंत्र्य-भावना को कुचल देने का प्रयत्न किया गया। सांस्कृतिक दृष्टि से भी लोगों को दबाने के लिए छोटानागपुर में पादरियों का जाल बिछा दिया गया और उनकी हर प्रकार की सहायता करके यहाँ की सांस्कृतिक भावना को समाप्त किया जाने लगा था। जनता निराशा के अंधकार में पड़ी थी। कोई राह दिखाने वाला नहीं था। उसी काल प्रवाह में राँची जिला के गेरेड़िया उलिहातू ग्राम के एक गरीब मुण्डा परिवार में एक बालक ने जन्म लिया। यह घटना आज से करीब ७७ वर्ष पूर्व की है। उसी बालक को आगे चलकर लोगों ने बिरसा भगवान के रूप में पहचाना और उसकी पूजा भी की।

आप का बचपन बड़ी गरीबी में बीता। अपने पिता श्री सुगना मुण्डा की आप चतुर्थ संतान थे। दरिद्रता के कारण आपके पिता ने आप को अपने ननिहाल भेज दिया था ताकि वहां आप का पालन-पोषण हो सके। बचपन में आप अपने मामा की भेंड़, बकरियों को चराया करते थे। कुछ वर्षों के पश्चात् आप अपनी मौसी के यहां चले गये। उस गांव में एक जर्मन पादरी आया करता था। वह हिन्दुत्व के विरुद्ध और ईसाई धर्म के पक्ष में प्रचार किया करता था। उस गांव के बच्चों की पढ़ाई के लिए उसने एक शिक्षक भी रख दिया था। वहीं आस-पास के लड़के एकत्र होकर पढ़ते थे। आपकी पढ़ाई का भी श्रीगणेश वहीं से होता है। पढ़ने-लिखने में अधिक मन लगने के कारण भेंड़, बकरियों की चराई में बाधा पड़ने लगी। फलतः एक दिन आपके मौसा ने आपको दण्डित किया। आप इस पर मौसी का घर छोड़कर दूर के गांव में श्री आनन्द पाण्डेय के घर जाकर रहने लगे। बालक बिरसा दिन भर उनके खेतों में काम करते और रात में उनके निकट बैठ कर पढ़ते। पाण्डेय जी पढ़ाने लिखाने के अतिरिक्त रामायण एवं महा भारत की कथाएँ बच्चों को सुनाते थे जिसको बिरसा खूब मन लगा कर सुनते थे। रामायण और महा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारत के प्रमुख पात्रों के उदार चरित्रों का आपके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। उसी समय एक वैष्णव साधू की संगति का भी संयोग आप को मिला। उस साधू के मूल्यवान उपदेशों का एक अमिट प्रभाव उस बालक के ऊपर पड़ा जो अन्त तक बना रहा।

फिर आप बुड़जू मिशन में तथा चाईबासा मिशन हाईस्कूल में पढ़ने लगे। आप बड़े ही मेधावी छात्र थे। आप की प्रतिभा देखकर स्कूल के मास्टर एवं पादरी लोग भी मुग्ध थे। उनलोगों का प्रयत्न होता था कि आप ईसाई हो जाते। लेकिन एक बालक होते हुए भी आप भारतीय संस्कृति के ऐसे पक्के पुजारी थे कि लोगों के लाख प्रयत्न करने एवं प्रलोभन देने पर भी आप कभी टस से मस न हुए। मिशन स्कूल में भर्ती होने के पूर्व ही उस वैष्णव महात्मा के उपदेश के प्रभाव में आप अहिंसावादी बन गये थे तथा मांसभक्षण को तिलाञ्जलि दे दी थी। बुड़जू मिशन में जब आप मिड्ल क्लास में ही पढ़ रहे थे, आप के ईसाई साथियों ने आपको मांस खिलाने का प्रयत्न किया। अधिक दिक करने पर आप ने उस स्कूल को छोड़ दिया लेकिन अपने व्रत को भंग न होने दिया। फिर आप चाईबासा मिशन हाई स्कूल में पढ़ने चले गये। वहाँ भी क्रिश्चियन साथियों ने कोशिश की कि आप मांसभक्षण प्रारम्भ कर दें। लेकिन आप विचार के पक्के थे। आप कहते थे कि सभी प्राणी उस परमपिता की सन्तान हैं। फिर मेरा क्या अधिकार है कि मैं किसी का भक्षण करूँ? जो व्यक्ति परमपिता की सन्तान की हत्या करता है उसपर वे अवश्य अप्रसन्न होंगे। इसलिए मांसभक्षण सर्वथा धर्म विरुद्ध है। एक दिन धोखे से एक साथी ने मांस का एक टुकड़ा आपके मुख में डाल दिया। इसके बाद आपने अनुभव किया कि इन क्रिश्चियन लोगों के बीच रहकर अपने धर्म कर्म एवं संस्कृति की रक्षा करते हुए पढ़ना कदापि संभव नहीं। अतः आपने उस स्कूल को भी छोड़ दिया। इसके बाद घर पर आकर स्वाध्याय के द्वारा आपने अपनी योग्यता बढ़ाने में श्रम किया और सफलता भी पायी।

घर पर रहते हुए आपने अनुभव किया कि मुन्डा समाज रूढ़ियों का गढ़ है तथा अनेक प्रकार की बुराइयों का शिकार बना हुआ है। ये आदिम जाति के लोग सिंग बोंगा (सर्वशक्तिमान) के अतिरिक्त अनेक बोंगाओं (देवताओं) एवं मृत पूर्वजों तथा अन्य लोगों के भूत प्रेतों को पूजते हैं। इन लोगों का विश्वास है कि इन देवताओं एवं भूतप्रेतों की पूजा मद्य, उजली मुर्गी तथा भेंड़, बकरों की बलि देकर ही होगी। इसी से ये प्रसन्न रहेंगे और किसी प्रकार का कष्ट नहीं देंगे। ये अपने बनाये इली एक प्रकार की शराब (जो भात और कुछ जड़ी-बूटियों से तैयार होती है) तथा भट्ठी वाली शराब खूब पीते हैं। यह मद्यपान मुन्डा जाति का बहुत बड़ा कोढ़ है और इस समाज के अधः-पतन का मुख्य कारण है। इनके समान श्रमशील जातियां इस देश में कम होने पर भी इन अवगुणों के कारण ये सब से अधिक गरीब और अभावग्रस्त बने हुए हैं। आदिम जातियों में जितने रोग शोक होते हैं, कुसंस्कार के कारण ये लोग सब कष्टों का कारण भूत-प्रेतों एवं डाइनों को ही मानते हैं। इसलिए ओझा लोगों की इन लोगों के बीच खूब चलती-बनती है और लोग उनसे खूब डरते हैं। ये लोग आज भी दवाओं और डाक्टरों की अपेक्षा भूत-प्रेत, डाइन, ओझा एवं मंत्रों पर ही अधिक विश्वास करते हैं तथा उन्हें महत्व देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं। इसका परिणाम होता है कि बीमार लोगों के लिए दवा या डाक्टर की कोई उचित व्यवस्था नहीं हो पाती है। फलस्वरूप बहुत लोग अकाल मृत्यु के शिकार होते रहते हैं। ये लोग नादानी के कारण इतना नहीं समझते कि जहाँ कुनैन की आवश्यकता है, वहाँ ओझा का बेंत क्या करेगी? इनलोगों के जीवन का अधिकांश समय भूत-प्रेतों की पूजा और तंत्र-मंत्र में ही व्यतीत होते हैं। इन्हीं कारणों से ये लोग उन्नति नहीं कर सके।

बिरसा एक होनहार युवक थे। देश और समाज की आवश्यकताओं को समझने की शक्ति भी उनमें थी। दूसरे ईसाई मिशनरियों के सम्पर्क ने उनकी आँखें और भी खोल दी थीं। उन्होंने समझ लिया कि आदिम जातियों की अवनति के मुख्य कारण इनके कुसंस्कार एवं समाज में प्रचलित रूढ़ियाँ ही हैं। उन्होंने निश्चय किया कि पहले इन रूढ़ियों से ही मोर्चा लेना चाहिये। अतः उन्होंने सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध अपना प्रचार प्रारम्भ कर दिया। इनके सुधार आन्दोलन के प्रारम्भ में इनकी बात मानने के बदले संकीर्ण ख्याल के लोग उल्टे इनका विरोध और बहिष्कार करने लगे। यह कोई नयी बात न थी। संसार भर के महापुरुषों को अपने सेवा एवं सुधार के कार्यों के प्रारम्भ में इसी प्रकार प्रोत्साहन और सहायता के बदले विरोध और कठिन विरोध का सामना करना पड़ा है। समाज तो उसकी वाहवाही करता है न, जो समाज को पथभ्रष्ट होने से न रोक कर उसी का साथ देता है। बिरसा ऐसे लल्लो-चप्पो करने वाले पुरुष नहीं थे। ये तो उन महापुरुषों में से एक थे जो जीवन में बड़ा से बड़ा कष्ट सह कर भी पथभ्रष्ट समाज को चांटे पर चांटे मारता है तथा उसे ठीक मार्ग पर लाकर छोड़ता है। आपकी दृढ़ता का परिणाम हुआ कि आपके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी और धीरे धीरे आप की ख्याति बिजली की भाँति चतुर्दिक फैल गयी।

आप में कुछ चमत्कारी गुण भी थे, ऐसा लोग बतलाते हैं। एक बार कुछ साथियों के साथ आप जा रहे थे। आपके साथियों को ऐसा मालूम पड़ा कि आपके पास एक प्रकाश-पुंज आ पहुँचा। तेज ऐसा कि उन लोगों की आंखें चौंधिया गयीं। थोड़ी देर के बाद लोगों ने देखा कि बिरसा भगवान ध्यानावस्थित होकर बैठे हुए हैं। पूछने पर आपने बतलाया कि स्वयँ सिंगबोंगा आये थे और मुझे समाज में धर्मोपदेश के द्वारा लोगों को वास्तविक धर्म के मार्ग पर लाने का आदेश देकर चले गये। उनका दावा था कि वे ईश्वरीय आदेश से ही सब काम करते हैं। महात्मा गाँधी भी अपनी आत्मा की पुकार अथवा ईश्वरीय आदेश के अनुसार ही कार्य करते थे। इस बात को वे बार-बार दोहराते भी थे। श्री बिरसा भी ऐसा ही कहा करते थे। एक बार की घटना लोग बतलाते हैं कि एक बुढ़िया अपने बीमार बच्चे को लेकर उनके पास आयी। उन्होंने उसे छू कर कह दिया कि जाओ, अब यह अच्छा हो गया। इतना कहना था कि वह लड़का स्वस्थ होने लगा और कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस प्रकार के अनेक चमत्कार की बातें उनके सम्बन्ध में प्रचलित हैं।

यदि धार्मिक दृष्टि से देखा जाय तो आदिम जातियों में वे एक ईश्वरीय दूत (पैगम्बर) ही पैदा हुए थे। आपका आदेश था कि सब लोग पवित्र धागा (जनेऊ) धारण करें तथा आचरण की शुद्धता को प्रधानता दें। वे एकेश्वर वाद के सिद्धान्त को मानते थे। एक ही परमपिता परमात्मा की उपासना एवं उसके गुणों का कीर्त्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करने की बात वे कहा करते थे। लाखों बोंगाओं (देवताओं) एवं असंख्य भूत-प्रेतों की पूजा करना वे व्यर्थ बतलाते थे। वे नित्य प्रार्थना के बाद उपस्थित लोगों के लिए कुछ प्रवचन करते थे जैसा कि गांधी जी अपने समय में करते थे। आपके विचार से मद्यपान शरीर और बुद्धि दोनों के लिए हानिप्रद है तथा उसे त्याग देने की सलाह दिया करते थे। प्रार्थना प्रवचन में बहुधा जीव-हत्या एवं मांसभक्षण, मद्यपान आदि विषय रहा करते थे। आप बाह्य तथा आभ्यन्तरिक शुद्धि पर जोर देते थे। जब कभी किसी क्षेत्र में चेचक, हैजा अथवा अन्य बड़े पैमाने पर फैलने वाली बीमारियों का प्रकोप होता तो बिरसा अपने शिष्यों के साथ लोगों की सेवा सुश्रूषा तथा सहायता करने में जुट जाते थे। कुछ विरोधी लोग आप की सेवा की प्रशंसा के बदले उल्टे कहा करते थे कि बिरसा के सुधारवादी प्रचार के कारण ही ये विपत्तियाँ इस इलाके में आती हैं। आप इन मूर्खतापूर्ण बातों की जरा भी परवा नहीं करके सेवाकार्य में जुटे रहते थे। इन सब बातों का परिणाम हुआ कि पीछे चलकर लोग आपको साक्षात भगवान का अवतार समझने तथा आप की पूजा करने लगे। लोग उन्हें आज भी धरती आबा (पृथ्वी के पिता) कहते हैं। आपने धर्म सम्बन्धी एक पुस्तक भी लिखी थी जो आज अप्राप्य है।

तत्कालीन सरकार, पादरी एवं जमीन्दार कोई भी नहीं चाहते थे कि इन आदिम जातियों का उत्थान हो। इसीलिए बिरसा के कार्यों के विकास में ये बाधक होते थे। इक्कीस वर्षीय श्रमशील, तेजस्वी एवं कर्मठ युवक बिरसा ने इस बात को महसूस किया। आपका सामाजिक एवं धार्मिक सुधार का कार्य तो चलता ही रहा साथ-साथ अब अंग्रेजी सरकार, क्रिश्चियन पादरी तथा जमीन्दारों के विरुद्ध भी आवाज बुलन्द करने लगे। इनके हृदय में स्वातंत्र्य प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। आपके शब्दों में जादू के जैसा प्रभाव था। आप का दौरा जिस क्षेत्र में होता उस क्षेत्र के सभी लोग विद्रोही बन जाते। आपके प्रभाव से सरकारी अफसर, मिशनों के पादरी तथा जमीन्दार सभी घबड़ा उठते थे। कुछ ही दिनों में श्री बिरसा ने सर्वत्र लोगों के भीतर विद्रोह की भावना उत्पन्न कर दी। आदिम जाति के लोग आपके नेतृत्व में संगठित होकर पददलित करनेवाली ताकतों से मोर्चा लेने की तैयारी करने लगे।

सरकार के विरुद्ध बगावत की तैयारी और सरकार चुपचाप देखती रहे, यह कब संभव हो सकता है? विद्रोह के जनक श्री बिरसा भगवान् पर कड़ी नजर रखी जाने लगी। पादरी लोग भी रात दिन इसी फिक्र में और कोशिश में रहते थे कि किसी प्रकार अपने पथ के इस कंटक को दूर कर दिया जाय तो बड़ा उत्तम हो। कई बार तो ऐसा हुआ कि पुलिस वालों ने इन्हें पकड़ लिया तो इनके शिष्यों ने पुलिस वालों पर हमला करके उन्हें पराजित किया तथा इन्हें छुड़ा लिया। इस प्रकार की घटनाओं को सुनकर पादरियों की निन्द और भी हराम होने लगी। सभी मिशन वाले इन्हें पकड़वाने के लिये प्रयत्नशील रहने लगे। रेवरेण्ड मिस्टर लास्टी की सहायता से पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट ने सशस्त्र सिपाहियों के दल ले जाकर सुनसान रात्रि में बिरसा भगवान को सोये हुए में धोखे से पकड़ लिया। न्याय का नाटक हुआ और उन्हें सजा देकर जेल के चहारदीवारी के भीतर बन्द कर दिया गया। वास्तव में सरकार उन्हें बन्दीगृह में डालकर उनके स्वातंत्र्य आन्दोलन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कमर तोड़ देना चाहती थी। नेता को खोकर लोगों ने स्वातंत्र्य युद्ध के कार्य-क्रम स्थगित कर दिये। अंग्रेजों ने समझा कि अब इनलोगों के हौसले ठण्डे पड़ गये। तब विक्टोरिया की हीरक जुबिली के अवसर पर आप को मुक्त कर दिया गया। स्वतंत्रा के मतवाले बिरसा भगवान को चैन कहाँ ? आपके बाहर आते ही लोगों का उत्साह फिर दूना हो गया। आपने अपना दौरा शुरू किया। दो वर्ष तक झारखण्ड में सर्वत्र घूम घूम कर लोगों से मिलने और अपना संदेश सुनाते रहे। १८९७ और १८९९ ई० में ऐसा भयंकर अकाल पड़ा और १८९८ ई० में ऐसी महामारी फैली कि झारखण्ड की जनता त्राहि त्राहि करने लगी। ऐसी विपत्ति के समय सरकार और जमींदारों ने जनता के लिये कुछ भी न किया तथा पादरियों ने अकाल पीड़ित लोगों को अन्न के प्रलोभन दे देकर ईसाई बनाया। ऐसे कष्ट के समय भी अंग्रेजी सरकार और जमींदारों के अत्याचार तथा पादरियों के द्वारा संस्कृति विनाश के कार्य ने आग में घी का काम किया। श्री बिरसा भगवान की बातें जो वे इनलोगों के संबन्ध में कहा करते थे, अक्षरशः सत्य मालूम होने लगी। श्री बिरसा के नेतृत्व में गरीबों की सेना तीर-धनुष लेकर तोप और बन्दूक-धारी सरकारी सेना से लड़ने को उद्यत होने लगी। लोगों में पहले से प्रचार किया जा चुका था कि एक निश्चित दिन अपने अपने क्षेत्र में आक्रमण करके सभी अधिकारियों एवं अन्य अत्याचारियों का खात्मा कर दें। इस योजना के अनुसार १८९९ ई० का बड़ा दिन निश्चित किया गया। इस स्वातंत्र्य युद्ध के संचालन तथा इस सरकार को भगाकर झारखण्ड की शासन व्यवस्था चलाने के लिये श्री बिरसा भगवान ने अपने चुने हुए लोगों का एक मंत्रिमण्डल गठित कर लिया था। ऐसे मौके पर आप ने विद्रोह का शंख फूँक दिया। आपके शंख की जोशीली ध्वनि से झारखण्ड का वनप्रान्त गूँज उठा, सरकारी अधिकारियों की कलुषित आत्मा काँप उठी तथा आजादी के सैनिकों का जोश कई गुना बढ़ गया। चारों ओर सरकारी अधिकारियों, शोषक व्यापारियों, अत्याचारी जमींदारों एवं भारतीय संस्कृति के भीषण शत्रु पादरियों के बीच अचानक कुहराम मच गया। उन लोगों के लिये प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया। अनेक शोषकों, शत्रु अधिकारियों तथा पादरियों का खात्मा कर दिया गया। उनके अड्डे और घर जलाकर खाक कर दिये गये। कोशिश करने पर भी इस स्वातंत्र्य आन्दोलन को दबते न देखकर बृटिश सरकार ने फौज बुला ली। क्रान्तिकारी लोगों का हेड क्वार्टर डुम्बारी पहाड़ी में था। वहीं से चतुर्दिक फैले इस विद्रोह का सूत्र संचालन होता था। कुछ दिनों तक तो अंग्रेजी सरकार के सैनिक डुम्बारी पहाड़ी तक प्रयत्न करने पर भी नहीं पहुँच सके थे। वहाँ जाने वाले अंग्रेज सैनिकों को रास्ते में ही गुरिल्ला आक्रमण करके छिन्न भिन्न कर दिया जाता था। लेकिन आधुनिक अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित अंग्रेजी सेना के सामने बिरसा भगवान के मुट्ठी भर तीर धनुष वाले सैनिक कब तक प्रबल बने रह सकते थे ? आखीर अंग्रेजी सैनिकों ने डुम्बारी पहाड़ी को चारों तरफ से घेर लिया। अंग्रेज अफसर ने घेरा डाल देने के पश्चात् उनलोगों से आत्मसमर्पण कर देने का प्रस्ताव रखा। किन्तु स्वतंत्रता देवी के इन जंगली पुजारियों ने आत्म-समर्पण की अपेक्षा हँसते हँसते प्राणों की आहुति देना ही बेहतर समझा। आज्ञा पाकर अंग्रेज सैनिकों ने गोलियों की वर्षा शुरू की। आजादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के सैनिकों ने भी 'बिरसा भगवान की जय' के नारे से आकाश को गुँजाते हुए तीरों एवं ढेलवाँसों से गोलियों का जबाब देना प्रारंभ कर दिया। धुआँ-धार गोलियों की वर्षा से बहुत लोग मारे गये और घायल हुए। आधुनिक अस्त्र बन्दूकों के सामने उनके आदिम युगीन हथियार तीर धनुष काम न कर सके। किन्तु फिर भी जब तक डंका बजता रहा तब तक वे धनुषबाण एवं ढेलवाँस लेकर लड़ते रहे और हँसते हँसते मरण त्योहार मनाते रहे। बिरसा भगवान न मारे जा सके और न अंग्रेज उन्हें बन्दी ही बना सके। डुम्बारी काण्ड के बाद सिंहभूम के जंगलों में चले गये ताकि अधिक तैयारी के साथ पुनः अंग्रेजों से मोर्चा लिया जा सके। सरकार की ओर से उन्हें पकड़ने वाले को एक गाँव की जमींदारी देने की घोषणा कर दी गई। कुछ देशद्रोहियों ने पुरस्कार के लोभ में उन्हें गिरफ्तार करने में विदेशी सरकार की मदद की। वहाँ उन्हें पकड़ने के बाद सात आदमियों ने ले चलना चाहा तो सातों को घसीटते हुए एक डेढ़ मील तक बिरसा भगवान चले गये। लेकिन वे अकेले थे और शत्रु सात। लोग कहते हैं कि एक पर दो काफी हो जाते हैं। इसी से अनुमान किया जा सकता है कि उनके शरीर में कितनी शक्ति थी। सरकार ने उन्हें वहाँ से राँची जेल में पहुँचाया जहाँ उनके सैकड़ों क्रान्तिकारी सरदार पकड़ कर रखे गये थे। कुछ ही दिनों के पश्चात् सरकार ने घोषणा कर दी कि हैजा से बिरसा भगवान का प्राणान्त हो गया। पता नहीं बृटिश सरकार को नाकों चना चबवाने वाले उस अमर शहीद की मृत्यु में क्या रहस्य था? उनके अनेक शिष्य सरदार एवं विप्लवी नेताओं को फाँसी, कालापानी, जेल तथा कठिन से कठिन सजाओं के द्वारा पुरस्कृत किया गया।

श्री बिरसा भगवान देश के उन इने गिने विप्लवी सरदार एवं अमर शहीदों में एक हैं जिन्होंने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रा के लिये अपनी बलि दे दी है। उन्होंने आज से आधी शताब्दी पूर्व ही बृटिश सत्ता के साथ साथ पूंजीपतियों के विरुद्ध भी आवाज उठायी थी। एक जंगली प्रदेश के निवासियों के नेता होने के कारण इतिहास के; पन्नों में उनका नाम अन्य राजनीतिक नेताओं एवं शहीदों की भाँति जगमगाता नहीं दीखता है किन्तु छोटानागपुर की शोषित एवं उत्पीड़ित जनता खास कर आदिम जाति के लोगों के हृदय पटल पर उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है और रहेगा। यहाँ के लोग अभी भी उनकी पूजा करते हैं। उनके आदर्श की ज्योति से इस पर्वतीय एवं जंगल प्रदेश की जनता का जीवन पथ आलोकित होता रहेगा, ऐसा सब का विश्वास है।

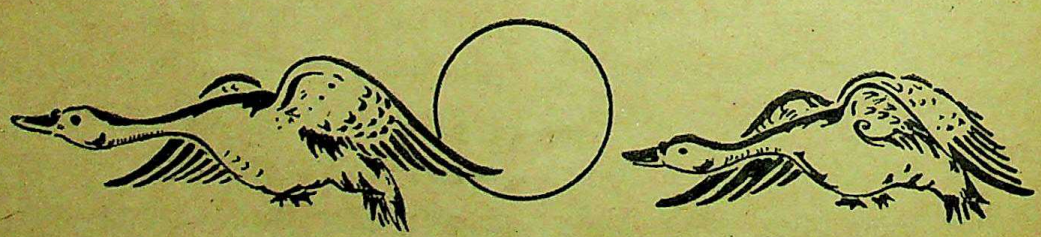

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ग्रामोद्योग को बढ़ावा देना सरकार का परम कर्त्तव्य है-विनोबा

—श्री दामोदरदास मूंदड़ा—

मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान के ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देना हिन्दुस्तान की सरकार का परम कर्त्तव्य है।"

उपर्युक्त शब्द बदौसा की प्रार्थना सभा में एक प्रश्न का जवाब देते हुए आचार्य विनोबाजी ने कहा। प्रश्न यह पूछा गया था कि यदि ग्रामोद्योगों से देश को लाभ है तो सरकार उन्हें बढ़ावा क्यों नहीं देती? अपने विचार को समझाते हुए विनोबाजी ने आगे कहा—यह कहने से नहीं बनता कि लोकमत तैयार करो, फिर हम ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देंगे। आज का हमारा लोकमत अज्ञान का लोकमत है। जो प्रेरणा सेवा पुरी सम्मेलन दे रहा है, जो प्रेरणा सर्वोदय समाज दे रहा है, वह सरकार क्यों न दे? इस लिये सरकार को चाहिए कि ग्रामोद्योगों के लिये लोगों को उत्साह और प्रेरणा दे।

क्या यन्त्रोद्योग और ग्रामोद्योग दोनों साथ-साथ चल सकते हैं? इस प्रश्न का जवाब देते हुए विनोबाजीने कहा—जहां तक खाने और कपड़े का सम्बन्ध है वहां तक देहात में यन्त्रोद्योग नहीं, ग्रामोद्योग ही चलना चाहिये। जो कच्चा माल देहात में बनता है उसका पक्का माल देहात में ही बनना चाहिये। इससे गांव स्वावलम्बी बनेंगे। यदि बाहर से हम चीजें खरीदते रहें तो गांव हरगिज स्वावलम्बी नहीं बन सकते। 'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।'

इसी बात को आगे समझाते हुए विनोबाजीने कहा कि यन्त्रोद्योग और ग्रामोद्योग साथ-साथ चल सकते हैं बशर्ते वह यन्त्रोद्योग गांव का धन्धा न मारे। अगर विदेशों से कपड़े की मांग है तो हम मिलों को आदेश देंगे कि कपड़ा तैयार करो। पर कहीं, वह गांव में चलने वाला कपड़े का धन्धा ही खत्म कर दे तो ठीक नहीं है। कई उद्योग ऐसे होंगे जो यन्त्रोद्योग के और ग्रामोद्योग के जरिये साथ-साथ चलेंगे जैसे खाद आदि। गाँव में कम्पोस्ट बनाते हुए भी सेन्ट्री जैसे कारखाने चल सकते हैं। कई उद्योग ऐसे हैं जो केवल यन्त्रोद्योग से ही चलेंगे।

## शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक

शिक्षा का ढांचा कैसा हो जिससे युवक-युवतियों को देशसेवा की प्रेरणा मिल सके? इस प्रश्न का जवाब देते हुए आचार्य विनोबाजीने कहा वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की आलोचना काफी की जा चुकी है। मैं मानता हूँ कि आजकी शिक्षा फौरन बदलनी चाहिये, पर आज हमारा लोकमत जागृत नहीं है और सरकार का दिमाग उलझनों में फंसा है। कई मंत्रियों से मेरी बातें हुईं। वे कहते हैं, कि हमको सोचने का या पढ़ने का समय ही नहीं मिलता। मैं कहता हूँ, जो सोचता नहीं, वह मंत्री नहीं, परवशतंत्री है। आज यदि हम मोटर और हवाई जहाज का उपयोग कम कर दें, पैदल चलें तो खुले आसमान के नीचे खूब सोचने का समय मिल सकेगा। बिनोबाजीने आगे कहा— जब हम ग्रामोद्योगों की बात करते हैं तो कहते हैं:— आहिस्ता-आहिस्ता करेंगे। शिक्षामें सुधार की बात करते हैं, तो कहते हैं कि आहिस्ता आहिस्ता करेंगे। इस तरह क्रांन्ति नहीं होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्रांतिकारी प्रयत्न अगर करना है तो चित्त को शान्ति चाहिये, चिन्ता करनी चाहिये। जो तालीम चल रही है वह फौरन बदलनी चाहिए। उसके बगैर उन्नति नहीं हो सकती। तालीम में कर्म-योग होना चाहिए, साथ-साथ शील और चरित्र सुधारने की तालीम होनी चाहिए। यह तब ही हो सकता है, जब विद्यार्थियों को हिम्मत से काम करने का मौका मिले। साथ-साथ गीता रामायणके सर्वोत्तम विचार का परिचय विद्यार्थियों को होना चाहिए। उन्हें विज्ञान सिखाना चाहिए। अहिंसा के विकासके लिए तथा ग्रामोद्योगों की उन्नति के विज्ञान की बहुत जरूरत है, तो इस प्रकार चतुर्विध शिक्षण होना चाहिए।

१–उद्योग का ज्ञान। २–विज्ञान का ज्ञान। ३–संत वांङमय का अध्ययन। ४–समाज-सेवाका काम जिससे शील बनता है।

क्या समाज का चरित्र गिर गया है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विनोबाजीने कहा:— हमारा चरित्र नहीं बिगड़ा है बल्कि समाजकी आर्थिक रचना ही बिगड़ गयी हैं। इसको सुधारने के लिए पांच-पचास साल की आवश्यकता नहीं है। यह दो चार सालों में ही सुधर सकती है। और हम सब मिलकर, जो सबसे नीचे का स्तर माना जाता है, उसे ऊँचा उठाने का प्रयत्न करें।

अन्त में कार्यकर्त्ताओं के उद्देश्य से कहा—मैं आपको सावधान करना चाहता हूँ कि यह भूमि का मसला हमको समय पर हल करना होगा और प्रेम से तथा शान्तिके तरीके से हल करना होगा। यह मसला अत्यन्त महत्व का है। इस वक्त इसको हल करने में ही हम सबका कल्याण है। नहीं तो हमारे समाज की प्रगति रुकी रहेगी। इसलिये आप सब को जागृत होना चाहिए और इस काम में जुट जाना चाहिए।

यहां करीब १०७१ भूमि भूमिदान-यज्ञ में प्राप्त हुई।

"जब मैं समझता हूँ कि मेरा शरीर ही एक बड़ा नाजुक यन्त्र है तब यंत्रों के खिलाफ होकर मैं कहाँ रह सकता हूँ? मेरा विरोध यंत्रों के सम्बन्ध में फैले दीवानेपन के साथ है, यन्त्रों के साथ नहीं। परिश्रम का बचाव करनेवाले यन्त्रों के सम्बन्ध में लोगों का जो दीवानापन है उसी से मेरा विरोध है। परिश्रम की बचत इस हद तक की जाती है कि हजारों को, आखीर भूखों मरना पड़ता है और उन्हें बदन ढँकने तक को कुछ नहीं मिलता। मुझे भी समय और परिश्रम का बचाव अवश्य करना है लेकिन वह मुट्ठी भर आदमियों के लिए नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए। समय और परिश्रम का बचाव करके मुट्ठी भर आदमी धनाढ्य बन बैठें, यह मेरे लिए असह्य है। मैं तो चाहता हूँ, हर एक का समय और परिश्रम बच जाय, सब को खाना मिल सके, सब पहन ओढ़ सके, सर्वोदय हो। यही मेरी अभिलाषा है। आज यन्त्रों के कारण लाखों की पीठ पर मुट्ठी भर आदमी सवार हो बैठे हैं और उन्हें सता रहे हैं। क्योंकि इन यन्त्रों के चलाने के मूल में लोभ है, धन तृष्णा है, जन कल्याण की भावना नहीं है।"

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# छोटानागपुर अलग नहीं हो सकता !

माननीय श्री कृष्णवल्लभ सहाय

वाद-विवाद में जितने प्रश्न उठाये गये हैं सभी का उत्तर देना तो सम्भव नहीं, फिर भी कतिपय का उत्तर मैं आसानी से दे सकता हूँ। उदाहरण-स्वरूप मैं श्री त्रिवेणी कुमार के विचार से सहमत हूँ जब वह यह कहते हैं कि प्रत्येक भूमिहीन श्रमिक को एक एकड़ जमीन मिलनी चाहिये जहाँ वह एक कुँआ खोद सकेगा तथा बंजर जमीन को उपजाऊ बना सकेगा। सुरक्षा के लिये उनके पास जमीन नहीं है लेकिन उनके मित्र श्री रामनारायण चौधरी के पास तो काफी जमीन है जिसे उन्हें प्रतिज्ञात विकास की पूर्ति के लिये देनी चाहिये। आज का अपना वक्तव्य मैं केवल श्री हरमन लकड़ा के वक्तव्य की ओर ही लक्षित रखूँगा। आदिवासियों में पार्थक्य एवं छोटानागपुर का पृथक्करण ही उनके वक्तव्य के आधार थे। श्री अलफ्रेड उरांव भी उनसे सहमत हैं। श्री बागे के विचार उनसे भिन्न हैं। उनका कहना है कि प्रशासन कार्य में आदिवासियों का कोई हाथ नहीं है। डाल्टेनगंज, चाईबासा और पुरुलिया में कॉलेज खोले जायँ तथा राँची में एक विश्वविद्यालय की स्थापना हो। मैं उनसे पूर्णतया सहमत हूँ।

श्री हरमन लकड़ा द्वारा उठाये गये प्रश्नों के उत्तर देने के पहले मैं छोटानागपुर की जन-संख्या, विपरीत बैठे हुए अपने विरोधी मित्रों के प्रतिनिधित्व-चरित्र तथा छोटानागपुर में हमलोग द्वारा किए गये कल्याण-कार्य पर एक विहंगम-दृष्टि प्रस्तुत करूँगा।

छोटानागपुर के सभी जिलों तथा समस्त संथाल परगना में इस समस्त क्षेत्र की जन-संख्या का ३४·०३ प्रतिशत जो अनुसूचित जन-जाति (आदिवासी) हैं, वास करती हैं।

१९५१ की उस रिपोर्ट में जहाँ इन जिलों की जन-जातियों की गणना है, उसमें ऐसी भी जन-संख्या सम्मिलित है जो गैरआदिवासी हैं। इसमें ऐसी भी हिन्दू जातियाँ सम्मिलित हैं जिन्हें श्री आर्चर जन-जाति मानने पर तुल गये थे हालाँकि १९३५ के भारत-सरकार कानून के अन्तर्गत १९३६ में सूचित पिछड़ी जातियों की सरकारी सूची में उन्हें सम्मिलित नहीं किया गया था। यदि इन आदिवासियों की जन-संख्या की ओर देखा जाय तो कहना पड़ेगा कि पृथक्करण की आवाज समस्त पूर्ण की एक इकाई की आवाज है।

## अनुसूचित जन-जातियाँ।

अब हमें देखना चाहिये कि हमारे विरोध में बैठे मित्र किस हद तक आदिवासियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जन-जाति के अनुसार मैंने विधान-सभा के सदस्यों की एक सूची बना दी है। वह इस प्रकार है। संथाल सदस्य—१७, उरांव सदस्य—७, मुन्डा सदस्य—३, हो सदस्य—५, भुइँया सदस्य—२ तथा खरवार सदस्य—१। ऐसी जातियाँ जो जन-जातियाँ हैं, उनकी संख्या २९ है। इसमें असुर एवं बइगा जैसी निर्बोध पिछड़ी जातियाँ भी सम्मिलित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस सदन में यदि राज्य की पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधि नहीं रहें, तो क्या यह सदन प्रतिनिधित्व कर सकता है? कांग्रेस ने इसका सदा ख्याल रखा जिसमें सभी को प्रतिनिधित्व मिल सके। झारखण्ड पार्टी इन जातियों को तिरस्कृत करती है। फिर भी अपने को आदिवासियों के प्रतिनिधि बनने का दम भरती है। यदि सच और ईमानदारी से बोला जाय तो अगर कायस्थ, ब्राह्मण, भूमिहार तथा राजपूतों जैसी उच्च हिन्दू-जातियों की पार्टियाँ बनायी जायँ तो उससे अधिक अच्छी झारखण्ड पार्टी नहीं होगी।

लेकिन झारखण्ड पार्टी ने ही केवल संथाल, उरांव, मुन्डा तथा हो ऐसी उच्च आदिवासी जातियों की भलाई नहीं की है। कांग्रेस-सरकार ने भी इन जातियों में कल्याण-कार्य किया है। कांग्रेस-सरकार ने क्या किया है इस पर विचार करना चाहिये। जहाँ सचाई और आँकड़े बोल रहे हैं वहाँ बहस-बाहसे की क्या जरूरत? आदिम-जाति-सेवा-मंडल द्वारा २६ छात्रावास संचालित होते हैं जिनमें ६३२ विद्यार्थी रहते हैं।

आदिवासी छात्रों के बीच वितरित छात्र-वृत्ति का ब्योरा :—

| वर्ष | वितरित छात्रवृत्ति | शिक्षार्थी-संख्या |
|---|---|---|
| १९४६-४७ | ५०,००० | ३५९ |
| १९४७-४८ | १,२९,५७६ | ८७१ |
| १९४८-४९ | १,२९,५७६ | ८७१ |
| १९४९-५० | २,२९,५७६ | १,६६४ |
| १९५०-५१ | २,४९,९३६ | १,७२९ |
| १९५१-५२ | २,९९,९३६ | २,१४७ |
| टोटल... | १०,८८,६०० | ७,६४१ |

## अन्न-गोला।

अन्न गोले जहाँ खोले गये हैं उनका जिलेवार विवरण इस प्रकार है :— राँची—५८, हजारीबाग—३७, सिंहभूम—३६, संथाल परगना—३३, भागलपुर—२, मानभूम—३२, धनबाद—८, पलामू—१६, शाहाबाद—२, पूर्णिया—१, तथा मुंगेर—१।

आदिम-जाति-सेवा-मंडल तथा संथाल-पहाड़िया-सेवा-मंडल द्वारा संचालित स्कूलों की संख्या ... ३१५

इन स्कूलों के शिक्षार्थियों की संख्या ... १२,२८४

इन स्कूलों की छात्राओं की संख्या ... २,०२१

इन स्कूलों पर व्यय ... ३,६७,७१०) रुपये।

आदिवासियों के लिये केवल कल्याण-विभाग ने ही अकेले कार्य नहीं किया है। दूसरे-दूसरे विभागों ने भी इसमें योगदान दिया है। स्वायत्त-शासन-विभाग ने आदिवासियों के लिये जो-जो कार्य किये हैं उसका विवरण १७ पन्ने की एक रिपोर्ट में हमारे पास लिख भेजा है। सभी को तो मैं आपके सामने प्रस्तुत नहीं करूंगा। लेकिन सड़क मरम्मत के लिये जिला-बोर्डों को जितने रुपये दिये गये हैं उनके ब्यौरे प्रस्तुत करने का लोभ मैं नहीं रोक सकता।

श्री बागे ने मुझ पर ताने मारते हुए यह कहा था कि मैं छोटानागपुर का प्रतिनिधित्व नहीं करता हूँ। मैंने यह कभी जताया भी नहीं कि मैं छोटानागपुर का नुमाइन्दा हूँ। सदन में कोई भी ऐसा नहीं कह सकता है। भूतपूर्व विधान-परिषद् में मैं एक निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता था और आज गिरिडीह तथा डुमरी का इस विधान-सभा में प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निधित्व करता हूँ। लेकिन छोटानागपुर का निवासी होने के नाते इस अवसर पर मैं माननीय डा० श्रीकृष्ण सिंह को धन्यवाद देता हूँ जो छोटानागपुर तथा संथाल परगना की प्रत्येक कल्याणकारी योजना में सहायता देते थे। साथ ही मेरा धन्यवाद वित्त-मंत्री श्री अनुग्रहनारायण सिंह को भी है, जिन्होंने इन जातियों की सहायता के लिये खर्च करने में सदा उदारता का परिचय दिया।

छोटानागपुर और संथाल परगना के प्रश्नों को इस व्यापक दृष्टि से देखने के बाद मैं अपने मित्रों—श्री हरमन लकड़ा एवं श्री अलफ्रेड उरांव—द्वारा उठाये गये प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूंगा। मुझे खुशी है कि वे बोले। उनकी वक्तृता से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस तरह ये बाहर की सहज विश्वास कर लेनेवाली जनता के बीच असभ्य तथा उत्तरदायित्वहीन भाषण देते थे।

श्री हरमन लकड़ा का कथन है कि आदिबासियों की भूमि अब गैर-आदिबासियों के यहां जा रही है। यह तो पूर्ण रूपेण असम्भव है। छोटानागपुर रैयतदारी कानून का वह उपयोगी अंश यहां उद्धृत किया जा रहा है :—

"४६ (१) (क) कोई भी रैयत अपनी सम्पत्ति या उसका कोई भी भाग रेहन या ठेके पर किसी भी हालत में पांच साल से अधिक की अवधि के लिये हस्तांतरित नहीं कर सकता।

(ख) कोई भी रैयत अपनी सम्पत्ति या उसका कोई भी विक्रय, दान या किसी तरह के ठेके आदि से हस्तांतरित नहीं कर सकता। उसका हस्तातरण अवैध होगा।

इसमें कुछ छूटें दी गयीं हैं। कोई रैयत अपनी सम्पत्ति या उसके किसी भाग को केवल सात वर्ष (उससे अधिक नहीं) तक के लिये भुगुत-बंधा-रेहन कर सकता है। या बिहार-उड़ीसा सहयोग-समिति कानून १९३५ के अन्तर्गत वह समिति द्वारा रजिस्टर्ड या ऐसा समझा जानेवाला रेहन हो सकता है। पर इसकी भी अवधि केवल १५ वर्ष ही हो सकती है।

इसमें एक और भी छूट दी गयी है।

(क) वह अधिकारी रैयत जो आदिबासी है अपनी सम्पत्ति या उसके किसी भी भाग को डिप्टी कमिश्नर की पूर्वाज्ञा से उसी थाने और इलाके में रहनेवाले किसी दूसरे आदिबासी को विक्रय, दान या बसीयतनामे के द्वारा हस्तांतरित कर सकता है।

किसी भी आदिबासी सम्पत्ति का गैर-आदिबासी के हाथ हस्तांतरण कोई भी रजिस्ट्री आफिस कबूल नहीं करेगा। श्री हरमन लकड़ा को मेरी चुनौती है कि वह एक भी ऐसा कोई उदाहरण पेश कर दें।

## शराब की दूकानें

रांची जिले में बढ़ती हुई शराब की दुकानों की संख्या के बारे में श्री लकड़ा की शिकायत है। उनका यह भी कहना है कि उनके आदमियों को हड़िया पीने की छूट-दे-दी जाय। उनकी इस झूठी शिकायत को मैं बिल्कुल ख्याल नहीं करता। मुझे दुःख इस बात का है कि उन्होंने बी० एन० रेलवे होटल से संबंधित प्रीति-भोज को लक्ष्य किया है जहां मैंने उन्हें आमंत्रित किया था। जिस थाली में उन्होंने खाया उसी में छेद किया। जिन मित्रों को मैंने भोज में आमंत्रित किया था उनसे मैंने राजनीति संबन्धी बातें नहीं की थी। महज मित्रता को मजबूत करने के लिये ही वह भोज था। लेकिन श्री लकड़ा की शिकायत बेबुनियाद है। तथ्य इस प्रकार है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१६४५-४६ तथा १६५१-५२ के अनुमति-पत्र (लाइसेंस) की संख्याओं के तुलनात्मक वक्तव्य के अध्ययन से यह प्रकट हो जाता है कि गँवई दारू (कन्ट्री स्पिरिट) अनुमति-पत्रों में १७ पछवाई में २, बाह्य शराबों की दूकानों में ४ तथा रांची जिले की दूकानों की संख्या में २३ की कमी हुई है। सिंहभूम जिले में दारू की दूकानों में १० और ताड़ी की दूकानों में ८ की वृद्धि हुई। पछवाई में १ का तथा वाह्य शराबों की दूकानों ११ की कमी हुई है। दारू की दूकानों में इसलिए वृद्धि हुई है चूंकि सरायकेला और खरसावां रियासतों की भी २६ दूकानें सम्मिलित हो गई हैं। सरायकेला और खरसावां की ३ ताड़ी की दूकानों के सम्मिलित हो जाने से ताड़ी दूकानों में वृद्धि हुई है। पलामू जिले में दारू के ४ तथा ताड़ी के २ अनुमति-पत्रों की कमी हुई; लेकिन विदेशी शराबों के अनुमति पत्रों में २ की वृद्धि हुई है। १६४६-४७ में इस वृद्धि की अनुमति दी गई थी। शराब की दूकानों की कुल संख्या में ४ कमी हुई है। संथाल परगना जिले में दारू में १, ताड़ी में १२, विदेशी शराबों में ३ तथा शराब की दूकानों की कुल संख्या में १६ अनुमति-पत्रों की कमी हुई है। मानभूम जिले में विदेशी शराब में ४५ तथा दूकानों की समस्त संख्या में ४५ अनुमति-पत्रों की कमी हुई है। औरों की संख्याओं की स्थिति ठीक है। हजारीबाग जिले में ५ की कमी हुई है और विदेशी शराबों में १ की वृद्धि हुई है। कुल संख्या में ४ दूकानों की कमी हुई है।

संथाल परगना जिला में कोई भी आदमी, हजारीबाग जिला, रांची और लोहरदगा नगर-पालिका क्षेत्रों तथा डोरंडा के सूचित क्षेत्र तथा बुंडु और गुमला क्षेत्रों के युनियन बोर्ड को छोड़कर समस्त रांची जिला, समस्त पलामू जिला, बागमारा कतरास, केन्दुआडिह, झरिया और चिरकुंडा थानों को छोड़कर समस्त मानभूम जिला, जमशेदपुर क्षेत्र को छोड़कर सिंहभूम जिला और भागलपुर के बांका सबडिवीजन में कोई भी आदिवासी पछवाही चुला सकता है और अपने साथ रख सकता है। इसमें किसी तरह का निषेद नहीं है। लेकिन जिन व्यक्तियों कोऐसे अधिकार दिए गये हैं वे केवल अपने व्यवहार के लिए ही ऐसा कर सकते हैं। किसी के हाथ वेचने का अधिकार नहीं है। जिन लोगों को पछवाई चुआने का अधिकार नहीं है तथा जो अधिकार रहने पर भी चुआते नहीं, उनके लिए उन क्षेत्रों में पछवाही शराब की दूकानें हैं। यह स्पष्ट है कि छोटानागपुर तथा संथाल परगना के जिलों में गंवई दारू की दूकानों की संख्या में वद्धि हुई है। अगर हँड़िया बनाना तथा इसका प्रयोग आदिवासी संस्कृति की शर्त है तो सरकार ने ऐसा कोई भी काम नहीं किया है जिसके द्वारा किसी को हतोत्साह होना पड़ा हो।

## आदिवासियों की मांग

अब मैं आदिवासियों की मुख्य माँग पर विचार करूँगा। वे दुनिया से अलग एक अपनी न्यारी-प्यारी एकान्त दुनिया में रहना चाहते हैं। यह इच्छा कितनी भी प्रशंसनीय क्यों न हो, व्यावहारिक नहीं हो सकती। छोटानागपुर और संथाल परगना शेष दुनिया से अलग नहीं रखे जा सकते। सभ्यता की लहरें केवल इसके किनारों को छूकर ही नहीं लौट जायेंगी; वरन् इसके जर्रेजर्रे में प्रवेश करेंगी। १६०८ में किस तरह प्रथम बार मैं हजारीबाग गया था, वह अभी तक याद है। कोडरमा में ३ बजे संध्या को एक बैलगाड़ी पर यात्रा प्रारंभ की, बरही में रात काटी और दूसरे दिन रात को हजारीबाग पहुँचा। रामगढ़ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निकट वह दहाड़े मारता दामोदर रांची और हजारीबाग को पृथक कर रहा था। धनबाद और पुरुलिया के बीच भी वह उसी प्रकार टाँग अड़ाये खड़ा था। आज वह नकशा बदल गया है। आज पटने से रांची ८ घंटे में पहुँचा जा सकता है। कोडरमा से रजौली तक सड़क बन गयी है। १९०८ में झारिया का उद्योग-क्षेत्र बनना शुरू हुआ था। टाटा ने भी उसी समय कार्यारंभ किया था। पर आज सिंहभूम में केवल टिस्को तथा कौपर कारपोरेशन लिमिटेड ही नहीं वरन् समस्त जिले में ६८ बड़ी कंपनियां काम कर रही हैं। हजारीबाग खानों से गुथ-सा गया है। १९३९ में युद्ध प्रारंभ हुआ और उस समय राँची के आदिवासी पुरुष तथा नारियाँ केवल भारतीयों के ही सम्पर्क में नहीं वरन् अमरीकियों तथा अंगरेजों के सम्पर्क में भी आयीं। केवल मुरी में ही नहीं वरन् लोहरदगा भी औद्योगिक-केन्द्र हो गया है। डालटेनगंज-बरकाकाना-गोमो तथा बड़काकाना-जमशेदपुर-खड़गपुर की लाइनों के खुल जाने से छोटानागपुर का भाग्य-परिवर्त्तन हो गया है। छोटानागपुर में जो लारियाँ चलायी जाती हैं उनका विवरण इस प्रकार है :—

| | | |
|---|---|---|
| (१) संथाल परगना | ... | ७१ बसें, |
| (२) राँची | ... | १६३ ,, |
| (३) हजारीबाग | ... | ११५ ,, |
| (४) पलामू | ... | ३६ ,, |
| (५) मानभूम | ... | ४३ ,, |
| (६) धनबाद | ... | ८३ ,, |
| (७) सिंहभूम | ... | ५२ ,, |
| (८) जमशेदपुर | ... | ४४ ,, |
| | | ६०७ |

## संग्रहालय का सिद्धान्त

संग्रहालय की परिपाटी की जो दाद दी जाती थी अब वह पूर्णरूपेण पट पड़ गई। हमें यह देखना चाहिये कि वास्तविक जीवन में आदिवासी गैरआदिवासियों द्वारा और गैरआदिवासी आदिवासियों द्वारा किस प्रकार अनुप्रेरित रहे हैं। विवाह के समय आदिवासी समस्त शरीर में हल्दी का लेप लगाते हैं। विवाह में अरवा चावल का प्रयोग होता है। धूप जलाया जाता है। मड़वा गाड़ा जाता है जिसमें आम की पत्तियाँ रहती हैं तथा दुल्हन की भाँग में सिन्दूर लगाकर विवाह की क्रिया समाप्त की जाती है। सिन्दूर-दान विवाह का सर्व-प्रमुख रश्म है। मृत्यु के समय धान और छोटे सिक्के वितरित किये जाते हैं। हल्दी और सरसों तेल का प्रयोग होता है। मृतक के सिर की हजामत बनाई जाती है तथा उसका सिर उत्तर की ओर रखा जाता है। तेरह दिन के बाद श्राद्ध-क्रिया की जाती है। राय साहब बंदी राम उराँव की मृत्यु के उपरान्त श्राद्ध क्रिया की गई थी।

मन्दिर में राम और शिव की पूजा की जाती है। माता अंजनी की भी अभ्यर्थना की जाती है। आँजन गाँव में आदिवासी अँजनी माता का मन्दिर बना रहे हैं। श्रावण मास में लाखों आदिवासी रथ-यात्रा के समय दर्शन के लिये जगन्नाथपुर जाते हैं। टाँगीनाथ में शिवजी का मन्दिर है। शिवजी का त्रिशूल भी वहाँ है। वहाँ सैकड़ों वेल-वृक्ष हैं जहाँ लाखों की तायदाद में आदिवासी दर्शन के लिये जाते हैं। गुमला में ऐसे सैकड़ों युवक हैं जो रुद्राक्ष माला का प्रयोग करते हैं। सिमडेगा के निकट (रामरेखा में) सैकड़ों आदिवासी जाते हैं कि श्री राम वहाँ गये थे। आदिवासी उस जगह की पूजा करते हैं।

मुन्डा अपने नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार दशहरा, दिवाली तथा होली जैसे हिन्दू-त्योहार आदिवासी मानते हैं। सभी आदिवासी शिखा रखते हैं। भोजन और जल में छूआछूत बरतते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारतीय राष्ट्रीयता में मतभेद लाने के लिये अंग्रेजों ने संग्रहालय-वृति प्रवेश कराया। आदिवासियों के शुभ-चिन्तकों द्वारा यह कभी भी नहीं प्रोत्साहित किया गया। आदिवासी-समस्याओं पर श्री ग्रियर्सन के विचार इस प्रकार है :—

'अपनी रिपोर्ट में मैं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मध्य-प्रदेश में आदिवासियों के बीच पृथक्करण की नीति बरतना कोई वास्तविक नीति नहीं है। मेरी सभी सिफारिशें इस तथ्य से अनुप्रेरित रही हैं कि तीव्र परिवर्तनशील सभ्यता में आदिवासियों की अपनी निजी ऐसी चीजें होनी चाहिये जो वे भारत या दुनिया के जीवन को दान-स्वरूप दे सकें।'

सुप्रसिद्ध मानवशास्त्री श्री गुहा का कथन है—'इस विचार प्रकटीकरण के पीछे उनके दिमाग में यह धारा बह रही थी कि आदिवासियों के प्रति गैरआदिवासियों द्वारा किया गया व्यवहार कोई संतोषजनक नहीं होगा। लेकिन मानवी-सभ्यता के शिक्षार्थियों तथा वैज्ञानिक मानवशास्त्रियों द्वारा प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के निमित्त यह नीति स्वीकार नहीं की जा सकती। चूँकि पूर्ण पृथक्करण से कभी विकास या उन्नति नहीं हुई है बल्कि निम्नकोटि के जीवों अथवा मानव-जीवन किसी में भी इससे स्थगन, ह्रास तथा मृत्यु ही हुई है।'

डा० गुहा का यह भी मत है कि ऊपरी चित्रालु में आर्य-जातियों को भी इस पृथकरण से ह्रास ही हुआ था। संस्कृति के विषय में उनका कहना है—'बल्कि मानवी समाज के इतिहास से पता चलता है कि सर्वत्र सभ्यता का विकास और वृद्धि मानवी संपर्क और सहयोग से हुई है। यही विकास की पीठिका-सी रही है। ऐसे कितने उदाहरण हैं कि विभिन्न देशों के लोगों ने दूसरों के साथ भोज्य-पदार्थों, पालतू जानवरों, कृषि की विधियों तथा वर्णमाला-प्रसार ऐसे सांस्कृतिक व्यापार किये हैं। जबतक यह आदान-प्रदान उस भूमि के सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक निर्माण के अनुरूप है तबतक वह लाभदायक सिद्ध हुआ है और उनके सांस्कृतिक भाण्डार की पूर्ति ही की है।'

संग्रहालय-सिद्धान्त पर मैंने इसलिए विशद रूप से विवेचना की है चूँकि श्री हरमन लकड़ा का यह दोषारोपण है कि निवारण आश्रम के किसी आश्रम-वासी ने किसी आदिवासी लड़की के साथ दुर्व्यवहार किया था तथा तपकरा के जंगल में दो रौतियों ने दो आदिवासी लड़कियों के साथ व्यभिचार किया था। दोनों के तथ्य इस प्रकार हैं :—

श्रीमती फूलमनी कुमारी जो ईसाई खड़िया लड़की है ११ वें दर्जे में पढ़ रही थी। उसने गुप्तेश्वर प्रसाद सिन्हा, एक कालिज विद्यार्थी से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। १९५० में उनका विवाह हो गया और उसकी रजिस्ट्री भी हो गयी।

तपकरा की घटना जो ११ मई के 'अबुआ झारखन्ड' में जिस प्रकार प्रकाशित हुई है वह इस प्रकार है कि दो नवयुवक अल्ला सिंह और गोविन्द सिंह, जो रौतिया जाति के हैं, और यह जाति शारीरिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध राजपूत जाति की उपजाति है, इनलोगों ने दो आदिवासी लड़कियों की साड़ियों का आनवरण कर दिया। दोनों घटनाओं पर श्री लकड़ा को आपत्ति है। क्या यह समझा जाय कि आदिवासियों के रूढ़िगत कोई यौन-मान है? उनके बीच संभवतः ऐसा कोई भी मान नहीं है। राय बहादुर शरतचंद्र ने अपनी किताब 'मुन्डा' के ५४६ वें पृष्ठ पर लिखा है। Netagota bano uru, nut ne king puru jiu redo raj janaking bancniating re getin.

हिन्दी शब्दार्थ है—

उन हौले हिलते प्यालों से
चिर प्यास बुझाई जाती है
तब कौन-कौन है
इसकी भी पहचान गँवायी जाती है। ।१।
जब हृदय-हृदय से मिलता है
जग की तब किसको परवा क्या ?
तब कौन कहाँ से किसकी ओर
बुद्धि भी जाती रहती है।२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बारी पार्क में जैसा श्री जयपाल सिंह ने भाषण किया था और जैसा वह २२ मार्च, १९५२ के 'सेन्टिनेल' में प्रकाशित हुआ है वह इस प्रकार है—

आदिवासी युवतियाँ मुझे घेरती हैं; लेकिन अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। उन्हें अब उन युवकों के पास जाना चाहिए जो विधान-सभा के नये सदस्य हुए हैं।

इस उक्ति का कहीं भी खंडन नहीं हुआ है। कोई विशेष रूढ़िगत यौन-मान इससे नहीं प्रदर्शित होता है। किसी को भी इसे हेय नहीं समझना चाहिए। केवल अच्छी बातें ही दूसरों को दी जानी चाहिए।

अब मैं आदिवासियों द्वारा उठाये गये जंगल के प्रश्न पर आता हूँ। मैं स्पष्टतया स्वीकार करता हूँ कि सरकार की जंगल-रक्षा तथा विकास की नीति से आदिवासियों तथा छोटानागपुर के अन्य निवासियों को कष्ट होता है; पर जनता यह नहीं चाहती कि जो जंगल जमींदारों से लिये गये हैं वे फिर उन जमीन्दारों को लौटा दियें जायँ। मैंने अपनी सभाओं में लोगों से पूछा है कि क्या जंगल पुनः जमीन्दारों को लौटा दिये जायँ। तो हमें प्रायः सभी जगह यही उत्तर मिले हैं कि जंगल न लौटाये जांय ! वाकई, यह दुःख की बात है कि छोटानागपुर की राजनीतिक-पार्टियाँ कांग्रेस से लड़ने के लिये जंगल की कल्पनात्मक शिकायतें लेकर अग्रसर हुई। याद रहे कि जमीन्दारी-उन्मूलन-सी जंगल-रक्षा कांग्रेस की कोई योजना नहीं रही। इस योजना में मैंने इसलिये हाथ लगाया चूंकि मैंने महसूस किया कि लगभग समस्त देश, समस्त बिहार तथा समस्त छोटानागपुर के विनाश का कारण होगा। बिना साग-वान के स्तंभ के हम लोग कैसे रेलगाड़ी चला सकते हैं या औद्योगिक विकास कर सकते हैं या भावी युद्ध में भाग ले सकते हैं? मेरा विश्वास है कि यदि नैपाल जंगलों से नग्न नहीं कर दिया जाता तो आज कोशी या गंडक की विभीषिका नहीं रहती। मेरा विश्वास है कि यदि छोटानागपुर प्लेटू के सभी जंगल काट दिये जायँ तो उड़ीसा और बंगाल की भूमि को तो जाने दीजिये, गया, पटना, शाहाबाद जिलों तथा दक्षिण मुंगेर तथा भागलपुर का वही भाग्य होगा जो आज सहरसा का है।

## रक्षा का प्रश्न

जंगल-रक्षा का प्रश्न कोई ऐसा प्रश्न नहीं है जो अकेले छोटानागपुर की जनता द्वारा सुलझायी

( शेष पृष्ठ ४० में )

## * नये पथ पर *

चलो, बढ़ते चलो निज पंथ पर तुम आज, बनवासी !
नया जीवन, नया नौवन,
नई दुनियाँ बसाओ तुम ।
नये उत्साह से निर्भय—
नये सपने सजाओ तुम ।
न बैठो हारकर, बढ़ते चलो तुम आज बनवासी !
तुम्हें ही अन्न-धन देकर
धरा का कोष भरना है ।
तुम्हें ही जग बदलना है,
तुम्हें ही युग बदलना है ।
लगो निज साधन में, कार्य में तुम आज बनवासी !
समय को, देश को, जग को,
तुम्हारी ही जरूरत है ।
करोड़ों दीन दुखियों को
तुम्हारी ही जरूरत है ।
चलो विश्वास लेकर, धैर्य लेकर आज बनवासी !
बढ़ो, बढ़ते चलो निज पंथ पर तुथ आज बनवासी !

श्री रामकृष्ण प्रसाद 'उन्मन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी लेखनी

# क्रिकेट

ले० श्री अश्विनी कुमार सिन्हा 'झुनझुन'

इस युग के प्रसिद्ध खेलों में क्रिकेट का महत्व पूर्ण स्थान है। इस खेल के इतिहास से यह पता चलता है कि सर्वप्रथम १३ वीं शताब्दी में बृटेन में इस खेल का प्रारंभ हुआ। मध्यकाल में भी यह किसी न किसी रूप में चलता रहा। भारत में इसका प्रारंभ बृटिश राज्य के साथ ही हुआ। आज तो सभी शिक्षित भारतवासी इससे परिचित हो गये हैं।

पहले पहल बाजू घुमाकर गेन्द फेंकने की प्रथा चली किन्तु वह सर्वमान्य न हो सकी। सन् १८६६ ई० से लेकर आजतक गेन्द फेंकने वालों को सहूलियत को ध्यान में रखते हुए अनेक परिवर्त्तन होते रहे इसके नियमों में (।) सन् १६०५ ई० में खेल के मैदान के घेरे से गेन्द को बल्ले से उछाल कर बाहर फेंकने के लिये ६ रन निश्चित किये गये। इससे गेन्द देने वालों के लिये सुविधा हुई। फिर दो वर्षों के पश्चात् ही १६०७ ई० में यह तै पाया कि २०० रन हो जाने के बाद दूसरा नया गेन्द इस्तेमाल किया जाय। फिर आज से ६ वर्ष पहले १६४६ ई० में यह नियम मान्य हुआ कि प्रत्येक ५५ रन के बाद ही नये गेन्द का व्यवहार किया जाय।

बृटेन में प्रसिद्ध एम० सी० सी० अथवा मेरील बोन क्रिकेट क्लब की स्थापना हुई। इनदिनों यही क्लब-क्रिकेट सम्बन्धी नियमों को निर्धारित-करता है और दुनियां के खेलाड़ी उसे मान्य समझते हैं। इस समय आस्ट्रेलिया का क्रिकेट भी उन्नत दशा में पहुँच चुका है। प्रत्येक देश में कालेजों, स्कूलों एवं अनेक शहरी क्लबों में भी इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है तथा-अच्छे अच्छे खेलाड़ी पैदा होते जा रहें हैं। लोग कहते हैं कि भारत में पहले पहल क्रिकेट क्लब, कलकत्ता ने इसका पथ प्रदर्शन किया।

सन् १६६४ ई० से अन्तर्राष्ट्रीय खेलों को टेस्ट मैच के नाम से लोग जानते हैं। क्रिकेट के खेल के लिये भारत की ख्याति बढ़ती जा रही है और यहां के खेलाड़ी दुनियां के खेलाड़ियों में अच्छे साबित हो रहे हैं। इस देश में नेशनल स्पोर्ट तथा स्टेडियमों की स्थापना से इस खेल की और भी उन्नति होती जायगी ऐसा सब का विश्वास है।

---

( पृष्ठ ३६ से आगे )

जा सके। मुझे यह भी मालूम है कि छोटानागपुर में बरती गयी मेरी जंगल-नीति से काँग्रेस को धक्का लगा है। कहा जाता है युनानी वीर एकिल्स को लौह-शरीर प्राप्त था, जिस पर तीर भी बेकार जाते थे। लेकिन उसके पैर कमजोर थे। ठीक वही हालत बिहार में काँग्रेस की है जो मेरी नीति से कमजोर हो गयी है। पर मैं इस नीति का दृढ़ता-पूर्वक पालन करूँगा जबतक इससे राज्य तथा देश के लाभ होते रहेंगे, जबतक मुझे यह संतोष मिलता रहेगा कि इससे राज्य-धन में वृद्धि हो रही है। पर मेरे मित्र श्री हरमन लकड़ा मुझसे एक-मत नहीं रखते। मैं तो उनसे यहाँ तक कहूँगा कि वे भारत-सरकार को अपने जंगल-निर्देशक को यहाँ भेजकर निरीक्षण करने का आवेदन करें और इस बात का पता लगाया जाय कि जब से जंगल हमलोगों के हाथ में आया है तब से जंगल-धन की वृद्धि हुई है या कमी। यदि निष्कर्ष मेरे विपरीत हुआ तो मैं सभी जंगलों को निसूचित (डिनोटिफाई) कर दूँगा।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि मेरे आदिवासी दोस्तो आप इस पृथक्करण-नीति को, छोड़ दें। उन्हें ऐसे प्रयत्न और प्रयास करने चाहिये जिसमें छोटानागपुर का विकास और वृद्धि हो, वह सुन्दर और सजल हो और इसके लिये मैं आखिरी दम तक उनका साथ दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश-विदेश

## राँची जिला खाद्यसंकट की चपेट में । चावल और क्रयशक्ति दोनों का अभाव

राँची जिला और खासकर गुमला सबडिविजन बराबर बाहर वालों को चावल खिलाता रहा है। लेकिन कई वर्षों से लगातार समय पर आवश्यकता अनुसार वर्षा नहीं होने के कारण फसल मारे जाने के फलस्वरूप यहाँ की भी स्थिति अच्छी नहीं रह सकी।

गत ५ वर्षों से सरकार ने चावल खरीद के लिए 'मोनोपोली' की नीति अख्तियार की तथा राँची के कुछ धन्नासेठों के जिम्मे खरीद का पूरा भार दिया जिनमें कुछ तो पहले चावल केवल अपने खाने के लिए ही खरीदा करते थे, चावल के व्यापारी नहीं थे। इन एजेन्टों को जन हित का कितना ख्याल रहता है, चोर बाजारी के कारनामे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं। लोगों का कहना है कि कमीशन के साथ ही काले बाजार में चावल की बिक्री के मुनाफे के लोभ से समूचे गुमला का चावल बटोर लेने की कोशिश एजेन्टों ने की। चावल के अभाव की आशंका से गुमला थाना कांग्रेस कमिटी ने एक प्रस्ताव पास कर पहले ही सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। लेकिन सरकारी अफसर अभाव के बावजूद गुमला को सरप्लस एरिया जबरदस्ती मानते रहे। परिणाम हुआ कि राँची में चावल का भाव ३८) और ४०) रू० मन का हो गया। गुमला में तो चावल को कौन कहे १।) रु० बोझ बिकने वाला पुआल भी ५) रु० बोझ में नहीं मिलने लगा। पैसे वाले के लिए चावल का अभाव हुआ और थोड़ा बहुत मिलने पर भी क्रयशक्ति के अभाव में अधिकांश खरीद कर खाने में असमर्थ हो गये। गरीब लोग चावल की कमी होने पर महुआ, जामुन और आम खाकर भी मौसिम में अपना समय काट लेते, किन्तु इस बार इन सब चीजों की फसल भी मारी गयी। इसलिए गरीब लोग बिल्कुल निस्सहाय हो गये। गुमला सबडिविजन के गुमला, पालकोट, रायडीह, बसिया आदि थानों की हालत अधिक खराब है। जब सरप्लस एरिया समझा जाने वाला गुमला सब-डिविजन की यह दुर्दशा है तो फिर अन्य सबडिविजनों का क्या पूछना ? रांची सदर, खूंटी एवं सिमडेगा सब-डिविजनों के लोग भी चारों ओर अन्नाभाव के कारण गुहार मचा रहे हैं।

**आदिम जाति सेवा मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी एम० एल० सी०** ने बड़ी तत्परता से संकटग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया है तथा स्थिति की जांच करके सरकार को रिपोर्ट दिया है। वे इस के लिए प्रयत्नशील हैं कि सरकार जल्द से जल्द अन्न की सहायता भेज कर राँची की पीड़ित जनता का कष्ट दूर करे तथा भूख से मरने वाले गरीबों की जान बचाये। इधर पता चला है कि जिला की ओर से कुछ अफसर देहातों में सहायता कार्य के लिए नियुक्त होकर भेजे गये हैं। लेकिन जिले की जनता की आवश्यकता तथा तकलीफ के सामने यह सरकारी सहायता ऊँट के मुँह में जीने का फोरन ही समझा जायेगा। जिले भर में आदिम जाति सेवा मण्डल के कार्यकर्त्ता अन्नाभाव से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए तत्परता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

गुमला और सिमडेगा के इलाकों में अन्नाभाव के कारण ही चोरी और डकैतियों की वृद्धि हो रही है। सरकार को जल्द से जल्द इधर ध्यान देकर जनता की तकलीफों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

## पं० प्रजापति मिश्र जी का राँची जिले में दौरा

गत १५ जून को बिहार प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष पं० प्रजापति मिश्रजी रांची पधारे। आप ने बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का उद्घाटन किया। उसके बाद रांची के कांग्रेस कार्यकर्त्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सम्मेलन में आपने भाग लिया और लोगों की शिकायतें सुनीं तथा उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया। फिर १६ जून को आप कोलेबिरा थाना अन्तर्गत लचड़ागढ़ पहुँचे। वहां ५ हजार से अधिक लोगों ने बाजा-गाजा, झण्डा-पताका के साथ आप का स्वागत किया।

रांची जिला कांग्रेस कमिटी के सभापति श्री भैयाराम मुण्डा के सभापतित्व में एक आमसभा हुई। श्री सत्यनारायण मोदी ने अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया। रांची जिले के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता पं० मदन मोहन मिश्र ने कहा कि बिहार सरकार और कांग्रेस रांची जिले की परिस्थिति को ठीक से नहीं समझ रही है। इसी लिए आदिवासी कल्याण कार्य ठीक से पनप नहीं रहा है और आदिवासी लोग अभी भी तिरंगे झण्डे को छोड़ उस जयपाल सिंह के बहकावे में सहज ही में आ जाते हैं जिसने उन्हें द्वितीय महायुद्ध की ज्वाला में झोंककर लाखों रुपये कमाये हैं। सरकार आदिवासियों की भलाई तो खैर किसी प्रकार कर भी ले रही है। किन्तु रौतिया, कवर प्रभृति पिछड़ी जाति की उपेक्षा कर रही है। रांची जिले के हरिजन भी उपेक्षित हैं। विगत चुनाव में कांग्रेस की हार का मुख्य कारण आपसी फूट तथा सरकार की अफसरपरस्ती ही है। हमारी सरकार आज अफसरों के पंजे में है और ये अफसर ठीकेदारों और चोरबाजारी करने वाले सेठों की मुट्ठी में। इस प्रकार आदिवासी भलाई का बहुत बड़ा हिस्सा यह अफसर-दलाल गुट हड़प लेता है। मिश्रजी ने बड़े जोरदार शब्दों में कहा कि लघु सिंचाई योजना से यहाँ की जनता को विशेष फायदा इस लिए नहीं हुआ कि देहात के विशेषज्ञों की कोई राय नहीं ली गई। अफसरोंने लाखों रुपये खर्च करके जहां तहां मिट्टी के आड़ खड़े कर दिये। ये अफसर ठीकेदारों से मिले रहे और आज भी अनेक जगहों में मजदूरों के पैसे बाकी हैं। लघु सिंचाई योजना से रांची की भूमि और भी उबड़-खाबड़ हो गयी: फायदा कुछ भी नहीं हुआ। जंगल की भी यही हालत है। जंगल कट गया पर विभाग के कर्मचारी बढ़ते गये।

सरकार को जब अपने अफसरों पर कोई नियंत्रण नहीं तो वह शासन कैसे कर सकती है? यदि सरकार देहात की भलाई करना चाहती है तो देहात वालों की राय ले। अफसरों की राय से अफसरों की भलाई भले ही हो हमारी भलाई तो हर्गिज नहीं हो सकती।

पं० प्रजापति मिश्र ने अपने भाषण में कहा कि—हम मानते हैं कि हम आप की भलाई अधिक नहीं कर सके किन्तु हमने जो कुछ भी किया शुद्ध मन से किया। यहाँ के आदिवासी तो स्वयँ अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। वे जयपाल सिंह के बहकावे पर चल रहे हैं जो पादरियों की गोद में पले हैं और विलायत से घर-फोड़ नीति सीख कर आये हैं। जयपाल सिंह जनता को धोखा देते हैं। वे केवल चुनाव के अवसर पर आकर ठग-फुसला कर आदिवासियों का वोट ले लेते हैं। आज जब सिमडेगा में भूखमरी का आतंक फैला हुआ है तो जयपाल सिंह दिल्ली में मौज कर रहे हैं। आज कांग्रेस ही आप के लिए प्रबन्ध कर रही है। आदिवासियों को चाहिये कि वे अपनी नीति बदलें। अपना भला-बुरा समझें और कांग्रेस का साथ दें। कांग्रेस से ही देश का कल्याण होगा। झारखण्ड का नारा केवल धोखा है। झारखण्ड कभी भी अलग नहीं होगा।

श्री मुचि राय तिरु बी० ए० बी० एल० ने आदिवासियों को कांग्रेस का साथ देने और जयपाल सिंह के धोखे से बचने के लिए कहा।

श्री भैया राम मुन्डा ने कहा कि आदिवासी लोग जब तक जयपाल सिंह के धोखे में पड़े रहेंगे, उनका कल्याण संभव नहीं। अतएव अधिक से अधिक आदिवासियों को कांग्रेस का सदस्य बन जाना चाहिये। वहां से लौटते वक्त गुमला इलाके का भी उन्होंने निरीक्षण किया और वहाँ के कार्यकर्त्ताओं से विचार परामर्श किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



● बसिया थाने में झारखण्डियों की धांधली :—गत २४ मई को तेतराअंबा टोली (थाना बसिया) में क्रिस्तानों की ओर से सं० मरिया का एक जुलूस निकला। ईसाई होने के नाते श्री कामिल जी के परिवार के लोग उसमें सम्मिलित होने गये। किन्तु श्री अन्तोनी मिंज (तेतराअंबा टोली, बसिया) ने हाथ पकड़कर सब को जुलूस से यह कहते हुए निकाल बाहर कर दिया कि कांग्रेसियों के लिए यहाँ जगह नहीं है, श्री कामिल जी का दोष इतना ही है कि ईसाई होकर भी काँग्रेस के साथ हैं। क्या छोटानागपुर का बिशप (रोमन कैथोलिक) साहब यह बतलाने का कष्ट करेंगे कि काँग्रेस का साथ देना क्या ईसाई धर्म के विरुद्ध है? यदि नहीं, तो झारखण्डी ईसाइयों की इस धांधली के लिये वे क्या कदम उठाते हैं?

● भूमि सुधार के लिये सरकार कमीशन नियुक्त करेगी:—राजस्व मंत्री श्री कृष्ण वल्लभ सहाय ने १६ जून को बिहार विधान सभा में घोषणा की कि भूमि व्यवस्था के सुधारों के सुझाव पेश करने के लिये सरकार शीघ्र ही एक कमीशन नियुक्त करेगी।

● बिहार की नयी काँग्रेस कार्यसमिति:—बिहार प्रान्तीय काँग्रेस के अध्यक्ष पं० प्रजापति मिश्र ने अपनी कार्य-समिति के नामों की घोषणा कर दी है जिनमें निम्नलिखित १८ सदस्य हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ श्री नन्दकुमार सिंह, | प्रधान मंत्री | १० डा० अनुग्रह नारायण सिंह | सदस्य |
| २ ,, वासुदेव प्र० सिंह | मंत्री | ११ श्री शत्रुघ्न शरण सिंह | ,, |
| ३ ,, सियाराम सिंह | ,, | १२ ,, रामलखन यादव | ,, |
| ४ ,, चन्द्रिका राम | ,, | १३ ,, कृष्ण वल्लभ सहाय | ,, |
| ५ ,, भैया राम मुण्डा | सदस्य | १४ ,, दीपनारायण सिंह | ,, |
| ६ ,, किशोरी मोहन उपाध्याय | ,, | १५ ,, विनोदा नन्द झा | ,, |
| ७ ,, महेश प्र० सिंह | ,, | १६ ,, वीरचन्द पटेल | ,, |
| ८ ,, जानकी नन्दन सिंह | ,, | १७ ,, ए० ए० मोहम्मद नूर | ,, |
| ९ ,, डा० श्रीकृष्ण सिंह | ,, | १८ ,, प्रभुनाथ सिंह | ,, |

इनके अतिरिक्त सभी जिला काँग्रेस कमिटियों के सभापति तथा अन्य ११ व्यक्ति भी स्थायी रूप से आमंत्रित रहा करेंगे।

● बिहार के नये राज्यपाल आये—बिहार के नये राज्यपाल (गवर्नर) श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर १४ जून को पटने पधारे। प्लेटफार्म पर सर्वप्रथम डा० अनुग्रह नारायण सिंह ने उन्हें माला पहनायी। फिर डा० श्री कृष्ण सिंह ने अपने सहयोगी मंत्रियों एवं राज्य के कुछ बड़े अफसरों से उनका परिचय कराया। पटना जंकशन पर पहुँचते ही यात्रियों एवं अन्य लोगों ने राज्यपाल का जय जयकार कर उनका स्वागत किया। महामहिम श्री दिवाकर के शपथ ग्रहण के बाद श्री अणे साहब ने अवकाश ग्रहण किया।

● बिहार में टेलीफोन का विस्तार—सरकारी तौर पर बतलाया गया है कि १९५२-५३ साल में भारत सरकार देश भर में ५७ टेलीफोन केन्द्र खोलेगी। इसके अनुसार ६५४० टेलीफोन लाइनें बनेगी। केवल बिहार के कोयला क्षेत्रों में १६०० लाइनें बनेंगी। अभी भारत में ५८२ टेलीफोन केन्द्र हैं जहाँ से ११५१८७७ सीधी लाइनें और २४९१६ संबन्धित लाइनें गयी हुई हैं।

● बिहार में गन्धक की खानें—भारतीय भूगर्भ सर्वे विभाग के एक प्रवक्ता के अनुसार बिहार प्रान्त के डेहरी आन सोन और घाटशिला में गन्धक की खानें मिली हैं। यदि घाटशिला में पूरा गन्धक निकाला जाय तो केवल वहीं पर ५००० टन तक गन्धक प्रतिवर्ष मिल सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



● मद्रास और बिहार में कन्ट्रोल उठा दिया गया—मद्रास के मुख्य मंत्री श्री चक्रवर्त्ती राजगोपालाचारी ने मद्रास में खाद्य पर से कन्ट्रोल उठा कर अन्य प्रान्तों के सामने एक साहस पूर्ण कदम रखा है। आप की घोषणा के कुछ दिनों के बाद ही बिहार के खाद्य मंत्री श्री हरिनाथ मिश्र ने भी कन्ट्रोल उठा देने की घोषणा कर दी है तथा प्रान्त के सभी वर्ग के लोगों से सहयोग के लिए अपील की है। बिहार में इस वर्ष धान की वसूली भी स्थगित रहेगी। कलकत्ते में ८ जून को भारत के खाद्य मंत्री श्री रफी अहमद किदवई ने बतलाया कि भारत सरकार की नीति खाद्यान्न पर से धीरे-धीरे कन्ट्रोल उठा देने की है।

खाद्य में मिलावट रोकने के लिए भारत सरकार एक कड़ा कानून बनाने जा रही है। संसद के अगले अधिवेशन में यह कानून पास हो जायगा, ऐसी उम्मीद है।

● दिल्ली में आदिवासी कल्याण सम्मेलन —विगत ७, ८, और ९ जून को केन्द्रिय-भवन, भारतीय लोक सदन, दिल्ली में भारत सरकार के आदिवासी कमीश्नर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त ने एक आदिवासी कल्याण सम्मेलन बुलाया जिसमें प्रायः पांच सौ सरकारी तथा गैरसरकारी प्रतिनिधि तथा आमंत्रित व्यक्ति उपस्थित थे।

सम्मेलन का सभापतित्व भारत के गृहमंत्री श्री कैलाशनाथ काटजू ने और उद्घाटन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। पं० जवाहर लाल नेहरू का भाषण हृदय को छूने वाला और भावनाओं को व्यग्र करने वाला था। प्रायः ५० वक्ताओं ने आदिवासी समस्या पर प्रकाश डाला जिन में श्री प्रो० गुहा, प्रो० मेहता, काका कालेकर, श्री आर्यनायकम, मौलाना अबुल कलाम आजाद, श्री एन० दत्त मजूमदार और श्री भैयाराम मुण्डा उल्लेखनीय हैं। आदिम जाति सेवा मण्डल की ओर से श्री भैयाराम मुण्डा एवं पं० मदनमोहन मिश्र दो प्रतिनिधि इस में सम्मिलित हुए थे।

## मण्डल की गति विधि

गत २२ जून को निवाण आश्रम में आदिम जाति सेवा मण्डल की सब कमिटि की बेठक हुई। बैठक में श्री नारायणजी, पं० यागेद्रनाथ तिवारी, श्री रामदास साहु, कुमारी मणिका वारला, मानकी सिंहराज सिंह, पाण्डे प्रद्युम्न प्रसाद, श्री अनिरुद्ध सिंह, श्री शुकरू भगत, श्री अंजलुस केरकेटा, श्री जगत मणि महतो, श्री मदन मोहन महतो आदि उपस्थित थे।

बैठक में कस्तूरबा बालिका विद्यालय, लोहरदगा की अध्यापिका कुमारी सुशीला होरो की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

मानभूम शाखा की स्थिति पर विचार कर तै किया गया कि श्री फणिभूषण बनर्जी को एक पत्र दिया जाय कि ५ जुलाई '५२ तक श्री मदन मोहन महतो को वे अपना चार्ज दे दें तथा इसी बीच अपनी लेन देन का हिसाब आकर प्रधान कार्यालय से साफ कर जायँ। मंत्री को अधिकार दिया गया है कि वे इस निर्णय की श्री फणि बाबू द्वारा अवहेलना होने पर कानूनी कारवाई करें।

राँची जिले के खाद्य संकट की स्थिति पर विचार कर ते किया गया कि अभी पालकोट थाने की स्थिति अत्यधिक खराब है। इसलिए वहाँ सहायता कार्य तुरत आरम्भ कर दिया जाय और श्री छेदी साहु के ऊपर इसका भार रहे। इसके अलावे भी जहाँ-जहाँ अन्नोभाव से लोग पीड़ित हैं, वहाँ वहाँ के कार्यकर्त्ता वहाँ की स्थिति के सम्बन्ध जाँच-पड़ताल कर प्रधान कार्यालय को शीघ्र रिपोर्ट दें ताकि जल्द से जल्द जनता की तकलीफ को दूर करने के लिए प्रयत्न किया जा सके।

मण्डल के मंत्री श्री नारायण जी एम० एल० सी० राँची जिला के अन्नाभाव को दूर करने के लिए जी जान से पड़े हुए हैं। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप सरकार की ओर से जहाँ-तहाँ सहायतार्थ कुछ अन्न भेजा गया है। सब जगह मण्डल के कार्यकर्त्ता अन्नाभाव से पीड़ित लोगों की सहायता में लगे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०२२१५४


## सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य २॥), तीन शीशी एक साथ लेने पर ६॥) बाल आधा पका हो तो ३॥), एक साथ ३ का ६) और कुल पका हो तो ५) व ३ का १२) बेफायदा साबित होने पर कीमत वापस।

### महात्मा प्रदत्त

### श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनों! औरों की भाँति हम अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते। यदि इसके लेप से सफेदी दाग को पूरा आराम जड़ से हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -) का टिकट भेज कर शर्त लिखा लें। मू० ३)

तेज दवा का मूल्य ५)

श्री हिन्द फार्मेसी (४१)
पो० जसीडीह [संथाल परगना]

## अच्छे गृहस्थ ही अच्छी चीज चाहते हैं

**बढ़ियां रेडियो, घड़ी, सिलाई मशीन कैमरा एवं फिल्म आदि चीजों के लिये पधारें**

आपके पुराने सामान की मरम्मत भी सस्ते में कर दी जायगी।

**सस्ते मूल्य में उत्तम सामान देकर ग्राहकों को संतुष्ट करना हमारी विशेषता है**

**गुमला की एक मात्र प्रसिद्ध दूकान**

## अरुणा स्टोर्स, गुमला

## ❀ मासिक धर्म रुकावट ❀

नारी संजीवनी दवा के सेवन से बिना किसी तकलीफ या खतरे के बन्द मासिक धर्म को सहज में खोल कर चालू कर देता है। इस औषधि के व्यवहार से कमर, पेडू, पेट का दर्द, सिर में चक्कर आना आदि दूर होकर शीघ्र गर्भ धारण हो जाता है। यह गर्भवती को न दी जानी चाहिए क्योंकि गर्भ गिर जायगा। मू० ६) अधिक महीने वाली रोगों के लिए "स्पेशल पावर" की दवा मंगानी चाहिए। कीमत ८॥)।

किसी भी दवा को बेफायदा साबित करने पर मूल्य वापस।

### * पुत्रदा *

### (शर्तिया पुत्र उत्पन्न करने की दवा)

साधारण स्त्रियों को 'पुत्रदा' से सुपुत्र होवेगा ही, परन्तु जो बांझ अथवा जिन्हें अरसे से रजस्वला होना बन्द हो गया हो उनको भी शर्तिया पुत्र उत्पन्न होगा। हजारों ने 'पुत्रदा' सेवन कर पुत्र पाया है। आज तक किसी को भी हताश नहीं होना पड़ा। यदि आप को पुत्र की इच्छा हो तो एकबार अवश्य परीक्षा कर देखें। मू० ५)।

**हिन्द कल्याण औषधालय म० ४०६**
पो०—जसीडीह (संथाल परगना)

## यदि आप

**सनसनी खेज समाचार, गुप्त रहस्यों का भंडाफोड़ तथा भ्रष्टाचारियों का पर्दाफाश पढ़ना चाहते हैं तो**

## साप्ताहिक 'सन्डे प्रेस' पढ़िये

वार्षिक मूल्य केवल ३) एक प्रति एक आना

**पता :—सन्डे प्रेस, राँची**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिष्टर्ड न० पी० ७५१

## ग्राहक ध्यान दें :—

'ग्राम-निर्माण' छपने के बाद काफी जाँच पड़ताल करके सभी ग्राहकों की प्रतियाँ भेज दी जाती हैं।

जिस ग्राहक को महीने के २० तारीख तक ग्राम-निर्माण नहीं मिल सके तो उन्हें अपने पोस्ट औफिस से पूछना चाहिये तथा पोस्ट मास्टर के लिखित उत्तर के साथ तुरत ग्राम-निर्माण कार्यालय को लिखना चाहिये ताकि डाक विभाग के अधिकारियों के पास उचित कारवाई के लिए लिखा-पढ़ी करके डाक विभाग के भूत को ठीक रास्ते पर लाये जा सके।

—व्यवस्थापक

## छात्र नोट करलें

विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिए हमने 'ग्राम-निर्माण' में 'नयी लेखनी' शीर्षक स्तंभ निश्चित कर दिया है। लेकिन विद्यार्थियों की रचनाएँ इतनी अधिक संख्या में आ रही हैं कि उन्हें छापने में स्थानाभाव के कारण हम असमर्थ हो रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में हमने तै किया है कि जो विद्यार्थी 'ग्राम-निर्माण' के ग्राहक बनकर अपनी रचना के साथ अपना ग्राहक नम्बर लिखकर भेजेंगे, उन्हीं की रचना को 'ग्राम-निर्माण' में स्थान मिल सकेगा।

—व्यवस्थापक

अच्छे खेलाड़ी ही अच्छा सामान चाहते हैं
खेल के सभी सामान के लिए आप

**शेली स्पोर्ट्स, राँची में पधारें**

( रतन सिनेमा के सामने )

सस्ते दाम और अच्छी चीजों के द्वारा ग्राहकों को खुश करना हमारी विशेषता है।

**क्या आप शिक्षक हैं ?**

यदि हाँ, तो एक मात्र शिक्षकों की पूंजी से निर्मित

**राँची जिला शिक्षक सहयोग भण्डार**

**को याद रखिए, और**

कृपया अधिक से अधिक इसके हिस्से खरीद कर विशेष लाभ उठाइये।

निवेदक—
व्यवस्थापक
जिला शिक्षक सहयोग भण्डार, रांची।

**यदि आप नहीं जानते हैं**

तो

**नोट कर लें**

हमारे यहाँ हर किस्म के नक्शे, ग्लोब, चार्ट, एजुकेशनल चार्ट और स्कूली किताबें सस्ते दामों पर मिलती हैं।

**आइडियल बुक स्टोर्स**
मेन रोड, राँची

**पपुलर बुक डिपो** मेन रोड, रांची।

हिन्दी • अंग्रेजी • गुरुमुखी • उर्दू आदि भाषाओं की पुस्तकें, मनिहारी के सामान तथा चित्र बांधने के अलावे हम आर्डर के माल भी सप्लाई करते हैं।

GURUKULA-KANGRI DELY. JULY 52 M—30/- SAHARANPUR

दि युनाइटेड प्रेस लिमिटेड, राँची द्वारा मुद्रित तथा आदिम जाति सेवा मण्डल द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar